म.इ. कालिनिन

कम्युनिस्ट शिक्षा के बारे में

चुने हुए भाषण और लेख

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह

मास्को १९५७

कम्युनिस्ट सिद्धान्त अपने प्रारंभिक रूप में, बहुत ही शिक्षित, सच्चे, उन्नत लोगों के सिद्धान्त हैं। वे अपनी समाजवादी मातृभूमि के प्रति प्यार, मैत्री, साथी-भावना, मानवता, ईमानदारी, समाजवादी श्रम के प्रति प्यार और दुनिया में प्रचलित इसी तरह के दूसरे महान उन्नत गुण हैं। इन विशेषताओं, इन उन्नत गुणों को पालना-पोसना, विकसित करना कम्युनिस्ट शिक्षा का बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है।

म० इ० कालिनिन

विषय-सूची

अखिल-संघीय लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग की सातवीं कांग्रेस में दिए गए भाषण का अंश

११ मार्च १९२६

आपने अनुभव किया होगा कि पार्टी की केन्द्रीय कमेटी और हमारी सोवियत सरकार, दोनों ही दूसरी कांग्रेसों की तुलना में कोम्सोमोल* की कांग्रेस की ओर ज़्यादा ध्यान देती हैं। ऐसा क्यों है? यह बताने की कोई ज़रूरत नहीं, क्योंकि हमारे देश की मुख्य दौलत कोम्सोमोल ही में विकसित हो रही है। कोम्सोमोल में वही लोग हैं जो आगे चलकर समाजवाद के लिए लड़ने वाले बूढ़े लड़ाकों की जगह लेंगे। कोम्सोमोल मज़दूर और किसान युवकों का अगला दस्ता है, उनका बेहतरीन अंग है।

इसीलिए मेरा विश्वास है कि कोम्सोमोल में युवकों के अनुरूप ही उच्चाकाँक्षाओं और आदर्शों के विकास की ओर ध्यान देना चाहिये।

---

* कोम्सोमोल: अखिल-संघीय लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग का संक्षिप्त नाम।

आखिर, युवकों के लिए विशिष्ट बात क्या है? कोम्सोमोल के एक मेंबर और एक प्रौढ़ में, मिसाल के तौर पर, मुझमें और कोम्सोमोल के सदस्य में क्या अंतर है? हां, बाहर से देखने में मेरी सफ़ेद दाढ़ी के कारण, बड़ा भेद मालूम पड़ता है। लेकिन यह तो सिर्फ़ बाहरी भेद हुआ। और अगर भेद सिर्फ बाहरी है, तो फिर कोम्सोमोल के विशेष संगठन की कोई ज़रूरत न होती। कोम्सोमोल को विशेषता देने वाले उसके अपने अनोखे आत्मिक गुण हैं।

कोम्सोमोल का पहला विशिष्ट गुण, उसकी अपनी अनोखी ग्रहण-शक्ति है। आप लोग जो कोम्सोमोल के सदस्य हैं, इस बात को अच्छी तरह नहीं समझते। लेकिन हम लोग जो प्रौढ़ हो चुके हैं, जब अपने बीते दिनों की याद करते हैं, तो और दिनों के मुक़ाबले हमें जवानी की बातें बहुत स्पष्टतया याद आ जाती हैं। प्रायः प्रौढ़ावस्था में होने वाली घटनाएं, युवावस्था की घटनाओं की तुलना में जल्दी ही भूल जाती हैं। इसका मतलब क्या है? इसका मतलब हुआ कि आदमी की ग्रहण-शक्ति युवावस्था में सबसे ज़्यादा होती है।

इस मामले में कोम्सोमोल की तरफ़ हमारा रुख भिन्न होना चाहिए। मिसाल के तौर पर, हम कम्युनिस्ट-प्रचार की समस्या को ही ले लें। जो बात किसी प्रौढ़ पर लागू होती है, उसे एक कोम्सोमोल के मेंबर पर लागू करना खतरनाक होगा, क्योंकि एक प्रौढ़ और एक कोम्सोमोल सदस्य को एक ही नियम में बांधने का उन दोनों पर विभिन्न प्रभाव पड़ेगा और उनकी मानसिक प्रतिक्रियाएं भी भिन्न होंगी। इस बुनियादी बात से कई महत्वपूर्ण नतीजे निकाले जा सकते हैं—जैसे, कम्युनिस्ट युवकों के बीच प्रचार कैसे किया जाय?

अपने आदर्शों को अमली स्वरूप देने की तीव्र आकांक्षा युवकों की अपनी विशिष्टता है। युवक हमेशा ही आत्मबलिदान के लिए तैयार

रहते है। वे सदा ही धरती के इस छोर से उस छोर जाने, समुद्र पार करने, खतरा उठाने, नए देशों को खोजने और इसी तरह के अन्य साहसिक कार्यों के लिए उत्सुक रहते है। साथियो, यह है भी बहुत ही स्वाभाविक। मुझे दूसरों के बारे में नही मालूम, लेकिन जहां तक मेरी अपनी बात है, अठारह वर्ष की आयु तक इन्ही सारी बातों से मेरा सिर भरा रहता था। मै नही मानता कि इस मामले में आज के युवक पहले से भिन्न हो गए है। मै जानता हूं कि अनहोनी कर उठाने, बहादुरी के करतब दिखाने, विज्ञान मे महान कामयाबिया हासिल करने, अर्थात कुछ अनोखा कर दिखाने की इच्छा आज के युवको की भी विशेषता है।

एक बात और। आम तौर पर, युवकों मे अनोखी ईमानदारी और खरापन होता है। जीवन के अनुभवो और ठोकरो से प्रताड़ित एक प्रौढ व्यक्ति मे सत्य और ईमानदारी के लिए युवावस्था का वह जोश कहा आ सकता है?

प्रौढो और युवको को भिन्न करने वाली कुछ ही बातों को मैने बताया है। मुझे ऐसा लगता है कि यही मुख्य भेद है। मै दूसरी विभिन्नताओ को बताने के लिए रुकूगा नही। लेकिन क्या, अपने आप मे भी इन विशेषताओ का मनुष्य के लिए कुछ मूल्य है? निस्सदेह है। मनुष्य के लिए यदि अपने आप में ही इन गुणो का विशिष्ट, अनूठा मूल्य न होता, तो निस्सदेह, युवकों के आत्मिक सौदर्य का समुचित भाग ही लुप्त हो जाता।

इसीलिए हम लोग—विशेषकर कोम्सोमोल सगठनों के नेता और पार्टी जो नेतृत्व करती है और कोम्सोमोल का पथ प्रदर्शन करती है—समझते हैं कि युवकों के इन अनोखे गुणों का ह्रास न होने पाय। उल्टे, हम समझते हैं कि उन्हें सुरक्षित रखना और विकसित करना चाहिए। नए मानव का निर्माण इसी आधार पर होना चाहिए।

"निर्माण" की बात कह देना तो बहुत आसान है, लेकिन निर्माण का ठोस काम करना सचमुच बहुत ही कठिन है।

...बहुत लोगों की यह भ्रान्त धारणा बन गई है कि युवकों के विकास का मतलब यही है कि वे केवल कोम्सोमोल के कर्तव्यों का पालन करने में लगे रहें। और कोम्सोमोल-कर्तव्यों के पालन का मतलब तो मुख्यत: राजनीति के ककहरे का ज्ञान हासिल करना और मार्क्सवाद का अध्ययन करना है; संक्षेप में, समाजी समस्याओं का ज्ञान प्राप्त करना है।

मुझे लगता है कि मानव-निर्माण से संबंधित समस्याओं के बारे में इतना संकुचित विचार ग़लत है। मुझे उन दिनों की याद आती है जब हमारा विकास मार्क्सवादियों के रूप में हो रहा था। हमने सिर्फ़ विशिष्ट तौर पर मार्क्सवादी पुस्तकों का ही अध्ययन नहीं किया। चलते-चलते बता दूं कि उन दिनों ये पुस्तकें थीं भी बहुत कम। बेर्दनिकोव और स्वेतलोव की ही पुस्तक "राजनैतिक ज्ञान का ककहरा" ले लें। यह बहुत बड़ी पुस्तक है। उस समय हम लोगों के पास सिर्फ़ "ईर्फ़र्ट कार्यक्रम" और "कम्युनिस्ट घोषणापत्र" ही थे। हां तो मैं अंडरग्राउंड मर्किलों (भूमिगत गोष्ठियों) में होने वाले अध्ययन की बात कर रहा था; मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धान्तों के अध्ययन के साथ ही हमने साधारण ज्ञान संबंधी पुस्तकें भी पढ़ीं—रूसी प्राचीन पुस्तकों से शुरू करके कहानी-लेखकों, इतिहासकारों, आलोचकों, सभी की; थोड़े में यह कि हमने किताबों में पाये जाने वाले सम्पूर्ण ज्ञान को पा लेने की चेष्टा की। इस प्रकार कारख़ाने में काम करते-करते हमें साहित्य, विज्ञान इत्यादि की चतुर्मुखी शिक्षा मिली।

मैं कहना चाहता हूं कि यदि हमारे स्कूलों में कोम्सोमोल कर्तव्यों के पालन से गणित-शास्त्र के अध्ययन में रुकावट पड़ती है—गणित मैं जान-बूझ कर कह रहा हूं, क्योंकि यह एक ऐसा विषय

है जो प्रारंभिक राजनैतिक ज्ञान से बिल्कुल भिन्न है—यदि गणित या प्राकृतिक विज्ञान का स्थान प्रारंभिक राजनैतिक ज्ञान ले ले, तो यह बहुत ही ग़लत बात होगी। ऐसी अवस्था में कोम्सोमोल के उस सदस्य की शिक्षा बहुत ही ऊपरी रह जायेगी जिसने राजनीति का प्रारंभिक ज्ञान संबंधी कुछ किताबें ही पढ़ी हों। ऊपर से ही वह शिक्षित जान पड़ेगा। बातचीत के दौरान में वह सभी विषयों पर कुछ न कुछ कह सकेगा। ऊपरी चमक-दमक उसमें होगी, लेकिन उसे एक विकसित और शिक्षित व्यक्ति नहीं कहा जा सकता। आप जब किसी ऐसे साथी से मिलेंगे, तो उसका प्रभाव अच्छा पड़ेगा। लेकिन कुछ ही घंटों की बातचीत से यह पता लग जायेगा कि उसके राजनैतिक ज्ञान का आधार कोई नही है। उसमें हाई स्कूल पास व्यक्ति के बराबर भी प्राकृतिक विज्ञानों का ज्ञान आपको नही मिलेगा। इसीलिए, मैं समझता हूँ कि कोम्सोमाल संगठन को चाहिए कि वह नई पीढ़ी को न सिर्फ़ राजनीति का ज्ञान प्राप्त करने में सहायक हो, बल्कि इसका भी प्रयत्न करे कि उसका यह राजनैतिक ज्ञान साधारण ज्ञान की उन शाखाओं पर आधारित हो, जो एक विकसित व्यक्ति के लिए आवश्यक हैं। विकास के इस पहलू को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।

एक बार मैंने कहा था कि मार्क्सवाद के अध्ययन का मतलब मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन की किताबें पढ़ जाना ही नही है। आप उनकी किताबें शुरू से आख़िर तक पढ़ सकते हैं और यह भी हो सकता कि उन्हें शब्दशः दोहरा भी दें। लेकिन यह सब यह बताने के लिए काफ़ी नहीं है कि आपको मार्क्सवाद का ज्ञान हो गया है। मार्क्सवादी तरीक़ों का पांडित्य प्राप्त कर लेने के बाद अपने काम से संबंधित तमाम मामलों के प्रति क्या रुख़ अपनाया जाय—यह जानना ही मार्क्सवाद है। मिसाल के तौर पर, हम मान लें कि भविष्य में खेती-बारी ही आपके काम का दायरा होगा। तो क्या इसमें मार्क्सवादी

तरीका बरतना फायदेमंद होगा? हां, जरूर होगा। लेकिन मार्क्सवाद का प्रयोग करने के लिए आपको खेतीबारी का ज्ञान होना चाहिए। आपको कृषि का पंडित होना पड़ेगा। नही तो खेतीबारी पर मार्क्सवाद लागू करने का कोई मतलब ही न होगा। अगर मार्क्सवाद को अमल में लाना है, अगर हमें अमली इन्सान बनना है और निरा मार्क्सवाद के सूत्रों को दोहराने वाला पंडित नही बनना है, तो हमें यह बात नही भूलनी चाहिए। आखिर, मार्क्सवादी बनने का अर्थ क्या है? इसका मतलब है सही नीति अपनाने की योग्यता। लेकिन एक सही, मार्क्सवादी नीति अमल करने के लिए उस विशेष कार्य का पूर्ण ज्ञान भी जरूरी है जिस पर हम मार्क्सवादी नीति का उपयोग करना चाहते है।

यह आम सिद्धान्त कोम्सोमोल के तमाम मेंबरों पर शब्दशः लागू होता है। वे चाहे विद्यार्थी हो या गावों में खेतीबारी करने वाले या कारखानों मे काम करने वाले। एक अच्छा फिटर होने के लिए जो अपने ज्ञान का इस्तेमाल इस तरह करे और हर काम को इस तरह करे जिसका अच्छे से अच्छा फल निकले — फैक्टरी में काम करने वाले कोम्सोमोल के हर मेंबर को यह पहले ही सोच लेना है कि वह काम कैसे करे। जो कोई बिना योजना के ही काम शुरू कर देता है, वह रद्दी काम करता है। इसलिए समझ लीजिए कि कोम्सोमोल संगठन को अपने हर सदस्य को यह बताना है कि उसका मुख्य काम उस कौशल की पूरी जानकारी हासिल करना है जिसे वह सीख रहा है। उसे अपने शिक्षक की ही तरह कुशलता से काम करना है। यदि वह अपने कौशल को भली भाति सीख लेगा तो उसे आर्थिक तौर से तो लाभ होगा ही, साथ ही वह अपने विशेष झुकाव को भी विकसित करने का अवसर पायेगा। यदि एक टर्नर या एक फ़िटर अच्छी तरह काम नही करता है, तो वह उसी काम से बधा रह जायेगा, क्योंकि

एक रद्दी मज़दूर को नया काम पाने में बड़ी मुश्किल होती है। और कोम्सोमोल के एक मेंबर को एक ही तरह के काम में लम्बे अरसे तक लगाए रखना आसान नहीं है, क्योंकि उसे तो दुनिया देखनी है। अगर आप दुनिया देखना चाहते हैं तो ऐसे टर्नर या फ़िटर बनिए जिसे पहले "ट्रायल" के बाद ही कहीं भी काम मिल जायेगा।

अंत में — थोड़ा उपदेश। मैंने देखा है कि हमारे कुछ नवयुवक उन कुशल व्यक्तियों की तरफ़ जो उन्हें शिक्षा देते हैं, एक हलकेपन और बेअदबी का रुख़ बना लेते हैं। मै चाहता हूं, कि हमारे युवक प्राचीन मनीषियों के विचारों का पढ़ें। उन्हें पता लगेगा कि उस काल में शिष्यगण अपने गुरुओं का कितना आदर करते थे और उनका कितना ध्यान रखते थे। अच्छा काम सीखने के लिए आपको अपने काम पर ध्यान लगाना है। जब तक आप ऐसा नहीं करते, आप कभी भी काम नहीं सीख पायेंगे। मिसाल के तौर पर, एक फ़िटर के "एप्रेंटिस" को चाहिए कि वह अपने शिक्षक की ख़राबियों पर ध्यान न दे और उससे कौशल के बारे में सब कुछ सीख ले। आप खुद जानते हैं कि साठ बरस का एक बूढ़ा आदमी कई मामलों में नवयुवकों को कितना पुरमजाक मालूम होगा। लेकिन अगर आपका ध्यान सिर्फ़ इसी पर रहा तो आप मुख्य बात को खो बैठेंगे। आपको उससे कौशल प्राप्त करना है।

सोवियत यूनियन की तमाम आशायें कोम्सोमोल संगठन पर आधारित हैं। ख़ासकर, इस बात पर कि वह हमारी कामयाबियों को किस तरह जज़्ब करता है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि अगर कोम्सोमोल इन मुख्य मसलों पर ध्यान नहीं देगा तो हम अपने काम को पूरा नहीं कर सकेंगे — हम कई कौशलों को बिना कोम्सोमोल संगठन को सौंपे ही खो बैठेंगे। मैं चाहता हूं कि आप उन तमाम समस्याओं पर विचार करें, जिन्हें मैंने थोड़े में यहां रखा है। आप विभिन्न प्रस्तावनाओं की समीक्षा कीजिए।

अगर युवक इन समस्याओं की तरफ़ सही रवैया अपना लें तो मेरे द्वारा उठाए गए नकारात्मक प्रश्नों का मुख्यांश तो अपने आप हल हो जायेगा। ज़िंदगी बहुत दिलचस्प चीज़ है और लोगों को सीखने के लिये अनेक विषय हैं। आपको इतना ही करना है कि युवकों की दिलचस्पी उन विषयों में बढ़ा दें जो बहुमूल्य हैं ताकि उनका चौमुखी विकास हो।

अखिल-संघीय लेनिनवादी नौजवान
कम्युनिस्ट लीग की सातवीं कांग्रेस में दिये
गए भाषण की स्टेनोग्राफिक रिपोर्ट।
पृष्ठ १५-१८, १९२६ में प्रकाशित

अध्ययन और जीवन

य० म० स्वेर्दलोव नामक कम्युनिस्ट विश्वविद्यालय के दीक्षांत-समारोह के अवसर पर दिए गए भाषण का अंश

३० मई १९२६

क्रांतिकारी कार्य और सैद्धांतिक शिक्षण

हम लोग अब एक बहुत ही जटिल युग से गुजर रहे हैं। हर साल ही हमारी ज़िंदगी कठिन होती जा रही है। सोवियत राज्य को सुदृढ़ करने के लिए हमें बड़े कुशल व्यक्तियों की आवश्यकता है। आजकल के समाजी विकास को पिछड़े तरीक़े से समझना बहुत ही मुश्किल है। हम में हर मौक़े पर समाजी विकास को गहराई से, मार्क्सवादी दृष्टि से समझने की क़ाबिलीयत होनी चाहिए। हम में विषय को समूचे तौर से समझने और उसके अन्दरूनी तत्व को खोजने की क़ाबिलीयत होनी चाहिए। किसी विषय को पूर्ण रूप से समझने के लिए, उसके अन्दरूनी तत्वों का विश्लेषण करने के लिए, आधारभूत मार्क्सवादी ट्रेनिंग की बहुत आवश्यकता है। मार्क्सवादी ट्रेनिंग तब तो और भी ज़रूरी है जब किसी व्यक्ति को पहले काफ़ी अमली तजुरबा न हो। इसीलिए मैं कहता हूं कि सोवियत राज्य और पार्टी

दोनों ही को मज़बूत बनाने के लिए हमें गुणी और कुशल व्यक्तियों की अत्यधिक आवश्यकता है। मैं यह कह सकता हूं कि जहां तक जनता की राजनैतिक शिक्षा, राजनैतिक गतिविधि और राजनैतिक चेतना का संबंध है, हमारा देश तमाम युरोपीय और ग़ैर युरोपीय देशों से आगे है। इसमें संदेह नही किया जा सकता। लेकिन तो भी यह राजनैतिक कार्यवाही इतने बड़े पैमाने पर और लगातार होने वाले रचनात्मक कार्यों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

निस्संदेह हमारा कर्तव्य है कि पार्टी के सांस्कृतिक कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए हम राजनैतिक समस्याओं में जनता की दिलचस्पी का फ़ायदा उठाएं। महान उठान के अवसरों पर (जैसा इस समय ब्रिटेन की आम हड़ताल के अवसर पर) हर मजदूर, जो कल तक तमाशबीन रहा है, योद्धा बन जाता है — वह मजदूरों के हितों के लिए संघर्ष करता है; इस प्रकार जनता के लिए होने वाले संघर्ष में एक के बाद एक योद्धा आगे आते हैं। लेकिन साथियो, आगे बढ़ना हमेशा तेज़ नहीं होना। अक्सर हमें पीछे भी हटना पड़ता है। और थकान-भरे, घटना-विहीन, एक ही तरह के काम में गुज़रने वाले साल पर साल एक व्यक्ति की ९९ फ़ीसदी ज़िंदगी बन जाते है। साधारण और नीरस परिस्थितियों में लगातार जोश के साथ काम करने की योग्यता, एक-एक दिन एक-एक कठिनाई पर विजय पाना, रोज़-रोज़ हर घंटे में आ खड़ी होने वाली रुकावटों के सामने अपने जोश को कम न होने देना; और उबाने वाली, थकाने वाली रुकावटों के दौरान में जोश को क़ायम रखना; रोज़मर्रा के कामों में उन अंतिम उद्देश्यों को सदा सामने रखना जिनके लिए कम्युनिस्ट आंदोलन संघर्षशील है — एक पार्टी कार्यकर्ता में ये आदर्श गुण हैं।

पार्टी हेड-क्वार्टर के सहायकों — यह मैं उसके विशद आर्थों में कहता हूं — के रूप में आप भी काम करेंगे। आपको रोज़मर्रा के कामों

में इस तरह नहीं फंसना है कि इन अंतिम उद्देश्यों को ही भुला दें। हमारे सामने कोई भी रुकावट क्यों न हों, यह विश्वास हम को मज़बूत बनाए रहे कि आज नहीं तो कल इन पर विजय अवश्य होगी। ज़रूरत इस बात की है कि पार्टी के कार्यकर्ताओं में यह योग्यता हो कि वे ग़ैरपार्टी मज़दूरों और किसानों में अपने रोज़मर्रा के कामों और मिसालों से कम्युनिज़्म की अंतिम जीत का विश्वास भर सकें। एक कार्यकर्ता तभी अपने नेता का आदर करता है, और सिर्फ़ कार्यकर्ता ही नहीं, आप भी उसी शिक्षक या नेता का आदर करते हैं, जिसमें जनता के साथ ही अनोखा जोश होता है और जो अपने इस जोश को जनता में भरता है। इसलिए साथियो, पार्टी में काम करने के लिए,- जिसका मतलब ही एक हद तक आत्मबलिदान है और इस आत्मबलिदान से ही संतुष्ट होने के लिए, उन उद्देश्यों के औचित्य और सौंदर्य में गहरा विश्वास होना ज़रूरी है, जिनके लिए हम लड़ रहे हैं। और सचमुच, इन सिद्धान्तों के औचित्य पर, मार्क्सवाद द्वारा सिखाए गए विचारों पर, उनसे ज्यादा कौन विश्वास कर सकता है, जिन्होंने उनके अध्ययन में तीन साल बिताए हैं?

मार्क्सवाद और उसका अभ्यास

मार्क्सवादी होने का मतलब यही नहीं है कि लेनिन, मार्क्स, एंगेल्स और प्लेखानोव को पढ़ें या उनका अध्ययन कर लें। हां, अगर सिर्फ़ मार्क्सवाद को जान भर लेने की बात है तो कोई भी इन चार लेखकों को पढ़कर मार्क्सवाद को जान सकता है। लेकिन मार्क्सवाद को जान लेना एक बात है और उसे विभिन्न, विशिष्ट और अप्रत्याशित परिस्थितियों में रोज़-रोज़ हर घंटे लागू करना दूसरी बात है। मार्क्सवाद के किताबी ज्ञान को, मार्क्सवादी नज़रिए से देखने की

क़ाबिलीयत नहीं कहा जा सकता। मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और प्लेखानोव की किताबों का अध्ययन कर लेने से ही यदि कोई मार्क्सवादी बन सकता, तो यह बहुत ही आसान बात होती। इन चार महान मार्क्सवादियों का अध्ययन मुश्किल चाहे जितना हो, लेकिन वह तो कुछ समय लगा कर हो सकता है। और सचमुच ही हमारी कम्युनिस्ट पार्टी में ऐसे लोग हैं जो किताबी तौर पर मार्क्स को जानते हैं...

मार्क्सवाद — उसके तरीक़े और उसके नज़रिए — के अध्ययन का मतलब सिर्फ़ इन ऊपर बताए गए लेखकों की किताबों को पढ़ लेना ही नहीं है, बल्कि साथ-साथ घटनाओं के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन भी आवश्यक है। मार्क्सवादी अध्ययन की सच्ची कसौटी अमली काम है। संभव है, अभी तक आप मार्क्सवादी तरीक़े के पंडित हुए हों (अगर आप हुए हों -- मेरा ख़्याल है कि अभी आप पूरे पंडित भी नहीं हुए), लेकिन यह पांडित्य उसी फ़ौजी की शिक्षा-दीक्षा के समान है जो जनरल स्टाफ़ की अकादमी से पास होके निकला हो। हां, यह सही है कि दुनिया के ज़्यादातर कमांडर-इन-चीफ़ अकादमियों से ही दीक्षित होकर निकले हैं। लेकिन यह समझना भूल होगी कि अकादमी का हर फ़ौजी पहले दर्जे का कमांडर-इन-चीफ़ हो सकता है। हमारी क्रांतिकारी फ़ौज का कोई भी कमांडर अकादमी में शिक्षित नहीं हुआ। इसका मतलब क्या है? मार्क्सवाद मनगढ़ंत सिद्धान्त नहीं है। मार्क्सवाद सबसे अधिक शक्तिशाली और सप्राण विज्ञान है। जब आप मार्क्स की किताब, "पूंजी" के पहले भाग को पढ़ते हैं, तो आप अपनेको पूरी तरह सिद्धान्तों की दुनिया में पाते हैं। चूंकि आपने भी मार्क्स की "पूंजी" के पहले भाग को -- कम से कम कर्त्तव्य के रूप में — पढ़ा है, इसलिए आपने भी यही महसूस किया होगा। आप सिद्धान्तों की दुनिया में होते हैं और आश्चर्य करते हैं कि इस सब को अमल में, ज़िंदगी में कैसे लागू किया जाय। साथ ही सिद्धान्तों का यह ज्ञान सबसे ज़्यादा

जीवित और शक्तिशाली है। अमली काम के दौरान में लगातार दूसरे सिद्धान्तों से ज़्यादा इन्हें पढ़ा जाता है।

मार्क्सवाद रचनात्मक कार्य है

मार्क्सवादी बनने के लिए आपको सिद्धान्तों को ज़िंदगी में पचाना होगा। अपने रोज़मर्रा के कामों को सिद्धान्तों से जोड़ना होगा। मार्क्सवादी होने का मतलब रचनात्मक कार्य करना है।

रचनात्मक कार्य से हमारा क्या मतलब है? जो रचनात्मक कार्य करता है और जो मामूली कारीगर है, उन दोनों में क्या भेद है? वही जो एक कलाकार और भद्दे पेंटर में है। व्लादीमिर और सुज़दाल के पेंटरों द्वारा बनाए गए चित्र देखिए। वे सब एक जैसे हैं। किसी भी चेहरे में ज़िंदगी नहीं है। एक व्यक्ति जो रचनात्मक कार्य करता है, उसकी बात ही दूसरी है। वह चाहे आसान से आसान काम क्यों न कर रहा हो, वह साधारण जूता ही क्यों न बना रहा हो, वह उसमें अपना प्राण और मन लगा देगा। एक शिल्पी प्रसिद्ध कलाकार बन सकता है, बशर्ते कि वह अपने काम में अपना मन और प्राण लगा दे। और अगर वह मन न लगाए और वह जो कुछ करता है वह भद्दा हो, तो कलाकार भी शिल्पी ही रह जायेगा। इसी प्रकार जिस मार्क्सवादी ने अपना मन न लगाया हो, जिसका संबंध किसी रचनात्मक कार्य से न हो, जो सदा ही अपने आसपास होनेवाली बातों के प्रति सचेत न हो, वह मार्क्सवादी नहीं कहा जा सकता — वह दिखावटी मार्क्सवादी है। अपने स्थानों में वापिस पहुच कर अगर अपने ज्ञान को आप पंडिताऊ और किताबी तौर पर ही लागू करेंगे, रूढ़िवादिता बरतेंगे तो आप सिर्फ़ लेनिनवाद के शिल्पी ही कहलायेंगे। आप जनता को अपने साथ न ले जा सकेंगे। मार्क्सवादी तरीक़े को लागू करने का आपका अमल

गलत होगा। मार्क्सवादी तरीक़े को सही तौर पर लागू करने का मतलब है — वस्तुस्थिति का अध्ययन करने के लिए मार्क्स के सिद्धान्तों का प्रयोग करना। और हर बार हमारा फ़ैसला नया ही होगा। अगर किसी समस्या को आज आप एक तरह से हल करते हैं, तो कल आप उसे नई तरह से हल करेंगे, क्योंकि कल हालत भिन्न होगी। हालत लगातार बदलती रहती है। इतिहास आगे बढ़ता रहता है। वह कभी रुकता नहीं। वह निर्वाध गति से आगे बढ़ता है। और एक मार्क्सवादी को सदा ही ऐतिहासिक प्रगति के साथ क़दम मिलाकर आगे बढ़ना चाहिए। एक मार्क्सवादी को सदा ही अपनी स्थिति का सही ज्ञान कर लेना चाहिए। वह चाहे जितना भी आसान काम क्यों न कर रहा हो, लेकिन एक मार्क्सवादी का मस्तिष्क चेतन और सक्रिय होना चाहिए। साथियो! अब आपने मार्क्सवाद के तिसाला कोर्स को खतम कर लिया है। यह स्वाभाविक ही है कि आप सोद्देश्य कार्य करने की उच्च भावना से प्रेरित हो रहे हैं। क्योंकि किसी के लिए इस बात से अधिक और बड़ा संतोष क्या हो सकता है कि वह समाज के कुछ काम आया? इससे बड़ा कोई पारितोषिक और क्या होगा? आप अपने मन में चाहे जितनी अच्छी-अच्छी कल्पनाएं कर लें — यह विचार आपको सबसे अधिक संतोष देगा।

युवकों को ज़िंदगी का अमली तजुरबा प्रायः नहीं होता न उन्हें अभी क्रांतिकारी संघर्ष का ही अनुभव है। उन्हें वर्ग-संघर्ष, जनता को अपने पक्ष में लाने, उसका समर्थन हासिल करने का अनुभव भी नहीं है।

मैं चाहता हूं कि आप यह बात समझ लें, आप यह अच्छी तरह जान लें कि आप अगर जनता को जीतना चाहते हैं, तो आपमें बेइन्तहा जोश होना चाहिए। आप यह समझ लें कि बोलते वक़्त अगर आपमें खुद जोश नहीं है और आप सो रहे हैं, तो आपके सुननेवालों का हाल भी बहुत कुछ आप ही की तरह का होगा। मैं आप से साफ़ कह दूं कि सुननेवालों से ज्यादा जागरूक और कोई नहीं है —

बिलकुल छुईमुई की तरह! सुननेवाले सबसे अधिक चेतन बैरोमीटर कहे जा सकते हैं। मंच पर खड़े होकर आप चाहे जितना हकलाएं या हड़बड़ाएं — लेकिन अगर आप में खुद जान है और जोश है, अगर आप महत्वपूर्ण सवाल उठा रहे हैं, और अगर आप बोलते हुए कोई समस्या हल कर रहे हैं, तो आप जनता को अपने साथ ले जायेंगे। यह सब क्या बताता है? यह बताता है कि अगर आप चाहते हैं कि जनता आपका नेतृत्व माने, तो आपमें भी वही जोश होना चाहिए जो उसमें है।

जनता के बीच काम

और अंत में, साथियो, आपकी शिक्षा के बारे में एक और बात कह दूं। इस में कोई शक़ नहीं कि आज आप एक सांस्कृतिक शक्ति हैं, और भविष्य में भी रहेंगे।

हमारा सोवियत देश आज एक महान देश है। हमारी पार्टी के दस लाख से ज़्यादा मेंबर हैं। लेकिन दस लाख की हमारी इस पार्टी में और हमारे पूरे देश में अभी भी संस्कृति का स्तर नीचा है। इसलिए भविष्य में अपने काम के दौरान में कभी भी जनता के सामने अकड़ मत दिखाइयेगा। कभी नहीं। इस मामले में हमारी जनता बिलकुल छुईमुई है। जनता से बात करने का एक ही तरीक़ा है कि उनसे खुले तौर पर ईमानदारी से बात की जाय। उनसे बातें करते वक़्त हमें यह महसूस करते रहना चाहिए कि उनमें भी हमारे ही बराबर सामान्य ज्ञान है और वे भी मसले को हल करने की उतनी ही क़ाबिलीयत रखते हैं, जितनी कि खुद वक्ता या लेखक रखता है।

अब आप स्कूल छोड़ने वाले हैं, अतः आपसे मैंने यह कुछ शब्द कहना आवश्यक समझा...

"इज़वेस्तिया", २७ जून १९२६

अपना विकास कीजिए

द्नेप्रोपेत्रोव्स्क में नौजवान कम्युनिस्ट लीग के सक्रिय सदस्यों के सम्मेलन में दिए गए भाषण का अंश

३ मार्च १९३४

हम कोम्सोमोल के सदस्यों की क़द्र इसीलिए नहीं करते कि वे पायोनीयरों* के शब्दों में वृद्ध बोल्शेवीकों के "उत्तराधिकारी" हैं, बल्कि इसलिए भी कि ये "उत्तराधिकारी" हमारे देश के निर्माण में सक्रिय हिस्सा लेते हैं, क्योंकि वे भी देश की रचनात्मक शक्तियों के अंग हैं। इसी कारण लेनिनवादी कोम्सोमोल पर महान ज़िम्मेदारियां आ जाती हैं। कोम्सोमोल के हर संगठन की पहली ज़िम्मेदारी है, जैसी आम तौर पर हर संगठन की होती है कि वह यह जाने कि ज़्यादा से ज़्यादा उपयोगी बनने के लिए वह अपनी शक्तियों को तेज़ी से किस ओर लगाए और उनका क्या उपयोग करे।

जो कमांडर एक ही समय में अपनी तमाम शक्तियों को मोर्चे पर झोंक देता है, वह हमेशा अच्छा अफ़सर नहीं होता। मोर्चेबंदी में हमेशा ऐसा करना ज़रूरी नहीं। एक अच्छा कमांडर वह है जो अपने आदमियों की अधिकाधिक शक्ति फ़ैसलाकुन लड़ाई के लिए बचा लेता

है। एक बार कामरेड बुद्योन्नी ने गृह्-युद्ध के ज़माने में किसी व्हाइट-गार्ड कमांडर द्वारा की गई ग़लती का सही ही ज़िक्र किया था। दोनों ही अज़ोव स्टेपी के पार समानांतर अपनी फ़ौजों का नेतृत्व कर रहे थे। बुद्योन्नी अपनी फ़ौजों को बस्तियों की ओर आगे बढ़ा रहे थे, जहां लाल फ़ौज के सिपाही रात में सो सकते और घोड़ों के लिए चारा-पानी पा सकते। दूसरी ओर दुश्मन धूप से तमतमाती खुली हुई स्टेपी की तरफ़ से बढ़ रहा था। इस तरह वे २०० किलोमीटर से ज्यादा आगे बढ़ गए। बुद्योन्नी की फ़ौजें जब अपनी मंज़िल पर पहुंचीं तो वह थकी न थीं, बल्कि मोर्चा लेने को तैयार थी। इसके बरख़िलाफ़, दुश्मन पूरी तरह थक चुका था अतः कामरेड बुद्योन्नी ने उसे मार भगाया। मैं कहना यह चाहता हूं कि हर संगठनकर्ता को चाहिए कि वह अपने काम का उचित प्रबंध करे, समय रहते हर परिस्थिति को समझ ले और अपनी समूची शक्ति, संगठन की पूरी शक्ति सिर्फ़ ज़रूरत के समय ही लगावे।

एक और मिसाल ले लीजिए: कोम्सोमोल के सदस्यों में बहुत से टेकनिकल कालेजों, विश्वविद्यालयों और टेकनिकल स्कूलों के विद्यार्थी हैं। अक्सर इन पर शक्ति से अधिक काम लाद दिया जाता है। और अगर विद्यार्थी अपने अध्ययन, समाजी काम और आराम के टाइमटेबुल को उचित तौर पर संगठित नहीं करते, तो ग्रेजुएट होने तक उनमें से कुछ का स्वास्थ्य गिरा हुआ होगा। किसी को दिल की शिकायत होगी, किसी का गुरदा बेकार हो गया होगा और किसी का हाज़मा गड़बड़ मिलेगा। अब यह कौन देखे कि हमारे विद्यार्थियों का जीवन उचित तौर पर संगठित हो? इन के प्रति पहली और सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी किसकी है? कोम्सोमोल की। यह उसी का काम है। उसे यह काम देखना चाहिए। प्राइमरी स्कूलों से विश्वविद्यालयों तक उसे इस विषय पर रोज़मर्रा ध्यान देना चाहिए। सरकार की उचित

हिदायतों के पालन करने में मदद देना और विद्यार्थियों के अध्ययन और जीवन को सुसंगठित करना — यह कोम्सोमोल का ही कर्तव्य है।

समाजवादी निर्माण-कार्य में लगा हुआ हमारा मज़दूर राज्य पूंजीवादी देशों से घिरा हुआ है, यानी हम लगातार ही दुश्मन के हमले के लिए खुले हैं। हमें अपने दैनिक जीवन के शांतिपूर्ण कार्यों में लगे होने पर भी, एक क्षण के लिए यह बात नहीं भुलानी चाहिए। हम सब को चाहिए कि हम हमेशा सचेत रहें और अपने काम की जगह पर डटे रहें।

युद्ध की स्थिति में हमारी फ़ौजों के निर्माण में सबसे ज़्यादा किसका हाथ होगा? बहुत बड़े पैमाने पर हमारी फ़ौजों में कोम्सोमोल के सदस्य ही होंगे। इसीलिए कोम्सोमोल के सदस्यों को विशेष रूप से सचेत रहना चाहिए। उन्हें यह हमेशा याद रखना चाहिए कि कम्युनिस्ट पार्टी की रहनुमाई में दुश्मन के हमले की स्थिति में उन्हें ही कंधों से कंधा भिड़ाकर पहले झोंके के भार को संभालना होगा। प्रसिद्ध है कि दुश्मन के पहले हमले सब से ज़्यादा हिंसात्मक होते हैं, इसलिए कोम्सोमोल के सदस्यों और उनको मानने वाले युवकों का यह कर्तव्य हो जाता है कि वे फ़ौजी टेकनीक का पूरा पूरा ज्ञान हासिल करें। जहां तक सुरक्षा-कार्यवाही का संबंध है, कामरेड वोरोशीलोव ने कोम्सोमोल के लिए बिल्कुल स्पष्ट और ठोस काम बताए हैं। उनको सभी जानते हैं। उन्हें पूरा करना है। यहां उनको दोहराने की ज़रूरत नहीं है।

यहां पर कोम्सोमोल कार्यक्रम के उस बहुत ही महत्वपूर्ण अंग, शारीरिक व्यायाम की ओर आपका ध्यान खींचना ज़रूरी है। खेल-कूद अच्छी चीज़ है। उससे आपका निर्माण होता है। लेकिन वह जितना भी है, जीवन में उसका स्थान प्रथम नहीं है। अतः खेल-कूद को जीवन का लक्ष्य बना लेने, उसे सिर्फ़ रिकार्ड तोड़ने का रूप दे देने

से कुछ नहीं होगा। हम चाहते हैं कि लोगों का बहुमुखी विकास हो। हम चाहते हैं कि वे अच्छी तरह दौड़ सकें, तैर सकें, उनकी चाल फ़ुर्तीली हो, और उनके शरीर का हर अंग सुगठित और सुघड़ हो। एक शब्द में कहें, तो हम चाहते हैं कि वे प्रकृत और स्वस्थ हों, और श्रम और सुरक्षा के लिए सदा तत्पर रहें। हम चाहते हैं कि शारीरिक विकास के साथ ही उनका मानसिक विकास भी हो।

कामरेड वोरोशीलोव और मैं अनेक फ़ौजी स्कूलों में गए और उन्होंने विशेषत: इन बातों की तरफ़ ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि हम लोगों को सिर्फ़ रिकार्ड तोड़ने, खेल-कूद सिर्फ़ खेल-कूद के लिए, वाले रवैये से बचना चाहिए। खेल-कूद कम्युनिस्ट शिक्षा की आम समस्याओं के मातहत होना चाहिए, क्योंकि हम सिर्फ़ खिलाड़ियों की ट्रेनिंग और उनका विकास नहीं कर रहे हैं। हम लोग ऐसे नागरिकों का विकास कर रहे हैं जो सोवियत देश के निर्माण में लगें — ऐसे नागरिक, जिनका पाचन और बांहें ही मज़बूत नहीं, बल्कि जिनमें राजनैतिक चेतना और संगठन की क़ाबिलीयत है। इसलिए, जहां हम शारीरिक व्यायाम के आंदोलन में लाखों नए मेहनतकश युवकों को लायेंगे और अपने देश में खेल-कूद को ऊंचे से ऊंचे स्तर पर ले जाने की कोशिश करेंगे, वहां कोम्सोमोल को यह भी ध्यान रखना है कि हमारे खिलाड़ियों का राजनैतिक मसलों और सार्वजनिक सवालों पर स्पष्ट और निश्चित मन हो।

मैं चाहूंगा कि कोम्सोमोल के सदस्य मुझे सही तौर पर समझ लें। मैं नहीं चाहता कि वे यह कल्पना करें कि मैं उनके जोश को ठंढा करना चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि वे समझ लें कि जीवन के हर क्षेत्र में यह कितना महत्वपूर्ण है कि चीज़ें सही तौर पर और बोल्शेवीक ढंग से संगठित की जायें।

विशेषत: मैं चाहता हूं कि नौजवानों के बीच भाईचारे की

भावना के बारे में कुछ कहूं। तरुणाई में मैत्री भावना प्रबल होती है। इसी अवस्था में वे साथियों को सामूहिक सहायता देने के लिए सबसे ज़्यादा तैयार होते हैं। कभी ही — सौ में दो या तीन बार — ऐसा होगा कि एक तरुण अपने ज़रूरतमंद साथी को दग़ा दे। युद्ध के मोर्चे पर भाईचारे की यह भावना असाधारण महत्व की हो जाती है। फ़ौज की वही टुकड़ी लड़ने में असाधारण उच्च कोटि की होगी, जिसका हर आदमी अपने बग़लवाले साथी की दृढ़ता पर भरोसा करता है। तब उसे दुश्मन की गोलाबारी से कोई घबराहट न होगी। और यदि हुई भी, तो वह बहुत कम हो जायेगी। ये सब बातें सिपाहियों में एकता और अनुशासन की भावना को मज़बूत करती हैं। नौजवानों में भाईचारा और वर्ग-मैत्री की भावनाओं का हर तरह से विकास करना चाहिए। भाईचारे की भावना एक विशिष्ट समाजवादी गुण है और हर जगह, विशेषकर वर्ग-संघर्ष के दौरान में इसकी ज़रूरत है।

बहुत से लोग भाईचारे की भावना को अर्थहीन, शब्द-मात्र समझने के आदी हो गए हैं। अगर इस भावना का उचित विकास किया जाय, अगर कोम्सोमोल के सदस्यों और उन तरुणों में भी, जो कोम्सोमोल के सदस्य नहीं हैं, इस भावना का विकास किया जाय, और साथियों तथा दोस्तों से मिलकर काम करने से हासिल होनेवाली खुशी का महत्व सब को समझाया जाय, कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने और कार्य-क्षमता बढ़ाने के उपाय निकाले जायें, फ़ुरसत के समय साथ-साथ रहने, शारीरिक व्यायाम और खेल-कूद में भाग लेने आदि का प्रबंध किया जाय, तो यह दोस्ती समाजवादी प्रतियोगिता के लिए एक बहुमूल्य देन होगी और इसके शुभ परिणाम होंगे।

हमारे कोम्सोमोल के सदस्य असाधारणतया अच्छे और बहुत ही दिलचस्प दौर से गुज़र रहे हैं। मानव इतिहास में तरुणों की किसी भी पीढ़ी ने इस तरह का अनुभव नहीं पाया।

सच तो यह है कि एक ऐसे काल में, जब महान ऐतिहासिक उथल-पुथल न हो रहे हों, लोग ज़रा भी प्रगति किए बिना सत्तर बरस तक जी सकते हैं। जब ज़िंदगी में कोई महान परिवर्तन न हो रहे हों, तब एक आदमी पैदा होकर एक ही घर में बूढ़ा हो सकता है और वहीं मर भी सकता है।

आज हम एक महान ऐतिहासिक उथल-पुथल के युग में रह रहे हैं। हमारी ही आंखों के सामने अब भी ऐसे राज्य हैं जहां सामंतवाद के अवशेष प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं। इसी जमाने में रूस, जो कभी युरोप का सबसे बर्बर देश और राष्ट्रों का जेलखाना माना जाता था, समाजवाद की ओर पूरी शक्ति से बढ़ रहा है।

इतिहास में इससे ज्यादा दिलचस्प युग कब रहा है? इतिहास में हमारे जमाने के अलावा कब इतना शौर्य और मानवीय नाटक देखने को मिला है?

यद्यपि फ़्रांसीसी क्रांति बड़ी घटनापूर्ण भी थी, तो भी वह हमारी क्रांति के समान शौर्यपूर्ण एवं नाटकीय नहीं थी। हमारी क्रांति और उस क्रांति का कोई मुक़ाबला नहीं। यद्यपि वह क्रांति अपने काल के लिए बहुत ही बड़ी प्रगति थी, फिर भी वह थी बुर्जुआ क्रांति ही। हमारी समाजवादी क्रांति ने इतिहास में पहली बार सबसे ज्यादा प्रगतिशील, अगुआ-वर्ग — मज़दूर-वर्ग — के हितों के लिए संघर्ष किया। और इस तरह वह समूची मेहनतकश मानवता के लिए संघर्ष-शील है। कोम्सोमोल के सदस्यों, हमारे तरुण युवकों को मैं सलाह दूंगा कि वे गोर्की के "तूफानी पंछी" (स्टार्मी पेट्रल) को पढ़ें जो लाजवाब तरीक़े से पुराने रूस के बढ़े हुए लोगों की क्रांतिकारी मनोदिशाओं को चित्रित करता है।

जो समाजवादी आंदोलन में अपना जीवन लगा देता है, वह ज़िंदगी बदलता है, लड़ता है, प्राचीन को नष्ट करता है और नवीन

का निर्माण करता है। सोवियत समाज, जिसमें हम रहते हैं, सभी को — तरुण मज़दूर और किसान — को अपनी तमाम योग्यताओं को हद दरजे तक विकसित करने का अवसर देता है। यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि मानव इतिहास में वर्तमान युग से अधिक दिलचस्प और कोई युग नहीं हुआ, क्योंकि अक्तूबर क्रांति से पहले आम लोग रोटी के टुकड़ों के लिए लड़ते थे और कुछ अमीर लोग करोड़ों मेहनतकशों पर प्रभुत्व जमाए रहते थे।

इसमें संदेह नहीं कि जल्दी ही हमारे संघर्ष के, एवं हमारे देश में हो रहे पुनर्निर्माण के आधार पर महत्वपूर्ण कला की रचना होने लगेगी। इस में संदेह नहीं कि हमारे क्रांतिकारी युग की महान सफलताओं में ही कलाकारों को अपनी कला के लिए शानदार विषय मिलने लगेंगे। सचमुच ऐसे युग में रहना बहुत ही खुशी की बात है। अपनी ५८ वर्ष की आयु के बावजूद इस युग में रहने के कारण मैं अपने को बहुत भाग्यवान समझता हूं। हम जानते हैं कि कम्युनिज़्म आयेगा। तब जीवन बहुत ही दिलचस्प और शानदार होगा। लेकिन सबसे अच्छा अवसर अब है जब कि वर्ग-संघर्ष चल रहा है, जब आप खुद इस संघर्ष में हिस्सा ले सकते है और यह जानते है कि इस संघर्ष में विजयी मज़दूर-वर्ग ही होगा।

यह सब हमारे युवकों को समाजवादी प्रयासों में नया कमाल दिखाने के लिए उत्साहित करेगा। हम देखते हैं कि हर दिन लेनिनवादी कोम्सोमोल के मानस-पुत्र जिनका लालन-पालन पार्टी द्वारा हुआ है, समाजवादी उद्देश्य के प्रति अपनी लगन की महानता प्रदर्शित करते रहते हैं — पार्टी के आह्वान पर वे किस तरह संस्कृति और टेकनीक के क्षेत्रों में विजय पा रहे हैं; खानों से खनिज पदार्थ निकाल रहे हैं; भूगर्भ में रेलवे का निर्माण कर रहे हैं, बादलों को पार कर, क्षितिज तक धावा मारते हैं, दुरूह आर्कटिक के ख़िलाफ़ साहसपूर्ण

संघर्ष चला रहे हैं। इस तरह वे सोवियत वीरों की पहली पंक्ति में अपना स्थान प्राप्त कर रहे है। कोम्सोमोल के रूप में हमारी पार्टी और सरकार के पास देश की तरुण पीढ़ी के प्यार, लगन और श्रद्धा की अक्षय निधि है। हम प्रौढ़ बोल्शेविकों का सही विश्वास है कि कोम्सोमोल के सदस्य हमारे सोवियत देश के नव-निर्माता है।

अगर आप सच्चे कम्युनिस्ट है, तो आप अपने जीवन के अंत तक तरुण बने रहेंगे।

मैंने सच्चा कम्युनिस्ट क्यों कहा? कम्युनिज्म लोगों को इस तरह उत्साहित क्यों करता है? एक सच्चे कम्युनिस्ट की व्यक्तिगत परेशानियां उसके दिमाग में पहला स्थान ही नहीं पाती। अगर परिवार में कोई दुःखद घटना हो जाती है, तो यह दुःखद अवश्य है, लेकिन मैं जानता हूं कि उससे समाजवाद को हानि नही होगी, इसलिए जो काम सामने है उसको भी हानि न होनी चाहिए। यह कहने की कोई ज़रूरत नही कि अगर आप अपने घरेलू मामलों मे ही परेशान रहते है, अगर आप हमेशा अपने ही बारे में और अपनी फ़िकरों के सबंध में ही सोचते रहते है, तो आप सच्चे कम्युनिस्ट नही हो सकते। लेकिन अगर आप सचमुच सक्रिय कार्य में लग जायें, रचनात्मक कार्यो में सक्रिय भाग लेने लगें तो अक्सर ऐसा होगा कि आप जीवन की छोटी छोटी बातों को, व्यक्तिगत परेशानियों को भूल जायेंगे।

एक दृढ कम्युनिस्ट बनने के लिए पहली ज़रूरत है कि हर मसले पर आपका दृढ़ कम्युनिस्ट दृष्टिकोण हो। कम्युनिस्ट नज़रिया हमें हर समस्या को होशियारी से समझने, और हर परिस्थिति पर सही दृष्टि बनाने की समझ देता है। सर्वहारा क्रांति के लड़ाकुओं के लिए कम्युनिस्ट दृष्टिकोण वैसे ही है, जैसे एक खगोल-शास्त्री के लिए तेज़ दूरबीन, या विज्ञानशाला में खोज करनेवाले के लिए खुर्दबीन। कम्युनिस्ट नज़रिया एक राजनैतिक कार्यकर्ता को, सार्वजनिक मामलों

में सक्रिय रहनेवाले व्यक्ति को, अपने आसपास की स्थिति को सही और विशद रूप में समझने, जनता को संगठित करने और संघर्ष में उनका नेतृत्व करने, तथा भविष्य की स्थिति को सही तौर पर आंकने-समझने की योग्यता देता है। यह सब मिलकर व्यक्ति को शक्ति देते है कि वह छोटी-छोटी निजी दुर्भाग्यताओं के असर से ही न अछूता हो जाय, बल्कि बड़ी विपदाओं के प्रति भी उसका नजरिया ऐसा ही हो जाय। अगर आप का जीवन समाज और सामूहिकता की भावना से परिचालित होता है, अगर समाज की भलाई ही आपकी सब से बड़ी चिंता है, अगर आपकी आशाओं और हितों में मेल है—तो बूढ़े कम्युनिस्ट होने पर भी आप वास्तव में तरुण रहेंगे।

गृह-युद्ध और समाजवादी पुनर्निर्माण के कालों को ले लीजिए। उन दिनों हमारी तमाम मेहनतकश जनता ने, जिसमें बूढ़े भी शामिल है, शौर्य और उत्साह की आश्चर्यजनक मिसालें पेश की, लाजवाब कमाल दिखाये और वह अब भी दिखा रही है। हमारी जगह लेनेवाले कोम्सोमोल के सदस्य, तरुण मजदूर और किसान सभी को, यह पूरी तरह समझ लेना है। प्रौढ़ बोल्शेविकों से, संघर्षों में से इस्पात बनकर निकले मजदूरों से उन्हें सामूहिकता की आदतें लेनी चाहिए; उनसे सीखें कि अपने काम में प्राण और मन कैसे लगाया जाय और कैसे रोज़मर्रा घटनाओं को समझा जाय और उन पर कैसे अन्तर्निहित संदर्भों को समझा जाय।

कोम्सोमोल के सदस्य, विशेषकर वे जो सब से ज़्यादा सक्रिय हैं, अक्सर शिकायत करते है कि उन्हें पढ़ने और बुद्धि विकास करने का समय नहीं मिलता। मै भी व्यस्त आदमी हूं। लेकिन मैं हर दिन पढ़ने के लिये समय लगाता हूं। मै हर रोज़ कम से कम ८-१० पन्ने मार्क्स-वादी साहित्य पढ़ता हूं, और साथ-साथ नये से नये उपन्यास भी।

कोम्सोमोल के सदस्य और विशेषत: वे जो सबसे ज़्यादा सक्रिय हैं,

सख्त काम करते है। उनको बहुत काम करना भी है। तो भी यह उनका कर्तव्य है कि वे अपने को हर तरह से विकसित करे।

समाजवाद के निर्माण के लिए शिक्षित लोगो की आवश्यकता है। लेकिन वे, जो सिर्फ पढते रहते है, शिक्षित नही समझे जा सकते। शिक्षित वे है जो भौतिकवादी दर्शन का पूर्ण अध्ययन करते है, विज्ञान पर अधिकार प्राप्त करते है, जो पढा है उसपर मनन करते है और यह समझते है कि क्रांतिकारी विचारधारा को क्रांतिकारी अमल मे कैसे लाया जाय।

इसमे सदेह नही कि यदि कोम्सोमोल के सदस्य अपने समय का उचित प्रयोग करे, तो उन्हे सैद्धान्तिक अध्ययन के लिए भी काफी अवसर मिल सकेगा।

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा" २८ मई १९३४

"उचितेल्स्काया गज़ेता" अख़बार के संपादक मंडल द्वारा आयोजित शहरों और गांवों के सर्वश्रेष्ठ स्कूल-मास्टरों के सम्मेलन में दिया गया भाषण

२८ दिसंबर १९३८

मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांतों का पूरा ज्ञान कैसे प्राप्त किया जाय

साथियो, अपने देश में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के क्रांतिकारी सिद्धांतों और बोल्शेविक पार्टी के इतिहास के अध्ययन के बारे में बहुत कुछ कहा जा रहा है। मुख्य बात इन सिद्धांतों के तत्वों को समझना, उन्हें अमल में लाना सीखना और अपनी पार्टी के क्रांतिकारी संघर्ष के अनुभव को ग्रहण करना है।

मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांत, विश्वास अथवा मत मात्र नहीं हैं। वह तो कर्म के लिए पथ-प्रदर्शक है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के बारे में बातें करते हुए कुछ लोग कहते हैं—"कितना गूढ़ साहित्य है", "बहुत ही गंभीर", इत्यादि। लेकिन हमें साफ़-साफ़ यह समझना चाहिए कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद की मुख्य बात उसके शब्द नहीं, बल्कि उसका तत्व है, उसकी क्रांतिकारी आत्मा है।

जब हम कहते हैं कि "मार्क्सवाद-लेनिनवाद का सर्वांगीण ज्ञान प्राप्त करो," तो इसका मतलब क्या है? इस बात को हम किस तरह समझें? क्या इसका मतलब है कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद का ज्ञान बने-बनाए फ़ार्मूलों और नतीजों से हासिल करो? या इसका मतलब है कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के तत्व का ज्ञान हासिल करो और इन सिद्धांतों को जीवन में -सामाजिक, राजनैतिक और व्यक्तिगत जीवन में — पथ-प्रदर्शक के रूप में लागू करो! यह दूसरा मतलब ज़्यादा सच और ज़्यादा सही है, क्योंकि यह मार्क्सवाद-लेनिनवाद का बुनियादी स्वरूप है। हम जब "मार्क्सवाद-लेनिनवाद के पूर्ण ज्ञान" की बात करते हैं, तो उसका मतलब यही है कि इन सिद्धांतों के सक्रिय रूप को समझा जाय।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद को कोई भी करीब-क़रीब सही रट सकता है। लेकिन उसके सार-तत्व को ग्रहण करना और उसे अमल में लागू करना सीखना ज़्यादा मुश्किल है...

मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन केवल अध्ययन के लिए नहीं करना चाहिए। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का ज्ञान केवल पुस्तकीय ही नहीं करना चाहिए। पुराने जमाने में जैसे प्रश्नोत्तरी का अध्ययन होता था, वैसे मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन नहीं हो सकता। हम मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन एक विधान के रूप में करते हैं, एक ऐसे साधन के रूप में जिसकी सहायता से हम अपने राजनैतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत व्यवहार को सही तौर से निश्चित कर सकते हैं। हमारी दृष्टि में असली जिंदगी का ही सर्वोपरि महत्व है।

अब हम सब के सामने यह समस्या है कि मार्क्सवाद और लेनिनवाद को अमल में ज़्यादा सही तौर से लागू करना कैसे सीखें? सबसे पहले, आम रूपरेखा के रूप में, हमें मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सार-तत्व को जानना चाहिए। हमें कम से कम कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास की मोटी-मोटी रूपरेखा मालूम होनी चाहिए। जब आप पार्टी का इतिहास पढ़ें तो इस

बात पर ध्यान दे कि भिन्न भिन्न परिस्थितियों मे कुछ अमली समस्याओं को बोल्शेविकों ने किस तरह हल किया। उन्होंने उन समस्याओं का वही हल क्यों निकाला, और कुछ क्यों नही। मिसाल के तौर पर हम लोगों ने बुलीगिन दूमा का बायकाट क्यों किया? इस फैसले के पीछे कौन उद्देश्य थे? और फिर बाद मे, जब राजनैतिक स्थिति हमारे पक्ष मे उतनी न थी, हमने क्यों दूसरी, तीसरी और चौथी दूमा के चुनाव मे हिस्सा लिया? क्यो? इन समस्याओं (और पार्टी के इतिहास मे ऐसी अनेक समस्याएं आई, क्योंकि अनेक सघर्ष हुए थे) के विश्लेषण मे यह मालूम हो सकेगा कि मार्क्सवादी-लेनिनवादी विधान कैसे लागू करना चाहिए। और कैसे भिन्न भिन्न राजनैतिक परिस्थितियों मे किन्ही समस्याओ का हल ढूढना चाहिए। अथवा आजकी समस्याओं का कैसे हल निकालना चाहिए।

यह कहने की जरूरत नही कि इस बात का सदा ध्यान रक्खा जाय कि क्या क्या परिवर्तन हो चुके है और कौन कौन सी नई हालतें पैदा हो गई है। इसी कारण मार्क्सवाद-लेनिनवाद के अध्ययन मे यह सब से ज्यादा महत्वपूर्ण है कि अपने को आज की समस्याओं के हल की कसोटी पर परखा जाय। रोजमर्रा की जिदगी से कुछ मिसाले हम ले ले। मान लीजिए, एक मास्टरनी ने अपने पति से सबध तोड लिया है। इस तरह के मामले मे मार्क्सवादी दृष्टिकोण से क्या रुख होना चाहिए? क्या करना चाहिए? इस तरह के सवाल के प्रति भी सही रुख होना चाहिए। इस पर मार्क्सवादी ढग से बहस करनी चाहिए और इसका हल भी मार्क्सवादी तरीके पर होना चाहिए। सब से सीधा रुख तो यह है कि यह व्यक्तिगत मामला है और इसका राजनीति मे कोई वास्ता नही (जाहिरा तौर पर यह लगभग सही रवैया होगा)। लेकिन जिस हद तक हर आदमी यह बात जान जाता है, स्कूल के बच्चों में बातें होने लगती है, गाव में फुसफुस फैलने लगती है और मास्टरनी का प्रभाव कमजोर होने लगता है, उस हद तक इस मसले

पर एक बुद्धिमत्तापूर्ण स्पष्टीकरण ज़रूरी है। कभी-कभी बिलकुल घरेलू मामला भी सामाजिक और राजनैतिक समस्या का रूप ले लेता है। हर दिन की ज़िदगी अनेक तरीक़ों की असंख्य समस्याओं से भरी पड़ी है। मार्क्सवादी की कसौटी यह है कि वह इन मामलों में मार्क्सवादी दृष्टिकोण से सही हल निकाल पाता है या नही और सही रुख बना लेता है या नहीं।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद समस्याओं के संभावित हल की कुंजी है। वह समस्याओं के ज़्यादा सही हल को संभव कर देता है, उनको हल नहीं कर देता। हर मौक़े के लिए यह बना-बनाया नुस्खा नही है। अहम मसलों को हल करने के दौरान में ही यह पता चलेगा कि सच्चा बोल्शेविक-मार्क्सवादी कौन है और कौन किताबी पांडित्य-प्रदर्शक है?

निस्संदेह ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद का पूर्ण ज्ञान हासिल किया है और जो सिद्धांतों को अमल में भी ला सकते हैं। साथ ही ऐसे आदमी भी हैं जिनकी खोपड़ियां आलू के बोरों की तरह किताबी ज्ञान से भर गई हैं, लेकिन वह अपने ज्ञान को अमल में लागू करने के योग्य नहीं हैं। ऐसे लोग आपको आदि से अंत तक सब कुछ लेक्चर में बता देंगे। लेकिन अगर आप अपने स्कूल के किसी वाक़ए को बताएं — मिसाल के तौर पर मान लीजिए कि आपके स्कूल में पढ़ने वाले एक लड़के को उसके पिता ने पीट दिया — और आप पूछें कि सामाजिक दृष्टि से इस बारे में क्या रुख अपनाना चाहिए, तो ऐसे लोग पूरी तरह उलझन में पड़ जाते हैं। और अगर वह कोई सुझाव देंगे तो वह अवसरवादिता से पूर्ण होगा, जिसका मार्क्सवाद-लेनिनवाद से कोई संबंध न होगा — चाहे वह अनेक उद्धरण ही क्यों न दे दें। अवसरवाद हमेशा ही मार्क्सवाद-लेनिनवाद से दो-टूक इनकारी नहीं करता। कभी-कभी यह किताबी-पन, विचारों की रूढ़िवादिता में भी प्रदर्शित होता है।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सैद्धान्तिक सार के आधार पर अमली समस्याओं का हल खोजना ही बोल्शेविज़्म की शिक्षा है।

किसी किताब का निरा अध्ययन सिर्फ उसका अध्ययन भर ही है। इससे अधिक और कुछ नहीं। और जिस तरह बच्चों के लिए स्कूल सिर्फ स्कूल है, उनकी पूरी जिंदगी नहीं, उसी तरह शिक्षा-संस्थाओं में, अध्ययन-मण्डलों में भी स्वतंत्र तौर पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन सिर्फ अध्ययन ही है। इस तरह के अध्ययन से एक व्यक्ति को मार्क्सवाद-लेनिनवाद का किताबी ज्ञान हो जाता है, लेकिन जब वह राजनैतिक जीवन में, अमली अखाड़े में उतरता है और ऐसा सचेतन रूप में करता है, तो दूसरी बात है। रोज-ब-रोज जिंदगी में आनेवाली समस्याओं के अमली हल ढूंढ लेने से ही मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अनुभव प्राप्त होता है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद की मुख्य ट्रेनिंग इसी से मिलती है और इसी से सच्चे मार्क्सवादी-लेनिनवादी बनते है।

विचार-विमर्ष द्वारा या भाषण सुनकर किसी को मार्क्सवाद की मुख्य शिक्षा नहीं मिलती। यह तो सिर्फ सहायक मात्र है।

आपकी मुख्य शिक्षा तब होगी जब आप लोगों से तर्क करेंगे, जब उनसे बातें करेंगे, उदाहरण के लिए जब आप एक अन्यमनस्क शिष्य के बारे में कोई फैसला करें कि उसको नंबर कम दिए जाएं, निकाल दिया जाय या उसके साथ मुलायम रुख अपनाया जाय।

इसी तरह की समस्याओं के हल के दौरान से आपको मार्क्सवाद-लेनिनवाद की मुख्य शिक्षा मिलेगी।

जिस तरह एक कारखाने में एक इंजीनियर का काम है कि वह अपनी टेकनिकल शिक्षा को अमल में लाए और अनुभव एकत्र करे, जिस तरह एक शिक्षक का काम है कि अपने ज्ञान को फौरी तरह से अपने स्कूल के काम में लाए, उसी तरह मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांतों और अमल की अटूट एकता है।

अब आप यह समझ गए होंगे कि मैं किस बात पर बल दे रहा था। मैं इस बात को स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए विशेष फ़ार्मूले और नतीजे रट लेना ही काफ़ी नहीं है, और न ही यह काफ़ी है कि उसके सार को ही जज़्ब कर लिया जाय। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का सच्चा ज्ञान प्राप्त करने के लिए, इसके साथ, अमली समस्याओं के हल के लिए इन विचारों को लागू करना सीखना चाहिए, अपने अनुभवों से उस विचार-धारा को विकसित करके और भी आगे बढ़ाया जाय। यह सबसे मुश्किल काम है... अगर आप मार्क्सवादी हैं तो ज़िंदगी में आपको हर स्थिति का ठोस अध्ययन करना है। और यह कहने की ज़रूरत नहीं कि आपसी विचार-विमर्ष उसको और अच्छी तरह समझने में सहायक होगा। जब एक चीज़ पढ़ते हैं तो आप एक तरह से उसे समझेंगे। शायद आप उसे तीन दृष्टियों से देख लें, लेकिन चौथी दृष्टि नहीं होगी। अंततः हो सकता है कि आप चारों तरफ़ से समस्या को देख रहे हों और आपको पता लगे कि यह वर्गाकार नहीं, वरन् घनाकार है और इसकी छः भुजाएं हैं। इसलिए आप जब दूसरों से किसी मसले पर बहस करते हैं, तो आप ज़्यादा उत्सुक और ज़्यादा ज्ञानी हो जाते हैं।

आप कहते हैं कि आपको विचार-विमर्ष की ज़रूरत है। ठीक है। आपको विचार-विमर्ष से रोक कौन रहा है? ५ या १० आदमी इकट्ठे हो जाइए। क्या किसी सवाल पर पूरी बहस के लिए ५ आदमी काफ़ी नहीं हैं? आपको कौन रोकता है? और यदि आप किसी समस्या पर लेख लिखें तो आपसे मैं स्पष्ट कह दूं कि आप उसके बारे में सुनकर जितना जान पायेंगे, उससे ५ गुना ज़्यादा आपको लिखकर मालूम होगा। क्योंकि एक लेख लिखते वक्त आपको हर शब्द और हर विचार पर सोचना पड़ता है। लेख लिखने के लिए आपको लेखन-सामग्री के स्रोतों तक जाना होता है। जब आप लेख लिखते हैं, तो

समस्याओं की गहराई मे कही अधिक जाना पड़ता है। एक भाषण से आप कितना लाभ उठाते है, यह कई चीज़ों पर निर्भर है — भाषण देने वाला व्यक्ति कैसा है, आपकी मानसिक स्थिति कैसी है। भाषण के समय हो सकता है आप अपने पास वाले से बातें करने लगें। आप खुद जानते है कि भाषणों में एक हिस्सा तो उपयोगी सूचना होती है, और तीन हिस्से पानी होता है। (जोरदार हसी) दुर्भाग्य यह है कि हम नही जानते कि पानी कैसे निकाल फेंका जाय। और उसको निकालने की जरूरत तो होती है। कुछ भी हो आप इसको बिल्कुल निकाल नही सकते। यह मत समझियेगा कि मै भाषणों के खिलाफ हूं। यह कहने की जरूरत नही कि भाषण शिक्षित करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। मै तो सिर्फ यह कह रहा हूं कि आपको स्वतत्र काम करने के लिए प्रोत्साहित करू। फिर तो आप खुद भाषणों में उपस्थित होने, उनको ध्यान से सुनने के लिए मजबूर होंगे।

अध्ययन-मण्डलों को क्या समझना चाहिए? "मण्डल" सकुचितता का द्योतक भी हो सकता है। तो क्या उनके द्वारा सामूहिक विचार-विमर्ष की सभावना नही? सभावना अवश्य है। सामूहिक विचार-विमर्ष और व्यक्तिगत अध्ययन में, जो अध्ययन का मुख्य तरीका है, समन्वय करना चाहिए। घर पर तैयारी कीजिए। लेख "सर्किल" या सभा में पढ़ दीजिए। फिर उस पर आम बहस कर डालिए। बनावटी बहस की ज़रूरत नही है। जरूरत है ऐसे विचार-विमर्ष की, जिसमें उठाए गए प्रश्नों पर हर आदमी अपनी सच्ची राय व्यक्त करता है, और जो वह सही समझता है उसे कहने में डरता नही। अगर आपके लेख में कहीं पर ज़रा सी भी आपकी सच्ची राय आ गई होगी, तो मुझे पूरा विश्वास है कि बहुत गरमागरम बहस होगी। ऐसी बहस, यदि वह पुश्किन पर भी हो तो मार्क्सवाद-लेनिनवाद का शानदार पाठ होगी।

जब आप तर्क करें तो आप अपने ही शब्दों, अपनी ही भाषा

में बहस करें। लोगों को तर्क करना चाहिए — बनावटी तौर पर नहीं, बल्कि बुनियादी सिद्धांतों के बारे में, यानी इस तरह से बहस करनी चाहिए कि यदि "झगड़ा" न हो जाय, तो कम से कम एक गंभीर, गरमागरम तकरार तो हो ही जाय। समस्या को इस तरह पेश करना चाहिए। तब लोग मण्डलों में आयेंगे और अध्ययन करेंगे। मार्क्सवाद-लेनिनवाद की समझ पैदा करने का यह सबसे अच्छा तरीक़ा है।

मुझे पूरा विश्वास है कि आपका किताबी ज्ञान मुझ से कहीं ज्यादा है। मुझे इस बात में भी सदेह नहीं कि जहां तक किताबों का मामला है, अगर मैं आपके साथ इम्तहान में बैठूं तो मैं फ़ेल हो जाऊंगा। लेकिन जहां तक मसलों के प्रति मार्क्सवादी दृष्टिकोण अपनाने का सवाल है, निस्सदेह मैं आप से कही ज्यादा जल्दी और कहीं सही नीति निर्धारित कर सकूंगा, क्योंकि दीर्घकालीन अनुभव और सैद्धांतिक बहसों के कारण वस्तुओं को परख सकने की मेरी दृष्टि बहुत परिपक्व हो गई है। ग़लत दृष्टिकोण मुझे फ़ौरन खटक जायेगा। सैद्धांतिक बहसों और संघर्षों के दौरान में इस तरह एक नयी समझ विकसित हो गई है — ऐसी समझ जिसने मुझे सावधान रहना सिखाया है। इसलिए विचार-विमर्ष से डरने की कोई जरूरत नहीं, उलटे आपको चाहिए कि लोगों को उसकी आदत डालें। अपनी विचारधारा और भाषा को मांजने का यही एक तरीक़ा है। जब आपको यह मालूम होगा कि आपकी हर ग़लत धारणा और असत्य परिणाम पर बहस होगी, तो आप सही हल निकालने के लिए अधिक विस्तार से विषय को जानना शुरू करेंगे।

इसलिए यदि आप मार्क्सवाद-लेनिनवाद को समझना चाहते हैं और सैद्धांतिक पांडित्य हासिल करना चाहते हैं, तो स्वतंत्र अध्ययन के आधार पर भाषण, लेख और बहसें इस काम में अपार सहायक साबित होंगी। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का पांडित्य हासिल करने में स्वतंत्र अध्ययन मुख्य साधन है।

अध्यापकों का मुख्य काम — सोशलिस्ट समाज के नागरिक — नए मानव का निर्माण करना है

हो सकता है, इस विषय पर कल किसी ने कुछ कहा हो। लेकिन आज किसी ने भी बच्चों के बारे में, उनके तथा आपके संबध के बारे में चर्चा नही की। एक साथी ने चलते-चलते कहा था — "मजदूरों के सामूहिक निवास-स्थानों में प्रौढ लोग बारी-बारी से बच्चों को ताकते है कि कही वे ज्यादा शोरगुल तो नहीं कर रहे।" यही तो है न?

क्या आप चाहते है कि बच्चे कोई पैंतालीस वर्ष के साधारण कूपमण्डूक ही रहें और वे अजीर्ण रोग के शिकार प्रौढों का सा व्यवहार करे? या आप चाहते है कि बच्चे बिलकुल आपकी, प्रौढों की प्रतिमूर्ति हों? जैसा आप जानते है, बच्चों में पहल बहुत होती है। अगर मै अध्यापक होऊं और यह देखू कि मेरे बच्चे किसी ऐसी शैतानी पर आमादा है जो साहसपूर्ण भी है, तो मै ज़रूर कोई ऐसा रास्ता निकालूगा जिससे उन्हे इस काम में बढावा मिले। शैतानी के लिए थोड़ी डाँट पिला दूगा, लेकिन बस, इससे ज्यादा कुछ न करूगा। अलबत्ता शैतानी और शैतानी में भेद करना होगा।

मुझसे अगर कोई पूछे कि अध्यापक के लिए इस समय सबसे महत्वपूर्ण बात क्या है, तो मै कहूगा कि नए इन्सान बनाना। (अक्सर हम यह बात कहते है और मै कोई नयी बात नही कह रहा हूं।) हमारे देश में नया समाजवादी इन्सान निर्माण के दौर से गुजर रहा है। इस नए इन्सान में अच्छे से अच्छे मानवीय गुणों का समावेश होना चाहिए, नया समाजवादी मनुष्य मानवीय भावनाओं से रहित न होगा। आखिर आदमी आदमी ही है। हमें इसी से शुरू करना चाहिए।

वह कौन से मानवीय गुण हैं जिन्हें अपनाने की कोशिश करनी

चाहिए? उनमें से पहला है प्यार, अपनी जनता के लिए प्यार, मेहनतकश जनता के लिए प्यार। मनुष्य को मनुष्य से स्नेह करना चाहिए। अगर वह ऐसा करेगा तो उसका जीवन बेहतर हो जायगा, आनंदमय हो जायगा, क्योंकि मानवमात्र से घृणा करने वाले प्राणी से ज्यादा दुःखी कोई नही हो सकता। मनुष्य-द्रोही से अधिक बुरा कोई नही हो सकता।

दूसरा — ईमानदारी। बच्चों को ईमानदार होना सिखाओ! मेरी राय में बच्चों को ईमानदारी सिखाने के लिए अध्यापक को लगातार हर सभव तरीके अपनाने चाहिएं। उनको सिखाइए कि वह झूठ न बोलें, धोखा न दें, बल्कि ईमानदार बनें।

तीसरा — साहस। समाजवादी मानव, श्रमशील मानव सारे विश्व को जानना चाहता है। वह न सिर्फ दुनिया को जानना चाहता है, बल्कि उसे आगे ले जाने के लिए भी अपना मस्तिष्क लगाना चाहता है।

चौथा — भाईचारेपूर्ण सामूहिक प्रवृत्ति। हमें भाईचारे और सामूहिकता की भावना की आवश्यकता है। इसकी आवश्यकता इसलिए भी है कि हम पूजीवादी देशों से घिरे हुए है, क्योंकि हमारा समाजवादी देश सुनियोजित रूप से बदनाम किया जा रहा है, और हर पूंजीवादी उस सुनहरे अवसर की ताक में है कि हमें कब कुचल सके। खैर, उन्हें अवसर कभी नहीं मिलेगा। लेकिन उसका मतलब यह ज़रूर है कि सोवियत यूनियन की सुरक्षा के लिये फ़ौलादी फ़ौज की ज़रूरत है। सोवियत समाजवादी देश और भी मज़बूत होगा, यदि बचपन से ही, स्कूलों में सोवियत जनों में भाईचारे और सामूहिकता की प्रवृत्ति के विकास की ओर ध्यान दिया जाय। ऐसा व्यक्ति यदि लाल फ़ौज में या मोर्चे पर जायगा तो वह फ़ौजी सामूहिक जीवन में जल्दी खप सकेगा। फ़ौज में आने से पहले ही वह समाजवादी पितृ-भूमि के स्नेह पाश में पूर्णतया बंध चुका होगा।

पांचवां — काम से प्यार। आदमी को सिर्फ़ काम से स्नेह ही नहीं होना चाहिए, लेकिन उसको काम के प्रति अपने रुख में भी ईमानदार होना चाहिए। उसके दिमाग़ में यह सुनिश्चित विचार होना चाहिए कि जो आदमी बिना काम के रहता और खाता है, वह दूसरों के काम पर जीता है। आपके सामने इस बात को और बढ़ाकर रखने की कोई विशेष ज़रूरत नहीं है।

नव मानव के गुणों की तालिका बढ़ाई जा सकती है। लेकिन मैं अपने को इन्हीं तक सीमित रखूंगा। ये मार्क्सवादियों-लेनिनवादियों के गुण हैं। यह सभी ईमानदार, गंभीर प्रकृति के व्यक्तियों पर लागू होते हैं। हमारी विचारधारा का यही मूल्य है कि उसकी भी वही मांग है, जो एक ईमानदार, गभीर प्रकृति के मनुष्य की मांग है।

अनुशासन के बारे में कहने की आवश्यकता नहीं — वह तो उन्हीं गुणों में आ जाता है जिन्हें अभी मैंने गिनाया। बच्चे चीज़ों को तोड़ना और बिगाड़ना पसंद करते हैं। हम खुद ऐसे ही थे। किसी के बाग में कूद जाना एक प्रसन्नता की बात थी: चुराकर लाया गया सेब, अपने बाग के सेब से या खरीदे हुए सेब से ज़्यादा मीठा लगता था। लेकिन साथ ही लोगों को यह भी बताना कि वे चीज़ें सुरक्षित रखें और मूल्यवान् वस्तुओं की चिन्ता करें काफ़ी नहीं है। मुख्य बात तो यह है कि हम चीज़ों को सिर्फ़ नष्ट ही न करें, उन्हें बनावें भी। हम पुरातन के संहारक ही नही, नवीन के स्रष्टा भी हैं।

मेरा ख़याल है कि सही मानी में शिक्षक बनने के लिए अध्यापक जन्मजात होता है। उसके काम में कठिनाइयां आती हैं और उसकी ज़िम्मेदारी महान होती है। हां, एक अध्यापक का मुख्य काम अध्यापन है। लेकिन, अन्य बातों में उसके शिष्य उसकी नक़ल भी करते हैं। इसीलिए, अध्यापक का जीवन-दर्शन और उसका व्यवहार किसी न किसी रूप में उसके हर शिष्य पर प्रभाव डालते हैं। अक्सर

यह क्रिया अदृश्य रूप से होती रहती है। माना कि यह सब कुछ नहीं है। विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि अगर एक अध्यापक प्रभावशाली है, तो कुछ लोग ज़िंदगी भर उसके असर में रहेंगे। इसी-लिए एक अध्यापक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने प्रति ध्यान रखे, वह अपने व्यवहार के प्रति सचेत रहे। उसके कार्यों पर दुनिया के किसी भी व्यक्ति से अधिक सख्त नियंत्रण है। बच्चों की दर्जनों आंखें अध्यापक पर लगी रहती है। और बच्चे की आंख से अधिक तेज़, पारखी और ग्राह्य किसी की आंख नही, जो इतनी जल्दी और तत्परता से इन्सान की मानसिक प्रक्रियाओं की हर बारीकी को पकड़ सके। हमें यह याद रखना चाहिए।

मुझे भय है कि कही मै आपको अस्वाभाविक व्यवहार करने की तरफ़ न झुका दूं। यह भी सही नही है। यह बिलकुल ग़लत होगा। तमाम समस्याओं, विशेषत: बच्चों संबंधी अनेक मामलों में, उनको सजा देने आदि का फ़ैसला करने में अध्यापक को स्वाभाविक और ईमानदार होना चाहिए। मान लीजिए, एक लड़के ने खिडकी तोड़ दी, या एक लड़की को छेड़ दिया, या उल्टा समझ लीजिए। ऐसे मामले में पहली बात यह सोचना है कि समस्या के विभिन्न हलों का बच्चे के दिमाग़ पर क्या असर पड़ेगा। आखिर, बच्चों के अपने ही "आचरण के नियम" है। मान लो दो बच्चे लड़ पड़े और एक ने दूसरे की नाक तोड़ दी। इसके बाद जिसके चोट लगी, उसने दूसरे की शिकायत की। इस मामले में ऐसा लड़का भी जो इस झगड़े से अलग रहा है, यही कहेगा, "चुगलखोर, पहले तो लड़ता है और फिर शिकायत करता है!"

मुख्य चीज़ है बच्चों के प्रति ईमानदार रहना, अपनी तरफ़ देख-ना। अपने बच्चों को सचमुच समाजवादी, ईमानदार, बहादुर और भला बनाना तथा भाईचारे के भाव से भरना। अनुशासन केवल उतना जितना बाल-मनोविज्ञान की सीमा हो, जितना बच्चों के लिए संभव हो।

और अन्त में, साथियो, हमें इस बात का पूरा यत्न करना चाहिए कि बच्चों के मन में स्कूल के दिनों की अच्छी से अच्छी और आकर्षक यादें जम जायें। अगर पूरे जीवन भर बच्चों के दिमाग़ों में स्कूलों के मनमोहक संस्मरण बने रहे, तो यह अच्छी बात होगी।

मेरी राय में एक अध्यापक से मुख्यत: यही आशा की जाती है।

शिक्षक का कर्तव्य है कि वह अपना ज्ञान आम जनता को प्रदान करे और सार्वजनिक जीवन में भाग ले

मै अब सार्वजनिक जीवन की समस्याओं के विषय में कुछ कहूंगा। यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षक जनता के नज़दीक रहे, वह यथार्थवादी हो और उसे स्थानीय समस्याओं को समझने का प्रयत्न करते रहना चाहिए।

यह बताने की ज़रूरत नहीं कि यह तो आदर्श बात होगी यदि हमारे शिक्षक और दूसरे बौद्धिक कार्यकर्ता मार्क्सवाद-लेनिनवाद का पूर्ण पांडित्य प्राप्त करें। लेकिन यह भी बुरा नहीं होगा यदि वे कम से कम इस विचारधारा के आम सिद्धांतों से ही परिचित हो जायें। यह बात कम्युनिस्टों और ग़ैर-पार्टी के व्यक्तियों — दोनों के लिए अपेक्षित है। मै आप को विश्वास दिलाता हूं कि कुछ ग़ैर-पार्टी के लोगों का मार्क्सवाद-लेनिनवाद का ज्ञान पार्टी-सदस्यों के ज्ञान से अधिक है। माना कि ऐसे लोगों की संख्या अधिक नहीं है। आप को यही करना है कि आप स्थानीय मसलों पर मार्क्सवादी रवैया अपनाना सीखें, उन का सही विश्लेषण करें। लेकिन आपने यहां पर जो कुछ कहा है, उससे मालूम होता है कि आप अपने भाषणों में स्थानीय जीवन का कुछ भी ज़िक्र नहीं करते। उन सब लोगों में जो यहां बोले हैं, एक भी किसी स्थानीय मसले पर नहीं बोला है। जीवन-चक्र

बराबर चल रहा है, लोग पैदा हो रहे हैं, उनकी शादियां हो रही हैं, और वे मर रहे हैं। प्रति दिन अनेक तरह की सामाजिक स्थितियां उत्पन्न होती रहती हैं। क्या इनके बारे में किसी को कुछ नहीं कहना है? क्या इनके बारे में कहा नहीं जाना चाहिए?

कोलखोज़ों का संगठन, फ़ार्मिंग की प्रगति, किसानों की विचारधारा को बल पहुंचाती है, इस से उनकी दिलचस्पी सामाजिक कार्यों की दिशा में बढ़ती है। भाषणों के लिए आवश्यकता से अधिक दिलचस्प और काफ़ी सामग्री मिलती है।

कोलखोज़ों में असाधारण योग्यता के व्यक्ति आगे आते हैं। ऐसे लोगों के बारे में भाषण हों, जिनमें आप कुछ नतीजे निकालें या उनकी अच्छाइयां और बुराइयां सामने रक्खें, तो निस्संदेह लोगों में उत्साहपूर्ण चर्चा होगी। ऐसे भाषणों पर होने वाली स्वस्थ चर्चा किसानों के नागरिक ज्ञान को बढ़ायेगी और कोलखोज़-श्रम के प्रति उनकी आस्था को बढ़ायेगी।

मान लीजिए, आपके पड़ोसी कोलखोज़ ने प्रति हेक्टर दस, बारह, पन्द्रह सेन्टनर फ़सल उपजाई, जब कि आपके कोलखोज़ ने पांच या छ ही सेन्टनर उत्पादन किया। आप का उत्पादन कम क्यों है? यह आपके भाषण का विषय हो सकता है।

संक्षेप में, जब आप किसान-जीवन पर कुछ कहना चाहते हों, जब आप जनता के साथ काम करना चाहते हों, तो आप मसलों को इस तरह पेश करें कि वे जीवन से बहुत समीप संपर्क रखें ताकि जनता पर आपकी बातों का प्रभाव पड़े। यदि आप यह करेंगे तो निस्संदेह लोग आपको सुनने आयेंगे। यह कहने की ज़रूरत नहीं कि हमारे देश की और दुनिया की सामाजिक और राजनैतिक घटनाएं सदा ही आवश्यकता से अधिक सामग्री प्रदान करती हैं।

स्वतंत्र भाषण और बहस होनी चाहिए, पर सदा धीरज बरतना चाहिए। बड़ी बात यह है कि भाषण का मुख्य विचार सभी की समझ में आना चाहिए। जो लोग बहस में हिस्सा लें, वे बिना इस बात की चिन्ता किए कि वह अपनी बात किस तरह कह रहे हैं, जो कहना चाहते हों कहें। बोलने का ढंग अभ्यास से आ जायेगा। महत्वपूर्ण बात यह है कि लोग अपने विचारों को व्यक्त करें।

अपनी सामाजिक कार्यवाही के दौरान में एक शिक्षक को जब भी अवसर मिले और जब भी उसकी राय पूछी जाय, उसे ईमानदारी से अपने विचार व्यक्त करने चाहिएं। शिक्षक को किसानों का सम्मान एक शिक्षक के नाते ही नहीं, बल्कि एक इन्सान के नाते भी प्राप्त करना चाहिए। यह याद रखिए कि यह राजनैतिक समस्या है, बहुत ही गहन राजनैतिक समस्या। यदि शिक्षकों को अपने पद की उचित गरिमा पर पहुंचना है, तो उन्हें निष्पक्ष होना चाहिए, और अपने विचारों को व्यक्त करने में बिलकुल निडर होना चाहिए। एक शिक्षक किसानों से संबंधित समस्याओं को हल करने में उनकी सहायता कर सकता है, क्योंकि वह उसी जगह रहता है और वहां के राजनैतिक और आर्थिक जीवन में हिस्सा लेता है।

जिस क्षेत्र में शिक्षक किसान को सब से अधिक सहायता दे सकता है, वह है संस्कृति का क्षेत्र।

संस्कृति बहुत ही व्यापक विषय है—मुंह धोने से लेकर मानवीय उच्च से उच्च विचार तक, संस्कृति के क्षेत्र में जाते हैं। और यह चाहे विचित्र क्यों न लगे, इसमें कूपमण्डूकता के क्षेत्र में फिसल जाना आसान है। साफ़ हाथ, साफ़-सुथरे कपड़े, घर पर आवश्यक सुविधाएं, आदि यह सब किसी जाति की संस्कृति के चिन्ह हैं। सार्वजनिक सभाएं, नाटक मंडलियां, सायंकालीन मनोरंजन इत्यादि यह सब सामाजिक सभ्यता के चिन्ह हैं। कम्युनिस्ट उन्हें उचित रूप में सांस्कृ-

तिक उन्नति के अनासर समझकर उन में भाग लेते हैं। सचमुच, कूप-मण्डूकता और सांस्कृतिक प्रगति के बीच सीमा-रेखा खींचने के लिए उच्च सांस्कृतिक स्तर और राजनैतिक समझ की आवश्यकता है। कम्युनिस्ट उन सब साधनों को उन्नति का साधन समझकर उनका प्रयोग करते है। मार्क्सवादी इन सफलताओं को आगे की प्रगति का एक साधन ही समझता है। और एक कूपमण्डूक के लिए वही सब कुछ है। वह अपनी सफलताओं में ही भूल जाता है। वह अपने वातावरण का दास हो जाता है और अपनी नैतिकता उसी के मुताबिक बना लेता है और अपनी विचार-शक्ति को कुंद कर डालता है। इसका विरोध करना चाहिए।

इसलिए सांस्कृतिक क्षेत्र में सामाजिक और राजनैतिक सोद्देश्यता लाना बहुत आवश्यक है, नहीं तो आपकी संस्कृति उद्देश्यहीन हो जायेगी, वह तथाकथित "प्रातीय संस्कृति" का रूप ले लेगी, पूरे राज्य की संस्कृति से उसके संबंध टूट जायेंगे; तब वह पूरे राज्य की सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकेगी।

जो सांस्कृतिक कार्य आप करें, उसे आम समाजवादी निर्माण के काम से जोड़ देना चाहिए। कूपमण्डूक वह व्यक्ति है जिसके विचार उसको समाज से अलग-थलग कर देते हैं, असभ्य अपने को किसी भी व्यक्ति या किसी भी व्यवस्था से नहीं बांधता।

यह बहुत कठिन काम है। यह बहुत मुश्किल और नाजुक काम है, क्योंकि एक व्यक्ति को खुद सुसंस्कृत होना होता है। यह बिल्कुल संगीत की तरह है। एक गवैया सामूहिक गान में एक ग़लत तान को झट पकड़ लेगा, जब कि मै अनेकों ग़लत तानों को भी नहीं पकड़ सकूंगा, क्योंकि मै गान-विद्या नहीं जानता। जब आपको कोई बात ग़लत लगे, तो उसे आपको सही करना चाहिए।

शिक्षक को जीवित विचार और भावनाएं व्यक्त करनी चाहिएं

साथियो, मैं नहीं जानता कि कल के अधिवेशन में क्या हुआ। लेकिन जहां तक आज के अधिवेशन का संबंध है, मैंने कोई विचार-विनिमय होते नहीं पाया। आप सभी ने रिपोर्ट दी हैं। क्या आप लोग यहां इसलिए एकत्र हुए हैं कि एक-दूसरे को लगभग एक जैसी रिपोर्ट दे दें? इनको सुनकर एक व्यक्ति पर प्रभाव यह पड़ता है कि एक स्कूल से दूसरे में, एक व्यक्ति से दूसरे में भेद कोई नहीं है। और मैं तो सोचता था कि आप यहां "संघर्ष" के लिए एकत्र हुए हैं।

ऐसा क्यों है कि आप लोग बने-बनाए सूत्र बोलते हैं? आखिर आप तो शिक्षक हैं, और आप रूसी भाषा भी जानते हैं। क्या आप नहीं जानते कि इस गढ़े-गढ़ाये सूत्रों का उपयोग क्या बतलाता है? इस से यह स्पष्ट होता है कि आपका मस्तिष्क काम नहीं कर रहा है, सिर्फ आपकी ज़बान काम कर रही है। जब आप रटी-रटायी शब्दावलियों का प्रयोग करते हैं, तो आप किसी पर भी प्रभाव नही डालते, क्योंकि उन्हें तो आपके बिना भी सभी लोग जानते हैं। आप बातों को अपने तरीक़े से कहने से डरते हैं, कि शायद वह इतनी प्रभावशाली न जान पड़े। आपका यह ग़लत ख़्याल है। उलटे, आपको लोग ज़्यादा अच्छी तरह सुनेंगे और समझेंगे।

वैसे आपका किसानों के असली जीवन से काफ़ी संबंध है, आपका आम तौर पर जनता से भी संबंध है। लेकिन, जब आप इनसे संबंधित विषयों पर बोलते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे किसी "टेकनिकल" विषय पर बोल रहे हों।

इन विषयों के राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक और दूसरे पहलू भी हैं,

जो मानव जीवन के साधारण जीवन में भी व्यक्त होते रहते है। तो भी आपकी बातचीत में यह नजदीकी, रिश्ता ग़ायब है। शायद बूढ़ा होने के कारण मैं उस पर ध्यान नही दे सकता। लेकिन मैंने आपके मुह से आपकी मुश्किलों के बारे में एक शब्द भी नही सुना। आप जब केवल बनी-बनाई शब्दावली दोहराते है, तो आपका भाषण बनावटी हो जाता है। हर आदमी को चाहिए कि वह अपनी भाषा में बोले, उस भाषा में, जो उसे माँ के दूध के साथ मिली है। मेरी बात पर विश्वास कीजिए। आपकी मातृ-भाषा ही सब से अच्छी भाषा है। हम कहते है: शिक्षक, शिक्षक होना बहुत बड़ी बात है। और यह सत्य है। लेकिन यदि शिक्षक केवल गढ़े-गढाये सूत्र ही देने लगें, तो फिर क्या लाभ?

अब उनकी बात लीजिए — वह जो साथी अन्त में बोले, एक गाव में काम करते है और लगता है कि अपने काम से सतुष्ट है। आपने अपने सुन्दर जीवन के विषय में भी बताया। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि यदि कोई आपके भाषण की रिपोर्ट पढ़े तो जो आप ने कहा है उसपर वह बहुत कम विश्वास करेगा। इसलिए नही कि जो आप ने कहा वह असत्य है। पहले तो वह कहेगा कि यह साथी अपने मुह मिया-मिट्ठू बन रहा है। आपको बार-बार यह शब्द मिलते है: "मैंने यह किया, मैंने वह किया"। जैसे ही किसी को यह लगता है कि अमुक व्यक्ति अपने मुंह मियां-मिट्ठू बनता है या अपने को आगे बढ़ा रहा है, वह उसका कान पकड़ता है। मै साफ़-साफ़ आपसे कहूंगा कि आपने अनेक अच्छे शब्दों का प्रयोग तो किया, लेकिन उनमें कोई भावना नही थी। उनसे कोई अर्थ नही निकलता था। मेरे कहने का यह मतलब नही कि आपमें कोई भावना नहीं है। मैं सिर्फ़ इतना कहना चाहता हूं: आप अपनी सच्ची अंदरूनी भावना को बने-बनाए सूत्रों में व्यक्त करते है, लेकिन एक साधारण मनुष्य

अपनी सच्ची अंदरूनी भावना को अपनी साधारण भाषा में व्यक्त करता है। वह बनी-बनाई मान्यताओं के पीछे नहीं पड़ता। इसीलिए एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति आपके भाषण की रिपोर्ट पढ़कर अपने आप से यह कहेगा: यह बनावटी बातें हैं—बिल्कुल बनावटी। भाषणकर्ता के सच्चे, स्वाभाविक, भीतरी भाव नहीं मालूम पढ़ रहे हैं। इनमें अनेक शब्द हैं, प्रभावशाली शब्द हैं। अपने काम से संतुष्ट होने, उस में वह जाने की ओर संकेत करते हैं, लेकिन ये शब्द किसी के हृदय में नहीं उतर सकते, क्योंकि वे आपके शब्द नहीं हैं, वे शाब्दिक आडंबर मात्र है। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं? मुझे बताइए—मैं सही हूं या ग़लत? जिस तरह आप बातें करते हैं, वह बनावटी लगता है या नहीं?

अब मान लीजिए कि आप जनता के सामने उठकर इस तरह की बातें करने लगें, इस तरह का भाषण दें—तो आपकी राय में इसका प्रभाव क्या होगा? वे आपकी बातें सुनेंगे और बिना कोई प्रश्न किए ही घर वापस चले जायेंगे। और यदि वे सवाल भी करेंगे, तो वह बहुत थोड़े प्रश्न होंगे।

इसलिए एक शिक्षक में पहली बात यह अपेक्षित है कि उसके भाषण का तरीक़ा अपना हो। सही भाषा बोलने के लिए व्याकरण का अध्ययन कीजिए। लेकिन सादी भाषा का प्रयोग कीजिए और स्वाभाविक तरह से बोलिए।

मैं कहना चाहता हूं कि शिक्षक का काम कठिन है। मैं तो यहां तक कहता हूं कि शिक्षक जन्मजात होता है। मैं शिक्षक शब्द का सच्चे अर्थों में प्रयोग कर रहा हूं। ऐसे लोग मौजूद हैं जोकि बहुत कुछ जानते हैं। मैं ऐसे बहुत से लोगों को जानता हूं जिन्हें अपने विषय का अच्छा ज्ञान है, लेकिन यदि आप उन्हें पढ़ाने को कहें तो वे विषय का स्पष्टीकरण अच्छी तरह नहीं कर पायेंगे। शिक्षक को केवल

अपने विषय का ज्ञान ही होना काफी नही है, लेकिन विद्यार्थियों के सामने उन्हें उसका स्पष्टीकरण इस तरह करना है कि वे अच्छी तरह समझ सकें।

इसलिए मैं समझता हू कि सब से पहले आपकी भाषा स्वाभाविक होनी चाहिए। बच्चों को पिटे-पिटाए शब्दों, बने-बनाए सूत्रों का आदी मत बनाइए वे एक कान से उन्हे सुनेंगे, और दूसरे से निकाल देंगे।

जो कुछ भी आप बोलें, अपनी ही तरह से बोलें। आपके शब्द दूसरे होंगे, लेकिन अर्थ वही होगा। आप पायेंगे कि लोग आपकी बातें अधिक ध्यान से सुनेंगे। जो आप कहें, वह मौके और स्थान के लिए उचित होना चाहिए। वह स्वभावत: आपके मुंह से निकलना चाहिए। ऐसा होता है कि लोग यन्त्र की भाँति बातें करते हैं। शब्द यन्त्र की तरह नही, बल्कि क्रमश: कड़ी दर-कड़ी निकलने चाहिएं।

आपको घिसे पिटे सूत्रों और विचारों से बचना चाहिए, जो आपकी स्मरण शक्ति की देन तो है, परन्तु आपके दिमाग की कदापि नही। अत: आप लोगों से सादी भाषा में बातें कीजिए। अपनी भाषा में बातें कीजिए और आपका ढग स्वाभाविक होना चाहिए। यदि आपका ढंग स्वाभाविक नही होगा तो आपको विरोधी भावना का मुकाबला करना होगा। शायद आप में से बहुतों को याद होगा (शायद न भी हो) कि क्रांति से पहले माला फेरने वाली अनेक बूढी औरतें थी। यदि आप उन में से किसी को कभी सुनते तो उन्हे बार-बार बड़बड़ाते हुए पाते: "भगवान की दया से और मा की दया से मैंने प्रकाश पा लिया है"। वह मठ-मठ घूमकर यही कहती फिरती थी। हमें उनकी तरह नही होना चाहिए। हमारी भाषा बहुत ही भरी-पूरी है, उसे तोड़िए-मरोड़िए नही। उसे भ्रष्ट न कीजिए। और अपने बच्चों को भी यह न सिखाइए। इस बात पर लगातार जोर दीजिए कि वे बोलने से पहले सोचें और बिना सोचे न बोलें। यह मुख्य बात है।

* * *

हमारे शिक्षकों के सामने यही काम है। हमारे शिक्षकों को सभी तरह से सुसंस्कृत होना चाहिए। सुसंस्कृत इसी माने में नहीं कि उन्हें अपने विषयों का अच्छा ज्ञान हो, बल्कि विशद अर्थों में, इन अर्थों में, कि उनकी सांस्कृतिक दिलचस्पियां बहुत विशद हों। आप खुद समझ सकते हैं कि हमारे शहरों और देहातों की जनता, बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक विकास की ओर अग्रसर है, और संस्कृति के क्षेत्र में उनकी बहुत सी मांगें हैं।

हमारा जीवन अधिक से अधिक पेचीदा होता जा रहा है और हर क्षेत्र में ऊंची से ऊंची "हद" की मांग की जा रही है। मिसाल के लिए, एक शिक्षक की "हद" यदि दो मीटर है तो उसे अब कम से कम ढाई मीटर होना चाहिए।

साथियों ने यहां अखबारों की कमी के विषय में कहा है। अखबारों की निश्चय ही आवश्यकता है। लेकिन मैं कहता हूं, अखबार आपके सांस्कृतिक विकास के लिए काफी नहीं है। अखबारों की आवश्यकता इसलिए है कि वे आपको सामयिक मामलों में राजनैतिक रवैया बनाने में सहायक हों। लेकिन यदि आप अपने सांस्कृतिक स्तर को ऊपर उठाना चाहते हैं, तो आपको संस्कृति के इतिहास की ओर, मानवता की सांस्कृतिक परंपराओं की ओर मुड़ना पड़ेगा। आपको रूसी साहित्य का ज्ञान होना चाहिए, विशेषकर, उसके कथा साहित्य का ज्ञान होना चाहिए। आप इसके बिना चल नहीं सकते। शिक्षक को मानवीय सामग्री, और वह भी सब से अधिक तरुण और ग्रहणशील मानव-सामग्री के साथ काम करना है। कथा-साहित्य में आपको मानवीय पूर्णता के प्रयास के संबंध में पर्याप्त सामग्री मिलती है। कम से कम मेरा तो यही विचार है। कथा-साहित्य में अनगिनत स्थितियों में मानव-स्वरूप के दर्शन होंगे। इसी कारण कथा-साहित्य का ज्ञान क़रीब-क़रीब आपका

पेशेवर कर्तव्य हो जाता है। आपको सांस्कृतिक स्तर को उठाने का यह पहला साधन है। यह मैं अपने अनुभव से कह रहा हूं, कथा-साहित्य आपको अधिक पूर्ण बनायेगा, वह आपको विकास में सहायता देगा, और लोगों को ज़्यादा अच्छी तरह समझने में भी मदद देगा।

मैं आप से यही सब कहना चाहता था। कोई चाहे तो आपसे निरंतर बातें करता रह सकता है, क्योंकि आपके सामने अनेक बड़ी समस्याएं हैं। लेकिन जो मैं कहना चाहता था, उसकी मुख्य, प्रधान बात आप सुन चुके हैं। जब आप घर लौटें तो मेरी शुभ-कामनाओं को न भूलें। (ज़ोरदार तालियां)

"सोवियत बुद्धिजीवियों के सामने काम" राजनैतिक साहित्य का राज्य-प्रकाशन गृह

१६३६; पृष्ठ ३१-४५

देहाती स्कूलों के पारितोषिक प्राप्त शिक्षकों के सम्मान में हुए समारोह के अवसर पर दिया गया भाषण

८ जुलाई १९३९

साथियो, हर एक आदमी जानता है कि जन-शिक्षकों को आर्डरों और तमगों आदि पारितोषिक देने का बहुत बड़ा राजनैतिक महत्व है। इन पारितोषिकों के द्वारा सरकार और सोवियत जनता जन-शिक्षकों का सार्वजनिक रूप से सम्मान करती है।

यह प्रश्न स्वभावतः उठता है कि जन-शिक्षक को सार्वजनिक दृष्टि में ऊंचा क्यों उठाना चाहिए?

अब मजदूर वर्ग और किसानों ने, दूसरे शब्दों में, तमाम जनता ने अपने हाथों में सत्ता ले ली है और वह उसे क़ायम रखना चाहती है। वे नये जीवन का, कम्युनिज़्म का निर्माण करना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि समूची दुनिया के इन्सान सोवियत संघ की मिसाल पर चलें। इस सत्ता को हमेशा के लिए सुदृढ़ बनाने की खातिर, कम्युनिज़्म को मूर्त रूप देने की खातिर, जनता का अपना बुद्धिजीवी वर्ग होना चाहिए।

लोगों को शिक्षित होना है। बौद्धिक और शारीरिक श्रम करने वालों का परस्पर विरोध और भेद-भाव खत्म करना है। लेकिन किन हालतों में बौद्धिक श्रम और शारीरिक श्रम का भेद-भाव मिट सकेगा? तभी जब हमारे सभी मर्द और औरतें,—हमारी सभी जनता शिक्षित हो जायेगी, जब कम्युनिज़्म का निर्माण हो चुका होगा।

विभिन्न जातियों वाले इस महान सोवियत संघ की समस्त जनता को शिक्षित करने का काम बहुत बड़ा है। लेकिन हम अपनी जनता को सिर्फ शिक्षित ही नहीं करना चाहते; साथ ही, हम यह चाहते हैं कि हमारी जनता सोवियत ढंग से, कम्युनिस्ट ढंग से लाली-पाली जाय। हम चाहते हैं कि हमारे स्कूल कम्युनिस्ट शिक्षा प्रदान करें। इसका क्या अर्थ है? मैं इसी के विषय में आपसे कुछ शब्द कहना चाहता हूं।

आप अच्छी तरह जानते हैं कि न सिर्फ प्रारंभिक बल्कि माध्यमिक स्कूलों में भी मार्क्सवाद का गहरा अध्ययन नहीं होता। जब हम कम्युनिस्ट शिक्षा की बात करते हैं, तो हमें केवल मार्क्सवाद की विचारधारा के अध्ययन का ध्यान नहीं होता है, बल्कि पूरी शिक्षा का। उपदेश और शिक्षा में सचमुच बड़ा ही भेद है! मैं खुद पहली कक्षा के विद्यार्थियों को अंक गणित के प्रारंभिक तत्व पढ़ा सकता हूं। (तालियां, सहमति की ध्वनियां) लेकिन वास्तविक शिक्षा कहीं अधिक पेचीदा चीज है। यह अकारण ही नहीं कहा गया: एक व्यक्ति परिवार और अपने वातावरण द्वारा शिक्षित होता है, और स्कूल उस पर अपना प्रभाव डालता है। शिक्षा बहुत ही कठिन काम है। मैं शिक्षा शब्द का विशद अर्थों में प्रयोग करता हूं।

शिक्षा से हमारा क्या तात्पर्य है? इससे हमारा तात्पर्य है विद्यार्थियों में मानसिक और नैतिक विशेषताओं का समावेश करना। उन्हें दस साल के अध्ययन-काल के दौरान में एक निश्चित दिशा की ओर प्रेरित करते रहना, यानी उन्हें गढ़कर इन्सान बनाना। शिक्षित करने का अर्थ

है—विद्यार्थी को इस तरह प्रभावित करना कि वह स्कूल-जीवन में अवश्यंभावी तौर पर आ जाने वाली अनंत गलतफहमियों और संघर्षों को हल करने के लिए शिक्षक द्वारा उठाए गए क़दमों के औचित्य को सही मान ले। बच्चे के मस्तिष्क पर इसका बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि एक शिक्षक किसी पिछड़े हुए लड़के को नंबर देने में पक्षपात करता है, तो मैं निश्चय के साथ कह सकता हूं कि विद्यार्थियों के दिमाग पर इसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहेगा। मुख्य चीज यह है कि शिक्षक एक तरह से शीशों की भूल-भुलैया में होता है। उस पर सैकड़ों बच्चों की पैनी, प्रभावित हो जाने वाली आंखें देखा करती हैं—आंखें जो आश्चर्यजनक शीघ्रता से एक शिक्षक की हर अच्छाई और बुराई को भांप लेती है। विद्यार्थी की शिक्षा कक्षा में शिक्षक के व्यवहार से, विद्यार्थियों के प्रति रवैये से ही शुरू होती है। इस प्रकार शिक्षा बहुत ही कठिन चीज बन सकती है।

यह कहकर मैं बच्चों को अच्छे उपदेश देने की आवश्यकता को कम नहीं कर देना चाहता। जहां तक आप खुद शिक्षक हैं—यह सब कुछ बहुत स्पष्ट है। अपने विशद अर्थों में शिक्षात्मक कार्य प्राय: शिक्षकों की आंखों से ओझल हो जाते हैं। लेकिन बच्चों के चरित्र और उनकी नैतिकता को गढ़ने में यही काम बहुत बड़े महत्व के होते है। बहुत से शिक्षक यह भूल जाते हैं कि उन्हें शिक्षा-विशेषज्ञ बनना है और एक शिक्षा-विशेषज्ञ मानव आत्माओं का शिल्पी है। अलबत्ता, आवश्यक दिशा में बच्चों को प्रभावित करने के लिए उचित योग्यता भी होनी चाहिए। पर यह सब कुछ तो नहीं है। चैतन्य रूप से एक निश्चित दिशा में प्रभावित कर सकने के लिए एक शिक्षक को स्वयं ही बहुत सुसंस्कृत होना चाहिए, मुझे स्पष्ट कहने दीजिए, उसे बहुत ही सुशिक्षित होना चाहिए।

सचमुच जनता और राज्य बच्चों को, यानी उन नन्हे-मुन्नों को, जो सब से अधिक प्रभावित किए जा सकते है शिक्षकों के हाथ सौंपते है। उस नयी पीढ़ी को पालने-पोसने, विकसित करने, गढ़ने का काम शिक्षकों को सौंपा जाता है। दूसरे शब्दों में, जनता और राज्य शिक्षकों को अपनी समस्त आशाएं और अपना भविष्य सौंप देते है। यह बहुत बड़े विश्वास का काम है। इस से शिक्षकों पर बहुत बडी जिम्मेदारी आ जाती है। अतः स्पष्ट है कि शिक्षकों को बहुत ही सुशिक्षित और बहुत ही ईमानदार होना चाहिए। क्योंकि ईमानदारी, — मैं कहूंगा, शब्द के उच्चातिउच्च अर्थों में किसी भी तरह भ्रष्ट न हो सकने का गुण — न सिर्फ बच्चों को बहुत ही अधिक प्रभावित करती है, बल्कि उन्हे उत्साहित करती है, और उनके बाद के जीवन पर गहरा प्रभाव डालती है।

साथियो, हम अपने बच्चों को कम्युनिस्ट सिद्धांतों में शिक्षित करना चाहते है। हम चाहते है कि वे कम्युनिस्ट भावना से ओत-प्रोत हों। आप पूछ सकते है: कम्युनिस्ट सिद्धान्त क्या है?

अपने प्रारंभिक स्वरूप में, कम्युनिस्ट सिद्धात बहुत ही सुशिक्षित, ईमानदार और प्रगतिशील जनता के सिद्धांत है। अपने समाजवादी देश के प्रति अपार स्नेह, दोस्ती, भाईचारा, मानवता, ईमानदारी, समाजवादी श्रम के प्रति आस्था आदि अनेक ऊंचे गुण इनके अन्तर्निहित है। इन उच्च गुणों का विकास एवं समावेश कम्युनिस्ट शिक्षा का सब से महत्वपूर्ण अंग है।

बच्चों में ये विशेषताएं सिर्फ बड़े-बड़े उपदेशों या ढोल पीटने से ही नही आ जायेंगी। वे बच्चों में तभी लाई जा सकती है, जब स्कूल-कॉलेज में लगातार भाईचारे के आधार पर उनसे संबध रखा जाय और उनको अदृश्य तरीक़े से प्रभावित किया जाय। अलबत्ता, यह तभी संभव है जब शिक्षकों ने कम से कम मार्क्सवाद की रूपरेखा भली भांति समझ ली हो।

हम अक्सर कहते हैं कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद पर पांडित्य प्राप्त करना आवश्यक है। मैं कहूंगा — मैं इसे अपने अनुभव से जानता हूं —कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद का ज्ञान फ़ौरी काम में अनोखी सहायता प्रदान करता है। रोजमर्रा के कामों में जो अनेक मसले उठते हैं, उन्हें सही तौर पर हल करने में वह सहायता देता है। हमारे शिक्षकों के सामने कम्युनिस्ट शिक्षा देने का, सोवियत जनता में कम्युनिस्ट चेतना भरने का बहुत ही कठिन काम है। यह काम सफलता से तभी पूरा किया जा सकता है, जब हमारे शिक्षक अच्छी शिक्षा ही प्राप्त किए न हों, बल्कि मार्क्सवादी शिक्षा प्राप्त किए हों।

इस संबंध में आपकी, इस मेज पर बैठे हुए सभी साथियों की और मेरी स्थिति एक सी है। मुझे विश्वास है कि इस बात में आप मुझ से सहमत होंगे कि हमारी जनता अजब तेजी से विकसित हो रही है; उसकी चेतना, उसकी शिक्षा और उसकी संस्कृति अनोखी तेजी से प्रगति कर रही है। और यह हमारे देश के सभी भागों में हो रहा है। अब हमारे यहां कोई "पिछड़ा जंगली" नहीं है, अब हमारे देश का हर भाग अपने को मास्को का भाग समझता है। (समर्थन की जोरदार ध्वनियां, देर तक तालियां)

जब हम यह कहते हैं कि हमारी जनता विकसित हो रही है तो हमारा क्या तात्पर्य है? प्रथमत: इसका यह मतलब है कि हर साल लगभग २० लाख व्यक्ति शिक्षित होकर हमारे बीच में बढ़ जाते हैं। यदि हम पुराने लोग, जो आज के स्कूलों से नहीं गुज़रे हैं, पुराने ढर्रे पर ही कायम रहते हैं और उनके साथ क़दम-ब-क़दम नहीं चलते, तो धीरे-धीरे हम पिछड़ जायेंगे। इसीलिए उन शिक्षकों को भी चाहिए कि वे इस वक़्त बेकार न बैठें, जो शुरू के सालों में शिक्षित हुए हैं। ज्ञान एकत्र करना बहुत ही जरूरी है। एक शिक्षक सिर्फ़ शिक्षक ही नहीं, वरन् विद्यार्थी भी है। (तालियां)

एक शिक्षक अपनी तमाम शक्ति, अपने विद्यार्थियों और अपनी जनता पर लगाता है। लेकिन साथियो, यदि आप आज, कल, परसों अपना सब कुछ देते रहे, पर लगातार अपने ज्ञान-भंडार को नहीं बढ़ाते रहे, तो फिर आपके पास कुछ भी नहीं रह जायेगा। (समर्थन की ध्वनियां) शिक्षक ज्ञान प्रदान तो करता ही है लेकिन सोखते की तरह जनता में जो सब से अच्छा है, उसे वह अपने में जज्ब कर लेता है। वह जीवन, ज्ञान-विज्ञान, सभी से अपना भंडार भरता है और फिर अपने भंडार में से बच्चों को प्रदान करता है। (समर्थन की ध्वनियां, तालियां) सोवियत शिक्षक यदि सच्चा और प्रगतिवादी शिक्षक बनना चाहता है और कल भी बना रहना चाहता है, तो उसे जनता के सब से आगे बढ़े हुए अंग के साथ-साथ चलना चाहिए। यदि वह ऐसा करता है, यदि वह जनता की विशिष्टताओं को अपनाता रहता है, तो वह अपने विद्यार्थियों को चाहे कितना भी दे, उसके पास सदैव अपने बच्चों को देने के लिए कुछ न कुछ बना रहेगा।

आज यहां पर सोवियत संघ के सभी भागों के शिक्षक एकत्र हुए हैं। मुझे बड़ी खुशी है कि उक्रइन, जोर्जिया और स्वायत्त जनतंत्रों से यहां शिक्षक आए हैं। मैं चाहता हूं कि आप मास्को से जितना अधिक ले जा सकें ले जाएं। और आपको मिली उपाधियां, पदक एवं पारितोषिक और मास्को में मिला स्वागत आपके जीवन की मधुर स्मृतियां बन जाएं। (ज़ोरदार तालियां)

"सोवियत बुद्धिजीवियों के सामने काम"
राजनैतिक साहित्य का राज्य-प्रकाशन गृह
१६३६; पृष्ठ ४६ -- ४६

मास्को के (बौमान हलक़ा) उच्चतर माध्यमिक स्कूलों की आठवीं, नवीं और दसवीं कक्षाओं के विद्यार्थियों के सम्मेलन में दिया गया भाषण

७ अप्रैल १९४०

साथियो, सबकी तरह मैं भी आपके अध्ययन में आपकी सफलता की कामना करता हूं। यह हर व्यक्ति की कामना है -- आपके माता-पिता की, आपके शिक्षकों की, सरकार की, और आपके बुज़ुर्गों की।

लेकिन निरी शुभ-कामनाएं विशेष महत्व नहीं रखतीं। महत्व की बात तो आपका स्वाध्याय है। स्कूल में ही आपको नियमित तरीक़े से लिखना, पढ़ना और काम करना सिखाया जाता है। बाहर से, स्कूल के बाहर एक आदमी कितना भी ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश क्यों न करे, वह स्वशिक्षित व्यक्ति ही रहता है।

कुछ लोग इस तरह सोचते हैं: स्कूल से क्या होता है? मान लो मैंने बिना अच्छे नतीजे के स्कूल की परीक्षा पास कर ली तो यह सिर्फ़ सर्टिफ़िकेट पर ही लिखा होगा, जीवन पर तो उसका कोई

प्रभाव पड़ेगा नही। कोई भी जो इस तरह सोचता है, गलत सोचता है। स्कूली शिक्षा आदमी को नियमित ज्ञान प्रदान करती है और उसे कुशल काम के लिए तैयार करती है। और सभव है, आप लोगो मे से अधिक कुशल पेशो मे जायेगे। इसीलिए आपको खूब डट कर अध्ययन करना चाहिए।

कोई भी जो पेशेवर कुशल मजदूर बनना चाहता है, उसे सोवियत स्कूल की परीक्षा पास करनी चाहिए, उसे नियमित तरीके से पढ लिख कर ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। जिन्हे उचित शिक्षा नही मिलेगी, उन्हे बाद मे चलकर जीवन मे कठिनाई होगी। यह कमी, यानी व्यवस्थित ज्ञान की कमी, और अव्यवस्थित काम करने की आदत, सभी चीजो मे सभी जगह अखरेगी और आपका पीछा नही छोड़ेगी। यह मेरा अनुभव है। इसलिए आपको स्कूल का, जितना अधिक सभव हो सके, उपयोग करना चाहिए पहले से लेकर सातवे या दसवे दर्जे तक इसी को ज्ञान का मुख्य स्रोत मानना चाहिए।

सभी विद्यार्थियो को यह याद रखना चाहिए कि सिर्फ वही जो अपना काम व्यवस्थित ढग से कर सकेगे और अपना काम अच्छी तरह जानते होगे, समाज और राज्य के जीवन म, या किसी भी उपयोगी क्षेत्र मे कुछ महत्वपूर्ण भाग ले सकेगे। दूसरी ओर, जिनकी सस्कृति ऊपरी ऊपरी है, जो सस्कृति का केवल बाह्य रूप ही पा सके है, ओनेगिन की तरह के लोग, जो हर चीज के बारे मे कुछ न कुछ बता सकते है, लेकिन जिन्हे किसी भी चीज का तात्विक ज्ञान नही है, ऐसे लोग सोवियत समाज और सोवियत राज्य के जीवन मे न अब कोई महत्वपूर्ण भाग ले रहे है और न आगे लेगे।

आज यहा, मच से ऑनर के विद्यार्थी बोले है। साथियो, मै आपको बता दू कि यद्यपि आप अच्छा बोलते है आपकी भाषा चमत्कारिक है, तो भी, (मुझे मुहफट होने के लिए माफ कीजिए), आप बिलकुल

मौलिक नही हैं। अलबत्ता यह स्पष्ट-वादिता आपकी भावनाओं को चोट पहुंचायेगी, लेकिन मैं ऐसी बातें आपको दु:खी करने के लिए नहीं कहता, वल्कि इसलिए कि आप समझ सकें कि अध्ययन में मुख्य बात क्या है। आप सही बोलते हैं। इस मामले में आप विलकुल दोषी नहीं हैं। आपके भाषण स्कूल के दीवाली-अखबार में भी प्रकाशित किये जा सकते हैं और उन्हें प्रकाशित करने के लिए सम्पादक को कोई जवाब नहीं देना पड़ेगा। लेकिन ऐसे भाषण किसी को झकझोरेंगे नहीं। वे दिल और दिमाग़ को कुछ भी नही देते। आख़िर आप तरुण हैं, आपकी रोजमर्रा की ज़बान में भी जान होती है। वही भाषण दिल पर असर करता है जो किसी के हृदय को छू ले — वह चाहे मान लें या आपत्ति कर दें। एक भाषणकर्ता के कुछ जीवित ओर स्वतंत्र विचारों का यही मुख्य चिन्ह है।

लेकिन, साथियो, यह सब अभ्यास से आता है। आप अभी तरुण हैं — आपके आगे अभी सब कुछ है। इसीलिए मैं आपसे कहता हूं कि आप जो कहते हैं, उसमें कुछ भी मौलिक नहीं है। यदि आप सबकी आयु ५० वर्ष की होती तो मैं इस तरह की बात नहीं कहता। लेकिन आप सब की ज़िन्दगी अभी आपके आगे है और यह निश्चित है कि आप मौलिक तौर पर बोलेंगे। मुझे इस पर कुछ भी संदेह नही है। फिलहाल आप अपने शब्दों का प्रयोग करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं, वल्कि बने-बनाए शब्दों को, जो दूसरों के है, दोहरा रहे हैं। आपके भा णों में आपकी अपनी भावनाएं नही दीख पड़तीं, आपकी भाषा चांदनी की तरह है, जिसमें कुछ गरमी नहीं।

आप सब में से केवल एक — मेरा ख़्याल है कि अंतिम साथी, कामरेड क़ारिब — अपनी भाषा में बोले। जब वह बोल रहे थे तो लगता था जैसे वह अपने शब्दों को तौल रहे हों, जैसे उनके पास उनके अपने कुछ विचार हों। यह सब से महत्वपूर्ण बात है।

मान लीजिए, कोम्सोमोल कमेटी का कोई प्रतिनिधि आपसे मिलने आए। वह बोलने में इतना पटु हो गया है कि जब कभी आप चाहे तो वह किसी भी विषय पर बोल सकता है। उसका भाषण बिना प्रयास के सुविधा-पूर्वक, दो शानदार किनारो के बीच मे बहती हुई नदी की तरह निकलता आता है। लेकिन यह भाषण सिर्फ बाहरी सौन्दर्य लिए हुए है, क्योकि इसमे मुख्य चीज - भावना — नही है। इस तरह का भाषणकर्ता अपने भाषण के तत्व के कारण आकर्षित नही करता। उसके श्रोता सिर्फ यही कह सकते है क्या बढ़िया बोलनेवाला है! और इससे अधिक कुछ नही।

अब मान लीजिए कि कोई ऐसा आदमी आता है जो इतना "शीरी-जबान" नही है, लेकिन जो सिर्फ एक गभीर व्यक्ति है। उसके भाषण मे सुन्दर शब्दो की भरमार नही है और वह थोड़ा लड़खड़ाता भी है। आप देख रहे है कि वह बोलता है और सोचता है, सोचता है और बोलता है। जब वह शब्दावली पर विचार करता हुआ ठहरता है तो वह अपने श्रोताओ को, जो उसी की विचारधारा के साथ बह रहे है, अपने साथ ही सोचने के लिए मजबूर कर देता है। जो ऐसे भाषणकर्ता को सुनते है, वे कहते है: उसने एक निश्चित विचार दिया। और वे इस विचार की प्रतिक्रिया मे उससे सहमत होते है या उसे ठुकरा देते है, उसके पक्ष मे बोलते है या उसका विरोध करते है, उसके प्रति अपना गुस्सा प्रदर्शित करते है या उसका स्वागत करते है।

कामरेड कारिब लगभग इसी तरह के भाषणकर्ता है। आप सब को इस तरह के भाषणकर्ता के सिद्धातो और तरीको को अपनाना चाहिये। आपको सोचना, अपनी भाषा बनाना खुद ही सीखना चाहिए, न कि आप पहले से बने हुए बने-बनाए शब्दो का प्रयोग करे। और चीजो

के साथ तब यह भी स्पष्ट हो जायेगा कि आप रूसी भाषा जानते हैं या नहीं।

यहां पर आठवीं, नवीं और दसवीं कक्षाओं के विद्यार्थी बोले। इनसे भी अधिक हॉनर के विद्यार्थी थे। सिद्धांतत:, यानी यदि पाठ्यक्रम से आंका जाय तो उन्हें रूसी भाषा का अच्छा ज्ञान होना चाहिए, उन्हें रूसी भाषा में सही तौर से अपनी बात व्यक्त कर सकने की शक्ति होनी चाहिए। लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि मैं नहीं बता सकता कि वे रूसी भाषा जानते हैं या नहीं, क्योंकि उन्होंने अपनी बात कुछ नहीं कही -- वे तो सिर्फ़ रटे-रटाए, बने-बनाए शब्दों में ही बोले। जब कामरेड कारिव बोले तो वे अपने शब्द खुद ही गढ़ रहे थे। और जब कोई खुद ही अपने शब्द गढ़ता है, तब आप बता सकते हैं कि वह रूसी भाषा जानता है या नहीं, स्कूल की शिक्षा ने उसे अपने विचार व्यक्त करना सिखाया है या नहीं। सोवियन स्कूलों के बच्चों को कामरेड कारिव के दिखाए हुए रास्ते पर चलना चाहिए — यदि वे गभीरता से काम करना चाहते हैं और स्कूलों को भगवान का अभिशाप नहीं समझते हैं।

मैं यह बात व्यर्थ ही नहीं कर रहा हूं। सचमुच ऐसे बच्चे हैं जो स्कूल को, अध्ययन को जबरिया और बोझा समझते हैं, वे इन्हें "स्वर्ग" पहुंचने के लिए आत्मशुद्धि का स्थान मानते हैं। यदि आपका विचार भिन्न है, यदि आप अध्ययन को एक भाग्यवान अवसर की तरह पूरा-पूरा प्रयोग करना चाहते हैं, जिससे आप शिक्षा प्राप्त कर सकें और अपने दृष्टिकोण विशद बना सकें, तो आपको अपनी भाषा गढ़ना सीखना पड़ेगा। आप जो लेख आदि लिखें, उन पर भी यही बात लागू होती है। अंकगणित के प्रश्नों को हल करने में, मसौदा और ड्राइंग बनाने में, और इसी तरह की दूसरी चीजों में भी यही बात लागू होती है।

हम मान लें कि लेख आदि लिखने में आप अधिक अच्छे-अच्छे विद्यार्थियों की "सहायता" लेते हैं या नक़ल उतार लेते हैं। यह विनाशकारी रास्ता है। आप कभी कुछ नहीं सीख पायेंगे। चाहे वह उतना अच्छा न हो, लेकिन लिखना आपको खुद ही चाहिए। आपको अपने ही लिखे हुए को, चाहे हज़ार बार लिखना पड़े, लेकिन आपको इससे डरना नहीं चाहिए और न ही अपना जांगर चुराना चाहिए। इससे आपको स्वतंत्र काम की आदत पड़ेगी। यहीं पर स्वतंत्रता व्यक्त होती है।

मिसाल के तौर पर भाषणों को ले लीजिए। हमारे यहां विभिन्न तरह के भाषणकर्ता हैं। ऐसे भी हैं जो दो, तीन या पांच घंटों तक बोलते रह सकते हैं, जो पुरानी पिटी हुई बातें दोहराते हुए ज़ोर-ज़ोर से नारों पर नारे देंगे, जिससे हर पन्द्रह-बीस मिनट पर तालियां पिटें। इसमें कुछ मुश्किल नहीं है। यह सबसे आसान बात है। ऐसे भाषण के लिए बहुत बुद्धि की ज़रूरत नहीं है। लेकिन ऐसा भाषण देना, जिसमें शब्द कम हों, जिसमें सोच-समझकर खुद भाषणकर्ता ने शब्द चुने हों, चाहे वह कुछ भद्दे भी हों, कही मुश्किल बात है।

यहां पर हॉनर के विद्यार्थी एकत्र हैं। जब सब अच्छे ही अच्छे विद्यार्थी एकत्र हों, तो यह समझ लेना कि क्या किया जाय, जो पिछड़े विद्यार्थी हों ही न, आसान बात है। लेकिन पिछड़े विद्यार्थियों को एकत्र करके उनसे यह पूछना कि वे क्यों पिछड़े हैं और उनके फिसड्डीपन को दूर करने के लिए क्या क़दम उठाए जाएं, बुरी बात नहीं होगी।

मैं आज बोलना नहीं चाहता था। सच तो यह है कि मैं कुछ गरमागरम बहस की आशा करता था। मैं आपसे स्कूलों की ख़ामियों, उनकी कमियों आदि के विषय में सुनना चाहता था। लेकिन आपकी

सभा तो एक समारोह में बदल गयी है। और जब समारोह हो, तो उसमें सार की बात होना मुश्किल है।

यहां पर, मंच से सबसे अच्छे विद्यार्थी बोले हैं। वे इस तरह बोले हैं जैसे रिपोर्ट दे रहे हों। ऐसा लगा मानो उनके समकक्षियों ने उनसे इस तरह बोलने को कहा है। साथियों ने कहा: "हम लोग ७वीं पोज़ीशन पर थे, अब हमारी पोज़ीशन पांचवीं है। हमें आशा है कि आगे हमारी पोज़ीशन तीसरी होगी।" लेकिन किसी एक ने भी यह नहीं कहा कि आगे उसका क्या करने का इरादा है, उसका उद्देश्य क्या है, माध्यमिक स्कूल की शिक्षा समाप्त करने पर वह क्या करेगा। साथियो, आप अपनी माध्यमिक शिक्षा समाप्त कर रहे हैं और एक स्वतंत्र जीवन शुरू करनेवाले हैं। यदि मैं दसवीं कक्षा का विद्यार्थी होता - दुर्भाग्य से अब मैं नहीं हो सकता - तो मैं अप्रैल में इस समस्या में फसा होता कि भविष्य में इस साल कौनसा पेशा पकड़ूं। और निस्संदेह मैं इस समस्या का सही हल निकाल लेता।

जैसा आप जानते हैं, यह हमेशा संभव नहीं है कि आप ज़िंदगी में अपना रास्ता चुन लें। बहुत संभव है, आप में से बहुत से पत्रकारिता के इंस्टीट्यूट में भरती होना चाहें - मैं पिछले वर्ष की एंट्रेंस परीक्षाओं से यह बात जानता हूं। लेकिन वहां होड़ इतनी अधिक है कि सभी उम्मीदवारों का मंजूर हो जाना बहुत मुश्किल है। आखिर, आपको जाना कहां है? शायद इस प्रश्न में आपकी अभी कोई दिलचस्पी नहीं है? यदि बात ऐसी है, तो यह बुरा चिन्ह है। आपकी बहस में इतना महत्वपूर्ण प्रश्न रह गया, यह मेरी दृष्टि में बड़ी ग़लत बात हुई। मैं बहुत चाहता हूं कि यह जान सकूं कि हमारे स्कूलों के अधिकांश बच्चे क्या बनना चाहते हैं? उनका प्रिय पेशा क्या है? यह बहुत ही ज्ञान-वर्द्धक बात होगी और इससे अनेक दिलचस्प नतीजे निकाले जा सकते

हैं। लेकिन आपसे मुझे कुछ मालूम ही नहीं हो सका, इसलिए मैं अभी कुछ नतीजे निकाल नहीं सका।

तो भी मैं यह सोच नहीं सकता कि आपने इस विषय पर कुछ विचार ही नहीं किया है। निश्चित ही यह प्रश्न आपके हरेक के दिमाग़ में है। अभी, जब आप तरुण हैं, हर व्यक्ति को इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए। इसमें किसी को संदेह नहीं हो सकता कि आपमें से ६० फ़ीसदी "पहाड़ों को चलायमान्" कर देना चाहते हैं और दुनिया को अपने ही ढांचे में ढालना चाहते हैं, क्योंकि मैं खुद अपनी युवावस्था में इसी प्रकार सोचता था। निस्संदेह आपके दिमाग़ में इस तरह के विचार आते होंगे। इसके अलावा कुछ हो ही नहीं सकता। युवावस्था का अर्थ ही यह है।

लेकिन समय आ गया है जब आपको अपना भावी रास्ता चुन लेना चाहिए जब आपको अंतिम तौर से यह तै करना है कि आप क्या करेंगे। आपमें से बहुत इस मसले को बहुत सीधे तरीक़े से हल करते हैं। आप कहते हैं: मैं कोम्सोमोल का सदस्य हूं, भविष्य में मैं कम्युनिस्ट बनूंगा, सोवियत नागरिक बनूंगा—और बस मामला ख़तम हो गया। मैंने अपना भविष्य "निश्चित" कर लिया है। लेकिन यह तो बहुत ही आसान "आत्म-निर्णय" हुआ।

अपने भविष्य की परिभाषा के प्रति गंभीर होने का अर्थ है अपनी जीवन-यात्रा का पथ निश्चित करना, अपने चरित्र को गढ़ना, अपने विचारों को निश्चित करना—अपना पेशा ढूंढ़ना। आपमें से हरेक को इस प्रकार तर्क करना चाहिए—मैं सोवियत नागरिक हूं—एक ऐसे राज्य का नागरिक जो चारों ओर से शत्रुओं से घिरा हुआ है। इसके लिए पिछली पीढ़ियों से कम नहीं, अधिक संघर्ष करना है। मिसाल के तौर पर, हमारी पीढ़ी—पुराने बोल्शेविकों को ही ले

लीजिए। हम लोगों ने रूसी पूंजीपतियों और जमींदारों से संघर्ष किया। ये लोग मुकाबलतन कमजोर और बुरी तरह संगठित शत्रु थे। उनका सांस्कृतिक स्तर भी ऊंचा न था। लेकिन आप लोगों को ऐसे शत्रु का सामना करना पड़ेगा, जिसका मुकाबला कोई नहीं है, जो कहीं अधिक संगठित है, कहीं अधिक दगाबाज और राजनैतिक संघर्ष में ज्यादा धोखेबाज और चतुर है। इस संघर्ष के लिए तैयार होने का अर्थ है दृढ़ प्रतिज्ञता और नियमित प्रयास।

आपको यह याद रखना चाहिए कि यह संघर्ष सिर्फ मोर्चे पर ही नहीं होगा। हमारे विद्यार्थियों ने मोर्चे के अगुआ संघर्षों में साहसी करिश्मों का प्रदर्शन किया है। और इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। क्या आप सुसंस्कृत सोवियत युवक के साहसी न होने की कल्पना भी कर सकते हैं? नहीं। यह संघर्ष जीवन के हर क्षेत्र में होगा।

यह संघर्ष उग्रता में सोवियत सत्ता के स्थापनार्थ किये गये प्रारंभिक संघर्ष को भी मात कर देगा।

इस निर्णयात्मक संघर्ष में जीत प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि आप अपना चरित्र लोह बनाए, अपनी इच्छा-शक्ति को दैनिक संघर्ष में लोह बनाए। इसके लिए आवश्यक है कि आप यह स्पष्टतः निश्चित कर ले कि समाजवादी निर्माण के कार्य में आप क्या करे और अपने चुने हुए जीवन-कार्य में पूर्ण पांडित्य प्राप्त कर ले।

इस प्रकार का आत्म-निर्णय आपमें से हरेक के लिए और आपके दैनिक जीवन के लिए बहुत महत्व का है। जब आप अपना चरित्र निर्मित कर लेंगे, जब आप अपना विश्व-दृष्टिकोण स्पष्टतः स्थापित कर लेंगे, जब आप समाजवादी निर्माण-कार्य में अपना स्थान प्राप्त कर लेंगे, जब आपके जीवन का उद्देश्य अपने विचारों को व्यवहार में लाना बन जायेगा, तभी यह कह सकना संभव होगा कि आपने

जीवन की अनेक निराशाओं और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर ली है। जैसा कि आप जानते हैं इस तरह की बातें हो जाती हैं: एक विद्यार्थी एक लड़की से दोस्ती शुरू करता है, फिर उसे छोड़ देता है और फिर किसी दूसरी लड़की से दोस्ती शुरू करता है यह एक पूरा "नाटक" हो गया है। यह न सोचिए कि यह एक बूढ़े की नानाज़नी है – मैं स्वयं तरुण था और अब भी मैं तरुणों की भावनाओं का समादर करता हूं। इसलिए एक ऐसे आदमी के लिए, जिसने जीवन में अपने लिए कोई स्थान नहीं बनाया, इस तरह का "नाटक" बहुत ही महत्व का हो सकता है। हां, तो आम तौर पर, जीवन के संबध में सभी मधुर स्वप्न टूट जाते हैं और वह देर तक उन कुप्रभावों का शिकार बना रह सकता है। एक स्पष्ट-दर्शी और निश्चयात्मक व्यक्ति के लिए इस "नाटक" से गुजरना कहीं आसान होगा।

इसलिए यह आवश्यक है कि जितनी जल्दी हो सके एक व्यक्ति का चरित्र-निर्माण और व्यापक विश्व-दृष्टिकोण बन जाना चाहिए। यदि वह कहता है कि वह पशु-विशेषज्ञ बनना चाहता है, तो बस इतना ही काफ़ी है। फिर वह अपने देश के हित के लिए पशु-विज्ञान के अध्ययन में अपनी समूची शक्ति लगा दे। सोवियत पशु-विशेषज्ञ और एक पूंजीवादी देश के पशु-विशेषज्ञ में अंतर है। सोवियत पशु-विशेषज्ञ कहेगा कि वह इस क्षेत्र में अपने देश की अधिक से अधिक सेवा करेगा। और वह अपने उद्देश्य में अवश्य सफल होगा। उसका काम बहुत ही अमूल्य होगा। और इस तरह के व्यक्ति के लिए जीवन के तमाम कंटकों, मुश्किलों और जीवन के नाटकों पर विजय पाना सौ-गुना आसान होगा, बनिस्बत उस व्यक्ति के जिसके जीवन में कोई उद्देश्य नहीं है, कोई निश्चित धंधा नहीं है, कोई निश्चित विचार नहीं है।

व्यक्तिगत तौर से मैं उन लोगों की बहुत इज़्ज़त करता हूं, जिन्होंने अपने चरित्र और जीवन-दर्शन का निर्माण कर लिया है। शायद आपके लिए ऐसा कर सकना बहुत जल्दी मालूम होता है? नहीं, साथियो, बात ऐसी नहीं है।

अंत में मैं एक बात और कहना चाहता हूं। मुझे मालूम हुआ है कि आपमें से कुछ लोग इस तरह तर्क करते हैं: इम्तहानों में अच्छे नंबर प्राप्त करने की आवश्यकता क्या है, आगे तो पढ़ना है नहीं, हमें तो फ़ौज में भरती होना है। यह तर्क-प्रणाली बिल्कुल ही गलत है। पहले तो इस मामले पर प्राप्त नंबरों की दृष्टि से विचार नहीं करना चाहिये। महत्वपूर्ण बात नंबर पाना नहीं है, बल्कि यह कि भविष्य में इन साथियों को नियमित ढंग से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर न प्राप्त होगा, यानी वे अपनी माध्यमिक शिक्षा की कमज़ोरियों को पूरा न कर पायेंगे। अधिकांशतः वे ही साथी अपनी फ़ौजी-ट्रेनिंग के बाद उच्चतर शिक्षालयों में जा सकेंगे जब उनके माध्यमिक स्कूलों का नतीजा अच्छा होगा। यह बताने की ज़रूरत नहीं कि उनमें से काफ़ी तो फ़ौज के ही उच्चतर स्कूलों में भरती हो जायेंगे। लाल फौज की अनेक शिक्षा संस्थाएं हैं, और वहां से पास होकर वे ही निकलेंगे जो अपनी माध्यमिक शिक्षा सुन्दर ढंग से प्राप्त करेंगे। इसलिए माध्यमिक शिक्षा में आपको अपनी समूची शक्ति लगानी चाहिए।

उच्चतर शिक्षालय की बात दूसरी है। वहां आपको उच्चतर शिक्षा मिलेगी, वहां लोग विज्ञान की निश्चित शाखाओं में विशेषज्ञता प्राप्त करेंगे। दूसरी ओर, माध्यमिक स्कूलों में लोग नियमित तरीक़े से काम करना सीखते हैं, वहां तो सिर्फ़ शिक्षा की बुनियादें डाली जाती हैं। इसलिए मेरा विचार है कि जो साथी यह सोचते हैं कि माध्यमिक स्कूलों में अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं

है, वे बड़ी ग़लती कर रहे हैं, और अपना बहुत ही अनिष्ट कर रहे हैं।

मैं अपने दिल से कामना करता हूं कि दसवीं कक्षा के विद्यार्थी हमारी लाल फ़ौज के अच्छे सिपाही हों और साथ ही उच्चतर शिक्षालयों में भी अच्छे विद्यार्थी बनें। (ज़ोरदार तालियां)

"कम्युनिस्ट शिक्षा की समस्यायें",
राजनैतिक साहित्य का राज्य-प्रकाशन गृह,
१९४०; पृष्ठ २८-३५

अखिल-संघीय लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय कमेटी तथा स्कूली बालक और किशोर-पायोनीयरों से संबंधित कोम्सोमोल क्षेत्रीय कमेटियों के सेक्रेटरियों के सम्मेलन में भाषण

८ मई १६४०

साथियो, बोलने का मेरा कोई इरादा नहीं था, लेकिन साथी मिखाइलोव कहते हैं कि बिना बोले काम न चलेगा। अच्छा, तो इस सम्मेलन से संबंधित किस बात का मैं ज़िक्र करूं? पहले, मैं आप की रिपोर्टों को ही लेता हूं। मुझे ऐसा लगता है कि आपकी रिपोर्टों में अनेक बुनियादी कमियां हैं।

आप लोग कोम्सोमोल की प्रादेशिक कमेटियों के मंत्री हैं, जिनपर स्कूली बालकों और किशोर-पायोनीयरों में काम करने की ज़िम्मेदारी है। मैं समझना चाहता हूं कि यह ज़िम्मेदारी क्या है? मैं

अपने को बूढ़ा कहने में हिचकिचाता हूं। फिर भी मैं बुढ़ापे के निकट हूं, और इसलिए मैं अपनी युवावस्था के दिनों से आज का मुक़ाबला करता हूं। पुराने युग के शिक्षा-मंत्रालय से आपका कैसा संबंध होता? मैं इतना कह सकता हूं कि जो स्थान आज आपको मिला है, वह उस काल में कहीं भी मुझे ढूंढ़े नहीं मिला।

मैं समझता हूं कि आपका मुख्य काम है पार्टी और सोवियत राज्य को बच्चों की कम्युनिस्ट शिक्षा में सहायता देने के लिए आप स्कूलों और अध्यापकों में राजनैतिक उद्देश्यों की भावना भरें। यहां पर अनेक साथी बोले हैं और उन्होंने अपने काम की रिपोर्ट भी दी हैं। ऐसा लगता है कि इस सम्मेलन में शिक्षित और सुसंस्कृत लोग आए हुए हैं। मैं साक्षी हूं कि आप बहुत अच्छा भाषण दे सकते हैं। सबसे अच्छी रिपोर्ट बेलोरूस कोम्सोमोल की केन्द्रीय-कमेटी के मंत्री ने दी है। लेकिन मेरा ख़्याल है कि अगर उसे स्वच्छन्द कहे जाने का डर नहीं होता, तो वह भिन्न प्रकार की रिपोर्ट देती। सच तो यह है कि जहां तक तत्व का संबंध है, आप सबकी रिपोर्टें एक ही तरह की हैं। ऐसा क्यों? क्योंकि यदि कहा जाय तो वे संगठनात्मक, शासकीय और अनुशासन के ढंग की हैं। आप सभी का बोलने का ढंग प्रशासकीय था और उसमें अधिकार की बू थी। यह पहली बड़ी त्रुटि है।

आपमें से एक ने भी अध्यापन के तरीक़ों के संबंध में कुछ नहीं कहा; और यदि आप इस पर विचार करें तो यह बात निर्देशन के रूप में मालूम होती है। आपमें से एक ने भी सोवियत अध्यापकों और विशेषतः उन अध्यापकों के सांस्कृतिक स्तर के बारे में नहीं कहा, जो कोम्सोमोल के सदस्य हैं, और जिस कारण उन्हें स्कूलों में अगुआ होना चाहिए। मैं आपसे पूछता हूं: कोम्सोमोल के सदस्य स्कूली अध्यापकों में क्या आपको ऐसे लोग मिले हैं जो अध्यापन-कार्य में या स्कूल की किसी दूसरी कार्यवाही में इस तरह आगे बढ़कर हिस्सा

लेते हों? अगर आप उनसे मिले होते तो रिपोर्ट में उनका ज़िक्र होता। अगर आप को ऐसे लोग नहीं मिले, तो आपको अपने ऊपर शरम आनी चाहिए। आखिर यह तो बहुत ही निश्चित बात है कि ऐसे लोग हमारे स्कूलों में अवश्य होंगे। यह हो नहीं सकता कि ऐसे लोग हों ही नहीं। यह बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है, पर ऐसा लगता है कि जैसे यह आपकी दृष्टि में आया ही नहीं। इस प्रश्न का नज़रअंदाज़ हो जाना ही यह बताता है कि आपको अपने कर्तव्य का स्पष्ट ज्ञान नहीं है।

स्कूली बालकों और किशोर-पायोनीयरों के बीच काम करने के लिए उत्तरदायी कोम्सोमोल के मंत्री होने का अर्थ है कि सैकड़ों और हज़ारों अध्यापकों के लिए आदर्श बन कर सेवा करना। क्यों, आपने खुद कहा है कि हमारे अध्यापकों में ३० फ़ीसदी कोम्सोमोल की आयु के हैं। यदि वे आपको आदर्श मानते हैं तो शायद वे भी ऐसे ही प्रशासकीय, संगठनात्मक और अनुशासनीय मामलों की रिपोर्ट देते होंगे। दुर्भाग्य की बात है कि आपमें से एक ने भी स्कूल के अध्यापकों में कोम्सोमोल के सदस्यों के जीवन और काम के बारे में कुछ नहीं बताया। यह दूसरी बड़ी त्रुटि है।

यदि आप स्कूलों में अनुशासन लाने के लिए प्रयत्नशील हैं—और आपको यह प्रयत्न करने चाहिए—तो पहली ज़रूरी बात यह है कि अध्यापक को ऊंचे अधिकार दीजिए। मै उन अनेक अध्यापकों के बारे में यहां नहीं बताऊंगा, जो या तो अपने विषय-ज्ञान की कमी के कारण या विषय को जानते हुए भी अच्छा अध्यापन न कर पाने के कारण, या आम तौर पर इस कारण कि उनका अध्यापन न तो अच्छा है और न ख़राब, स्कूल में अधिकार की कमी का अनुभव करते हैं। मैं ऐसी मिसालें लेता हूं, जहां आंतरिक और बाह्य स्थितियां अध्यापकों के अधिकार के विकास के अनुकूल हैं। मैं पूछता हूं: आपने इस अधिकार को व्यापक और सुदृढ़ करने के लिए क्या किया है? दुर्भाग्य से कोई

भी इस विषय पर नही बोला। आपने यह भी नही बताया कि अध्यापको का अधिकार-क्षेत्र बढ रहा है या नही, और यदि बढ रहा हे तो यह कैसे हुआ? किन साधनो से इसे प्राप्त किया गया? यह तीसरी बडी त्रुटि हे।

मेरे विचार से स्कूली युवको और किशोर-पायोनीयरो मे काम के प्रति उत्तरदायी कोम्सोमोल कमेटियो के सेक्रेटरियो को बहुत ही सभ्य और सुसस्कृत होना चाहिए। इससे मेरा तात्पर्य यह नही कि आप पाडित्य के सकुचित अर्थो मे विशेषज्ञ बन जाये। नहीं, बिलकुल नही। यह तो बहस का सवाल ही नही हे। शायद यदि आप ऐसे पडित हो गए तो किन्ही मामलो मे घुटाला भी कर सकते है। आपको विद्वत्ता के आम अर्थो मे ही सुसस्कृत होना चाहिए, यानी आपको स्कूल के काम से सबधित समस्याओ का, विज्ञान, कला और टकनोलोजी की बुनियादी शाखाओ का सामान्य ज्ञान होना चाहिए। आपको ललित साहित्य का अच्छा ज्ञान होना चाहिए, क्योकि आप अध्यापन-कार्य करनेवाले कोम्सोमोल सदस्यो के लिए आदर्श हे। आप इस मान मे सुसस्कृत हो कि आप को यह पता हो कि अध्यापको के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए, आप यह जाने कि आम तरह से लोगो के प्रति कैसा व्यवहार किया जाय। व्यवहार-कुशल होने के ही मानो मे आपको सुसस्कृत होना चाहिए। यदि सस्कृति के ये तत्व आपमे है, तो आप आसानी से सोवियत अध्यापको की आत्मिक आवश्यकताओ ओर हितो को समझ जायेगे। आप को यह जानने मे कठिनाई नही होगी कि लोग क्या पढ रहे है, उन्हे सबसे अधिक कोन पुस्तके पसद है, और सामान्य रूप से साहित्य के प्रति उनका क्या रुख हे। और अतत: आपके लिए अध्यापको और बच्चो की भावनाओ को समझ सकना अधिक आसान होगा। तभी आप बच्चो की कम्युनिस्ट शिक्षा मे पार्टी ओर सोवियत राज्य के सच्चे सहायक होगे। दुर्भाग्य से आप लोगो ने इस विषय पर भी कुछ नही कहा। यह चौथी बडी त्रुटि हे।

मेरा कहना यह है कि आप अपनी रिपोर्ट बिलकुल भिन्न प्रकार की बनाएं। अनेक बातों, और विशेषकर इस बात से कि आप को भाषण-शक्ति का वरदान प्राप्त है, मैं समझता हूं कि यह काम आपकी शक्ति के भीतर की बात है। मान लिया कि इसके लिए कठिन परिश्रम करना होगा, काफी सोचना होगा, क्योंकि मामला खतरे का है। आप फिसल जायं, गलती कर जायें, लेकिन यह कोम्सोमोल के सदस्यों को शोभा नही देता कि वे मुश्किलों से डरें और खतरे के सामने दुविधा में पड़ें। आपके भाषणों में रचनात्मक विचारधारा और पेशकदमी की सजीवता होनी चाहिए। अलबत्ता, जब जरूरी हो तो आपकी रिपोर्टों में संगठनात्मक, प्रशासकीय और अनुशासनात्मक मामलों पर भी जोर होना चाहिए। इसके अलावा उनमें राजनैतिक तत्व भरना और स्कूल के बच्चों तथा अध्यापकों में विकसित होती हुई और बढ़ती हुई सांस्कृतिक मान्यताओं को उभारना, आपका काम है।

मैं विशेषकर कोम्सोमोल की महिला-सदस्यों से कुछ कहना चाहता हूं। सार्वजनिक शिक्षा के काम में लगे कोम्सोमोल के साथियों में आप सबसे अधिक सुसंस्कृत है, क्योंकि हम लोग सुसंस्कृत नवयुवकों को हवाई बेड़े से लेकर खनन उद्योग तक, हर तरह के कामों में घसीटते है। सार्वजनिक शिक्षा के कामों में लगे कोम्सोमोल के सदस्यों का बड़ा भाग युवतियों का है। सार्वजनिक शिक्षा का प्राय: सारा काम कोम्सोमोल की युवती-सदस्यों के हाथ पड़ा है। और स्कूलों की मुख्य जिम्मेदारी आप पर है। इसीलिए, यह आपका कर्तव्य हे कि कोम्सोमोल आयु के अध्यापकों की, जिन की तादाद काफ़ी है, सांस्कृतिक सतह को ऊंचा करें।

यहां पर किसी अध्यापिका के बारे में बताया गया, जो किसी भी समस्या को हल नहीं कर सकी, और इसीलिए उसे एक अच्छी अध्यापिका नहीं माना गया। यह बिलकुल मशीनी, बिलकुल ग़लत

रवैया है। ऐसा ज्ञानवान कौन है जो हर समस्या का हल निकाल ले? मेरा लड़का एक माध्यमिक स्कूल में अध्यापक था। मैंने उससे एक बार पूछा कि, "तुम्हारे विषय में बच्चे तुम से जितने भी सवाल करते हैं, क्या तुम उन सबका जवाब दे पाते हो?"

उसने कहा:

"मैं सब सवालों का जवाब कैसे दे सकता हूं? जब मुझ से कोई ऐसा सवाल करता है, जिसका जवाब मैं नहीं दे सकता, तो मैं साफ़ कह देता हूं कि अभी मैं तुम्हारे सवाल का जवाब नहीं दे सकता, लेकिन मैं अगली बार अवश्य इसका जवाब दूंगा।"

सचमुच जब बीस खुर्राट लड़कों की आंखें इस विचार से चमकती होती हैं कि "इस बार तो बच्चू पकड़े गए", तो अध्यापक की स्थिति आसान नहीं होती। तो भी अध्यापक का कर्तव्य है कि वह अपने शिष्यों से खुले तौर पर कह दे कि इस समय मैं तुम्हारे सवाल का जवाब नहीं दे सकता, क्योंकि मुझे जवाब नहीं मालूम है; हां, अगली बार मैं इस का पूरा स्पष्टीकरण करूंगा। मेरी राय में शिष्यों की तरफ़ एक अध्यापक का ऐसा ही ईमानदार रवैया होना चाहिए, तभी स्कूल के बच्चों को ईमानदार बनने की शिक्षा मिल सकेगी।

मेरे परिवार के ६ व्यक्तियों ने विश्वविद्यालय की शिक्षा पाई है। उनमें ज़्यादातर इंजीनियर हैं, जिन्हें अंकगणित का ज्ञान होना चाहिए। जब मेरी सब से छोटी लड़की माध्यमिक स्कूल में पढ़ती थी, तो ऐसा हो जाता था कि मश्क़ करते वक़्त वे लोग उसके सवालों को हल करने में मदद देने की होड़ में लग जाते थे। वे सब हल में लग जाते थे, लेकिन सोचिए कभी-कभी ऐसा भी होता था कि वे एकदम से हल न निकाल पाते थे। वे भूल गए थे। कोई कह सकता है कि चूंकि वे सब के सब इंजीनियर थे और उन्हें अंकगणित का अच्छा ज्ञान था, इसलिए हल निकालना बहुत आसान होना चाहिए। लेकिन वह

नाकामयाब रहते थे। इससे जाहिर है कि इस तरह के एकाध मामलों मे ही यह नही परखा जा सकता कि अमुक व्यक्ति अपने विषय को जानता है या नही, कि वह अच्छा अध्यापक है या खराब।

एक अध्यापक का अधिकार सिर्फ़ प्रशासकीय ढंग से नहीं बढ़ाया जा सकता। लेकिन जब हम देखें कि एक अध्यापक के अधिकार की खिल्ली उड़ रही है, तो दखल देना जरूरी है, क्योंकि इस तरह के रवैये मे सिर्फ़ उस अध्यापक की ही नही, वरन्, आम तौर पर सभी अध्यापकों के अधिकार में कमी आती है। अगर हम अध्यापक के अधिकार को ऊंचा उठाना चाहते हैं, तो हमें इस समस्या के प्रति रवैया बनाने में सचेत रहना होगा। अलबत्ता, यह तो कभी अच्छी बात नही है कि एक अध्यापक जो कभी चश्मा नही लगाता, यह कहे कि वह बिना चश्मे के देख ही नही सकता। साथ ही, हमें यह याद रखना चाहिए कि दुनिया के परदे पर कभी कोई ऐसा ज्ञानी न हुआ है और न है जो सभी सवालों का जवाब दे सके। सभी नागरिकों में उसके प्रति सम्मान की भावना जगाकर ही अध्यापक के अधिकार की वृद्धि हो सकती है।

मुझे प्रतीत होता है कि कोम्सोमोल द्वारा इसी का प्रचार होना चाहिए—किसी सर्कुलर द्वारा नहीं, बल्कि ऐसे अलिखित नियम द्वारा जो हमारी तमाम कोम्सोमोल की परम्परा का अंग हो जाय। और आप कोम्सोमोल की कमेटियों के सेक्रेटरी लोग इस अलिखित नियम के सबसे प्रथम और उत्साही प्रचारक बनिए, क्योंकि अध्यापक के अधिकार बढ़ाने के लिए पार्टी और कोम्सोमोल की यही सामान्य नीति है।

यहां पर स्कूली बच्चों की शिक्षा की प्रगति के बारे में बहुत कुछ कहा गया है और अनेक आंकड़े दिये गये हैं। जब आप एक आम तस्वीर खींचना चाहें तो आंकड़ों का अलबत्ता बहुत महत्व होता है। लेकिन यह बात पक्की है कि आप लोग शिक्षा-विभागों के अध्यक्ष नहीं

हैं। अलावा इसके, आपको ये आंकड़े बिना किसी विशेष मुश्किल के अध्यापकों और डायरेक्टरों से मिल जाते हैं, जो आपके कहने से उन्हें आपके लिए तैयार कर देते हैं। फलत: आपको मामूली जोड़-वाकी भी नहीं करनी पड़ती। ईमानदारी से कहता हूं कि मैंने आप से इससे कहीं ज्यादा आशा की है। मुझे आशा थी कि आप बतायेंगे कि इन आंकड़ों के पीछे क्या है? आपको स्थिति का विश्लेषण अवश्य करना चाहिए था, क्यों? लेकिन मुझे आपसे इस तरह का कुछ भी सुनने को नहीं मिला।

हम यह बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि जहां कुछ अध्यापकों से बढ़िया नंबर प्राप्त कर लेना आसान है, वहां कुछ ऐसे भी सख्त अध्यापक हैं जो सिद्धांतत: बहुत अच्छे नंबर नहीं देंगे। वे घोषित करेंगे कि सिर्फ़ उन्हीं का ज्ञान "बहुत बढ़िया" है, लेकिन यहां फिर हमें मामले की गहराई में जाना है। हमारे पास बहुत बढ़िया अध्यापक हैं, विशेषकर पुराने अध्यापकों में ऐसे अनेक हैं, जिन्हें अपने विषय से बहुत प्यार है, जो उस पर लट्टू हैं और बहुत अच्छी तरह पढ़ाते हैं। बच्चों के दिमाग़ में ऐसे अध्यापकों के लिए, और साथ ही जिस विषय को वे पढाते हैं, उस के लिए गहरी श्रद्धा भी उनमें होती है। हो सकता है कि नंबर देने के मामले में ऐसे लोग नरम हों, लेकिन निश्चयपूर्वक यह कहा जा सकता है कि इनके शिष्यों का उस विषय का ज्ञान कहीं ज्यादा होगा, बनिस्बत उनके जिन्होंने ऐसे अध्यापकों से शिक्षा पाई है जो सिर्फ़ अपने को ही बढ़िया नंबर पाने का अधिकारी समझते हैं। आपने सवाल के इस पहलू पर भी ध्यान नहीं दिया।

आम तौर पर मुझे इस बात पर कुछ-कुछ आश्चर्य है कि आपने अपने को काग़ज़ी रिपोर्टों में ही सीमित कर दिया।

अपने आलोचकों की भाषा का प्रयोग किया जाय, तो कहा जा सकता है कि आपकी रिपोर्टें फ़ार्मलिस्ट (औपचारिक) ज्यादा थीं,

और उनमें समाजवादी यथार्थवाद का तत्व कम था। मेरी समझ में ब्रूसोव ने एक बार कहा था: "मैं युवकों को इसलिए प्यार करता हूं कि उनकी सहायता से आदमी आगे बढ़ सकता है।" यह सत्य है। तिस पर भी हमारे मामले में प्रगति नहीं हुई, यद्यपि इसकी संभावनाएं बहुत हैं। आखिर, आप लोग शिक्षा-विभागों के अध्यक्ष-पदों पर तो आसीन हैं नहीं, जिनको मरम्मत आदि के कामों से लेकर स्कूल-अनुशासन तक के प्रशासकीय कार्यों के भार से दबना पड़ता है। शिक्षा-विभागों के अध्यक्षों के मुक़ाबले आप को अपने कार्य में अधिक स्वतंत्रता मिली हुई है। आप लोग पार्टी और सोवियत सरकार के स्कूलों की इमारतों आदि की मरम्मत के मामले में उतने सहायक नहीं—हालांकि आवश्यकता पड़ने पर इस मोर्चे पर भी आपको मदद देनी चाहिए—जितने कि आनेवाली पीढ़ी को कम्युनिस्ट शिक्षा-दीक्षा से सुसज्जित करने की है। अतत: मैं यह मानकर चलता हूं कि आप लोग निष्पक्ष पर्यवेक्षक नहीं, बल्कि उत्साही सोवियत देशभक्त हैं। आपको तो उत्साह से उतरना चाहिए और यदि ऐसा नहीं है तो आप कैसे नौजवान हैं? आप कैसे सोवियत देशभक्त हैं? आपको हमेशा ही आगे बढ़ना चाहिए। आपको हर नए अहम सवाल को फ़ौरन हाथ में लेना चाहिए। मैं फिर दोहरा दूं कि ऐसा करने के लिए आपको सुसंस्कृत होना ज़रूरी है। अगर यह मेरी शक्ति में होता, तो मैं आप सबको कम से कम दिन में ५ घंटे साहित्य (उपन्यास, कला, विज्ञान, इंजीनियरिंग आदि की अनेक समस्याओं पर लेख आदि) पढ़ने को मजबूर करता, जिससे आप योग्य, सुसंस्कृत और शिक्षाप्राप्त आदमी बनें और जब कभी भी सिद्धांत या अमली मामले की कोई समस्या उठती, तो अध्यापक अपने आपसे कह उठता—आह, इसमें विज्ञान की अकादमी की गंध आती है! ऐसा होने पर फ़ौरन ही अध्यापकों की निगाह में आपका भी अधिकार बढ़ जायेगा।

जहां तक मुझे मालूम है, स्कूलों पर आपका जाब्ते मे कोई अधिकार नही, लेकिन आप उनको प्रभावित कर सकते है। इस अर्थ मे पार्टी आप से महत्वपूर्ण तथा फलदायक सहयोग की आशा करती है। इसीलिए मुझे बार-बार दोहराना पडता है कि स्कूली बच्चो और पायोनीयरों के मध्य काम करने के उत्तरदायी कोम्सोमोल कमेटियों के मत्रियो को सुसस्कृत होना चाहिए। और जहा तक अध्यापकों का संबध है, उन्हे तो सस्कृति के मामले में सर्वप्रथम होना चाहिए।

संस्कृति के साथ-साथ ही स्कूलों मे आपको बोल्शेविक भावना भरनी चाहिए।

साथियो, जैसा आप देख रहे है, मैने आप सब की भूमिका और महत्व का बहुत ही ऊचा मूल्याकन किया है। इससे आप पर एक बडा उत्तरदायित्व भी आ जाता है। जैसा मैने शुरू मे ही कहा था, यह आपका कर्तव्य हो जाता है कि आपकी रिपोर्टो मे राजनैतिक तत्व हो, जिससे कि वे रिपोर्टें सचमुच पार्टी-भावना का प्रदर्शित कर सकें। मार्क्सवाद, सच्चे मार्क्सवाद का यह आपका पहला पाठ होगा।

"कम्युनिस्ट शिक्षा की समस्याये"
राजनैतिक साहित्य का राज्य-
प्रकाशन गृह
१९४०; पृष्ठ २०-२७

कम्युनिस्ट शिक्षा के बारे में

मास्को नगर के पार्टी-कार्यकर्ताओं की सभा में दिया गया भाषण

२ अक्तूबर १९४०

साथियो, आज से ठीक बीस साल पहले व्लादीमिर इल्यीच लेनिन ने रूसी युवक कम्युनिस्ट लीग की तीसरी अखिल रूसी कांग्रेस में कम्युनिस्ट शिक्षा पर एक भाषण दिया था। कोम्सोमोल को दिये गये उस भाषण में उन्होंने कहा था कि पूंजीवादी समाज में पली हुई हमारी पीढ़ी के लिए कम्युनिस्ट समाज की स्थापना का काम पूरा करना बहुत मुश्किल होगा। यह काम युवकों के ज़िम्मे पड़ेगा।

आज जब आप तालियां बजा रहे थे, तो ये शब्द अपने-आप मेरे दिमाग़ में आ गए और मैं सोचने लगा कि मेरे सामने कोम्सोमोल के वही भूतपूर्व सदस्य हैं, वे ही लोग जिनके सामने लेनिन ने भाषण दिया था, जो विकसित हो गए हैं और जीवन में अनुभवी हो गए हैं। आज वे ही समाजवादी निर्माण-कार्य में सक्रिय भाग ले रहे हैं। समाजवाद के निर्माताओ, मैं भी तुम्हारे प्रशंसकों में से हूं।

हम कम्युनिस्ट शिक्षा के प्रति अधिक ध्यान देते हैं। हमारे प्रकाशन अकारण ही "शिक्षा" शब्द से भरे नहीं रहते।

तो भी, आम तौर पर शिक्षा का अर्थ क्या है, यह सही तौर पर बताना बहुत मुश्किल है। प्रायः शिक्षा और लालन-पालन को एक मान लिया जाता है। दोनों में निकट संबंध है अवश्य, लेकिन दोनों पर्यायवाची नहीं हैं। शिक्षा शास्त्री शिक्षा को अधिक महत्व देते हैं। इस शिक्षा की अपनी विशिष्टताएं हैं।

मेरी राय में शिक्षक द्वारा अपेक्षित गुणों को शिक्षार्थी में भरने के लिए उसके दिमाग पर निश्चित, उद्देश्यपूर्ण और आयोजित ढंग से प्रभाव डालना ही शिक्षा है। मुझे लगता है कि ऐसी परिभाषा (जिसका मानना किसी के लिए भी लाजिमी नहीं है) शिक्षा के सभी पहलुओं को प्रतिबिंबित कर देती है। जैसे—विश्व के प्रति एक निश्चित दृष्टिकोण का निर्माण, नैतिकता और मानवीय व्यवहार-व्यापार के नियम, चरित्र और इच्छा शक्ति का निर्माण, आदतें और अच्छी रुचि और शारीरिक गुणों का विकास, आदि।

शिक्षा-कार्य बहुत ही कठिन व्यवसायों में से है। अच्छे से अच्छे शिक्षा शास्त्री इसे न सिर्फ विज्ञान की वस्तु समझते हैं, बल्कि कला की भी वस्तु मानते हैं। उनके दिमाग में स्कूली शिक्षा की बात है, जो अलबत्ता सीमित दायरे की वस्तु है। इसके साथ ही जिंदगी का स्कूल भी है, जिसमें जनता की शिक्षा का काम लगातार ही चलता रहता है और जिसमें खुद जिंदगी, पार्टी, राज्य, सभी शिक्षक होते हैं और जिसमें लाखों शिक्षार्थी होते हैं, यह कहीं ज्यादा पेचीदा मामला है।

आज मैं इसी जनता की शिक्षा के विषय में बोलना चाहता हूं।

१

एंगेल्स ने अपनी पुस्तक "एन्टी-डुहरिंग" में लिखा है:

"...इन्सान, जाने या अनजाने अंततः अपने नैतिक विचार अपनी वर्ग-स्थिति पर आधारित व्यावहारिक संबंधों से ग्रहण करता

है, उत्पादन और विनिमय द्वारा बनने वाले आर्थिक संबंधों के कारण... नैतिकता सदैव ही वर्ग-नैतिकता रही है; नैतिकता या तो शासक-वर्ग के प्रभुत्व और हितों के पक्ष में रही है या जैसे ही शोषित वर्ग-शक्तिशाली हो गया, वह शोषितों के भावी हितों का प्रतिनिधित्व करने लगी।"

इसी प्रकार, वर्गीय समाज में शिक्षा भी कभी न वर्गीय हितों के बाहर और न उनसे ऊपर रही है।

पूंजीवादी समाज में शिक्षा ऊपर से नीचे तक पाखंड से भरी हुई है, वह शासक वर्ग के स्वार्थों को ही परिपोषण करती है। पूंजीवादी समाज में होने वाले अन्तर्द्वंद्वों का प्रतिबिंब उसका चरित्र अंतर्विरोध है।

पूंजीपतियों का आदर्श है मजदूरों और किसानों का शोषण, गूंगों की भांति भारवहन करने वाले आज्ञाकारी चाकरों के रूप में देखना। इसीलिए पूंजीपति कभी न चाहेंगे कि मजदूरों और किसानों में किसी तरह के साहस और बहादुरी को बढ़ावा मिले। वे चाहेंगे कि उन्हें किसी भी तरह की शिक्षा न मिले, क्योंकि अशिक्षित और दबे-पिसे लोगों को वश में रखना कहीं आसान है। लेकिन ऐसे लोग विजय-अभियान में नहीं जा सकते। बिना प्रारंभिक शिक्षा के वे मशीनें और औज़ार प्रयोग में नहीं ला सकते। एक तरफ, टेकनिकल प्रगति, हथियारों की दौड़ आदि में आपसी होड़; और दूसरी तरफ़, शिक्षा प्राप्त करने के लिए मजदूरों-किसानों के संघर्ष पूंजीवादियों को मजबूर करते हैं कि वे मेहनतकश जनता को कम से कम ज्ञान का जूठन तो दें। दूसरे देशों की लूट-खसोट करने के लिए पूंजीवादियों को मजबूर होना पड़ता है कि वे अपने ही लिए मेहनतकश जनता में साहस, शौर्य आदि गुणों का विकास होने दें।

पूंजीवादी शिक्षा की कोई भी प्रणाली अपने को इन अंतर्विरोधों से मुक्त नहीं कर सकती।

उन अंतर्विरोधों के कारण जो पूंजीवादी समाज का अभिन्न अंग हैं, शासक वर्ग खुले दमन से लेकर लुकी-छुपी धोखेबाज़ी आदि सभी तरीक़ों से जनता पर प्रभुत्व हासिल करने के लिए कठिन संघर्ष करता है।

जन्म से मृत्यु तक मेहनतकश प्रजा पूंजीवादी समाज की उन विचारधाराओं, भावनाओं और रीति-रिवाजों से प्रभावित होती रहती है, जो शासक-वर्ग के फ़ायदे में होते हैं। इसके अनेक प्रकार हैं। चर्च, स्कूल, कला, सिनेमा, नाटक, पत्र-पत्रिकाएं, विभिन्न प्रकार के संगठन—ये सभी जनता को पूंजीवादी दृष्टिकोण, नैतिकता, रीति-रिवाज आदि की भावना से प्रेरित करने के साधन मात्र होते हैं।

मिसाल के लिए सिनेमा को ले लीजिए। एक पूंजीवादी फ़िल्म-डायरेक्टर ने अमरीकी फ़िल्मों के विषय में यह लिखा है:

"आजकल की अनेक फिल्में कुछ बेहोश करनेवाली औषधियों की तरह हैं जो ऐसे थके हुए लोगों के लिए बनाई जाती हैं जो चाहते हैं कि वे मुलायम आराम कुर्सियों में बैठे रहें और कोई उन्हें बच्चों की तरह खिलाता रहे।"

पूंजीवादी शिक्षा का यह सार है। सर्वहारा वर्ग का अगुआ दस्ता कम्युनिस्ट पार्टी, बुर्जुवा-शिक्षा की इस व्यवस्था का विरोध करती है, जिसके विकास में शताब्दियां लगीं और जिसका उद्देश्य शासक, पूंजीवादी-वर्ग की स्थिति को मजबूत करना और शोषितों से अपनी बेबसी को क़बूल करवाना था। कम्युनिस्ट पार्टी के शिक्षा-सिद्धांत पूंजीवादी प्रभुत्व के विरोध में और प्रोलेतारी-वर्ग के अधिनायकत्व के समर्थन में हैं।

एक बात जो बिना सबूत पेश किए भी समझ में आ सकती है कि कम्युनिस्ट शिक्षा न सिर्फ़ उद्देश्यों में बुनियादी तौर पर बुर्जुआ शिक्षा से भिन्न है, बल्कि तरीक़ों में भी भिन्न है। कम्युनिस्ट शिक्षा आम तौर पर राजनैतिक चेतना और सांस्कृतिक विकास का अभिन्न अंग है। वह जन-साधारण की मानसिक प्रगति से बंधी है। अत: इसकी सफलता के लिए सभी कम्युनिस्ट पार्टियां प्रयत्नशील हैं।

यद्यपि तमाम कम्युनिस्ट पार्टियों का अंतिम उद्देश्य एक और समान ही है, तो भी, क्योंकि सोवियत यूनियन के मज़दूर-वर्ग और पूंजीवादी देशों के मज़दूरों की स्थिति भिन्न है, हमें अपनी विशेष स्थिति के अनुरूप ही शिक्षा देना चाहिए।

हमारे देश में मज़दूर-वर्ग न सिर्फ भौतिक रूप से ही प्रभुत्वशील है, बल्कि आत्मिक तौर से भी वह इसी स्थिति में है।

मार्क्स और एंगेल्स ने लिखा है:

> "जो वर्ग भौतिक उत्पादन के साधनों का मालिक है, वही आत्मिक उत्पादन के साधनों का भी मालिक है... और बातों के अलावा, शासक वर्ग में चेतना होती है और इसी से वे सोचते हैं। इसलिए जहां तक वे एक वर्ग के रूप में शासन करते हैं, वे एक युग की स्थिति और सीमाएं भी निर्धारित करते हैं। यह स्वयंसिद्ध है कि वे सभी क्षेत्रों में इस शक्ति का प्रयोग करते हैं। इसलिए वे विचारों और आदर्शों को भी प्रभावित करते हैं। इसका मतलब यह है कि उनके विचार पूरे युग पर हावी होते हैं।"

मार्क्स और एंगेल्स का यह विचार था कि "शासक वर्ग के विचार ही शासक विचार होते हैं"। अत: सोवियत यूनियन के मज़दूर-

वर्ग पर महान उत्तरदायित्व आ जाता है। हम सिर्फ पूंजीवादी व्यवस्था के आलोचक मात्र बनकर संतोष नहीं कर सकते। मुख्य चीज है राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में असली सफलताओं के लिए संघर्ष करना। यही कम्युनिस्ट शिक्षा का सार है।

३

कम्युनिस्ट शि.ा के क्षेत्र में आज हमारे सामने मुख्य काम क्या है? क्या ये काम बुनियादी तौर पर उन कामों से भिन्न है जो लेनिन ने कोम्सोमोल की तीसरी कांग्रेस के सामने बीस साल पहले पेश किए थे?

अलबत्ता, इस दौरान में सोवियत यूनियन की स्थिति काफी बदल गई है; लेकिन वास्तव में कम्युनिस्ट शिक्षा के वे मूलभूत सिद्धांत, जो लेनिन ने २० साल पहले बताए थे आज भी अपना महत्व रखते हैं।

यह अनुचित न होगा कि उन लोगों को इन कामों की बराबर याद दिला दी जाया करे जो कोरी हवाई बातें ही करते रहते हैं। वे लोग जिन्हे "सिद्धांत बघारना" ही पसंद हे, जो केवल नव मानव की कल्पना ही करते रहते हे जो कम्युनिज़्म को किसी कल्पित सुनहरे भविष्य से जोड़ते रहते है। मेरी राय में ऐसी हरकत दूर बैठकर भविष्यवाणी करने के समान ही हे।

साथियो, श्रम की उच्च उत्पादन-शक्ति कम्युनिज़्म के बहुत ही महत्वपूर्ण तत्वों में से है। सोवियत यूनियन की मेहनतकश जनता के पूंजीवाद-विरोधी संघर्ष में यह बहुत ही शक्तिशाली हथियार है। लेनिन ने कहा है:

> "अंतत: श्रम की उपज ही नयी समाज-व्यवस्था के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण मुख्य वस्तु है। पूंजीवादी व्यवस्था ने ऐसी

उत्पादन-शक्ति को जन्म दिया, जो अर्ध-कम्मी-व्यवस्था के लिए संभव न थी। पूंजीवाद को पूर्णतया हराया जा सकता है और हराया जायगा क्योंकि समाजवाद श्रम की एक नयी और अधिक ऊंची उत्पादन-शक्ति को जन्म देता है। पूजीवाद की श्रम-उत्पादन-शक्ति के मुकाबले में वर्ग-चेतन, संगठित मजदूरों की स्वेच्छा से बढ़ी हुई श्रम की उत्पादन-शक्ति को टेकनीक के आधार पर उच्चतर करना ही कम्युनिज़्म है।"

साथियो, हमें इसी के बारे में सोचना और बोलना चाहिए। यही वह दिशा है जिधर कम्युनिस्ट शिक्षा को अग्रसर होना चाहिए। यह श्रम की ऊंची उपज प्राप्त करने का संघर्ष है।

जब मैं इस रिपोर्ट की तैयारी कर रहा था और मुख्य बातों पर सोच रहा था, तो मैंने बुनियादी सूत्रों की शरण ली; और सर्वप्रथम, अपने संविधान को लिया, जिसकी १२ वीं धारा इस प्रकार है:

"सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ में काम करना हर स्वस्थ नागरिक का कर्तव्य है, और उसके लिए सम्मान की चीज़ है। यह बात, 'जो काम नहीं करेगा वह खाना भी नहीं पायेगा', के सिद्धांत के अनुसार है।"

सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ में समाजवाद का यह सिद्धांत लागू होता है कि "हरेक अपनी योग्यता के अनुसार काम करेगा और हरेक को उसके काम के अनुसार पारिश्रमिक मिलेगा"। लेकिन, साथियो, आप स्वयं जानते हैं कि संविधान की धारायें सिर्फ़ नागरिकों के कर्तव्यों और अधिकारों की ही प्रतीक नहीं हैं, उनमें जनता की शिक्षा के तत्व भी निहित हैं।

स्पष्ट है, संविधान की यह धारा सीधे शब्दों में काम की महत्ता बताती है।

लेकिन मुझे बताया जायेगा कि हमारे देश मे काम की महानता एक चीज है और श्रम की उच्चतर उत्पादन-शक्ति के लिए संघर्ष दूसरी चीज है। नही साथियो, ऐसा नही है। काम के प्रति महत्ता के रुख का ही मतलब है श्रम की उत्पादन-शक्ति को बढाने का यथासभव प्रयास करना। यही मुख्य वस्तु है।

श्रम की महत्ता को सर्वविदित करने के लिए ही पार्टी और सोवियत सरकार ने यह अहम कदम लिये है जैसे "समाजवादी श्रम का वीर" की उपाधि, "श्रम के लाल झण्डे" का पदक और "श्रम-शूर", और "श्रम वीर" तमगो की व्यवस्था की है।

"समाजवादी श्रम का वीर' की उच्च उपाधि "सोवियत सघ के वीर" की उपाधि के समान समझी जाती है। यह उपाधि, ये आर्डर और तमगे महज काम के लिए नही मिलते, सिर्फ इस बिना पर नही कि अमुक आदमी काम करता है, बल्कि श्रम-उत्पादन शक्ति के स्तर को ऊचा करने के प्रयास मे विशेष सफलता प्राप्त करने पर मिलते है।

समाजवादी सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष-मडल की २६ जून १९४० की घोषणा मे भी इसी उद्देश्य की पूर्ति होती है।

बाहरी तौर पर देखने से यह बिल्कुल परस्पर-विरोधी बात मालूम होगी: एक तरफ तो "समाजवादी श्रम का वीर" की उपाधि, और अन्य आर्डर तथा तमगे —'लेनिन के आर्डर" से लेकर अनेक तरह के तमगों तक और दूसरी तरफ ऐसी घोषणा जो श्रम-अनुशासन के क्षेत्र में सजा को शामिल करती है। वास्तव मे ये सब एक ही दिशा की ओर क़दम है।

एक ओर समाजवादी श्रम के सबसे अच्छे प्रतिनिधियो को उपाधियों से विभूषित करके और दूसरी ओर उत्पादन मे अव्यवस्था करनेवालों को सजा देकर पार्टी और सोवियत सरकार उस दिशा का

निर्देशन करती है जिस तरफ कम्युनिस्ट शिक्षा मेहनतकश जनता को ले जाना चाहती है।

साथियो, संभवत: आपमें से कुछ ने ही क्रांति से पूर्व कारखानों में काम किया है, ऐसे लोगों की संख्या कम होती जा रही है। इसलिए मैं यह मानकर चलता हू कि क्रांति से पहले, पुराने जमाने में काम के प्रति क्या रुख था, इसका आपको बहुत कम ज्ञान है। दुर्भाग्य से हम लोगों पर इस तरह का रवैया अभी तक काफी असर डालता है।

उस समय हम क्रांतिकारी लोग उन कुशल कारीगरों के बारे में, जो कारखाने में ४० साल से ऊपर से लगे हुए थे, विशेष अच्छी राय न रखते थे। तो भी वे अपने काम में माहिर थे। श्रम-अनुशासन में उनका विश्वास था और वे कभी भी अपने काम से जी न चुराते थे। और जब हड़ताल होनी थी तो कभी-कभी उन्हे जबर्दस्ती कारखाने से भगाना पड़ता था। वे अपने-आप काम बंद न करते थे कि कहीं मालिकों से बिगाड न हो जाय। पुराने जमाने मे हम ऐसे मजदूरों की कदर नही करते थे। क्यों? क्योंकि वे पूंजीपतियों की तरफदारी करते थे।

समाजवाद में, अब दूसरा मामला है। अब वे लोग जिन्होंने कारखाने मे ४० साल काम कर लिया है, जो श्रम-अनुशासन के आदर्श है, जो अपने काम में माहिर है और श्रम की उच्चतम उत्पादन-शक्ति हासिल कर लेते है, उन्हें हम लोग आर्डरों और तमगों से विभूषित करते हैं और पुरस्कृत करते है। हम सबसे अच्छे सोवियत नागरिकों के रूप में उनका सम्मान करते है।

चलते-चलते यह भी बता दू कि यह द्वंद्वात्मकता का सुस्पष्ट उदाहरण है। पहले हम काम के प्रति ऐसे रवैये की काट करते थे। अब हम इस "काट" की "काट" करते हैं। नतीजा "काट की काट" है, काम के प्रति समाजवादी रवैये की दृढ स्थापना।

ऐसे मज़दूरों के बारे में हमने अपनी राय में इस तरह का क्रांतिकारी परिवर्तन क्यों किया? अब हम ऐसे लोगों को सोवियत यूनियन के सबसे उत्तम नागरिक क्यों समझते हैं? क्योंकि वे लोग हमारे वर्ग संघर्ष की पहली पंक्ति में हैं जिसका विकास उच्चतम मंज़िल में पहुंच गया है। युद्ध के मोर्चे पर हथियारों की भिड़ंत को ही वर्ग संघर्ष नहीं कहा जा सकता। नहीं; अब वर्ग संघर्ष दूसरे ढरें से आगे बढ़ रहा है। और इस समय श्रम की उच्चतम उत्पादन-शक्ति के लिए संघर्ष की ही अधिक महत्ता है। पहले, जब सोवियत व्यवस्था क़ायम नहीं हुई थी, वह आदमी जो अच्छी तरह काम करता था, वहिर्गत रूप में पूंजीवाद को मज़बूत करता था, अपनी ग़ुलामी की ज़ंजीरों को और मज़बूत करता था और समूचे मज़दूर वर्ग की गुलामी को भी मजबूत करता था। लेकिन अब समाजवादी व्यवस्था में, जो अच्छी तरह काम करता है, वह समाजवाद का पक्ष लेता है और अपनी कामयाबियों से न सिर्फ साम्यवाद के लिए रास्ता साफ करता है, बल्कि विश्व के मज़दूर वर्ग की गुलामी की ज़ंजीरों को भी तोड़ता है। वह कम्युनिज़्म का सक्रिय योद्धा है।

क्या हम ने अपने देश में श्रम उत्पादन-शक्ति बहुत बढ़ा ली है? इस क्षेत्र में अब तक हम ने जो नतीजे हासिल किए हैं, उनको मैं बहुत बड़ा नहीं मानता। सिद्धांततः पूंजीवाद के मुक़ाबले समाजवाद में श्रम उत्पादन-शक्ति अधिक होना चाहिए। साथी श्चेरबाकोव! आप क्या समझते हैं? यह सही है या नहीं? (श्चेरबाकोव: "सही, बिल्कुल सही") लेकिन अमल में मामला क्या है? अमल में अमेरिका को छोड़कर युरोप में श्रम की उच्चतम उत्पादन-शक्ति तक भी हम नहीं पहुंच पाये हैं। इसका मतलब है कि श्रम की उत्पादन-शक्ति और बढ़ाने के लिए हमें ज्यादा प्रयत्न करने हैं। हम श्रम की उत्पादन-शक्ति

को बढ़ाकर ही भावी कम्युनिस्ट समाज के निर्माण की शक्ति प्राप्त कर सकेंगे।

लेकिन साथियो, श्रम की उच्चतम उत्पादन-शक्ति से हमारा अभिप्राय सिर्फ सख्यात्मक ही नही, बल्कि गुणात्मक भी है। हमारे कुछ साथी कम्युनिज्म को केवल काल्पनिक रूप में ही देखते है। वे इस धारणा को ठोस रूप नही दे सकते। आखिर, कम्युनिज़्म का मतलब क्या है? साम्यवाद का अभिप्राय है अधिकतम एव श्रेष्ठतम उत्पादन। मेरी निगाह में सिर्फ शारीरिक ही नही, बौद्धिक उत्पादन भी है—इजीनियरों, लेखकों, शिल्पियों, शिक्षको, ऐक्टरों, गवैयों, डाक्टरों आदि द्वारा होनेवाला उत्पादन।

यह साफ-साफ बता देना चाहिए कि हम अपने उत्पादन सबधी कई बातों से असतुष्ट है। हालत यह है कि जब कभी हमें खराब चीज मिलती है, तो हम बड़े कड़े शब्दों में उसकी बुराई करते है। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसको हर चीज अच्छी किस्म की और प्रचुर मात्रा में मिले। अब मै आपसे पूछता हूं: "अगर हममें से हरेक अपने काम को अच्छे से अच्छा नही करता तो ये चीजे कहा से आयेंगी?" हमे सदैव यह कहावत याद कर लेनी चाहिए कि "जैसा बोओगे वैसा काटोगे।"

और इस मामले में भी, केवल उत्पादन की किस्म पर ही हम जोर नही देते। जैसा कि आप जानते है, १० जुलाई १९४० को सोवियत समाजवादी सघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष-मडल ने घोषणा की थी कि "खराब क़िस्म की चीजें बनाना या ऐसी चीजें बनाना जिसके हिस्से ही गायब हों, या ऐसी चीजें बनाना जो निश्चित स्टैंडर्ड की न हों, राज्य के खिलाफ तोडफोड़ की तरह का ही जुर्म समझा जायेगा।" कारखानों के डायरेक्टर, मुख्य इंजीनियर और टेकनिकल निरीक्षण-विभागों के अध्यक्ष, जो खराब क़िस्म के माल को बाहर आने

देंगे या ऐसा माल आने देंगे जिसके हिस्से ही गायब हों, तो उन पर मुक़दमा चलाया जा सकता है और उन्हें ५ से ८ साल तक की कैद की सज़ा दी जा सकती है।

यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं कि यह घोषणा एक प्रकार से कुछ लोगों पर सख़्त हमला है। यह उद्योग-धंधों के मैनेजरों को एक शक्तिशाली हथियार देती है जिससे वे अस्वस्थ वातावरण के खिलाफ़ संघर्ष कर सकते हैं। आम तौर पर वे कैसे तर्क करते थे? —सार्वजनिक संगठनों, साथियों, आदि से संबंध बिगाड़ना, उनकी बदनामी करना यह क्या उचित है? क्या हुआ यदि एकाध चीज़ ख़राब हो गयी हो? उत्पादन के ढेर में एकाध खराब चीज भी निकल जायेगी। और ऐसा होता था।

तो, इस तरह की मनोवृत्ति को निर्मूल करना आवश्यक है। हम में से हरेक के व्यक्तिगत और समाजवादी समाज के हित में यह आवश्यक है। दो में से एक ही बात हो सकती है: या तो हम कम्युनिज़्म को सच्चे दिल से स्वीकार करें, या हम सिर्फ़ इसके बारे में बातें करते रहें। अथवा, हम हिलते-डोलते, अंगड़ाई-जमुहाई लेते कम्युनिज्म की ओर धीरे-धीरे बढ़ें। लेकिन हमारे दिमाग़ में यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि कम्युनिज़्म की तरफ़ इस तरह बढ़ना बहुत ही ख़तरनाक है। इस तरह समाज का परिवर्तन बहुत लंबा समय लेगा।

मुझे एक घटना याद आती है, जैसे वह आज ही की हो। लगभग चालीस साल हुए, शायद उनतालीस या अड़तीस—जैसा आप देख रहे हैं मैं मौके पर चालीस साल पीछे तक जा सकता हूं—(हंसी) हम लोगों में, जो अंडरग्राउंड कार्यकर्ता थे, एक बहस उठी: एक क्रांतिकारी मज़दूर को अपना काम अच्छी तरह करना चाहिए या नहीं, यानी वह अपने उत्पादन की क़िस्म का ख़याल करे या नहीं। कुछ ने कहा कि हम ऐसा कर ही नहीं सकते, हमारी प्रकृति ही ऐसी है कि हम ख़राब

काम नहीं कर सकते, हमें इससे घृणा होती है और यह हमा
आत्मसम्मान के खिलाफ है। इसके विरुद्ध कुछ लोगों ने कहा कि उत्पादन
की श्रेष्ठता से हमें कुछ मतलब नहीं, यह तो पूंजीपतियों का काम है
आखिर हम उन्हीं का तो काम करते हैं। कुछ भी हो, वह तो हमें
अच्छा काम बनाने के लिए मजबूर ही करेंगे, और जहां तक हमें
पूंजीपति मजबूर करेंगे हम अच्छा काम करेंगे। लेकिन हमको कोई
पहल नहीं करनी चाहिये, कोई उत्साह नहीं दिखाना चाहिए।

साथियो, आप अब समझ गए होंगे कि क्रांति से पहले भी जब
देश मे पूजीवादी निजाम था, कुछ मजदूर जो पूजीपतियों मे लड़ते
थे, उनका रुख भी यही था कि हमें काम अच्छा करना चाहिए। खराब
काम मे उन्हे घृणा थी, या यूं कहिए कि वे आत्मा की आवाज सुनते
थे। लेकिन अब समाजवादी समाज में, जहा हम पूजीपतियों के लिए
नहीं बल्कि अपने लिए काम करते हैं, क्या खराब उत्पादन पर हमारी
आत्मा विद्रोह करती है, क्या वह हमको कोंचती है? दुर्भाग्य से, ऐसा
नहीं कहा जा सकता। लेकिन यह कहीं अच्छा होगा अगर लोग आत्मा
की पुकारें सुनें, बुरे उत्पादन पर उनकी आत्मा विद्रोह करने
लगें।

जब हम कम्युनिस्ट शिक्षा की बात करते हैं तो इसका मतलब
सर्वप्रथम यह है कि हम हर मजदूर में यह भाव भरें कि अपने काम
के प्रति उसका रवैया शुद्ध हो। हम उस पर इस बात का प्रभाव डालें
कि यदि वह अपने को बोल्शेविक समझता है या सिर्फ ईमानदार
सोवियत नागरिक ही समझता है, तो वह अपने अतःकरण को इतना
शुद्ध रक्खे कि उसका उत्पादन श्रेष्ठ हो।

अतः कम्युनिज़म का संघर्ष श्रम की उच्चतम उत्पादन-शक्ति के
लिए, सख्यात्मक और गुणात्मक दोनों ही के लिए संघर्ष है। कम्युनिस्ट
शिक्षा की यह पहली बुनियादी मान्यता है।

साथियो, सोवियत संविधान की धारा १३१ में लिखा है:

> "सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र संघ के हरेक नागरिक का कर्तव्य है कि वह सार्वजनिक समाजवादी सम्पत्ति को सोवियत व्यवस्था का पवित्र और अनुल्लघनीय आधार मानकर, उसे देश के धन और शक्ति का एव उसे तमाम मेहनतकश जनता की समृद्धि तथा संस्कृति का स्रोत मानकर, उसकी रक्षा और अभिवृद्धि करे।
>
> सार्वजनिक समाजवादी सपत्ति को हानि पहुंचाने वाले व्यक्ति जनता के शत्रु है।"

सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा और उसकी अभिवृद्धि के प्रश्न का स्वाभाविक महत्व उससे कही ज़्यादा है जो सरसरी निगाह से मालूम होता है। सार्वजनिक संपत्ति की तरफ मितव्ययिता का रुख एक कम्युनिस्ट विशेषता है। मुझे ऐसा लगता है कि मानव इतिहास में कभी भी कम्युनिस्ट समाज से कम-खर्च कोई समाज नहीं हुआ। और यह बिल्कुल स्वाभाविक है, क्योंकि सिर्फ़ कम्युनिस्ट समाज ही में साधनों का उपयोग और उनकी व्यवस्था उत्पादकों के हाथों में होती है।

इतिहास ने लोगों को सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करने की सीख नही दी। और सदैव ही काफी संख्या में ऐसे लोग रहे हैं जो सार्वजनिक संपत्ति लूटने के शोक़ीन रहे है। पुरानी शासन व्यवस्था में राज्य के धन का ग़बन एक मामूली बात थी और राज्य के अफ़सरों के लिए सार्वजनिक कोष तो कामधेनु की भांति था। स्वभावतः इस स्थिति के कारण, जब ऊपर से नीचे तक सार्वजनिक संपत्ति के प्रति लापरवाही बरती जाती है, व्यक्तिगत संपत्ति के संबंध में भी लापरवाही और फ़िज़ूल-खर्ची आ जाती है।

लेकिन पिछले युग में होनेवाली राष्ट्रीय धन की लूट, मानवीय श्रम की लूट, आज की नवीन पूंजीवादी व्यवस्था में होनेवाले मानवीय श्रम की लूट के आगे बच्चे का खेल सा लगने लगेगी। यह बात निर्विरोध कही जा सकती है कि हर दिन लाखों काम के दिन धूल में मिलते रहते हैं। मानवता के ख़िलाफ़ अकेले इसी अपराध के लिए पूंजीवाद का जितना जल्दी हो सके नाश होना चाहिए।

हमारे देश के समूचे उत्पादन को देखते हुए किफ़ायत भी एक प्रकार से संपत्ति ही है। और यह सपत्ति साल बसाल हमारी संस्कृति के विकास के साथ ही विकसित होनी चाहिए।

साथियो, हमारे संविधान की १३१ वीं धारा में कम्युनिस्ट शिक्षा के लिए बहुत बड़ी सामग्री है। यह उस पूंजीवादी धारणा के विरोध में है जो कहती है, "यह घर मेरा है और यही सब कुछ है, और मैं किसी को भी इस सुरक्षा-क्षेत्र में घुसने नहीं दूंगी।" यह धारा सार्वजनिक हितों को वैयक्तिक हितों से ऊपर रखने को बाध्य करती है; क्योंकि हरेक की व्यक्तिगत स्थिति की गारंटी, समाजवादी समाज-व्यवस्था में ही हो सकती है।

सोवियत सरकार की स्थापना के पहले ही वर्ष में लेनिन ने कहा था:

> "बिल्कुल सही और साफ़ हिसाब-किताब कीजिए। कम-ख़र्च में काम चलाइए। आलसी मत बनिए। चोरी मत कीजिए। काम के दौरान में कठिन से कठिन अनुशासन बरतिए। ये स्वयंसिद्ध बातें हैं तो भी इन से क्रांतिकारी सर्वहारा वर्ग नफ़रत करता था जब पूंजीवादी लोग शोषकों के राज्य को इन उपदेशों के परदे में छिपाते थे। अब पूंजीवाद के नाश के बाद यही नारे फौरी, सामयिक और मुख्य बनते जा रहे हैं।"

जहाँ तक "पूंजीवादी परंपराओं के रक्षकों," सार्वजनिक संपत्ति के चोरों और ग़बन करने वालों, उचक्कों और इसी तरह के लोगों का संबंध है, उनके ख़िलाफ़ क़दम उठाना ही चाहिए। यह उद्देश्य, विशेषत: केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति और देश के मंत्रिमंडल के ७ अगस्त, १९३२ के "राजकीय कारखानों, सामूहिक खेती-बारी और सहकारी समितियों की संपत्ति की रक्षा और सार्वजनिक (समाजवादी) संपत्ति के एकीकरण के संबंध में" फ़ैसलों से पूरे हो सकते हैं। "उद्योग में टुच्ची चोरी और गुलगपाड़ा की मुजरिमाना ज़िम्मेदारी के संबंध में" १० अगस्त, १९४० को देश की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष-मडंल की घोषणा भी इस उद्देश्य पूर्ति में सहायक होगी।

इसलिए साथियो, हमें अपनी योग्यता के अनुसार काम करना, व सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना सीखना चाहिए और जब हम काफ़ी उत्पादन करने लगेंगे और जब अपने श्रम के उत्पादन की रक्षा करना सीख जायेंगे, तो फिर हम आवश्यकता के अनुसार इसका बंटवारा भी कर लेंगे।

कम्युनिस्ट शिक्षा का यह दूसरा अभिन्न अग है।

५

कम्युनिस्ट शिक्षा का एक आवश्यक तत्व और है—अपने समाजवादी देश के लिए प्यार जागृत करना, सोवियत देशभक्ति को जागृत करना।

"देशभक्त" शब्द पहले-पहल १७८९-१७९३ की फ़ांसीसी क्रांति के समय प्रयोग में आया। जो जनता के हितों के लिए, गणतंत्र की रक्षा के लिए, अपने देश से ग़द्दारी करनेवाले राजाशाही खेमे के ग़द्दारों के ख़िलाफ़ आगे आए, उन्होंने अपने को देशभक्त कहा।

बाद में इस शब्द का प्रयोग प्रतिक्रियावादियों और शासक-वर्ग ने अपने स्वार्थी हितों के लिए किया। यही कारण है कि "देशभक्त"

शब्द युरोप और ज़ारशाही रूस, दोनों में वैसे तमाम ईमानदार लोगों के लिए, जो जनता के कारण चिंतित थे, सदा ही संदेह पैदा करता था, क्योंकि इसमें उन्हें अधराष्ट्रीयतावाद और शासक-वर्गों की अहंमन्यता दिखाई पड़ती थी। अतत: इसी झंडे के नीचे ज़ारशाही के लुटेरे रूस से मिले हुए दूसरे देशों की जनता को लूटते थे।

"देशभक्ति" की ठेकेदारी "ब्लैक हंड्रेडों" के हाथ मे थी। वे अपनी "देशभक्तिपूर्ण भावनाओं" का प्रदर्शन सड़कों पर मजदूरों, बुद्धिजीवियों और यहूदियों को पीटकर करते थे और उनके खिलाफ़ दगे करते थे। और उस समय आम तौर पर समाज मे निम्न-कोटि के व्यक्तियों में से विवेकहीन और सदेहशील लोग इसी "देशभक्ति" के जामे को ओढ़े रहते थे।

जनता की निगाहों में "देशभक्ति" शब्द गिर चुका था। कोई ईमानदार आदमी अपने को "देशभक्त" नहीं कह सकता था।

रूस में मिला लिए गए राष्ट्र हर क़दम पर रूसी अफ़सरों द्वारा लूटे, चूसे, खसोटे जाते थे, अतः स्वभावतः वे रूसियों से घृणा करते थे।

इसके खिलाफ, सजा देने वालों और कोड़ों के सरदारों की "देशभक्ति" के खिलाफ, निरंकुश तानाशाही के खिलाफ, प्रगतिशील आंदोलन लगातार बढ रहा था।

प्रारभ में प्रगतिशील शक्तियों का प्रतिक्रियावाद के विरुद्ध संघर्ष साहित्य, कला तथा गायन-विद्या के क्षेत्रों में सामने आया, जिन में सांकेतिक रूप से ही सही विरोध प्रकट किया जा सकता था। समय के साथ-साथ जनता के जनवादी दल भी धीरे-धीरे इस संघर्ष में आने लगे, फलत: वह अधिकाधिक उग्र रूप धारण करता गया। यह प्रक्रिया बढ़ती गयी और इसमें निरंकुशता के अनेक विरोधी, तथाकथित सरकारी रूस के विरोधी एक होते गए। साथ ही यह आंदोलन जनता के अच्छे से अच्छे प्रतिनिधियों के रूप में एक महान राष्ट्रीय सुरक्षा पंक्ति भी

बनाता जा रहा था। लेखकों, आलोचकों और प्रकाशकों के रूप में बुद्धि चातुर्य से पूर्ण अनेक मनुष्य सप्तर्षि-मडंल जैसे आलोक को लेकर अवतरित हुए, जिन्होंने हमारे साहित्य को ऊंचा उठाया और उसके लिए विजय तथा विश्व-प्रसिद्धि हासिल की। सिर्फ़ साहित्य ही नहीं, रूसी गायन-विद्या, कला और विज्ञान सभी अपने उदीयमान नक्षत्रों को आगे लाए, जो सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय संस्कृति के सच्चे देशभक्त योद्धा थे।

इन लोगों ने दृढ़ता के साथ सरकारी "देशभक्ति" को ठुकरा दिया और अपने सम्मान, गौरव और सार्वजनिक प्रतिष्ठा की रक्षा की। उनके लिए अपनी जनता की सेवा और उनमें सच्ची देशभक्ति जगाना ही सबसे प्रमुख बात थी। इस महान ध्येय के लिए उन्होंने अपनी सारी शक्ति और योग्यता लगा दी। उनके युग के दूसरे लोगों ने, उनकी पीढ़ी के बाद के लोगों ने, इन्हीं से सीख ली। वे उनके आदर्शों पर चले और गहरे राष्ट्र-प्रेम से ओत-प्रोत हो गए। इन लोगों के राष्ट्र-प्रेम की कार्रवाई से, रूस की जनता के रोमांच-कारी इतिहास के पन्ने भरे पड़े है। यद्यपि सरकारी रूस ने उनके प्रति हमदर्दी नहीं दिखाई, तो भी जनता ने उन्हें अत्यधिक सम्मानित किया, उनकी सदैव पूजा की और आगे भी करती रहेगी।

सोवियत देशभक्ति हमारे पिछले इतिहास से अलग नहीं की जा सकती, क्योंकि सोवियत देशभक्ति हमारे पूर्वजों की रचनात्मक सफल-ताओं का ही सीधा परिणाम है, जिस के कारण हमारी जनता का विकास आगे बढ़ा।

सोवियत जीवन इस सत्य की ज़िंदा मिसाल पेश करता है। एक ही तथ्य बताना काफ़ी होगा—आजकी मुक्त जनता अपने पौराणिक और ऐतिहासिक वीरों को किस आह्लाद से याद करती है! वे अपनी कला द्वारा इनका प्रदर्शन करते हैं। सोवियत जनतंत्रों के प्राण मास्को

में वे अपनी कलात्मक प्रदर्शनिया करते है मानो वे सोवियत समाजवादी देश की जनता से कहते है—देखो, हम राष्ट्रों की इस महान इकाई के सदस्य किसी की दया के कारण नही बने है। हम सतान या सबधी विहीन नही है यह देखो हमारा परिवार-वृक्ष है। हमें इस पर गर्व है। और हम चाहते है कि मानवता के सर्वोच्च आदर्शो की सुरक्षा मे व्यस्त हमारे भाई भी हमारे इस परिवार-वृक्ष से अपनी आखो को कृतार्थ करे।

जैसे मैने कहा, सोवियत देशभक्ति की जड़ें हमारे पिछले इतिहास में बहुत गहरी है। सोवियत देशभक्ति पुराने युगों की तमाम सफलताओं की सुरक्षा करना अपना सर्वोच्च कर्तव्य मानती है।

हमारी महान मजदूर क्रान्ति ने न सिर्फ भयकर विनाश ही किया, बल्कि बेमिसाल रचनात्मक निर्माण की भी नीव डाली। साथ ही वह एक जबर्दस्त तूफान की तरह लाखो इन्सानों के दिमागों पर छा गई और उन्हे आत्म विश्वास और नई शक्ति दी। वे अब अपने का इतना प्रबल समझने लगे है कि मेहनतकश जनता के खिलाफ तमाम दुनिया को हराने की सामर्थ्य उन मे है।

और एक ऐसे सोवियत महाकाव्य का जन्म हुआ जिसने जनता के पिछले युग की कला मे सबध जोडा और साथ ही हमारे अपने युग की कला मे भी रिश्ता कायम किया।

हमारे योग्य साहित्यकारो और कलाकारो को जनता से पीछे नही रहना चाहिए, क्योंकि कभी भी इतना महान विषय उनको न मिला था। अब ही जनता की सेवा करने और जनता को आज की पीढियों के महान कार्यों के आधार पर देशभक्ति से ओत-प्रोत करने के लिए उनके पास असीमित अवसर है।

मुझे ऐसा लगता है कि सोवियत जनता की सेवा की शानदार मिसाल मायाकोव्स्की में मिल जायेगी, जो अपने को क्रांति का सिपाही

समभता था और जिसकी मौलिक रचनायें उसे एक सच्चा सिपाही साबित करती हैं। उसने न सिर्फ़ विषय-तत्व को ही, बल्कि उसके स्वरूप को भी क्रांतिकारी जनता से घुलामिला देने का प्रयास किया। भविष्य के इतिहासकार यह ज़रूर कहेंगे कि उसकी रचनाएं उस महान युग की हैं, जब मानवीय संबध छिन्न-भिन्न हो चुके थे। इसीलिए मेरा ख़्याल है कि भावी पीढ़ियों को ललकारते वक़्त मायाकोव्स्की सही था:

"मै आऊंगा तुम्हारे पास
उस सुदूर कम्युनिस्ट भविष्य में
लेकिन
येसेनिन की काल्पनिक दुनिया के
चमत्कार-भरे सरदारों की तरह नहीं।
मेरी कविता
युगों-युगों की चोटियों के पार पहुंचेगी,
कवियों और सरकारों की छाया से परे—
मेरी कविता आयेगी,
लेकिन बनाव-श्रृंगार से लदी हुई नहीं,
कामदेव के वाण की लयपूर्ण प्रेम-उड़ान की
तरह नही—
न ही घिसे हुए सिक्के की तरह
जो टकसाल आ जाता है।
और उन सितारों के प्रकाश की तरह भी नहीं
जो बहुत दिन हुए बुझ चुके हैं।
मेरी कविता,
श्रम के साथ ही
बूढ़े युगों की छाती चीरती हुई,

निकलेगी

विचारपूर्ण

चट्टानों की तरह खुरदरी

अनुभव की गभीरता मे लदी हुई

उमी तरह जैसे आज

निकल आती है पुरानी नालिया

जिन्हे कभी रोम के चिन्हयुक्त गुलामो ने

दृढता मे बिछाया था।"

इस गर्वीले वयान मे हमें अपने युग, अपनी पीढी की शानदार ध्वनि सुनाई पड़ती है, जो एक नई पद्धति मे दुनिया को बदल रही है।

साथियो, इतिहास ने हमको –कम्युनिज्म को पूर्ण विजय प्राप्त करने का महान दायित्व सौपा है।

लेकिन इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमे अपने सोवियत देश के तमाम मेहनतकशों को देशभक्ति की शिक्षा देनी चाहिए, ताकि उन में स्वदेश के प्रति असीमित स्नेह की भावना का सचार हो। मै हवाई प्यार की बात नही करता, मै प्लेटो के आदर्शवादी स्नेह की भी बात नही करता। मै तो समर्थ, सक्रिय, वेगवान, अजेय प्यार की बात करता हूं, जो दुश्मन के प्रति दया नही करता और जो देश के लिए कोई भी बलिदान कर सकता है।

सोवियत समाजवादी देश की मेहनतकश जनता की कम्युनिस्ट शिक्षा से सबधित यह तीसरा बुनियादी काम है।

६

इसके साथ ही मै सामूहिकता के प्रश्न पर भी कुछ कहना आवश्यक समझता हूं। यह साबित करने की कोई विशेष आवश्यकता नही है कि कम्युनिस्ट शिक्षा में सामूहिकता की भावना को महत्वपूर्ण

स्थान दिया जाना चाहिए। मै सामूहिकता सिद्धांत रूप में नही ले रहा हूं। लेकिन मैं चाहता हूं कि उत्पादन के क्षेत्र में, रोज़मर्रा के जीवन में, सामाजिक दुनिया मे सामूहिकता लाई जाए। मै चाहता हूं कि सामूहिकता हमारी आदतों, हमारे व्यवहार का अग बन जाये और वह न सिर्फ़ सोचने-समझने मे अमल में आने लग, बल्कि सहज स्वभाव के तौर पर हमारी चेतना का अभिन्न तत्व बन जाये। मै कुछ मिसालें दूगा।

आपमें से जिन्होंने इल्फ और पेत्रोव की "एक-मंजिला अमेरिका" पुस्तक पढी है, वे ज़रा याद तो करें मोटर में घूमते वक़्त के कुछ दिलचस्प वाक़यात जिनका उन्होंने जिक्र किया है।

यदि किसी यात्री को दुर्भाग्य से ठोकर लग जाय तो यह निश्चय है कि पास से गुजरनेवाली मोटर का आदमी सहायता अवश्य करेगा। ऐसे अवसर पर वह अमरीकी समय की चिंता नहीं करेगा जिसका लक्ष्य ही है कि "समय पैसा है"। अर्थात् आवश्यक सहायता देने को सामाजिक उत्तरदायित्व के रूप में समझा जाता है।

दूसरी मिसाल है पुराने रूसी गाव की जहां फ़सल के समय एक परिवार दूसरे से बाजी मार लेने की कोशिश करता था। तो भी कटाई करने वाली भीड़ यदि किसी पिछड़ गई कटाई करने वाली औरत के पास से गुज़रती थी, जिसका परिवार बड़ा होता था, और जो खेतों में सदा की तरह अकेला काम करती होती थी, तो उसको सहायता देना एक स्वाभाविक काम समझा जाता था।

साथियो, एक सामान्य आदत के रूप में सामूहिकता की भावना के प्रसार की बात मै इसी अर्थ में कहता हू। पुराने युग में ये आदतें अपने आप विकसित हो जाती थीं। मै तो लोगों में स्वेच्छा से ऐसी आदतों को विकसित करने की बात कहता हूं।

सामूहिकता और भेड़िया-धसान में भी फ़र्क जानिए। मिसाल के

तौर पर, पुराने ज़माने में तमाम किसान मिलकर यदि किसी घुड़-चोर को पीटते थे, या बैंक के दिवालिया होने पर उस में रुपये रखने वाले तमाम लोग क्रोध में खिड़कियां वग़ैरह तोड़ डालते थे, तो ऐसे काम सामूहिकता के नहीं भेड़िया-धसान के प्रतीक हैं। सामूहिकता में काम के औचित्य पर पहले विचार होता है।

सामूहिक भावना हमारे समाज की असली ज़िंदगी में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, क्योंकि वास्तव में समाज सामूहिकता पर ही आधारित है। पूंजीवादी समाज का विरोध हम सामूहिकता-कम्युनिज़्म से करते हैं, क्योंकि हमें इसके कहीं अधिक अच्छे होने में विश्वास है। जिस हद तक हम उत्पादन में, सार्वजनिक और व्यक्तिगत जीवन में सामूहिक भावना का समावेश करने में कामयाब होंगे, उसी हद तक कम्युनिज़्म के निर्माण की गति भी निर्धारित होगी।

सामूहिक श्रम ही उत्पादन का आधार है। समाजवादी उद्योग-धधों में इसके लिए किसी विशेष सबूत की आवश्यकता नहीं। यहां यह तथ्य सर्वविदित है। जहां पूंजीवादी समाज में एक मज़दूर का श्रम उत्पादन-वस्तु में सम्मिलित होने पर, न सिर्फ़ मज़दूर बल्कि उस कार-खानेदार की आंख से भी ओझल हो जाता है जिसका एक मात्र उद्देश्य मुनाफ़ा है; वहां इसके विपरीत हमारे समाज में हर मज़दूर के उत्पादन में उसका श्रम दिखाई पड़ता है। वह न सिर्फ उत्पादन के स्थान पर ही, बल्कि खर्च में और इस्तेमाल में भी दिखाई पड़ता है। दूसरे शब्दों में उत्पादक अपनी आंखों से अपने काम का फल देख सकता है। तो भी, हमें शिक्षा द्वारा उसकी समझ और गहरी करनी चाहिए ताकि वह सामूहिक श्रम में अपना हिस्सा साफ़-साफ़ देख सके।

यह विशेष आवश्यक है कि गांवों में, सामूहिक खेती वाले गांवों में, जहां अभी सामूहिक काम करने की क़रीब-क़रीब कोई आदतें नहीं हैं, सामूहिक भावना भरने पर ज़ोर दिया जाय। यद्यपि पहले भी

"जनता", "सार्वजनिक हित", जैसे शब्द कभी-कभी गांव की सभाओं आदि में प्रयुक्त होते थे, लेकिन दरअसल सामूहिक भावना वहां बहुत कम थी। "सार्वजनिक हित", "जनता" आदि शब्द मात्र थे, जिनके पीछे कुलक अपने व्यक्तिगत व्यापार को आगे बढ़ाते थे।

सामूहीकरण के प्रयोग के बाद किसानों को बहुत मुश्किल हुई। उन्हें अपने समूचे पिछले संस्कारों को भुलाकर, अपनी मानसिक चेतना को विरोधी दिशा में मोड़ना पड़ा; अपने लिए काम करने के बदले अब सब के लिए काम करना पड़ा। यह आसान काम नहीं है। यह भावना तभी पूर्णतया विकसित हो सकी, जब राज्य की ओर से काफ़ी दबाव पड़ा और सहायता मिली।

वैयक्तिक, साधारण श्रम को, सामूहिक, ऊंची सतह के और कठिन श्रम के रूप में परिवर्तित करने के लिए जनता में कहीं अधिक महान संगठनात्मक योग्यता लाने की आवश्यकता है। हां, सामूहिक खेतीवाले किसानों में वैयक्तिक संपत्ति के रुझानों को विजित करके सामूहिकता की आदतों का एकत्रीकरण, सामूहिक काम के तरीक़ों को लागू करने के दौरान में एकत्र किए गए संगठनात्मक अनुभव के एकत्रीकरण की प्रक्रिया के समानान्तर होता है।

गांवों में कम्युनिस्ट शिक्षा इन हालतों में प्रगति कर रही है।

यह स्पष्ट है कि अब सिर्फ़ सामूहिकता की दुहाई देना और उसके लिए मामूली प्रचार करना ही काफ़ी न होगा। प्रचारक को अथवा शिक्षक को सामूहिक खेती के व्यावहारिक लाभ प्रत्यक्ष करके समझाने होंगे।

इस तरह सामूहिकता की भावना भरने जैसे उलझनपूर्ण मसले को भी, यदि उसे अधिक प्रभावशाली होना है, अमली काम में बदल देना चाहिये। दूसरे शब्दों में, लोगों में सामूहिकता की भावना भरने के लिए ठोस काम करना होगा। जब शिक्षक किसी अमली प्रक्रिया को

समझता है, तो वह अपने विचारात्मक विकास के लिए खुद ही अमली ज्ञान से पूर्ण होता है। हमारे प्रचारकों को विचार और अमल की एकता का यह स्पष्ट जीवित उदाहरण बनना होगा।

कम्युनिस्ट शिक्षा की यह चौथी बात है।

७

किसी भी सकारात्मक प्रयत्न की कामयाबी में संस्कृति एक निर्णायक तत्व है। जितना ही अधिक कठिन और कुशल काम होगा, उसे सुलझाने के लिए उतनी ही अधिक संस्कृति की आवश्यकता होगी। हमारे लिए संस्कृति वैसे ही आवश्यक है, जैसे सांस लेने के लिए हवा—संस्कृति अपने व्यापक अर्थ से, यानी प्रारंभिक संस्कृति (जिसकी आवश्यकता सब को है) से तथाकथित उच्च संस्कृति तक। लोग कहते हैं: एक बहुत सुसंस्कृत व्यक्ति।

संस्कृति एक व्यक्ति के विकास की सतह की निश्चित निर्देशक है। और चूंकि एक विकसित व्यक्ति में आकर्षण अधिक होता है, इसलिए कुछ लोग संस्कृति के बाह्य तत्वों की नक़ल करते हैं। आम तौर पर ऐसे लोगों के बारे में कहा जाता है: कोवे ने मोर के पंख से अपने को सजा लिया है। मेरी राय में इस तरह के वक्तव्य ग़लत हैं। वे हमारी संस्कृति के विकास के लिए हानिकारक हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि जन साधारण पहले बाह्य तत्वों को ही ग्रहण करना शुरू करते हैं। लेकिन इस का असर आंतरिक संस्कृति पर भी पड़ता है।

संस्कृति की आम सतह को ऊंचा उठाने की आवश्यकता अब ही क्यों विशेषकर अनुभव की जा रही है? सोवियत व्यवस्था के पिछले तेईस वरसों में हमारी अर्थ-व्यवस्था बहुत आगे बढ़ गई है। उत्पादन की टेकनिकल सतह भी बहुत ऊंची हो गई है। मशीनों, मशीनों के पुर्जे

भी पेचीदा होते जा रहे हैं। उन्हें ज़्यादा ध्यान से प्रयोग करने की आवश्यकता है। आज प्रत्येक उद्योग में पहले से अधिक सुसंस्कृत व्यक्तियों की मांग पाई जाती है। यह भी समझ में आनेवाली बात है कि राजकीय सस्थाओं के लिए भी अधिक सुसस्कृत व्यक्तियों की मांग बढ़ रही है।

अपनी जगह पर, सामूहिक खेतीवाला गाव भी अधिक से अधिक सुसंस्कृत लोगों की माग करने लगा है। ट्रैक्टर-ड्राइवर, कम्बाइण्ड हारवेस्टर चलाने वाले, मैकेनिक, कृषि-विशेषज्ञ तथा एनिमल हस्बैंडरी के विशेषज्ञ को भी अपने विशेष काम की जानकारी के साथ-साथ न्यूनाधिक सस्कृति की आवश्यकता है। कोई दूसरा पेशा, मिसाल के लिए घुड़साल के रक्षक को ले लीजिए। जब एक-दो घोड़े ही रखवाली के लिए हों, तो एक किसान के लिए उनकी देखभाल कही आसान है। लेकिन जब अस्तबल में २० से लेकर ४० तक घोड़े हों, तो संगठनात्मक अनुभव और संस्कृति की आवश्यकता है। सामूहिक खेती की सभी शाखाओं के बारे में भी यही बात सही है। आगे बढ़ने के लिए हमें संस्कृति की आवश्यकता है।

यहां पर देश की सुरक्षा की आवश्यकताओं को याद रखना भी उचित है। इस क्षेत्र में संस्कृति की आवश्यकता दिन-दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है।

संस्कृति का एक अर्थ सामूहिक और वैयक्तिक जीवन की पवित्रता भी है।

साथियो, जरा एक अच्छे इंजीनियर की कल्पना कीजिए, जिसने अपने को योग्य बनाने के लिए कठोर परिश्रम किया है, जो अब एक कारखाने का इंचार्ज है और एक क़ीमती कार्यकर्ता समझा जाता है। लेकिन जब आप कारखाने मे घूम रहे हों तो उसकी शैतान गरदन कैसे टूट जाती है (हंसी)। क्या यही संस्कृति है? अगर यह इंजीनियर

इस तरह की बात पर ध्यान नहीं देता, तो इसका मतलब है कि वह प्रारंभिक संस्कृति से भी हीन है और सचमुच उसका ध्यान अपने कारखाने, अपने काम में नहीं है।

मैं संस्कृति को उसके विशद अर्थों में लेता हूं। पंप का पानी बहना न रहे, मास्को के घरों में खटमल न हों, आदि ये भी संस्कृति के अंग हैं। खटमल ऐसी चीज़ हैं जिन्हें बरदाश्त नहीं किया जा सकता। वे हमारे लिए अपमान की बात हैं। तिस पर भी कई लोग खटमलों से भरे अपने आप से पूछते हैं कि कम्युनिज़म में आदमी को कैसा होना चाहिए, कम्युनिज़म में उसकी विशेषतायें क्या होंगी? (हंसी) ऐसे लोग हैं जो बच्चों के लालन-पालन के संबंध में लंबी व्याख्या करते हैं, लेकिन अपने घरों में खटमलों को भरा रहने देते हैं। अब आप इसको क्या कहेंगे? ऐसे लोगों को क्या सुसंस्कृत कहना चाहिए? ये पुराने रूसी समाज के बचे-खुचे लोग हैं। (हंसी)

* * *

साथियो, कम्युनिस्ट शिक्षा से संबंधित अनेक प्रश्नों पर विचार किया जा सकता है; जैसे पार्टी, ट्रेड-यूनियन, कोम्सोमोल, स्पोर्त-संगठन, विश्वविद्यालय, स्कूल, साहित्य, कला, सिनेमा, थियेटर, परिवार आदि की भूमिका के विषय में। लेकिन यह सब प्रश्न हमें बहुत दूर ले जायेंगे और डर है कि हम उस सब से महत्वपूर्ण चीज़ को नज़र-अंदाज़ कर बैठें, जो हमारी मौजूदा मंज़िल में अत्यावश्यक है।

साथियो, मैं समझता हूं कि यही मुख्य बातें हैं जिन का साम्यवादी शिक्षा के बारे में विचार करते समय हमें विशेष ध्यान रखना चाहिए।

यदि हमारी शिक्षा-प्रणाली बाह्य-रूप से निर्दोष होते हुए भी हवाई रही, यानी यदि वह ठोस रूप से, समाजवादी राज्य के विकास

में सहायक न हो सकी, तो ऐसी शिक्षा अच्छा-खासा मज़ाक होगी।

आज की उलझी हुई अंतर्राष्ट्रीय स्थिति में हमारी जनता को विशेषत: सावधान, आत्म-निर्भर और बहुत ही सचेत रहना चाहिए जिससे कि हमारा समाजवादी राज्य किसी भी खतरे और ज़रूरत का मुक़ाबला करने के लिए सदा तैयार रहे। हमारे तमाम जन-संगठनों, हमारे साहित्य, कला, सिनेमा, थियेटर, आदि को इसी बात पर बार-बार ज़ोर देना चाहिए।

"कम्युनिस्ट शिक्षा के बारे में", सोवियत यूनियन की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के राजनैतिक साहित्य का प्रकाशन गृह, १९४०

मास्को के (लेनिन हलक़ा) माध्यमिक स्कूलों के आठवें, नवें और दसवें दर्जे के विद्यार्थियों की सभा में दिया गया भाषण

१७ अप्रैल १९४१

साथियो, यद्यपि मै प्राय: तरुणों मे मिलता रहता हूं, तो भी आपकी भावनाओं की थाह पा लेना आसान नहीं है। और यह बहुत ही स्वाभाविक है, क्योंकि लगभग ५० साल पहले मैं आपकी उम्र का था। तब से अब तक मैं वह बहुत कुछ भूल चुका हूं जो अपनी तरुणाई में अनुभव किया करता था। और जो चीजें मुझे याद हैं, वह बहुत संभव है आपको पुरातन युग की मालूम हों। अगर आप से कोई पूछे कि उस ज़माने में तरुणों का जीवन कैसा था, तो आपके लिए इसका उत्तर देना बहुत मुश्किल मालूम होगा, क्योंकि वह सब कुछ हुए बहुत ज़माना गुज़र गया।

तो भी मेरा विश्वास है कि आज से ४०-५० साल पहले के युवक जीवन में आपकी दिलचस्पी अवश्य होगी। उस युग के तरुणों के जीवन, उनकी तमाम अच्छाइयों और बुराइयों के विषय में गहरा

ज्ञान रखने का दावा किए बग़ैर भी मैं उनके जीवन की एक तस्वीर आपके सामने पेश करूंगा -- वह कैसे रहते थे, उनके जीवन में क्या-क्या था, उनमें किस-किस तरह के लोग थे, और उनके दिमाग़ काहे से भरे रहते थे। और मैं मुख्यत: तरुण मज़दूरों के बारे में बताऊंगा, जिनसे मैं मुख्यत: संबंधित था।

यह भी सत्य है कि मैं काफ़ी निकट से तरुण किसानों से भी संबंधित था। लेकिन उस ज़माने के तरुण किसान के बारे में बताने को है ही क्या? कोई दिलचस्पी या शिक्षा की बात है ही नहीं। गांव के अधिकांश लड़के-लड़कियां काम और घर की चिंताओं के बोझ से दबे रहते थे। हां, तरुण मज़दूरों का जीवन भी आसान न था। लेकिन उन्हें कुछ सुविधायें अवश्य थीं उनकी कल्पना का क्षितिज कहीं विस्तृत था, वह अधिक समझते थे, अधिक सीख लेते थे। जहां तक तरुण किसान का संबंध है, उसका दिमाग़ गांव तक ही सीमित रहता था। गांव की सीमा के उस पार क्या होता है, इसके बारे में वह बहुत ही कम जानता था। तेरह-पन्द्रह साल की उम्र होते-होते वह काम में जोत दिया जाता था। और १८-१९ साल तक पहुंचते-पहुंचते उसका जीवन पथ निश्चित हो जाता था, उसकी शादी हो जाती थी। वह पिता का घर छोड़कर अपने लिए कठिनाई के साथ अलग घर बसा लेता था।

जहां तक विद्यार्थियों का संबंध है, मैं उनके बारे में बहुत कम जानता था, यद्यपि मेरा उनसे सबंध तो होता ही था। लेकिन लोगों से संबंध होने का अर्थ उनके बारे में जानना नहीं है। कहा जाय तो मैं विद्यार्थी-तरुणों को बग़ल से देखता था। आपको यह भी ध्यान रखना चाहिए कि मेरे लिए वे भिन्न वर्ग के थे। लेकिन विद्यार्थियों का संघर्ष मेहनतकश जनता पर अवश्य अपनी छाप डालता था। इस संघर्ष के कारण हम लोगों में तरुण विद्यार्थियों के लिए हमदर्दी बढ़ती गई।

अतः इसलिए जब मैं पिछले युग के तरुणों की बात कहता हूं तो मेरी निगाह में मुख्यतः मजदूर-युवक हैं।

उस ज़माने के तरुण मजदूर किस तरह के लोग थे? वे किस के थे? उनकी क्या दिलचस्पियां थी? उनके दिलों और दिमाग़ों को कौन सी चीज़ झकझोरा करती थी?

उस ज़माने के मेहनतकश तरुणों में उतने ही विभिन्न तौर-तरीके के लोग थे, जैसे शायद आज आपके बीच में हों।

पहली तरह के वे लोग थे जो यथासंभव, अपने को मज़दूर वातावरण से निकालने की कोशिश करते थे। जितना हो सकता था वे कमाते थे। संस्कृति की बाहरी तड़क-भड़क पर विशेष ज़ोर देते थे। विशेषकर, कपड़ों के मामले में, वे जितने अच्छे कपड़े पहन सकते थे, पहनते थे। अपने ही कारखानों के बाबुओं से संबंध स्थापित करते थे। उन्ही की लड़कियों मे शादी करते थे, जिससे अवसर आने पर वह प्रबधकों की सीढ़ी पर और ऊंचे चढ़ सकें। अलबत्ता आम युवकों में इस तरह के बहुत थोड़े लोग थे और उनका कोई राजनैतिक महत्व नहीं था।

दूसरी तरह के युवक मेहनती किस्म के थे, जो या तो एप्रेंटिस थे या जिन्होंने एप्रेंटिसी खतम करके स्वतंत्र रूप से काम करना शुरू कर दिया था। उनकी तमाम दिलचस्पी अपनी आमदनी पर केन्द्रित थी और वे व्यक्तिगत खुशहाली और पारिवारिक सुख के लिए चिंतित रहते थे। उन्हें अपनी खुशहाली और नौकरी के अलावा किसी चीज़ से मतलब न था। इस तरह के लोग पहली तरह के लोगों से संख्या में अधिक थे, लेकिन वे भी इतने अल्पमत में थे, कि उनका कोई महत्व न था।

कभी-कभी हमें मेहनतकश युवकों में ग़पबाज़ और खुशामदी टट्टू भी मिलते थे। लेकिन ये सब मिलाकर संख्या में बहुत थोड़े होते थे। वे शब्दशः इक्के-दुक्के होते थे, जो दूसरों की चुग़ली-चबाई करके अपनी स्थिति सुधारने की कोशिश करते थे। उनका फ़ोरमैनों, पुलिस और

कारखानों के उच्च अफसरों से संबंध होता था। मजदूर ऐसे लोगों को बरदाश्त न कर पाते थे। आम लोग उनसे घृणा करते थे। उन्हें अपने व्यवहार के लिए बड़ी क़ीमत अदा करनी पड़ती थी, और अक्सर उनकी पिटाई भी हो जाती थी।

लेकिन जहां तक मेहनतकश युवकों के बहुत बड़े बहुमत का संबंध था, वह उस समय की सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था का विरोधी था और इन्हीं में से सच्चे क्रांतिकारी लड़ाकू लोग निकलते थे। आम तौर पर मेहनतकश युवक हमारी पार्टी के मज़बूत समर्थक होते थे। वे मज़दूरों के मानो लड़ाकू दस्ते थे, जो पार्टी-मेंबरों के नेतृत्व में होनेवाले विरोधी आंदोलनों और हड़तालों में सबसे ज्यादा सक्रिय रहते थे।

यद्यपि यह नहीं कहा जा सकता कि मेहनतकश युवकों का विरोध सर्वथा जागरूक ही होता था। अक्सर यह विरोध अपने आप ही फूट पड़ता था और मालिकों के पिछलगुए फ़ोरमैनों, पुलिस आदि की पिटाई का रूप ले लेता था।

समय बीतने के साथ-साथ समाजवादी प्रचार के प्रभाव से और मार्क्सवादी बुद्धिजीवियों की रहनुमाई में मेहनतकश युवकों के बीच ग़ैरकानूनी गोष्टियों का उदय हुआ, जिनमें सामाजिक चेतना रखने वाले युवक उत्सुकतापूर्वक आने लगे। जितना ही वे आगे बढ़े, उतना ही उन्होंने मज़दूर-वर्ग की हालत पर और सामाजिक जीवन की दूसरी अनेक समस्याओं पर विचार किया। वह ललचाए हुए मार्क्सवादी साहित्य को निगलते थे, वैज्ञानिक समाजवाद की विचारधारा पर विचार करते थे, अपनी शिक्षा के प्रति गंभीर थे। इस प्रकार उन्होंने न केवल अपनी राजनैतिक बल्कि सांस्कृतिक चेतना की सतह को भी ऊंचा उठाया। इन गोष्टियों में राजनैतिक प्रश्नों और पढ़ी गई पुस्तकों दोनों ही पर

गरमागरम बहस होती थी। इस तरह मेहनतकश युवकों के सबसे आगे बढ़े हुए सदस्यों में समाजवादी चेतना ने जन्म लिया।

और यह बता दूं कि जो गैरक़ानूनी मार्क्सवादी गोष्टियों में हिस्सा लेते थे, वे न सिर्फ युवकों पर ही बल्कि प्रौढ मजदूरों पर भी अधिक अधिकार रखते थे। यद्यपि वे अपना काम छिपकर करते थे, तो भी काफ़ी मजदूर इनके बारे में जानते थे और अनेक क्रांतिकारी योजनाओं को अमल में लाने में उनकी सहायता करते थे।

बाकी मजदूरों की तरह हम भी चायखानों और शराबखानों में जाते थे और कभी-कभी रात में काम से घर लौटते वक्त दूसरों के बगीचों में सिर्फ शैतानी करने के लिए कूद जाते थे, इसलिए नहीं कि हमें सेबों की ज्यादा भूख रहती थी बल्कि सिर्फ अपनी बहादुरी दिखाने के लिए हम ऐसा करते थे। जैसे वह आज की ही बात हो, मुझे अभी भी पुतिलोव कारखाने के पास के बगीचे में बन्दूकधारी पहरेदार की याद है। फिर भला इस बगीचे में कूदने का लालच कैसे न हो, जब साथ ही जरा खून की होली खेलने का भी मौका मिले! (हंसी)

हम पार्टियों मे शामिल होते थे, लडकियों से मुलाकातें करते थे, खुशी से वक़्त काटते थे, और कभी-कभी पार्क में घूमने की तबीयत होने पर हम चहारदीवारी फांद जाते थे। (हंसी) हम चहारदीवारी इसलिए नहीं फांदते थे कि हमारे पास टिकट खरीदने को दस कोपेक न होते थे। नहीं, पैसा हमारे पास होता था, क्योंकि हम कमाते थे और दस कोपेक दे ही सकते थे। पर चहारदीवारी फांदने का मतलब खतरा उठाना होता था—आप पकड़े जा सकते थे और "शान के साथ" बाहर निकाले जा सकते थे। भला इस चढाई का मोह कैसे संवरण कर सकते थे! (हंसी) हम चहारदीवारियां फ़ांदते और लड़कियों के साथ घूमते थे, जैसा शायद आप भी करते है। अलबत्ता, मैं नहीं जानता कि आजकल ये मामले कैसे है। लेकिन मेरा खयाल है कि सब

कुछ उसी तरह चल रहा है, जैसा आज से चालीस-पचास साल पहले था। इस मामले में बहुत कुछ बदला नहीं मालूम होता है। (हंसी)

और इस तरह बाहर से हम बहुत ही साधारण जीवन बिताते थे। अगर कोई हम पर निगाह रखता, तो हममें कोई विशेषता न पाता।

तो भी हम दूसरे मेहनतकश युवकों से भिन्न थे। यह भेद क्या था? हम में और उनमें भेद यह था कि शनैः मजदूरों के हितों के लिए कार्यरत रहना ही हमारी दैनिक दिलचस्पी हो गया। गैरकानूनी केन्द्रों में अध्ययन और क्रांतिकारी साहित्य के पढ़ने से हमारा दृष्टिकोण विकसित हो गया, हमारे जीवन में विचारात्मक तत्व आ गया। पहले फैक्टरियों के भीतर होनेवाली अमानुषिकता को हम इक्का-दुक्का घटना समझते थे, लेकिन बाद में हम उन्हें आम मजदूर-वर्ग को त्रस्त करने वाली बर्बर व्यवस्था का अंग समझने लगे, जिसका प्रत्यक्ष संबंध ज़ारशाही व्यवस्था से भी था।

बाहर से हर चीज अपरिवर्तनीय लगती थी। हम लड़कियों के साथ घूमते थे, उनसे मुलाकातें करते थे, पार्टियों में नाचते थे और प्रेमालाप भी करते थे (हंसी) लेकिन हमारे दिमागों में "अमरीकी खुशनसीब अंत" से अधिक भी कुछ था। हमारे मन सार्वजनिक कार्यों की तरफ़ झुके हुए थे और जब हम पार्टियों में भी जाते थे, तो यह सोचते थे कि उनका क्रांतिकारी उद्देश्यों के लिए कैसे इस्तेमाल किया जाय।

इस तरह हमने धीरे-धीरे और अदृश्य रूप से सिद्धांतपूर्ण जीवन शुरू किया। और सिद्धांतपूर्ण जीवन सचमुच बड़ा दिलचस्प होता है। और यहीं पर हम मेहनतकश युवकों से भिन्न थे, पर हम उनसे सदैव निकट संपर्क रखते थे, क्योंकि हमारे क्रांतिकारी कार्य उन्हीं पर तो आधारित होते थे।

अलबत्ता, एक सिद्धांतपूर्ण जीवन के लिए आज के ऊंची शिक्षा पाने वाले सोवियत युवकों की अपेक्षा हमें बहुत ही सीमित अवसर मिले थे। यह समझ में आनेवाली बात है।

प्रथमत:, माध्यमिक शिक्षा हमारी शक्ति से बाहर होने के कारण हम जिम्नेज़ियम नहीं जाते थे। हमसे तो कुछ, प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने वाले ही बड़े भाग्यवान थे। फलत: आप लोग उस युग के तरुणों के मुक़ाबले इस मामले में कहीं आगे बढ़े हुए हैं। आप लोग आसानी से उद्देश्यपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

दूसरे, उस युग में सिद्धांतपूर्ण, वर्ग-चैतन्य मजदूरों का उत्पीड़न होता था। वे कारखानों से निकाल भगाए जाते थे, गिरफ़्तार होते थे, उन्हें देश निकाला दिया जाता था। अत: हम अपने विचारों पर सिर्फ़ गैरकानूनी तौर से ही अमल कर सकते थे। इसलिए उस ज़माने में जो कोई भी सिद्धांतपूर्ण जीवन बिताना चाहता था, राजनैतिक तौर पर विकसित होना चाहता था, मज़दूर-वर्ग और जनता के हितों में काम करना चाहता था, प्रगति की राह पर चलना चाहता था, तो उसके सामने यही कंटकाकीर्ण मार्ग था। इस राह पर थोड़े ही लोग चल सकते थे। इसके खिलाफ़, आपके सामने इस मामले में सीमाहीन अवसर है। आपकी आवश्यकता की सभी हालतें आपकी सेवा में हैं— आपको केवल काम करना है।

यदि आप मुझ से पूछें कि क्या तुम्हें इस बात का दु:ख है कि तुमने ऐसी राह अपनाई, तो मैं आपको जवाब दूंगा कि एक आदमी जो ऊंची ज़िन्दगी बसर करना चाहता है, एक संकरी, अर्थहीन जिंदगी नहीं, जो सिर्फ़ वैयक्तिक मध्यवर्गीय जीवन की खुशहाली के लिए है, जो जीवन को सचमुच सुंदर और दिलचस्प बनाना चाहता है, उसके लिए और कोई रास्ता ही नहीं हो सकता। मैं आपसे ऐसे कह रहा हूं कि इससे जैसे सिर्फ़ मेरा ही संबंध हो। लेकिन सचमुच ऐसा नहीं

है। मैं तो बहुतों में से एक था। मै तो सिर्फ़ इसलिए भाग्यवान हूं कि आज आपके सामने दिल खोलकर बात कर सकने की स्थिति में हूं, जब कि मेरी उम्र के बहुत से लोग संभवत: मर चुके हैं।

इसलिए सोद्देश्य जीवन, समाजार्थ पूर्ण जीवन, ऐसा जीवन जो इस अर्थ में उद्देश्य से पूर्ण है, दुनिया में सबसे अच्छा, सबसे दिलचस्प जीवन है।

बड़े और सिद्धांतपूर्ण जीवन का अर्थ है कि आप का जीवन समकालीन जीवन से आगे बढ़ा हुआ हो और प्रगति की ओर अग्रसर हो। यदि आप नये समाजवादी समाज के निर्माण में रत है, यदि आपको अपनी जनता को ऊंचा उठाने की लगन है, यदि आप स्वदेश को हर प्रकार से सुदृढ़ करना चाहते हैं, यदि आप अपनी समूची शक्ति कम्युनिज्म की पूर्ण विजय के लिए लगा रहे हैं, और यदि आपके दिमाग़ में यही विचार सर्वोपरि है, तो मुझे कोई सदेह नहीं कि आप का जीवन महान बन जायेगा।

साथियो, हर युग और हर पीढ़ी के नौजवान भिन्न-भिन्न प्रकार के सपनों और कल्पनाओं से खेलने के आदी रहे हैं। यह कोई बुरी बात नहीं, यह एक गुण है। कोई भी सक्रिय और विचारवान मनुष्य बिना कल्पना के नहीं जी सकता। आम तौर पर प्रौढ़ों के मुकाबले तरुणों में कहीं अधिक कल्पना शक्ति होती है। एक समय था जब हम भी अनेक और महान कल्पनाएं करते थे। ज़ाहिर है, हमारी और आप की कल्पना की उड़ानों में भेद है, पर आधारभूत से इन दोनों में समानता है।

चलते-चलते यह भी बता दूं कि मैं खुद कल्पनाओं की उड़ान भरने में कुछ कम न था। मिसाल के तौर पर, जब मैं पन्द्रह बरस का था तो जहाज़ी बनने की कल्पना करता था। मुझे अभी फ़ैक्टरी में काम न मिला था। जहाज़ी ज़िंदगी की तैयारी के लिए मैं तीन महीने

बिना बिस्तर के फ़र्श पर सोया था। मैं अपने को कठिन जीवन का अभ्यासी बनाना चाहता था। और अपने आप से कहता था: बिस्तरे पर सोनेवाला जहाज़ी कैसा होगा! (हंसी)

मैं सोचता हूं कि शायद आपके दिमाग भी इसी तरह की कल्पनाओं से भरे पड़े हैं। आप लोग नवीं और दसवीं कक्षाओं के विद्यार्थी हैं। यही उम्र है जब लोग कल्पनाओं मे झकझोर जाकर कुछ किसी महान लक्ष्य की ओर प्रेरित होते है। आप कैसे सोवियत युवक हैं, यदि आप महान जीवन के सपने न देखते है, यदि आप पहाड़ों को चलायमान करने की न सोचते, या पृथ्वी को उलट देने के लिए आर्कीमिडीज़ के स्क्रू का प्रयोग करने की नही सोचते? (हंसी)

लेकिन जैसा मै कह चुका हूं महान जीवन के लिए आपका संघर्ष हमारे मुक़ाबले कहीं आसान है। अगर आप मुझ से पूछें कि इस रास्ते पर कैसे चला जाये, तो मै जवाब दूंगा कि जिस हद तक आप अभी भी स्कूल में पढ़ रहे हैं, फिलहाल आपको ज्यादा कुछ नहीं करना है। शुरूआत के रूप में बुनियादें डालने के लिए, महान जीवन के निर्माता बनने के लिए, अभी यही आवश्यक है कि आप अपने पाठ्यक्रम के तीन विषयों के पंडित बनिए, सिर्फ़ तीन। देखिये मैंने कितनी छोटी सी बात कही है। (हंसी)

पहले, और सबसे पहले आपको रूसी भाषा का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। मेरा ख्याल है कि एक व्यक्ति के साधारण विकास के लिए रूसी भाषा का ज्ञान बहुत ही आवश्यक है। क्योंकि कोई ऐसा विज्ञान अथवा संस्कृति का विषय नहीं है जिसका विद्यालय में भविष्य में अध्ययन आपको रूसी भाषा के अच्छे ज्ञान की आवश्यकता न पड़े। और मामूली तौर पर, दैनिक क्षेत्र नहीं है जिस के लिए रूसी भाषा का पूर्ण ज्ञान आवश्यक न हों। जीवन में अपने विचारों, भावों, अनुभवों की समूची गहराइयों के सही और संक्षिप्त व्यक्तिकरण के लिए

भी इस तरह का ज्ञान परमावश्यक है। यदि एक आदमी यह सब दूसरे लोगों को व्यक्त करना चाहता है, तो उसे ऐसे वाक्यों में व्यक्त करना होगा जो वाक्य-रचना और व्याकरण-संबंधी नियमों के ही अनुकूल, सही तौर पर निर्मित किए गए हों।

अक्सर आपने साथियों को यह कहते सुना होगा: "मैं इस विषय को अच्छी तरह समझता और जानता हूं। लेकिन मैं इसे समझा नहीं सकता।" (हंसी) वह ऐसा क्यों नहीं कर सकते? क्योंकि उसने अपनी मातृ-भाषा का पांडित्य नहीं प्राप्त किया। ज़रा एक नौजवान की कल्पना कीजिए जो अपनी दिलरूबा को पत्र लिखना चाहता है। मान लीजिए कि यह पचास वर्ष पहले की बात है। वह लिखता है: "मेरी प्रियतमा, तुम्हारे लिए मेरा प्यार असीमित है। (हंसी) मेरी भावुकता इतनी गहरी है कि मैं उसे व्यक्त नहीं कर सकता। ऐसा करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।" (हंसी) एक सीधी-सादी और सरल लड़की कहेगी: "क्या कमाल है।" (हंसी) लेकिन मान लो वह न तो सीधी ही है और न सरल ही, बल्कि वह अच्छी खासी शिक्षित लड़की है? मेरा विश्वास है, वह कहेगी: "दयनीय छोकरे। तू कैसा बुद्धू है!" (हंसी और तालियां)

अपनी मातृ-भाषा का अध्ययन एक महत्वपूर्ण बात है। मानवीय विचारधारा, गहन ज्ञान और अच्छे से अच्छे भाव यदि स्पष्ट और संक्षिप्त शब्दावली में व्यक्त न हुए, तो वह अंधकार में ही पड़े रह जायेंगे। भाषा विचारों की व्यक्ति का एक साधन है। एक विचार, विचार तभी बनता है जब वह भाषा के रूप में सामने आए, जब वह भाषा के माध्यम के ऊपर आए, जब दार्शनिकों के अनुसार उस पर मनन कर लिया गया हो और दूसरों को व्यक्त कर दिया गया हो। इसीलिए मैं आपसे कहता हूं कि आपके आगे के कामों के लिए मातृभाषा का ज्ञान सबसे अधिक बुनियादी है।

आप लोगों के लिए दूसरा विषय, जो मैं बिलकुल ज़रूरी समझता हूं, वह गणित-शास्त्र है।

मै गणित-शास्त्र पर इतना अधिक ज़ोर क्यों दे रहा हूं? मौजूदा हालतों में, और विशेषत: सोवियत यूनियन के तरुण विद्यार्थियों के लिए मैं इसे क्यों इतना महत्वपूर्ण समझता हूं?

पहले, गणित मानसिक अनुशासन सिखाता है। वह लोगों को तर्कपूर्ण पद्धति से सोचना सिखाता है। गणित को मानसिक व्यायाम यूंही नहीं कहा जाता। मुझे संदेह नहीं कि आपके दिमागों में विचार हिलोरें ले रहे हैं। लेकिन इन विचारों को सुयोजित, अनुशासित और उद्देश्यपूर्ण बनाना चाहिए। गणित आपको इस काम में मदद देगा। ये विचार वैज्ञानिकों को आपसे कहीं अधिक भले लगेंगे, और मैं समझता हूं कि ये सब गणित पढ़ने के लिए आपको अधिक उत्साहित नहीं करेंगे।

दूसरे, और संभवत: यह आपके अधिक निकट होगा। गणित का प्रयोग जीवन के बड़े क्षेत्र में होता है। आप किसी भी विज्ञान का अध्ययन क्यों न करें, आप कोई भी कार्य क्षेत्र क्यों न चुनें, आपको हर क्षेत्र में गणित-शास्त्र के ज्ञान की आवश्यकता होगी। और आपमें से कौन है, जो जहाज़ी, हवाबाज़, तोपची, या कुशल कारीगर, फिटर, टर्नर या इसी तरह और कुछ नहीं बनना चाहता? कौन एक अनुभवी कृषि-विशेषज्ञ, पशु-पालक, बागबान, वग़ैरह या रेलवेमैन, इंजिन-ड्राइवर, आदि नहीं बनना चाहता? ये सब पेशे गणित-शास्त्र के अच्छे ज्ञान की अपेक्षा करते हैं। इसलिए यदि आप पूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, तो आपको जितना भी अवसर मिले, गणित में योग्यता प्राप्त कर लेनी चाहिए। बाद में यह आपके सभी कामों में सहायक होगा।

एक मिसाल लीजिए। मास्को के एक प्रसिद्ध नेत्र-विशेषज्ञ ने मुझे बताया कि यदि किसी नेत्र-विशेषज्ञ का भौतिक-विज्ञान का ज्ञान कम

है, तो वह अच्छा नेत्र-विशेषज्ञ नहीं हो सकता। मैंने उससे यह नहीं पूछा कि वह भौतिक-विज्ञान की किस शाखा का ज़िक्र कर रहा है। लेकिन स्पष्ट है कि उसकी निगाह में दृष्टि-संबंधी ज्ञान था। दृष्टि-संबंधी ज्ञान लगभग पूर्णतया ही गणित के फ़ार्मूलों पर आधारित है। क्या मैं ठीक कह रहा हूं? लगभग सही ही। (हंसी) अतः आपमें से जो चिकित्सा-क्षेत्र में जायेंगे, उनको भी गणित की आवश्यकता होगी।

आपके लिए असाधारण महत्व का तीसरा विषय है... मुझे भय है कि मैं जो कुछ बताने जा रहा हूं, उस पर आपको बड़ा आश्चर्य होगा, और हो सकता है आप पूर्णतया मुझसे सहमत न हों। तथापि मुझे आपको बता ही देना चाहिए। यदि मैं पूर्णतया आपको समझा सकने में सफल न हुआ तो कम से कम मैं आपको उस विषय के महत्व पर विचार करने के लिए उकसाने की कोशिश अवश्य करूंगा। अच्छा तो फिर वह विषय क्या है? मेरे दिमाग़ में शारीरिक शिक्षा है। (हंसी, तालियां) मैं देखता हूं कि आपमें से कुछ खुश हैं और बहुत संभव है कि आप इसलिए खुश हैं कि मैंने कोई दूसरा विषय नहीं बताया, जिसके लिए अधिक मानसिक श्रम की आवश्यकता हो।

लेकिन मैंने रूसी भाषा और गणित-विज्ञान के बराबर ही शारीरिक शिक्षा को क्यों रक्खा?

इसलिए कि मैं चाहता हूं कि आप सब स्वस्थ सोवियत नागरिक बनें। अगर हमारे स्कूलों से अस्तव्यस्त स्नायुओं और गड़बड़ पेट (हंसी) वाले ही निकले, जो हर साल स्वास्थ्यगृहां में इलाज के लिए पड़े रहे, तो इसका क्या नतीजा होगा? ऐसे लोगों के लिए जीवन में सुख पा सकना मुश्किल होगा। बिना अच्छे स्वास्थ्य के सुख कहां? हमें अपने को स्वस्थ — स्त्री और पुरुष — उत्तराधिकारियों के रूप में तैयार करना है।

दूसरे, मैं शारीरिक शिक्षा इसलिए चाहता हूं कि हमारे युवक मज़बूत और तेज़ हों। यह सत्य है कि सभी लोग हृष्टपुष्ट नहीं पैदा होते। और ऐसे लोग भी हैं जो बैल की तरह सही जन्म स्वस्थ होते हैं। ये लोग जीवन की विषम से विषम परिस्थितियों में स्वस्थ बने रहते हैं। बैल की तरह स्वस्थ होने की कहावत भी है। मगर ऐसे लोगों की तादाद बहुत कम है। पर औसत आदमी ज़िंदगी के दौरान में अपने स्वास्थ्य को बनाता है। चपलता और दृढ़ता के संबंध में तो यह और भी सही है। दोनों ही को अभ्यास से प्राप्त किया जा सकता है।

एक आदमी किस तरह ट्रेनिंग द्वारा सहनशील हो सकता है, उसकी मिसाल सुवोरोव के जीवन से मिल जायेगी—मैं यह मिसाल इसलिए दे रहा हूं कि संभवत: आप सभी ने सुवोरोव संबंधी फ़िल्म देखी है। जैसा आपको याद होगा वह बचपन में इतना कमज़ोर था कि उसके माता-पिता ने उसके लिए फ़ौजी जीवन की बात भी न सोची थी। इसके बावजूद उसने अपने को इस सीमा तक लौह बनाया कि अंत में मज़बूत से मजबूत लोगों में हो गया और जहां तक मुझे स्मरण है, वह ७० बरस तक जिया। मैं ठीक कह रहा हूं या नहीं? सच तो यह है कि इतिहास का ज्ञान मुझे नहीं है, पर आपको तो होना चाहिए। (हंसी)

हम चाहते हैं कि सोवियत जन और आप लोग तरुण विद्यार्थी सुवोरोव की भांति तेज़ और मज़बूत हों। इस ओर थोड़ी भी कामयाबी सोवियत राज्य की महान सफलता समझनी चाहिए। मैं आपसे "फ़िनलैंड में युद्ध" पुस्तक पढ़ने की सिफ़ारिश करता हूं। यह बड़ी पुस्तक दो भागों में है। जब मैंने अपने एक परिचित से पूछा कि आपसे यह किताब पढ़ने की सिफ़ारिश की जाय या नहीं, तो उन्होंने सिफ़ारिश न करने के लिए कहा। उन्होंने कहा यह बहुत बड़ी है और ये उसे पूरी पढ़ेंगे नहीं। और यह एक प्रोफ़ेसर का कहना था जो आप के बारे में कुछ ज्ञान रखता है। उन्होंने सुझाव दिया कि मैं आपको फ़िनलैंड के युद्ध से

संबंधित कोई दूसरी किताबें बताऊं जो काफ़ी छोटी हैं। इसके बावजूद मैंने यही निश्चित किया कि आप से दो भागों वाली इसी पुस्तक को पढ़ने की सिफ़ारिश करूं। मैं समझता हूं कि एक बार यदि आप इसे उठा लेंगे तो उसे खतम करके ही छोड़ेंगे—वह इतनी दिलचस्प और शिक्षात्मक है।

यह किताब इतनी दिलचस्प क्यों है? इसमें युद्ध के विषय पर कोई साधारण विश्लेषण नहीं है। पूरी पुस्तक में मुख्य विचार यह है कि नवीन युद्ध शैली के लिए फौजी मामलों की असाधारण जानकारी, नवीनतम फ़ौजी टकनीक का पांडित्य, असाधारण शारीरिक शक्ति आवश्यक है। बड़ी मेहनत की ज़रूरत है, इसके लिए दृढ़ता और अधिक दृढ़ता की आवश्यकता है। असाधारण चपलता और मोर्चे की कठिन से कठिन स्थिति के लायक अपने को ढाल सकने की योग्यता और आवश्यक साधनों को जुटा सकने की काबिलीयत जरूरी है। इन गुणों के बिना नवीन युद्ध में आपको कोई अवसर नहीं। इसलिए आपको पूरी शक्ति से सोवियत देशभक्तों के कर्तव्य पूरा करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। और इसके लिए आवश्यक है कि आप अपने को शारीरिक तौर पर लौह, कठिन, स्वस्थ और चपल बनाएं।

इसके अलावा दैनिक जीवन में भी आपको शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता है। सड़ी आंतों वाले पेट का आदमी अपने जीवन में किस सुख का अनुभव कर सकेगा? (हंसी) लेकिन यदि एक व्यक्ति स्वस्थ है और उसका हर अंग साधारण तौर पर काम करता है—यानी उसे भूख न लगने, नीद न आने आदि की शिकायत नही है—तो वह जीवन की कठिनाइयों को कही आसानी से जीत सकेगा। इसलिए स्वस्थ बनने के लिए, जीवन का अधिकाधिक सुख प्राप्त करने के लिए आपको शारीरिक शिक्षा प्राप्त करनी है।

मुझे ऐसा लगता है कि हमारे स्कूलों में, लोग अधिक दिमाग़ी बना दिये जाते हैं, लेकिन दिमाग़ी मानसिक विकास के अर्थों में नहीं, बल्कि आराम पसंद के अर्थों में। उन्हें शारीरिक काम का मूल्य आंकना सिखाया ही नहीं जाता। मैं नहीं कह सकता कि इसमें दोष किसका है, लेकिन तथ्य तो तथ्य ही है। स्पष्ट है कि शारीरिक श्रम की ओर पुराना रवैया कुछ हद तक यहां देखने में आता है। शायद मुख्य दोष परिवारों का है। लेकिन स्कूल इस प्रभाव का उचित प्रतिरोध नहीं करते और बच्चों को शारीरिक श्रम की तरफ़ कम्युनिस्ट रवैया अपनाने में काफ़ी सहायता नहीं देते। इसीलिए बहुत से बच्चे शारीरिक श्रम के प्रति अनिच्छा रखते हैं और इसे लज्जाजनक तथा नीच समझते हैं। मेरा ख़्याल है कि यह बहुत बड़ी भूल है। हमारे देश में हर काम को सम्मनपूर्ण समझा जाता है। हमारे लिए कोई काम छोटा या बड़ा नहीं है। हमारे देश में श्रम सम्मान, शूरता, प्रतिष्ठा और वीरता की वस्तु समझा जाता है। फिर चाहे वह राज का काम हो या वैज्ञानिक, चौकीदार, इंजीनियर, बढ़ई, कलाकार, चरवाहे, एक्ट्रेस, ट्रैक्टर-ड्राइवर, कृषि-विशेषज्ञ, दूकान-कर्मचारी, डाक्टर या किसी और पेशे का काम हो।

हर तरुण सोवियत नागरिक को शारीरिक श्रम का सम्मान करना चाहिए और मामूली से मामूली काम को भी टालना नहीं चाहिए। आप में से जो लोग शारीरिक श्रम के आदी हो जायेंगे, वे जीवन का अधिक ज्ञान प्राप्त करेंगे। आपमें से जो लोग कम से कम कपड़े धोने, सीने, खाना बनाने, कमरा साफ़ करने जैसे परमावश्यक काम करने लगेंगे—या आपमें से जो कोई एक न एक पेशा सीख जायेंगे, तो निश्चित है कि आप जीवन में कभी घाटे में नहीं रहेंगे।

एक बार मैंने प्रसिद्ध अंग्रेज़ दार्शनिक जॉन लॉक के पांडित्यपूर्ण पत्रों को पढ़ा, जो आज से ढाई सौ वर्ष पहले जीवित था। अंग्रेज़ी शासक-वर्गों से उसने कहा: अपने बच्चों को मुलायम बिस्तरों पर

सोने का आदी मत बनाओ। उनका पालन-पोषण इस तरह करो जिससे वे हर बिस्तरे को मुलायम समझें, क्योंकि यात्राओं के दौरान में आप अपने मुलायम बिस्तरों को लाद कर नहीं ले जा सकते, और युद्धों में तो यह और भी असंभव है। यदि एक जवान कड़े बिस्तरे पर सोने का आदी हो गया है तो उसे मुलायम बिस्तरे पर सोने की शिक्षा आवश्यक नहीं होगी, वह जल्दी ही सीख जायेगा। जॉन लॉक ने माताओं, पिताओं को सलाह दी कि वे अपने बच्चों को अनेक पेशे सिखायें, जिनमें से एक का तो उसे पूर्ण ज्ञान होना ही चाहिए। यह उनके लिए बहुत सहायक होगा और बहुत विद्वान लोग भी जब मानसिक श्रम के बाद आराम चाहें, तो उन्हें फ़ायदा पहुंचायेगा। दूर्भाग्य के मारे हुए को तो यह बहुत ही सहायक होगा।

जैसा आप देख रहे हैं कि ब्रिटेन के उत्थान के समय शोषक-वर्गों के विचारकों ने उन्हे अपने बच्चों को शारीरिक श्रम का सम्मान करने को सिखाया, न कि साधारण काम मे घृणा करना सिखाया। उन्होंने बच्चों को जीवन की हर स्थिति के लिए तैयार करने की सलाह दी। और यह सब शोषकों की शक्ति को और अधिक दृढ़ बनाने के लिए किया गया।

यदि अंग्रेज़ी पूंजीपतियों और ज़मींदारों के बेटों ने शारीरिक श्रम का सम्मान करने की सलाह मानी, यदि उन्होंने मामूली श्रम के प्रति घृणा नहीं बरती और जीवन की हर कठिनाई का मुक़ाबला अधिक आसानी से करने के लिए अपने को दृढ़ बनाया, तो सोवियत युवकों को यह समझना और भी ज़रूरी है। आप शारीरिक श्रम कहां और कैसे कर सकते हैं? सबसे पहले घर पर आप इसकी शुरूआत कीजिए। और फिर हर तरह से अपनी दृढ़ता तथा चपलता को विकसित कीजिए।

हमारे लोग अक्सर पूछते हैं: भविष्य के कम्युनिस्ट समाज के लोग किस तरह के होंगे? मैं चाहता हूं कि अपनी जनता के लिए, कम्यु-

निज्म की जीत के लिए, सोवियत नागरिक स्वस्थ, दृढ़ और स्वदेश के दुश्मनों के प्रति किसी भी भांति झुकने वाले न हों। मैं नहीं मानता कि हमारे तरुण लड़ना नहीं चाहते। यह अस्वाभाविक होगा। मैं ग़लत तो नहीं कह रहा हूं? ("सही", "सही" की आवाज़ें) अलबत्ता, अनेक तरह के आदमी होते हैं। लेकिन मैं उनके सामूहिक स्वरूप की बात कर रहा हूं। इसका अर्थ है कि आप अपने को दृढ़ और चपल बनने की ट्रेनिंग दीजिए। आप ऐसे बन जाइए जो किसी भी कठिनाई या परीक्षा में सफल हो सकें।

अब आप खुद ही फ़ैसला कीजिए कि ऐसे लोगों का क्या किया जाय जिनके बारे में "प्राव्दा" के "आलसी तरुण" लेख में बताया गया है। जिस संवाददाता ने यह लेख लिखा था, उसने एक सामूहिक किसान के १८ वर्षीय पुत्र विक्टर न० से भेंट की थी। "एक सामूहिक किसान का पुत्र विक्टर, जिसने दो साल हुए अपनी स्कूल-शिक्षा प्राप्त की थी, घर पर बैठा रहता है और कोई काम नहीं करता। उसके ही शब्दों में वह 'शक्ति बटोर रहा है।' यह पूछने पर कि वह फ़ार्म पर काम क्यों नहीं करता, उसने मुंह टेढ़ा करके जवाब दिया, 'मैंने स्कूल में सात साल सामूहिक फ़ार्म पर काम करने के लिए नहीं बिताए। लंगड़ा अंद्रुश्का ही वहां काम करेगा। अपने लिए मैं ज़्यादा साफ़ काम ढूंढ़ लूंगा। मैं कहीं दफ़्तर में काम पा सकता हूं!.."

यह लेख पढ़कर मैंने यह निश्चित कर लिया कि और चीज़ों के अलावा यह विक्टर न० बिलकुल ही अशिक्षित है। यदि स्कूल छोड़ने के बाद दो बरसों में उसने कुछ भी नहीं किया, तो निश्चय ही है उसने अपनी स्कूल की शिक्षा भी बहुत भोंड़े रूप से प्राप्त की है और एक-एक दर्जा करके यूंही घसिटता रहा है, यानी उसे उचित तौर पर अक्षर ज्ञान भी नहीं है। और यदि यह हालत है, तो वह आफ़िस के भी काम का नहीं है। क्या हमारे सामूहिक फ़ार्मों को शिक्षित लोगों की

आवश्यकता नहीं है? क्या कोई भी बिना ज्ञान के खेती कर सकता है? हम सचमुच ऐसे "दर्शन" से सहमत नहीं हो सकते। यह हानिप्रद "दर्शन" है, जिसका पूरी शक्ति से विरोध करना चाहिए। हमें यह निश्चय कर लेना चाहिए कि हमारे स्कूलों से इस तरह के विद्यार्थी नहीं निकलेंगे। सोवियत जनता ऐसे आलसियों को बरदाश्त नहीं कर सकती। सचमुच, हमें मिलता क्या है? आलसियों और मुफ़्तखोरों को हटाने के लिए हमने क्रांति की और यहां, यदि आप बुरा न मानें तो, नए आलसी और मुफ़्तखोर बढ़ रहे हैं। नहीं, यह बरदाश्त नहीं किया जा सकता और इस दशा के लिए स्कूल भी उत्तर दें।

साथियो, जब मैं आपके सामने रूसी भाषा, गणित-शास्त्र और शारीरिक शिक्षा के बारे में बोल रहा था, इसका यह मतलब नहीं था कि पाठ्यक्रम के अन्य विषयों के महत्व को मैं कम कर रहा था। फलत: इसका अर्थ यह नहीं है कि आप दूसरे विषयों को नज़रअंदाज करें। मैंने इन तीन विषयों पर इसलिए जोर दिया कि मैं उन्हें दूसरे विषयों के समुचित ज्ञान और पूर्ण जीवन के लिए आवश्यक बुनियाद समझता हूं। मुझे विश्वास है कि अगर आप इन तीन ख़ास विषयों में बहुत अच्छे नम्बर हासिल कर लेते हैं, तो दूसरे विषयों में कामयाबी पक्की हो जायेगी, क्योंकि इन सबका बहुत नज़दीकी संबध है।

अंत में मुझे कहना है कि विभिन्न ऐतिहासिक युगों में विभिन्न प्रगतिशील आंदोलन सामने आते हैं और जनता की श्रेष्ठतम शक्तियां उनको पूरा करने के लिए संघर्ष करती हैं। मिसाल के लिए, पिछली शताब्दी के चौथे-पांचवें दशकों में बुनियादी प्रगतिशील काम अर्ध-दास व्यवस्था से किसानों को मुक्ति दिलाना था। और हम जानते हैं कि उस युग में सभी इमानदार और प्रगतिशील व्यक्तियों ने इस काम की सफलता में सीधे या ग़ैर-सीधे तरीक़े से योग दिया।

पिछली शताब्दी के अंत और बीसवीं सदी के प्रारंभ के समय में नया प्रगतिशील आंदोलन जो सामने आया, उसने ज़ारशाही और पूंजीवाद की शक्ति का अन्त करके नयी समाजवादी व्यवस्था कायम करने की प्रेरणा दी।

वर्तमान युग में समाजवाद को सुदृढ़ करना, और कम्युनिज़्म की अंतिम विजय के लिए संघर्ष करना सबसे ज़्यादा प्रगतिशील काम हैं। यह न सिर्फ़ सोवियत जनता ही मानती है, वरन् दुनिया के तमाम मेहनतकश भी इसे समझते हैं। इस काम की सफलता के लिए आवश्यक है कि हमारे देश की आर्थिक और फ़ौजी शक्ति को अधिकाधिक बढ़ाया जाय। और इसलिए मैं चाहता हूं कि हमारे तरुण इस महान दायित्व के प्रति उत्साही बनें। वे उसे ही अपने जीवन का उद्देश्य बनाएं, क्योंकि तभी आपके जीवन विचारात्मक गहनता से पूर्ण हो सकेंगे।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद कम्युनिज़्म के संघर्ष में, कम्युनिस्ट आदर्शों की सफलताओं के लिए शक्तिशाली साधन है। असली और वैज्ञानिक कार्यवाही में, इसकी विचारधारा और तरीका दोनों ही बहुत शक्तिशाली साधन हैं। और जो कोई भी पूर्ण जीवन बिताना चाहता है, उसे मार्क्सवाद-लेनिनवाद का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। ऐसी ही ज़िंदगी हमारे तरुणों को आकर्षित करेगी।

साथियो, अभी आपकी उम्र अपने को बनाने की है। मैं नहीं जानता कि आप ज़रा इस दार्शनिक व्यक्तीकरण को समझ रहे हैं या नहीं। दूसरे शब्दों में आप विकास की अवस्था में हैं, आप तरुण हैं, आपमें कल्पना, जोश और असाधारण निडरता है, लेकिन अभी आप प्रौढ़ नहीं हुए हैं न ही आपने अभी जीवन का अपना रास्ता ही चुन लिया है। आप सिर्फ़ अपनी राह ढूंढ़ रहे हैं। पचास वर्ष पहले हम लोगों के लिए यह आसान था, क्योंकि हमारे सामने एक ही सकरी पगडंडी थी। और

तब यदि कोई डगमगाता था, तो वह निश्चय ही असभ्यता के दलदल में गिर जाता था। आपके सामने अनगिनत असली रास्ते है, आप यह रास्ते चुन रहे है। जल्दी ही आप जहाजी, रेलमैन, तोपची, टैकमैन, हवाबाज, इजीनियर फिटर, खरादी, वैज्ञानिक, कलाकार, डाक्टर, आदि बन जायेगे।

मै चाहूगा कि तब आप लोग भी सामाजिक कार्यवाहियों में हिस्सा लेने के लिए उसी उत्कट भावना से प्रेरित हो, जिससे पचास साल पहले हम लोग प्रेरित हुए थे। आप के जीवन का महान उद्देश्य सोवियत जनता की सेवा हो।

"स्मेना" मैगजीन

अक ६, १९४१

शत्रु पर विजय पाने के लिए सब कुछ किया जाना चाहिए

कूइबिशेव नगर के कोम्सोमोल कार्यकर्ताओं की सभा में दिये गए भाषण का अंश

१२ नवंबर १९४१

साथियो, भूतकाल में सोवियत यूनियन ने अनेक मुश्किलें उठायी हैं। और पुरानी पीढ़ियों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। इसके लिए अनेक कोशिशें करनी पड़ीं और अनेक बलिदान देने पड़े। उनकी जिंदगियां शौर्यपूर्ण कामों से भरी पड़ी थी। यह महान त्याग और तपस्या किस उद्देश्य से की गई? ये सब भविष्य के लिए, आपके लिए करना पड़ा, ताकि प्रिय कोम्सोमोल सदस्यों की वर्तमान पीढ़ी लगभग शांतिपूर्ण स्थिति में विकसित हो सके।

लेकिन जैसा स्वयं आप जानते हैं, पहले से कुछ कम नहीं, बल्कि और भी अधिक कठिनाइयां आपकी पीढ़ी पर आ रही हैं। ऐसा प्रायः होता है, युद्ध तरुणों पर फ़ौरन प्रौढ़ता ला देता है। थोड़े से थोड़े ही समय में एक तरुण जिसका जीवन वक़्त की खुशियों से भरा

है, जो भविष्य और अपनी प्रेयसी के रंगीन सपनों में मस्त है, पौढ़ बन जाता है। वह महसूस करता है कि युद्ध उसका यह सब कुछ अंत किए दे रहा है और जीवन का सबसे अच्छा समय जैसे कम किया जा रहा है।

मैं आपके सामने एक बहुत ही सर्व-साधारण तथ्य पेश करूंगा। "क्रासनाया ज़्वेज़्दा" अखबार ने अपने युद्ध-फ़ोटोग्राफ़र लोस्कुतोव की टिप्पणियां छापी हैं, जिनमें वह बताता है कि वह और एक सिनेकैमरामैन कुछ तरुणों के साथ किस तरह जर्मन युद्ध-पंक्तियों के पीछे पर्तिज़न दस्तों के बीच पहुंचे।

संवाददाता लिखता है, "हम लोगों के साथ एक गाइड (राह दिखाने वाला) था जो पूरे ग्रूप का लीडर हो गया। हमारा कमांडर सिर्फ़ २० वर्ष का एक नौजवान था, लेकिन उसने अनेक मुश्किलें झेली थीं और काफ़ी दुनिया देख ली थी। वह कोम्सोमोल का सदस्य था, बहादुर था और धुन का पक्का था। हम लोग बहुत जल्दी ही उस पर मुग्ध हो गए। उसका नाम सेर्योझा जैत्सेव था, लेकिन हम उसे सिर्फ़ 'ज़ैचिक' कहते थे।"

हां, बहुत संभव है कि पांच महीने पहिले वह "ज़ैचिक" रहा हो। लेकिन अब वह एक ग्रूप का कमांडर है। ज़रा सोचिए कि एक बीस साल का लड़का जर्मनों के पीछे ५० किलोमीटर की दूरी तक एक ग्रूप का नेतृत्व करता है! ५ महीने पहिले वह साधारण नौजवान था और पर्तिज़न बनने का उसे कोई ख़्याल भी न था। शायद बहुत हद तक उसका सम्पूर्ण ध्यान रागरंग, नाच-गान—यह सब कुछ स्वाभाविक ही था- पर केन्द्रित था। लेकिन ५ महीनों में वह एक योद्धा बन गया, जनता का वीर सेनानी बन गया। अब वह एक अनुभवी योद्धा है, जिसके हाथों में प्रौढ़ लोग कठिन अवसरों पर अपना जीवन सौंप देते हैं।

आप ने देखा कि कितनी जल्दी हमारे युग में कल के अल्हड़ तरुण योद्धा बन जाते हैं। शांति-काल में इसमें बरसों लग जाते। आपमें से बहुतों के भाई होंगे जो मोर्चे पर रह चुके होंगे, वे जब छुट्टी पर या किन्ही दूसरी परिस्थितियों में घर आए है तो क्या आपने उनसे नही कहा, "आप कितने बड़े हो गए! जब आप गए थे तो बच्चे थे और अब आदमी हो गए!"

ये तो बाहरी परिवर्तन है। जनता में भी गहरी तबदीलियां हो रही है। निस्संदेह, कोम्सोमोल सदस्य युद्ध के बोझ को खूब निभा रहा है। उनमें से अनेक मोर्चे पर है, और जो नही है, वे उत्पादन में लगे हुए है। वहां पर भी उसी तरह का मोर्चा है। मिसाल के तौर पर, कोम्सोमोल के वे सदस्य, जो मास्को के उद्योग में लगे हैं, अक्सर शत्रु के हवाई हमले के खतरे से घिरे रहते है। ऐसे अवसरों पर पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अधिकाधिक उत्पादन में लगे रहने के लिए बहुत ही दृढ-प्रतिज्ञ होने की आवश्यकता होनी है।

युद्ध का मोर्चा लेनिनग्राद के लोगों के तो और भी निकट है। लेनिनग्राद कोम्सोमोल का सदस्य चाहे हाथों में हथियार लेकर नगर की सुरक्षा के लिए लड रहा हो, चाहे कारखाने में काम कर रहा हो, वह मोर्चे पर है। इस प्रकार अब मास्को के सर्वहारा और तरुण लेनिनग्राद के सर्वहारा प्रौढ हो गए है और योद्धा बन गए है।

यही बात पिछवाड़े में भी चल रही है, संभवतया उसकी चाल कुछ धीमी है।

सरकार का एक भाग इस समय कूइबिशेव में है। इससे कूइबिशेव की मेहनतकश जनता पर, और कूइबिशेव कोम्सोमोल-संगठन पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ गई है। एक वर्ष पहले, पांच महीने पहले तक कूइबिशेव अनेक नगरों में से एक था, यद्यपि वह एक बड़ा नगर था। स्वेर्दलोव्स्क, चकालोव, नोवोसीबिर्स्क और दूसरे नगर कूइबि-

शेव की जनता के प्रति विशेष ध्यान नहीं देते थे, क्योंकि वे स्वयं क्षेत्रीय केन्द्र थे। लेकिन अब अखिल-संघीय लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय-कमेटी यहां पर है। दूसरे प्रदेशों से कोम्सोमोल के सदस्य यहां आते हैं, और स्वाभावतः वह आपकी तरफ़ ध्यान से देखते हैं। कूइबिशेव में चीज़ें कैसे की जाती हैं—उसके प्रति उनकी दिलचस्पी है। वे यहां पर चीज़ें देखने और सीखने की आशा करते हैं।

इस समय कोम्सोमोल के सामने मुख्य काम क्या है? इस समय सबसे अधिक बुनियादी और निर्णयात्मक बात युद्ध है। आज शत्रु को पछाड़ने से अधिक कोई काम महत्वपूर्ण नहीं है और तमाम काम शत्रु को हराने के इस बुनियादी उद्देश्य के सहायक हैं।

आप युद्ध में सीधे भाग ले सकते हैं या उद्योग में काम करके, या दूसरे संगठनों में हिस्सा लेकर भी युद्ध में सहायता कर सकते हैं। बहुत संभव है कि आप में से बहुतों को आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों युद्ध में सीधा भाग लेना पड़ेगा। यह एक निर्मम युद्ध है। शत्रु का मुक़ाबला सिर्फ़ अदम्य इच्छा-शक्ति और उत्साह से ही किया जा सकता है।

इसलिए कोम्सोमोल संगठन के सामने अब काम यह है कि वह अपने सदस्यों को युद्ध के लिए तैयार करे। मैं समझता हूं कि आप सभी यह बात बिल्कुल अच्छी तरह से समझते हैं कि जो युद्ध हम लड़ रहे हैं, वह न्यायपूर्ण है। लेकिन आपमें से हर एक को नैतिक तौर से भी अपने को युद्ध के लिए तैयार करना चाहिए।

आपको यह समझना चाहिए कि युद्ध खेल नहीं, वरन् यह एक बहुत कठिन परीक्षा है। यह सिर्फ़ एक मौक़े की बात नहीं कि युद्ध के ज़माने में एक अछूता तरुण इतनी जल्दी आदमी बन जाता है, योद्धा बन जाता है। युद्ध-काल में एक आदमी शांति-काल के मुक़ाबले के दस बरसों को एक ही या कुछ महीनों में पार कर लेता है। एक लड़ाई

में उसे इतना अनुभव हो सकता है, जितना साधारणतया उसे आधी ज़िंदगी में भी नहीं हो सकता। आपको इसके लिए तैयार रहने की ज़रूरत है। कोम्सोमोल के सदस्यों को चाहिये कि अपने आप को और तमाम तरुणों को युद्ध में भाग लेने के लिए तैयार करें। आप को अपने को मानसिक तौर पर भी तैयार करना है, ताकि युद्ध की अमानुषिकताएं और दुश्मन के तमाम हथकंडे आपको तोड़ न सकें।

युद्ध के लिए अपने आप को तैयार करने का अर्थ क्या है? इसके लिए तैयारी ठोस होनी चाहिए। इस युद्ध में नये और पेचीदा हथियार प्रयुक्त होते हैं। आपको चाहिए कि आप उन का प्रयोग करना सीखें।

जब कामरेड वोरोशीलोव फ़ौज के एक डिवीजन को मोर्चे पर जाने के लिए विदा कर रहे थे, तब उन्होंने कहा था: "जल्दी से मोर्चा संभालना सीखिए।" सोवियत यूनियन के मार्शल ने यह बात लाल फ़ौज के सिपाहियों से कही, उन लोगों से जो यद्यपि मोर्चे पर नहीं गए थे, लेकिन फ़ौजी मामलों के माहिर थे। उन्होंने कहा--"खाइयां खोदने में अपनी पूरी शक्ति लगा दीजिए। अपने फावड़ों का इस्तेमाल कीजिए। युद्ध-काल में फावड़ा एक सिपाही का ब्रह्मास्त्र है। जल्दी से जम जाना सीखिए।"

मैं समझता हूं कि यदि सोवियत यूनियन का एक मार्शल मोर्चे पर जाने वाले फ़ौजियों के डिवीजन को यह सलाह दे सकता है, तो यह सलाह आप पर, कोम्सोमोल के सदस्यों पर, और भी अधिक लागू होती है। फावड़ा चलाना सीखिए। भावी फ़ौजी के नाते आपको फावड़ा चलाना इस सीमा तक सीखना चाहिए कि आप घंटे भर में छाती तक गहरी ज़मीन खोद डालें और ऐसी खाई खोद लें जो दो घंटे में आपके सिर को ढक ले। फिर आपके सामने एक ठोस काम है कि आप खोदना सीखें। यदि मैं आपके कोम्सोमोल नगर-संगठन का मंत्री होता तो मैं हर दिन आपसे कुछ घंटे बरफ से ढकी ज़मीन खुदवाता और देखता

कि आप कितनी शीघ्र खुदाई की कला के माहिर बनते हैं। (हंसी) हो सकता है, आप में से कई मेरी इस बात को अन्याय समझकर, समय की व्यर्थ बरबादी समझकर अपने मन ही मन मुझे कोसते होंगे। (हंसी) जो मोर्चे पर न जाते, वे शायद ऐसा ही सोचते रहते। और जो मोर्चे पर जाते, वे मुझे धन्यवाद देते। "क्या अच्छी बात थी कि यह मुझे पहले से सिखा दिया गया था। और अब अपने लिए खाई खोद लेना तो बच्चों का खेल हो गया है", वे कहते।

मुझे याद नहीं है, लेकिन मैं सोचता हूं कि वह नेपोलियन था जिसने कहा था कि उसकी फ़ौज का हर आदमी अपने थैले में एक मार्शल का बेंत रखता है। यह नेपोलियन की फ़ौज के बारे में कहा जाता था। सोवियत यूनियन में विशेष सामाजिक व्यवस्था नहीं है, जिससे फ़ौज में नौकरी या तरक्की आसानी से मिल सके। हमारे देश में यह सब निजी खूबियों के आधार पर होती है। बहुत संभव है कि आप में से अनेक कमांडर या राजनैतिक कार्यकर्ता हों। मैं सोचता हूं कि आपमें से अनेक बड़ी-बड़ी फ़ौजी यूनिटों के कमांडर बनें, शायद मार्शल भी बनें। आपमें से कम से कम एक मार्शल तो निश्चय ही निकलेगा? (हंसी) यह बिल्कुल संभव है। इसलिए साथियो, आपको युद्ध-कला, एवं फ़ौजी विज्ञान का अध्ययन बहुत ध्यान से करना चाहिए। कोई बात नहीं यदि आपको पहले एक साधारण लाल फ़ौज के सिपाही की तरह काम करना पड़े। अतः यह ज़्यादा अच्छा होगा कि सैद्धांतिक शिक्षा पहले ही से प्राप्त की जाय। भविष्य में यह बहुत फ़ायदे की साबित होगी। जब मैं युवक था तो मेरे भी अपने सपने थे: "काशकि मैं मज़दूरों की लोक-सभा का सदस्य बन सकूं"। मैं यह भी जानता था कि पहले मुझे जेलखाना काटना पड़ेगा। (हंसी) जब लोग पन्द्रह और अठारह साल के बीच में होते हैं, तो उनके दिमाग़ में सच्चाई से अधिक स्वप्न की दौड़ रहती है। और यह बुरी बात नहीं

है। इसलिए अब आप का यह मुख्य कर्तव्य है कि आप फ़ौजी शिक्षा लगन से हासिल करें।

यहां एक ज़िला-कमेटी के सेक्रेटरी ने शिकायत की है कि उसके ज़िले के अनेक कोम्सोमोल सदस्य फ़ौजी ट्रेनिंग नहीं ले रहे हैं। मैं इसे बिलकुल नहीं समझ सका। क्यों? खुद सेक्रेटरी पर इस बात के लिए मुक़दमा चल सकता है। (हंसी) फ़ौजी ट्रेनिंग एक नागरिक कर्तव्य है, न कि स्वेच्छित पेशा। कौन इसमें हिस्सा लेने से इनकार कर सकता है? यदि मैं कोम्सोमोल की ज़िला-कमेटी का मंत्री होता, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मेरे इलाक़े का हर सदस्य फ़ौजी ट्रेनिंग लेता।

कभी-कभी गांव की सोवियत या सामूहिक खेती के प्रधान को किसानों से खराब सड़कें ठीक करने के लिए कहना पड़ता है। सड़क बनाते वक़्त लोग चाहे प्रधान को भला-बुरा कहें, लेकिन जहां सड़क तैयार होकर प्रयोग में आने लगती है, तब वे ही उसकी तारीफ़ करने लगते हैं: "यह अच्छा हुआ कि हमने यह सड़क बना डाली, यह ठीक था कि उन्होंने हमसे यह सड़क बनवाई"। (हंसी) कोम्सोमोल को भी लोगों से ज़रूरी काम करवाना पड़ेगा। आपकी क्या राय है? यदि कोम्सोमोल का एक सदस्य आज फ़ौजी ट्रेनिंग लेने न आवे और दूसरा कल न आवे, यदि कोम्सोमोल का एक या दूसरा सदस्य सोचने लगे कि फ़ौजी ट्रेनिंग के लिए जाया जाय या न जाया जाय, तो नतीजा क्या होगा? फ़ौजी ट्रेनिंग एक नागरिक कर्तव्य है और यह सवाल उठ ही नहीं सकता कि वह इसे पूरा करना चाहता है या नहीं।

दूसरी बात यह है, कि कोम्सोकोल को तरुणों की फ़ौजी ट्रेनिंग में आगे बढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। यहां हमारे कर्तव्य ज्यादा हैं। यह आवश्यक है कि कोम्सोमोल के सदस्य खुद युद्ध-कला का अध्ययन

कर दूसरों के लिए आदर्श बनें, जो कोम्सोमोल के सदस्य नहीं हैं। तरुणों को चाहिए कि उन प्रौढ़ों की अगुआई करे जो फ़ौजी ट्रेनिंग प्राप्त कर रहे हैं। अलवत्ता, यह अधिक मुश्किल काम है। लेकिन इसे मैं बिल्कुल संभव समझता हूं, क्योंकि कोम्सोमोल में अनुशासन है। आपको सिर्फ़ यह सीखना है कि उसका उचित प्रयोग किस प्रकार किया जाय।

यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप अपने को युद्ध के लिए शारीरिक तौर पर तैयार कीजिए। हमारे तरुण बहुत अच्छे थे और हमने उन्हें थोड़ा बहुत बिगाड़ भी दिया था। मुझे इस बात का बिल्कुल दुख नहीं है। लेकिन अब समय आ गया है, जब जनता को उच्च साहस की ही नही, वरन् शारीरिक दृढ़ता की भी आवश्यकता है। मैं समझता हूं कि कोम्सोमोल को चाहिए कि शारीरिक दृढ़ता प्राप्त करने में जनता की सहायता करे। कूइबिशेव का प्राकृतिक वातावरण हमें ऐसे अवसर प्रदान करता है। आज के से मौसम में सचमुच आप अपने को मज़बूत बना सकते हैं। मान लीजिए कि आप शनिवार से इतवार की शाम तक कुछ, या एक ही रोटी लेकर घूमने निकलें, यह अपने आप को मज़बूत-बनाना होगा।

हमें जीतना चाहिए और हम विजयी होंगे, परंतु विजय आसमान से नही टपकेगी। जीत लड़ाई में हासिल करनी है और कैसी भयंकर लड़ाई में! इससे पहले कि आप मोर्चे पर जायें, अपने आपको मज़बूत कीजिए। हो सकता है कि इस समय यह सब आपको खुशगवार न लगे, लेकिन जब आप मोर्चे पर जायेंगे तो आप इसके लिए शुक्रगुज़ार होंगे। अलवत्ता, अब भी बहुत कुछ है जो फ़ौजी ट्रेनिंग के बारे में कहा जा सकता है। मैं तो आपको सिर्फ़ वह दिशा दिखा रहा था जिधर फ़ौजी ट्रेनिंग को जाना चाहिए। आपको फ़ौजी ट्रेनिंग लेनी चाहिए, कोम्सोमोल के सदस्य होने के नाते यह आपका कर्तव्य है।

नहीं तो, आप अपने को कोम्सोमोल का सदस्य नही कह सकते। मोर्चे पर लड़ने वालों में से अधिक लोग पार्टी में नहीं हैं। तो भी मातृभूमि की रक्षा के लिए वह किस असीम शौर्य का प्रदर्शन कर रहे है!

अब उत्पादन के बारे में कुछ शब्द कहूंगा। जैसा आप स्वयं जानते है, बिना उत्पादन के युद्ध चलाना असंभव है। आपको यह बताने की आवश्यकता नहीं कि कूइविशेव प्रदेश में वहुत से उपयोगी कारखाने हैं। उत्पादन में भी कोम्सोमोल के सदस्यों को अगुआई करनी चाहिए। अब आपको ज़्यादा से ज़्यादा काम करना चाहिए—सब कुछ जो आप कर सकते हों।

एक औद्योगिक स्कूल से आए साथी का भाषण मैंने बहुत खुशी से सुना। अपने स्कूल के काम के नकारात्मक पहलू पर वह जैसे बोला, वह मुझे अच्छा लगा। उसने बड़बोलापन नहीं दिखाया। लेकिन खामियों को इस तरह रखा जिससे उन्हे मिटाया जा सके।

अत: उत्पादन में लगे हुए कोम्सोमोल के सदस्य साथियो, आप-को अपने काम का पूरा माहिर बनना है और अपने काम में कम से कम समय लगा कर भी अच्छे नतीजे देने हैं।

यह सदा ध्यान में रखकर कि हर नयी गोली हमारी फ़ौजों को, मोर्चे के हमारे सदस्यों को बल पहुंचाती है, हमें उत्पादन-शक्ति अधिक से अधिक बढ़ानी है। तो फिर, आप अपने प्रयत्नों में ढीले मत पड़ियेगा! अधिक और अच्छे से अच्छा युद्ध का सामान बनाइए!

साथियो, हम सब देशभक्त हैं। ऐसे समय में निरर्थक भावुकता किसी काम की नहीं। कुछ लोग हैं जो सोवियत प्रचार-विभाग की विज्ञप्तियों को सुनकर दु:खी हो जाते हैं, "हाय-हाय हमें पीछे हटना पड़ा, हम लोगों ने एक नगर छोड़ दिया!" वे विज्ञप्ति सुनते हैं,

रोते हैं और कराहते हैं। लेकिन मोर्चे की सहायता के लिए उंगली भी नहीं उठाते। इस तरह की देशभक्ति व्यर्थ है। घबड़ा जाने से अच्छा है कि मोर्चे की सहायता के लिए, फ़ासिज़्म को मिटाने के लिए अपनी सारी ताक़त लगाई जाय।

इस समय कोम्सोमोल के सामने यही काम है। शत्रु को परास्त करने के लिए आपको जी-जान से कोशिश करनी चाहिए।

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा"

२१ नवंबर १९४१

मास्को देहाती क्षेत्र के कोम्सोमोल मंत्रियों के सम्मेलन में दिये गये भाषण का अंश

२६ फ़रवरी १९४२

साथियो, आपके सम्मेलन का एक निश्चित उद्देश्य है। आपको निश्चय करना है कि कैसे वसत की खेती को सबसे अच्छी तरह किया जाय, वसन की बुवाई का काम कैसे पूरा किया जाय। इस सिलसिले मे कोम्सोमोल सगठन के सामने बहुत ही गभीर मसले है। देहातो मे कोम्सोमोल एक बडी शक्ति है। यदि यह शक्ति सगठित कर ली जाय, यदि सामूहिक खेती के गावो मे कोम्सोमोल न सिर्फ तरुणो का ही नेतृत्व करे, बल्कि पौढ किसानो मे भी काम करे, तो यह निश्चित है कि वसत की बुवाई कामयाबी से पूरी की जा सकती है।

यह स्पष्ट है कि सिर्फ कोम्सोमोल ही यह काम नही करेगा। पार्टी और सोवियत सगठन इस काम को करेगे। चूकि हम लोग बुवाई के काम को बहुत ही महत्व देते है, इसलिए हम चाहते है कि कोम्सोमोल समेत सभी सार्वजनिक सगठन इस काम मे खिच आये।

...इस समय युद्ध चल रहा है। यदी मैं यह कहू कि हमारे देहातो का हर आदमी जर्मनो को हराना चाहता है, तो यह बात गलत न होगी।

लेकिन सिर्फ़ चाहना ही काफ़ी नहीं है, वह तो कुछ न करने के ही बराबर है। यदि आप जर्मनों को हराना चाहते हैं, तो यह शब्दों से नहीं, कर्म से ही हो सकेगा। और मास्को क्षेत्र के बारे में तो मुझे यह कहना है कि यदि आप जर्मन फ़ासिस्ट आक्रामकों के विरुद्ध युद्ध में भाग लेना चाहते हैं तो आपको अधिक से अधिक आलू बोने चाहिएं।

एक किसान औरत आप से पूछ सकती है: "मैं आक्रामकों को आलुओं से किस प्रकार हरा सकूंगी?" यह आपका, कोम्सोमोल के सदस्यों का काम है कि सामूहिक किसानों को बताएं कि जर्मन आक्रमणकारियों पर विजय प्राप्त करती हुई लाल फ़ौज पश्चिम की ओर बढ़ रही है और उसे हर आवश्यक रसद पहुचानी चाहिए। आप खुद जानते हैं कि फ़ौजियों को काफ़ी मुश्किलें और परेशानियां सहनी पड़ती हैं। वे दिन-रात भयंकर जाड़े-पाले में खाइयों में रहते हैं। वे मज़बूत और तगड़े रहे, उनमें लड़ने की इच्छा हो और उनकी भावनाएं ऊंची बनी रहें, इसके लिए आवश्यक है कि उन्हें बहुत सा बढ़िया खाना मिले। यदि आपको दो-तीन दिन खाना न मिले और कोई आपसे दौड़ लगाने या किसी खेल में हिस्सा लेने के लिए कहे, तो आप कहेंगे न: "मैं दौड़ नही सकता", या "मैं अच्छा फुटबाल का खिलाड़ी नही हू"। इसलिए फ़ौजियों को स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन मिलते रहना चाहिए। हमें अपनी फ़ौजों को आवश्यक रसद बहुत बड़ी मात्रा में पहुंचानी है। हमें फ़ौज और जनता को अधिक गोश्त देना है। आलू सुअरों का अच्छा चारा है। ओर हम सुअरों को जितना अधिक खिलाएंगे, उतना ही अधिक फ़ौज और जनता के लिए गोश्त मिलेगा।

इस युद्ध-काल की परिस्थिति में वसंत की बुवाई बहुत अच्छी और जल्दी से जल्दी होना आवश्यक है। अच्छी बुवाई करके हमें ज़ोरदार फ़सल की नींव डाल देनी चाहिए।

कोम्सोमोल के साथियो, इसलिए, आपको यह देखना है कि योजना पूरी हो और प्राप्य भूमि का हर टुकड़ा अधिक से अधिक उत्पादन के काम में आ जाय। मैं तो कहूंगा कि यह काम सोवियत नागरिक का क़ानूनी कर्तव्य बन जाना चाहिए। यह पहला काम है। दूसरा काम अच्छी से अच्छी फ़सल उगाना है—भूमि से वह सब कुछ निकाल लेना है जो उग सकता हो। कोम्सोमोल के सदस्य साथियो, बढ़िया से बढ़िया फ़सल उगाने के लिए आपको आदर्श बुवाई करनी चाहिए। मैं यहां यह नहीं बताऊंगा कि इसके लिए क्या करना चाहिए। आप सब सामूहिक किसान हैं और यह सब मुझ से अच्छी तरह जानते हैं।

इसलिए, आपके दो मुख्य काम हैं: पहला—अच्छी से अच्छी बुवाई करना; दूसरा—अच्छी से अच्छी फ़सल बटोरना। साथियो, स्वदेश के प्रति प्रेम और सेवा, मोर्चे को सहायता, फ़ासिज़्म का प्रतिरोध आप इन्हीं कार्यों द्वारा प्रदर्शित कर सकते हैं।

यहां पर कोम्सोमोल के सदस्यों द्वारा सक्रिय भूमिका के विषय में बताया है। यह बहुत अच्छा है। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि कोम्सोमोल के कुछ सदस्य सामूहिक फ़ार्म के सभापतियों के अधिकार छीन रहे हैं।

आप कहते हैं: "हमारे पास यह या वह चीज़ कम थी; हम गए और हमने उसे किसी दूसरी चीज़ के बदले में ले लिया"। लेकिन फ़ार्म के सभापति महोदय क्या कर रहे थे? अंगीठी में हाथ सेंक रहे थे क्या? सभापति को और कठिन परिश्रम करना चाहिए। आपका काम है कि आप उनकी मदद करें, दबाव डालें, उन्हें छेड़ें, उन्हें शांति से न बैठने दें, बर्रों की तरह चिपट जायें। और जब बर्रें चिपट जाते हैं तो आदमी भागने लगता है।

लेकिन होता क्या है? आप अपने-आप सब काम करेंगे। फ़ार्म का सभापति आराम से पड़ा रहेगा और दूसरों से अपना काम करवाता रहेगा।

साथियो, याद रखिए कि संगठन, आंदोलन और प्रचार के काम में नेतृत्व करने के दो तरीक़े हैं।

एक तो यह कि सब काम खुद ही करो। कोम्सोमोल का एक सदस्य सब कुछ करता है। वह गांव के पुस्तकालय का लायब्रेरियन होता है, सभायें संगठित करता है, भाषण देता है, सामूहिक खेती की व्यवस्था के लिए नए सदस्य भरती करने का प्रचार करता है और सदस्यता का चंदा वसूल करता है। एक शब्द में कहें तो एक ही व्यक्ति सब काम करता है। वह सवेरे से शाम तक व्यस्त रहता है, जब कि साथ के और दूसरे कोम्सोमोल के सदस्यों को काम करने के लिए कुछ नहीं दिया जाता। हम लोग इस तरह भी काम करते हैं। लगता है कि कुछ प्रगति हुई है। लेकिन साथियो, एक संगठनकर्ता की बड़ाई सिर्फ़ खुद काम करने में ही नहीं, बल्कि दूसरों से काम करवाने, उनको नेतृत्व में चलने के लिए तैयार करने में है। अब जरा मान लिया जाय कि मैं कोम्सोमोल के मेंबर की हैसियत से (अलबत्ता, यह बिल्कुल असंभव है) (हंसी) कोलखोज़ में आया हूं। मैं कोशिश करूंगा कि सब काम स्थानीय लोगों की सहायता से हो, जिससे हर आदमी के पास काम हो, ज़िम्मेदारी हो। यानी, सब के पास कुछ न कुछ काम हो। और, यदि मैं यह देख लूं कि कोई कोम्सो-मोल सदस्य सिर्फ़ नाम के लिए ही सदस्य है, और कोई काम नहीं कर रहा है, तब तो मैं उसे अवश्य काम दूंगा। मैं कहूंगा: "कृपा करके अमुक काम कर लाइए"। और फिर यह भी देखता रहूंगा कि वह क्या और कैसे कर रहा है।

सफलता प्राप्त करने का यही एक रास्ता है। साथियो, हमें यह समझ लेना चाहिए कि जब हर व्यक्ति के पास काम होगा, हर

व्यक्ति व्यस्त होगा, कोम्सोमोल का काम सभी साथियो में बटा होगा, तो यह निश्चित है कि काम बढ़ेगा। आप कुछ भी कहे, किसी काम को एक आदमी से दस आदमी कही अच्छा और कही ज्यादा करेगे।

युवको को केवल विचारात्मक आधार पर सगठित नही किया जा सकता। यह ठीक हे कि अधिकाश युवक कोम्सोमोल मे विचारो की प्रेरणा मे भरती होते है—वे समझते है कि पार्टी का सबसे नज-दीकी और पहला सहायक कोम्सोमोल ह- लेकिन तो भी कुछ ऐसे होते है जो भरती होने के बाद भी मानसिक रूप मे तैयार नही होते और कोम्सोमोल के विचारात्मक पहलू का उन्हे बहुत ही धुधला ज्ञान होता हे। ऐसे तरुणो के साथ बहुत काम करना होता हे जिससे वे निश्चित विचारों के व्यक्ति बन सके—ताकि उनके काम उच्च विचारो से प्रेरित हों। आपको उन्हे कोम्सोमोल का आदी बनाना हे, जिससे कोम्सोमोल उनके जीवन का अग बन जाय। अब इसके लिये जरूरी यह हे कि वह रोजाना कुछ न कुछ काम करे। व्यावहारिक कार्यो द्वारा ही एक व्यक्ति शिक्षित और विकसित होता हे, सफल सगठन-कर्ता बनता है। इसीलिए हर कोम्सोमोल सदस्य को असली काम करना चाहिए—वह लगातार कुछ न कुछ काम करे और अपने काम के लिए कोम्सोमोल संगठन के प्रति उत्तरदायी हो। सिर्फ सयुक्त सामूहिक काम के दोरान मे ही हम अच्छे सगठनकर्ता, अच्छे कार्यकर्ता शिक्षित कर पायेगे।

फार्म मे जब तक अच्छा सभापति रहे, तब तक तो वह प्रगति करता हे और ज्यो ही वह हटा और कोई गड़बड़ आदमी सभापति बना कि साल भर मे फार्म की दुर्गति हो जाती हे, उसको पहचान सकना भी मुश्किल हो जाता हे। यह क्यो? इसलिए कि खुद सामूहिक किसानों को व्यावहारिक शिक्षा का अवसर नही दिया जाता।

इसीलिए आप कोम्सोमोल के सदस्यों को यदि कोलखोज़ में अच्छा संगठनकर्ता बनना है तो न केवल आप हर बात में मदद दें; आपको अच्छा संगठनकर्ता भी बनना चाहिए। आपको ब्रिगेड के नेता, फ़ार्म के सभापति और सदस्यों के काम को देखना चाहिए, उनकी सहायता करनी चाहिये, कोलखोज़ के स्तखानोववादी किसानों की हिम्मत बढ़ानी चाहिए और लापरवाहों को डांटना चाहिए। हां, आप प्रशासनात्मक कार्यो से अलग रहें।

आप प्रशासन और समाज द्वारा पड़ने वाले प्रभाव के भेद को जानते हैं। मिसाल के तौर पर आप आलू में चोर बाजारी करने वाले व्यक्ति को कोम्सोमोल की मीटिंग में बुलाकर लज्जित करें। मेरे विचार में यह उसे प्रभावित करने का प्रशासनात्मक कार्रवाई से भी अच्छा तरीक़ा है।

इस समय गांवों का अधिकांश काम औरतें ही करती हैं। कोम्सोमोल के सदस्य साथियों, आपका काम है कि आप औरतों को उत्पादन-क्षेत्र में सक्रिय योग देने के लिये उकसायें, उनमें देशभक्ति के उच्च विचार उभारें और उन्हें अपने नेतृत्व में चलाएं। यदि आप इस काम को निभा ले जाएं तो कोम्सोमोल संगठन का काम बड़ा प्रभावशाली हो जायेगा।

हम लोग इस बात से तो सहमत हो ही चुके है कि इस साल वसंत की बुवाई का काम बढ़िया होगा और जोरदार फ़सल के लिए बुनियाद डाली जायेगी। यदि आप इस काम को गंभीरता से करना चाहते हैं, तो अधिक से अधिक जितना संभव है औरतों को इस क्षेत्र मे लाइए। औरतों को यह समझाना चाहिए कि लाल फ़ौज और जनता को रसद मिलना वसंत की बुवाई की सफलता पर ही निर्भर है। मुझे विश्वास है कि हमारी महिलाएं लाल फ़ौज और पिछवाड़े की जनता को ज्यादा से ज्यादा खाना पहुंचाने को उत्सुक

हैं। आपको मामला इस तरह संगठित करना चाहिए जिससे इस बुवाई में सभी औरतें भाग ले सकें। कोमसोमोल के सदस्यों की सफलता अपने काम ही से नही आंकनी चाहिए, बल्कि इस बात से भी कि वे किस हद तक तरुणों को, तमाम किसानों को, विशेषकर औरतों को सक्रिय बनाने में सफल हुए हैं। यह याद रखना चाहिये कि कोलखोजों की मुख्य शक्ति औरतें ही है और हम यदि सभी औरतों को खेतों में काम करने को ला सकें, उनकी देशभक्ति की उच्च भावनाओं को जगा सकें, तो वे बहुत बडा काम कर लेंगी।

एक बात और। युद्ध के युग मे आलस्य हरगीज बरदाश्त नही किया जा सकता — जब भयानक संघर्ष हो रहा है; जब अपने देश के लिए, सोवियत संघ के लिए रोज ही सैकडों व्यक्ति अपने प्राणों का बलिदान कर रहे है, तब यदि हम आलसियों और मुफ्तखोरों को सजा दें, तो मेरा विचार है कि तमाम जनता हमारा समर्थन करेगी।

इन दिनों में जब हमारे देश के भाग्य का फैसला हो रहा है, कोई भी ईमानदार आदमी संघर्ष से अलग नही रह सकता। जरा ऐसे व्यक्ति की कल्पना कीजिए जो न कुछ करता है न करना चाहता है और मुसकराता हुआ टहलता रहता है। ऐसा व्यक्ति हमारा शत्रु है। कोम्सोमोल सदस्यों को चाहिए कि वे उसे लज्जित करें तथा तमाम जनता के सामने उसका भंडा फोड़ें। और यदि वह सुधर नहीं सकता तो उसके साथ सख्ती से पेश आना चाहिए। कोम्सोमोल के सदस्य साथियो, आपको यही नीति अपनानी चाहिए।

साथियो, हमारी बहादुर लाल फ़ौज एक बहुत ही शक्तिशाली शत्रु का सामना कर रही है—दुनिया में कोई भी उस शत्रु की बराबरी का नही है। ऐसे शत्रु को हमारी फ़ौज पश्चिम की ओर ढकेल रही है,

और सोवियत भूमि से फ़ासिस्ट गंदगी निकाल बाहर फेंक रही है। मैं आशा करता हूं कि आप भी हमारी लाल फ़ौज के सिपाहियों, कमांडरों और राजनैतिक कार्यकर्ताओं के स्तर का होना चाहेंगे।

उत्तरदायित्व और कठिनाइयों से घबड़ाना नहीं चाहिए। आप को अपनी ज़िम्मेदारी पूरी निभानी चाहिए।

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा"

३ मार्च १९४२

जनता के बीच पार्टी-काम की कुछ समस्यायें

मास्को के कारख़ानों के पार्टी-कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में भाषण

२१ अप्रैल १९४२

साथियो, मेरा कोई इरादा नहीं है कि मैं कोई निर्देशात्मक भाषण दूं। मैं तो जनता के बीच पार्टी के काम की कुछ समस्याओं का ज़िक्र करूंगा।

हम लोग जनता के बीच पार्टी के काम के बारे में बहुत कुछ सुनते रहते हैं। हर आदमी इसके विषय में बात करता रहता है। लेकिन अगर हम मामले को गहराई से देखें, तो मालूम होगा कि अनेक लोगों को समस्या का स्पष्ट, निश्चित और ठोस ज्ञान नहीं है। मौजूदा युद्ध की बहुत ही उलझी हुई हालतों में, विशेषकर जब कि हज़ारों नए लोग फ़ैक्टरियों और संस्थाओं में पार्टी के नेतृत्व के लिए लाए गए हैं और प्रचारक तथा आंदोलनकारी बन रहे हैं, हमें यह सोचना है कि अपने राजनीतिक अनुभव का प्रयोग प्रभावशाली ढंग से कैसे किया जाय।

जनता के वीच पार्टी के काम का अर्थ क्या है? जनता से संबंध स्थापित करने का उद्देश्य क्या है? यह वता दूं कि राजनीतिक कार्यों में इस की विशेष कद्र होती है, और स्थापित किया जा सकता है।

मान लिया कि आपकी जान-पहचान का क्षेत्र वहुत वड़ा है। हम बारी-बारी से एक के बाद दूसरे से मिलते हैं। और इस मिलन के दौरान में कारखाने, दफ़्तर और मजदूरों के वीच जो हो रहा है, उसे भी जान लेते हैं। जनता से सबंध बनाए रखने का यह भी एक तरीक़ा है।

दूसरा तरीक़ा है मज़दूरों के साथ अपनेपन का रिश्ता कायम करना। मान लीजिए कि एक पार्टी संगठनकर्ता या ट्रेड-यूनियन संगठनकर्ता डिपार्टमेंटों में घूमते हुए मजदूरों की पीठ थपथपाता है और उनको घर के नामों से पुकारता है। तो भी वह काम में हाथ नहीं बंटाता है और न खामियों के प्रति मजदूर का ध्यान ही दिलाता है। ऐसे व्यक्ति के विषय में कभी-कभी सुना जाता है: "उस आदमी का जनता से वहुत निकट संबंध है। वह लोगों की पीठ थपथपाता है और उनको घर के नामों से पुकारता है। वह जनता का ही आदमी है।"

जनता का पिछलगुआ बन जाना भी जनता से "संवंध" स्थापित करना है। लोग आप के पास कोई न कोई शिकायत लेकर आते हैं और आप सहमति में सिर हिलाते हैं, फिर एक दूसरे का कंधा पकड़ कर रोते हैं। कोई गुर्रा कर कुछ कहता है और आप हां में हां मिलाते हैं: "हां, वाक़ई रोशनी नहीं है, बड़ी ठंढ है, सचमुच काफी खाना नहीं है।" फ़ैक्टरी या दफ़्तर में कोई रुकावट आ पड़ती है और सब के स्वर में स्वर मिलाकर आप भी कहने लगते हैं: "ये निष्ठुर नौकरशाह! इन्होंने क्या गड़बड़ी मचा रखी है।" ऐसे लोगों की पूछ हो जाती है। कुछ लोग तो पहले-पहल उसे पसन्द भी करेंगे।

लेकिन क्या हम बोल्शेविक जनता से इस तरह के संबंध कायम करने की सोच रहे है? नहीं, जनता के पीछे चलना, जो कभी-कभी बहकावे में भी आ जाती है, मेन्शेविक नीति है। हमारी बोल्शेविक नीति जनता का नेतृत्व करना है, उनका संरक्षण नहीं, बल्कि उन्हें अपने साथ आगे ले चलना है।

तो, जनता का नेतृत्व कैसे किया जाता है?

इस का उत्तर देने के पहले मै आप से पूछना चाहता हूं कि जनता का नेतृत्व कौन कर सकता है? यह कम्युनिस्टों की ज़िम्मेदारी है। कम्युनिस्ट पार्टी जनता का नेतृत्व कर सकती है और बहुत अच्छी तरह करती है। इसके सबूत में असंख्य मिसालें दी जा सकती हैं। पहली मिसाल यही युद्ध है। युद्ध के प्रथम धक्कों के बावजूद, जो हमें इसलिए सहने पड़े कि हमारे ऊपर अचानक और अप्रत्याशित हमला हुआ, यह निर्विरोध रूप में कहा जा सकता है कि जनता का विश्वास अपनी सरकार में एक क्षण के लिए भी नहीं हिला। यह पार्टी के नेतृत्व का सबूत है।

यहां पार्टी के कार्यकर्ता एकत्र है। चाहें या न चाहें, आप लोग अपनी जगह पर जनता के फ़ौरी नेता हैं। इसके अलावा हो भी क्या सकता है? वह पार्टी-सेक्रेटरी कैसा होगा जिसे लोग अपना राजनैतिक नेता न मानते हों? फ़ैक्टरी, अथवा संगठन में या ज़िले में पार्टी-सेक्रेटरी सबसे ज़िम्मेदार आदमी होता है।

यदि जनता पर उसका सच्चा प्रभाव पड़े, जनता उसकी बात सुने और उस पर विश्वास करे तो एक पार्टी-संगठन के मंत्री से क्या आशा की जा सकती है?

यह निर्विवाद है कि एक पार्टी-नेता, या प्रचारक अथवा आंदोलनकारी को महान विचारों से प्रेरित होना चाहिए। उसे कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति अगाध श्रद्धा होनी चाहिए। उसे पार्टी के इतिहास का

ज्ञान होना चाहिए। जनता और मज़दूर-वर्ग के लिए पार्टी ने जो काम निश्चित किए हैं, उन्हें उसको समझना चाहिए। एक पार्टी-नेता या प्रचारक को कम से कम राजनैतिक तौर पर दूसरों से अधिक विकसित होना चाहिए। इसके अलावा उसके सुसंस्कृत होने से अब प्रश्न है। एक पार्टी-कार्यकर्ता को जनता के निकट कैसे पहुंचना चाहिए?

प्रथमतः अपने लंबे अनुभव के आधार पर मैं कह सकता हूं कि एक पार्टी-कार्यकर्ता का ग़रूर से सर फिरा नहीं होना चाहिए। अगर मज़दूरों से या साधारण पार्टी-सदस्यों से बातचीत करते समय आप अपनी किसी बात या क्रिया से, वह चाहे कितनी ही महत्वहीन या देखने में चलती बात हो, यह जताते हैं कि आप अपने को उनसे कहीं अधिक होशियार समझते हैं, या उनसे अधिक जानते हैं, तो आप अपनेको ख़तम समझ लीजिए। एक कार्यकर्ता या औसत आदमी उसकी परवाह नहीं करता, जो अपने को बहुत कुछ समझता है। वह उसकी बात नहीं सुनेगा। और उचित मौके पर अच्छी तरह से और सच्चाई से उसे यह जता भी दिया जायेगा।

इसलिए हम लोग इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि एक आंदोलनकारी को नम्र होना चाहिए। यह गुण विशेषकर उस पार्टी-कार्यकर्ता में अवश्य होना चाहिए, जिसके पास पार्टी की शासकीय शक्ति है, अर्थात जो पार्टी-संगठन का मंत्री है। यदि वह कार्यकर्ताओं का स्नेह चाहता है, तो उसे अपने में नम्रता के गुण को विकसित करना चाहिए, न कि गुमान से वह सिर फिरा हो जाय। क्या मैं सही कह रहा हूं? (आवाजें — "हां-हां बहुत ठीक!") जो नेता बनना चाहता है, उसे एक आंख अपने पर रखनी चाहिए।

दूसरे, एक प्रचारक या पार्टी-नेता को जनता के साथ व्यवहार में बहुत अधिक उपदेशात्मक भी नहीं होना चाहिए। संभवतया आपने खुद देखा होगा कि जब एक वक्ता इसके अलावा और कुछ नहीं

कहता—आपको यह या वह करना है, तब उसको सुनते रहना बहुत नागवार हो जाता है। मै जब कोई लेख लिखता हूं और तर्क मुझे यहां पहुंचा देता है कि मै कहूं कि "यह होना ही चाहिए", तो यह कुछ मेरी रुचि के खिलाफ बैठता है तो मै वाक्य को दूसरी तरह कहता हूं। यह दूसरी बात है कि आप अपने विचार, अपील या संदेश पेश करते है और तर्क तथा विश्लेषण से यह साबित करते है कि कुछ न कुछ करना चाहिए। तब आप अपने श्रोताओ से मशविरा ले सकते है,—कह सकते है—"अगर आप इस तरह से यह काम करें, तो कैसा हो"; "मुझे लगता है कि समस्या का यदि यह हल निकाला जाय तो ज्यादा अच्छा हो'; "इन हालतो मे मै यह करूंगा"। यदि आप ऐसा करेगे तो श्रोताओ की प्रतिक्रिया भिन्न होगा।

यह मै छोटी मीटिगो के सिलसिले मे कह रहा हूं। अलबत्ता, हजारो आदमियो की सभा मे दिए गए भाषण का रूप और ही होगा। इसमे हर एक स्पष्टीकरण छोटा और स्पष्ट होना चाहिए। वहा बातचीत का तरीका अपनाना मुश्किल होगा। लेकिन अपने रोजमर्रा के काम में अक्सर यह जरूरी होता हे कि कार्यकर्ताओं को खुद ही बहस और बातचीत में घसीटा जाय। "तुम क्या सोचते हो, तुम्हे यह कैसा लगता है," इस रूप में लोग आप की बात को अधिक स्वीकार करेंगे। हा, कार्यकर्ताओं को विचारों के आदान-प्रदान ओर अपने व्यक्तिकरण के लिए शुरूआत हमी को करनी पड़ेगी। तब मीटिंग जानदार होगी और कार्यकर्ता स्वेच्छा से बोलेगे और इस मीटिंग का नतीजा भी शानदार होगा। तो भी मीटिगें कभी-कभी ऐसी होती हैं, जैसे प्रार्थना-वक्ता और श्रोता अलग-अलग रहते है ओर निश्चित समय तक बैठने के बाद उठकर चल देते है।

अपने भाषण या वक्तृता की रूप-रेखा से हटने में डरिए नही। आप चाहे काम के विषय में या युद्ध के विषय में बात कर रहे हों,

लेकिन यदि बीच में कोई ऐसी बात आ जाए जो श्रोताओं की दिलचस्पी की है, तो बिना चिंता उसे कह डालिए, उससे बचिए नही। एक बार श्रोताओं में सुनने की दिलचस्पी आ गई तो फिर वे सुनते रहेंगे और आपके लिए संभव होगा कि आप वह सब कह सकें जिसे आप कहना चाहते थे।

मुख्य बात है कि कभी भी अहम मसलों को टालिए नही, जैसा कि कुछ वक्ता करते है। ऐसा किसी भी दशा में न कीजिए। जो सवाल उठाए गए है, उनका उत्तर टालिए नही और न उनपर परदा डालिए। यदि आप किसी प्रश्न का उत्तर नही दे सकते, तो स्पष्ट कह दीजिए: "आपने जो सवाल उठाया वह महत्त्वपूर्ण और दिलचस्प है, मै खुशी इसका जवाब दूंगा, लेकिन इस वक्त जवाब देने के लिए तैयार नही हूं। मैने इस पर सोचा नही और मेरी समझ में नही आता कि इसका जवाब क्या दूं। मै मामले पर सोचूंगा, साथियों से बात करूंगा और तब मै आपको जवाब दूंगा। यहा पर शायद कोई ऐसा हो जो मामले को साफ़ कर सके?" यदि आप ऐसा करेंगे तो बात ठीक होगी। कभी-कभी हमारे लोग बात को इस तरह रखते हैं कि मुख्य सवाल छुट जाते है या उनका स्पष्टीकरण इस भांति करते हैं कि कोई समझता नही है कि मामला क्या है। यह ठीक नहीं।

एक पार्टी-नेता को दूसरों के प्रति अपने रवैये में बिलकुल ईमानदार होना चाहिए। पार्टी संगठन का मंत्री पार्टी की आंख है। इसीलिए उसे तमाम व्यक्तिगत पसदों या नापसदों को अलग कर देना चाहिए। यदि ऐसे लोग है जिन्हे आप कुछ कारणों से नापसंद करते है, तो यह बात आपको इस हद तक छिपानी चाहिए कि किसी को इसका थोड़ा सा भी ख्याल न हो। यदि यह जान लिया गया कि आप विभिन्न लोगों के प्रति अपने रवैये में निष्पक्ष नहीं है, तो यह बात बुरी होगी।

कभी-कभी ऐसा होता है कि एक आदमी कम बोलता है और खुलता नहीं है, लेकिन वह अपना काम अच्छी तरह करता है। दूसरी तरफ़ ऐसा आदमी है, जो अपने काम में इतना अच्छा नहीं है लेकिन पार्टी-कमेटी, ट्रेड-यूनियन, युवक कम्युनिस्ट लीग के दफ़्तरों में आता रहता है, हमेशा सामने रहता है और उसे बढ़ावा मिलता है। यह बात न बनेगी। यदि पार्टी-कमेटी का मंत्री प्रतिष्ठा चाहता है तो जनता में निष्पक्ष व्यक्ति की हैसियत से उसकी स्पष्ट प्रसिद्धि होनी चाहिए। इसका यह अर्थ नहीं कि वह कुछ लोगों से नज़दीकी व्यक्तिगत संबंध नहीं रख सकता। वह ऐसे संबंध रख सकता है, लेकिन अपने सार्वजनिक संबंधों में उसे निष्पक्ष रहना है। उसका रवैया यह होना चाहिए: "तुम मेरे दोस्त हो, यह सब तो ठीक है, लेकिन अगर तुम अपने काम के प्रति लापरवाह हो, इधर-उधर घूमते रहते हो, अपने दिए हुए काम के प्रति टालमटोल करते हो, तो मैं तुम से सख्ती से पेश आऊंगा।" पार्टी-संगठन के मंत्री का लोगों के प्रति यह रवैया होना चाहिए।

हर मामले में आपका व्यवहार इस तरह का होना चाहिए कि आपके आसपास के तमाम लोग आपकी ईमानदारी और लगन को महसूस करें। जनता के बीच पाखंड क़तई नहीं चल सकता और इसलिए आपको इससे हर तरह से बचना चाहिए। आप जन-साधारण को धोखा नही दे सकते। यदि लोगों को यह मालूम हो गया कि अमुक व्यक्ति पाखंडी है, तो दुबारा कभी वे उसपर विश्वास नहीं करेंगे।

यदि हम लोग अपने में यह गुण विकसित करने की कोशिश करें, तो काम करना आसान होगा।

अब हम यह सवाल ले लें कि जनता के बीच पार्टी को कैसे कार्य करना चाहिए, जनता के प्रति क्या रवैया हो और जनता के समक्ष भिन्न-भिन्न समस्याओं को कैसे उठाया जाय? हर प्रश्न को पार्टी

की दृष्टि से देखना चाहिए। हर चीज़ की तरफ़ पार्टी का रवैया होना चाहिए। मान लीजिए कि राजकीय-कर्ज़े के लिए चंदा किया जा रहा है। यह स्पष्ट है कि हर आदमी एक महीने की तनख़्वाह देने को तैयार हो जायेगा। एक प्रचारक के नाते मैं मज़दूरों के सामने इस प्रश्न को सीधे इस तरह रखूंगा: "इस समय जिनकी तनख़्वाहें ऊंची नहीं हैं, वे भी एक महीने की तनख्वाह दे रहे हैं। अपना देश जिस स्थिति से गुज़र रहा है, आप जानते हैं। हमारे पास बहुत बड़ी फ़ौज है, हमारे खर्चे बहुत बढ़ गए हैं। राज्य को कहीं न कहीं से धन चाहिए। या तो हम मुद्रा स्फीति कर दें या आप धन उधार देकर सहायता करें। युद्ध को चलाने का यही एक रास्ता है। इसके अलावा और कोई नहीं।" इस पर कई कह सकते हैं—"लेकिन हम भी कितनी कठिनाई से समय गुजार रहे हैं।" तो मैं उत्तर दूंगा: "निश्चय ही युद्ध के कारण आपके दिन कठिनाई से कट रहे हैं। इसीलिए रोटियों का राशन है। हमारे पास यदि रोटियां, कपड़े, टेक्सटाइल, जूते और दूसरी आवश्यक चीज़ें होतीं, तो हमें कर्ज़ा उठाने की क्या ज़रूरत थी? हम सिर्फ़ दूकानें खोल देते, उनमें माल देते और धन आ जाता। कर्ज़ा तो इसीलिए शुरू किया गया कि हमारे पास धन और आवश्यकता की चीज़ों की कमी थी। इन चीजों की कमी इसीलिए है कि हम युद्ध के लिए आवश्यक सामग्री बना रहे हैं।"

चीज़ों की कमी सिर्फ़ हमारे ही देश में नहीं है, बल्कि दूसरे देशों में भी है। यह कमी विशेषकर जर्मन फ़ासिस्टों और उनसे त्रस्त देशों में अधिक है। इस सिलसिले में हमें यह स्पष्ट करना चाहिए कि इसमें हमारा दोष सबसे कम है। हमारे ऊपर हमला किया गया था। हमें हिटलरी जर्मनी द्वारा चलाए जाने वाले युद्ध के साम्राज्यवादी स्वरूप का स्पष्टीकरण करना चाहिए। हमें मज़दूरों से दो-टूक पूछना चाहिए—"क्या आप चाहते हैं कि हम हार जायें?" मैं जानता हूं कि आप इस

शब्द के उच्चारण मात्र से डरते हैं। जहां तक मेरा संबंध है, जो लोग क़र्जे में बहुत कम चंदा देंगे, मैं उनसे बार-बार पूछूंगा: "क्या आप चाहते हैं कि हम हार जायें?" हमारे सामने दो ही रास्ते हैं—या तो हम खर्च में कमी करें या पिट जायें। लेनिनग्राद की जनता की एक मिसाल लीजिए। सोचिए कि वे कितनी कठिनाइयां झेल रहे हैं और उनका व्यवहार कितना वीरतापूर्ण है। मेहनतकश जनता के सामने मसले इसी तरह पेश करने चाहिए। समस्याओं को उठाने का यह पार्टी का तरीक़ा होगा।

एक बड़े कारखाने के मजदूरों के सामने बोलते हुए मैंने उनसे स्पष्ट कहा कि राज्य हम से क्या अपेक्षा करता है—यानी हम खर्च कम करें, और उत्पादन अधिक करें। मैंने स्थिति को बहुत स्पष्टता से रखा और समझाया कि ऐसा इसलिए नहीं कि हम मजदूरों और दूसरे कर्मचारियों से कम में गुजारा चाहते हैं, बल्कि इसलिए कि हमारे पास चीजों की कमी है। मोर्चे की आवश्यकता अधिक है और शत्रु हमको दबा रहा है। अतः आप मसलों को सही ढंग से और पार्टी के तरीक़े से उठाने में डरिए नहीं।

यदि आपके कारखाने के लोग जानते हैं कि आपको पाखंड पसन्द नहीं, आप मसलों को टालते नहीं और आपका सिर घमंड से फिरा हुआ नहीं है, तो आपके शब्दों का प्रभाव सभी पर पड़ेगा। नहीं तो कोई आप पर विश्वास नहीं करेगा और लोग कहेंगे: "हम आपको जानते हैं। आप हमें एक बात की सलाह देते हैं और खुद दूसरी तरह सोचते हैं। आप अपने उपदेशों पर खुद ही अमल नहीं करते।" वे आपके मुंह पर शायद ऐसा न कह सकें, लेकिन पीठ के पीछे वे निश्चय ही यह बात कहेंगे।

वर्तमान समय में पार्टी-प्रचार और आंदोलन का क्या उद्देश्य है? इस प्रकार प्रचार करना कि हर क़दम पर जनता यह महसूस करे

कि कम्युनिस्ट पार्टी के अपने कोई विशेष हित नहीं हैं, और वह सर्वहारा, समूची जनता के हितों के लिए लड़ती है। और यही समय है जब कि अनोखी स्पष्टता और पूर्णता से यह बात स्पष्ट होकर उभरती है कि व्यक्तिगत हितों से सामूहिक हित अधिक ऊंचा है। यह इस तरह स्पष्ट होता है कि हर आदमी, अर्ध-शिक्षित या एक बच्चा भी, यह समझ लेता है। हर व्यक्ति जानता है कि व्यक्ति या गुट के हितों से जनता के हित अधिक ऊंचे हैं।

एक निर्मम युद्ध चल रहा है। फ़ासिस्ट लोग अकथनीय अत्याचार ढा रहे हैं। हमें यह बातें बतानी चाहिए और हर आदमी से पूछना चाहिए कि वह क्या सोचता है, वह सामान्य हित के लिए क्या करने को तैयार है? "पूरा समाज और पार्टी आपसे यह मांग करती है। यदि हम शत्रु को हरा देंगे तो आपको सब कुछ प्राप्त होगा। लेकिन यदि हम हार जाते हैं तो आपका भी सर्वनाश हो जायगा। लेकिन हम लोग शत्रु को तभी हरा सकते हैं जब हम अपनी तमाम भौतिक और मानवीय शक्तियों को इस उद्देश्य में लगा दें।" यदि आप किसी सभा में इस तरह भाषण दें और पूरे मसले को ईमानदारी से रखें, तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके श्रोताओं में सौ फ़ीसदी नहीं तो निनानवे फ़ीसदी अवश्य ही शत्रु की हार होने तक कोई भी बलिदान देने के लिए तैयार हो जाएंगे। कुछ अभागे शायद इसका विरोध करें, क्योंकि अभी भी पुरानी दुनिया के बचे हुए कुछ गद्दार बाक़ी हैं। हां, अब यह इने-गिने ही रह गए हैं। हमें लोगों को सामान्य भलाई के लिए अधिक से अधिक लगन से काम करना सिखाना चाहिए। कम्युनिस्टों के सामने यही मुख्य काम है।

वर्तमान समय में एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात देखने में आ रही है। शांति-काल से कहीं अधिक लोग अब पार्टी में भरती हो रहे हैं। मोर्चे के निकट के क्षेत्रों में दूर के क्षेत्रों से अधिक प्रार्थना-पत्र दिए जा रहे हैं। ऐसा

क्यों है? क्योंकि हर आदमी पार्टी को मजबूत करने की आवश्यकता को समझता है। हर आदमी जानता है कि हमारी पार्टी ही नेता है और सिर्फ एक शक्तिशाली मजबूत पार्टी ही जनता की जीत की गारंटी है। लाल फौज का सिपाही समझता है कि वह भयकर युद्ध में जा रहा है तो वह पार्टी सदस्यता की अर्जी दे देता है। उसकी इच्छा होती है कि वह सघर्ष में एक कम्युनिस्ट के नाते जाए। सोवियत राज्य की महान शक्ति इसी मे है। जनता अच्छी तरह जानती है कि उनकी वही राह है जो पार्टी की राह है।

फासिस्ट-जर्मनी मे भी जन-सगठन है। हिटलर ने जनता को धोखे मे रखा है, उनको दबा दिया है और उनकी भावनाओं को कुत्सित बना दिया है। इसके विरुद्ध हम जनता को विकसित करते है, और उनकी चेतना को ऊचा उठाते है।

यहा यह बताया गया है कि हमारे प्रचारक और आदोलनकर्ता मजदूरों की वैयक्तिक आवश्यकताओ के प्रति सचेत है और उनकी सहायता करते रहते है। यह अच्छी बात है। जनता को सहायता देना, एक अच्छा मानवीय गुण है। इस मामले में औरतें मर्दो से अधिक अच्छी होती है। लेकिन इस मामले में भी हमें चाहिए कि हम वैयक्तिक आवश्यकताओ ओर सामान्य भलाई में संबंध कायम करें। यदि कोई आदमी सहायता चाहता है तो उसको सहायता मिलनी चाहिए, लेकिन साथ ही हमें उसे बताना चाहिए कि "देखो पार्टी या ट्रेड-यूनियन तुम्हारी सहायता कर रही है, लेकिन हम चाहते है कि समय आने पर तुम सामान्य भलाई की खातिर सबका साथ दोगे।" इस दृष्टिकोण को हमे अपनाना चाहिए और जनता में अपने काम के दौरान में इसका प्रयोग करना चाहिए।

यहा पर यह भी कहा गया है कि अखबारों का जोर-जोर से पढ़कर सुनाना थका देता है। यह मानना पड़ेगा कि कभी-कभी अखबारों का

ज़ोर-ज़ोर से पढ़ा जाना एक तरह की चौकीदारी सा मालूम होता है। किसी आदमी का बार-बार अखबार पढ़ना न तो आसान है और न फ़ायदेमंद। यदि मैं किसी फ़ैक्टरी के पार्टी-संगठन का मंत्री होता, तो मैं यह करता: खाने के समय मैं मज़दूरों के पास जाता और पूछता कि क्या उनमें से कोई अखबार सुनना चाहेगा? कुछ लोग अवश्य चाहते तब मैं पूछता: "कौन पढ़ेगा?" हमारे कई आदमी बहुत अच्छा पढ़ लेते हैं और निस्संदेह अनेक स्वयंसेवक सामने आते। तो मज़दूरों के ग्रूप के पास बातचीत शुरू करने और पढ़ी गई सामग्री के स्पष्टीकरण के लिए फिर मैं किसी अनुभवी और सुसंस्कृत मज़दूर को भेजता। मज़दूरों की किन सवालों में दिलचस्पी है, यह जानना भी इस प्रकार अधिक आसान होगा। यदि यह तरीक़ा अपनाया जाय, तो अखबार पढ़ना भी एक सर्वप्रिय मनोरंजन बन जायेगा।

लगभग चालीस साल पहले मैं खुद इसी तरह का पढ़ने वाला था। मेरी अध्ययन गोष्टी में पंद्रह आदमी थे, पर यह ग़ैरक़ानूनी थी। यदि मैं सिर्फ़ पढ़ने तक ही सीमित रहता तो उसका कुछ भी नतीजा न निकलता। पढ़ने में पन्द्रह-बीस मिनट लग जाते थे और फिर बहस शुरू होती थी। मैं पूछता था: "आप अमुक बात समझे या नहीं?" "नहीं, हम नहीं समझे।" "अच्छा तो आइये, विचार करें।" फिर हम बहस शुरू करते, जो घंटा या डेढ़ घंटा या इससे भी अधिक देर तक चलती रहती। पढ़ते समय कोई भी सोता नहीं था, क्योंकि वे जानते थे कि पढ़ाई के बाद बहस होगी। इसलिए साथियो, आंदोलनकारी होना इतना सरल नहीं है। अखबार ज़ोर-ज़ोर से पढ़ना अमली तौर पर एक प्रचारक का काम है। इसे बहुत सावधानी और समझदारी से करना होता है। यदि पढ़नेवाला और बहस का नेता श्रोताओं की दिलचस्पी उभारने की योग्यता नहीं रखता, तो फिर वाद-विवाद की आशा व्यर्थ

है। जो इस तरह अखबारों को सुनते हैं, वे उन्हें एक प्रकार से कक्षा के सबक़ों की तरह समझेंगे—कुछ वैसे ही जैसे पुराने ज़माने में हम लोग धर्मोपदेशों को समझते थे।

अख़बार के हर लेख में कुछ न कुछ ऐसी बात होती है जिसका प्रयोग आम तौर के राजनैतिक मसलों पर बहस के लिए किया जा सकता है। मैं समझता हूं कि कहीं अच्छा होगा कि मज़दूरों में से ही कोई अख़बार पढ़े, यह और भी अच्छा होगा कि यदि वे बारी-बारी से पढ़ें। हमें बातचीत और बहस जारी रखने में उनकी मदद करनी चाहिए।

यहां पर साथियों के भाषणों को सुनते समय मुझे यह लगा कि आपने उत्पादन संबंधी मामलों को उठाने में पहल नहीं की है। हो सकता है कि आप शरमा रहे हों।

आम समस्याओं से अलग, जिन्हें आप सभी जानते हैं, उत्पादन की कौन समस्या आपके सामने है? मिसाल के तौर पर मैं आपके सामने रद्दी लोहा-लंगड़ इकट्ठा करने की समस्या पेश करता हूं। मैं फ़ैक्टरियों या घर की बात नहीं सोच रहा हूं। मैं गोली-गोलों के टुकड़ों के बारे में सोच रहा हूं जो प्राय: मास्को क्षेत्र में बिखरे पड़े हैं। आप मास्को कम्युनिस्ट युवक लीग संगठन को यह काम क्यों नहीं सौंपते? मास्को क्षेत्र के मैदानों और जंगलों में तमाम टूटे-फूटे हवाई जहाज़ और दूसरी तरह का लोहा-लंगड़ भरा पड़ा है। मेरा अनुमान है कि कम से कम दस हज़ार टन लोहा-लंगड़ इकट्ठा करना आसान होगा। कहने की ज़रूरत नहीं, यह बहुत कारगर होगा। हां, इसके लिए उचित प्रचार करना आवश्यक होगा, जिससे तरुणों को यह स्पष्ट हो जाये कि देश को खनिज पदार्थों की कितनी आवश्यकता है। उनको यह भी बताना चाहिए कि यह कैसे इकट्ठा किया जाय और कैसे दिया जाय। सच तो यह है कि मामला इतना स्पष्ट है कि बहुत

अधिक प्रचार की भी आवश्यकता नहीं होगी। आपको सिर्फ़ इस काम का संगठन करना है।

मैं अलग से बाग़बानी की समस्या पर भी कुछ कहना चाहता हूं। जो साथी यहां बोले, उनमें से किसी ने भी इस समस्या का ज़िक्र नही किया, यद्यपि यह समस्या महत्वपूर्ण है। हमें यह ध्यान में रखना है कि जहां सामूहिक बाग़बानी हो रही है, वहा व्यर्थ में ही लोगों को खेतों पर नहीं ले जाया जाय। यदि एक बार वे वहां पहुंचे तो उनके समय का अच्छे से अच्छा इस्तेमाल होना चाहिए। इस मामले में प्रबधकों के साथ-साथ पार्टी और ट्रेड-यूनियनों को काफ़ी संगठनात्मक काम करना पड़ेगा।

एक बात है जिस के बारे में इस सम्मेलन ने मुझे बहुत आश्चर्य में डाला है। हमारे अखबार दिन-रात स्तखानोव-आंदोलन के बारे में कहते रहते है। यद्यपि यह पार्टी सगठनों के मंत्रियों का सम्मेलन है, और कुछ ने अपने काम के बारे में भी रिपोर्ट दी है, लेकिन किसी ने भी स्तखानोव-आदोलन के बारे में कुछ भी नही कहा। इसे भुला दिया गया। मुझे ऐसा लगता है कि यह बात अचानक ही नहीं भुला दी गई। स्तखानोव-आंदोलन के विषय में प्रचार करते हुए हमारे अखबार अक्सर ग़लत बात पर ज़ोर देते है। सिर्फ वे ही लोग जो एक हजार फ़ीसदी या दो हजार फ़ीसदी कामयाब होते है, सर्वप्रिय बनाए जाते है, लेकिन क्या इस तरह के मज़दूर अधिक है? शायद इसीलिए आप लोग स्तखानोव-आंदोलन के बारे में नहीं बोले। बहुत संभव है कि आपके दीवारी अखबारात भी इन्हीं हज़ार-सैकड़ों वालों से भरे होते हैं।

इस समस्या पर दो दृष्टिकोणों से विचार हो सकता है। कोई यह पूछ सकता है: क्या आपकी फ़ैक्टरी या मिल के डायरेक्टर, प्रधान इंजीनियर और समूचे प्रबंधकों ने इससे अधिक अच्छी बात और कुछ नहीं सोची कि अपने मज़दूरों से इतनी देर तक उत्पादन-कोटा का काम

करवायें, जिससे कोई भी समझदार, ईमानदार आदमी हज़ार फ़ीसदी पूरा कर सके? ज़ाहिर है कि लोगों ने अभी तक उत्पादन बहुत कम किया है, या बिल्कुल काम ही नहीं किया है। क्यों? यदि एक आदमी बिना किसी नवीन आविष्कार या तरक़ीब के हज़ार फ़ीसदी उत्पादन-कोटा पूरा कर सकता है, तो उस फ़ैक्टरी या मिल के डायरेक्टर या प्रधान इंजीनियर पर राज्य-धन का ग़बन होने देने के जुर्म में मुक़दमा चलाना चाहिए! मैंने खुद २५-२७ साल तक एक लेथ-आपरेटर की हैसियत से काम किया है और आप सभी, जिन्होंने कारखानों में काम किया है, समझ सकते हैं कि "एक हज़ार फ़ीसदी वाला" होने का क्या मतलब है।

सिर्फ़ वही जिसने अपने काम में कोई आविष्कार, टेकनिकल सुधार कर लिया है, सच्चा "हज़ार फ़ीसदी वाला" हो सकता है। मिसाल के तौर पर यदि बटन हाथ से सीने के बजाय मशीन से लगने लगें तो अलबत्ता उत्पादन कई गुना बढ़ जायेगा। या ऐसी ही कोई दूसरी नवीन कार्यपद्धति चालू करने से उत्पादन तेज़ी से बढ़ जायेगा। नवीनीकरण के बिना स्तखानोव-आंदोलन सोचा ही नहीं जा सकता। और यही विषय है जिस पर कुछ भी नहीं कहा गया।

जब हम "हज़ार फ़ीसदी वालों" की बात करें, तो हमें बताना चाहिए कि अमुक आदमी ने अमुक कारख़ाने में यह समझदारी का प्रस्ताव रखा है और उत्पादन में इसका अमुक प्रभाव पड़ेगा। निरंतर "हज़ार फ़ीसदी वाले" शब्द की माला जपने से कहीं महत्वपूर्ण है कि यह बताया जाये कि इस तरह का फल कैसे प्राप्त किया गया। फ़ैक्टरी में हर आदमी को सुधार-आविष्कार के प्रति ध्यान देना चाहिए और सोचना चाहिए, कि वह दूसरे भागों तक कैसे पहुंच सकता है। और यदि अभिनवीकरण करने वाला फ़िटर, लेथ-आपरेटर या किसी और

पेशे का मज़दूर है, तो यह पता लगाना चाहिए कि इंजीनियरों और डिज़ाइनरों ने क्या सहायता पहुंचाई है। इससे यह पता चलता है कि हम लोग अभिनवीकरण, सुधार-आविष्कार, प्रतियोगिता आदि मामलों को सर्वप्रिय बनाने के महत्व-पूर्ण मामले में कितने पिछड़े हुए हैं। यदि हज़ार फ़ीसदी वालों के बारे में हम लोग इन्हीं आधार पर लेख लिखें तो अभिनवीकरण में बहुत सहायता मिलेगी।

सोचिए, हमारी प्रमुख कठिनाई क्या है? सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि हम अपने औसत मजदूर को भूल जाते हैं। ज़रा मुझे बताइए: यदि वे सभी लोग जो अभी तक अपना उत्पादन-कोटा पूरा नहीं कर पाते, पूरा करने लगें तो उत्पादन कितना बढ़ जायेगा? आप अनुभवी लोग हैं—आप बता सकते हैं। (ध्वनियां—"दस फ़ीसदी, पन्द्रह फ़ीसदी, बीस फ़ीसदी") यह सही है। इसलिए यदि हम सभी मज़दूरों, मैं दोहराता हूं कि सभी मज़दूरों की उत्पादन शक्ति सिर्फ़ १० फ़ीसदी बढ़ा सकें, तो यह कितना फ़ायदेमंद होगा, औद्योगिक उत्पादन कितना अधिक बढ़ जायेगा! लेकिन इस तरह की सफलता वैयक्तिक कामयाबियों से कहीं अधिक कठिन है! छोटा आविष्कार करना या कोई अभिनवीकरण प्रस्ताव रखना बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन यही सब कुछ नहीं है। हाथ से चलने वाले लेथ पर आप दिन भर में २० स्क्रू बना सकते हैं, जब कि स्वयंचालित लेथ पर उसी समय में आप ५००० स्क्रू बना सकते हैं। लेकिन इससे मामले का फ़ैसला नहीं होता।

स्तखानोव-आंदोलन का मतलब ही है काम के तरीक़ों में सुधार, अनेक प्रकार की तरक़ीबों से उत्पादन में आसानी। इस तरह का सुधार-आविष्कार बहुत अधिक लोगों तक नहीं पहुंच सकता, क्योंकि यह बहुत प्रत्येक व्यक्ति पर, उसकी व्यक्तिगत योग्यता और आविष्कार-बुद्धि पर निर्भर करता है। तो भी इसे बढ़ावा देना चाहिए और विकसित करना चाहिए।

विशेषकर डिपार्टमेंटों के इंजीनियरों और डिज़ाइनरों को इसमें सहायता देनी चाहिए, जिनकी जिम्मेदारी यही है।

स्तखानोव-आंदोलन को किसी भी तरह समाजवादी होड़ की भूमिका को कम न करने दिया जाय। आम मज़दूरों के बीच इस समाजवादी होड़ के बहुत अच्छे नतीजे निकल सकते हैं। सफल उत्पादन के काम में यही आम लोग औसत निर्णयात्मक भूमिका अदा करते है। तो भी साथियो, मै आपसे स्पष्टतया कहना चाहता हूं कि इन्ही आम लोगों के प्रति आपका रवैया नज़रअंदाज़ करने का है। आपको हमेशा याद रखना चाहिए कि एक औसत मज़दूर की श्रम-उत्पादन-शक्ति सिर्फ़ दस फ़ीसदी बढ़ाना ही बहुत महत्वपूर्ण है। इसके लिए दैनिक प्रचार की आवश्यकता है। इस ओर इंजीनियरों का, विशेषकर जो पार्टी-मेंबर हैं, ध्यान आकर्षित करना चाहिए। अखबारों में स्तखानोव-आंदोलन पर लिखते हुए हमें उस ओर उचित और आवश्यक ध्यान देना चाहिए, अभिनवीकरण को सर्वप्रिय बनाना चाहिए, उसका प्रदर्शन करना चाहिए, और सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि उसे उत्पादन में नये प्रयोग करने चाहिएं। और तो भी, औसत मज़दूर को उसकी कामयाबी के प्रति अंधा नही बना देना चाहिए। औसत मजदूर अपनी उत्पादन-शक्ति को प्रक्रिया में टेकनिकल परिवर्तन के बिना ही बढ़ाते हैं, अपने काम की तेज़ी, घनापन बढ़ाने के लिए वे क्या करते है। यह बहुत अच्छी बात होगी कि यदि औसत मजदूरों को, विशेषकर पुरानी सर्विस वाले प्रौढ़ मजदूरों को इकट्ठा किया जाय और उनसे उत्पादन बढ़ाने के मसले पर स्पष्ट बातें की जाय। कारखाने के आम उत्पादन पर इसका काफ़ी प्रभाव पड़ेगा और इसका फल भी अच्छा निकलेगा।

आपको औसत मज़दूरों की तरफ़ विशेष ध्यान देने की सलाह दूंगा। उसे सबके सामने लाइए, फ़ैक्टरी के दीवारी अखबारों में उसके काम को प्रकाशित कीजिए। मान लीजिए कि एक मज़दूर ने दो साल

तक अपने उत्पादन-कोटे का ८०-९० फीसदी ही पूरा किया और युद्ध के ज़माने में वह १००-१०५ फ़ीसदी उत्पादन देने लगा, तो उसे आगे लाना चाहिए। उसके काम को प्रकाश में लाना चाहिए। क्यों? क्योंकि इस तरह के मज़दूर हज़ारों हैं, इस तरह आप विकसित होने वाले साधारण मज़दूर को प्रतिष्ठित करेंगे, जो लगातार अपने उत्पादन-कोटे को ३-५ फ़ीसदी बढ़ा रहे हैं। अपने दीवारी अख़बार में उस पर लेख लिखिए, उनके फोटो छापिए। यदि आप ऐसा करेंगे तो उसके पड़ोस का मज़दूर सोचेगा: "और मेरे बारे में क्या? क्या मै अधिक ख़राब हूं? मैं भी ३-५ फ़ीसदी उत्पादन बढ़ा सकता हूं। मैं भी अपनी तस्वीर इस तरह छपवा सकता हूं।"

इस तरह से आम जनता होड़-आंदोलन में खींची जा सकती है। उत्पादन में यह बात बहुत सहायक होगी। अक्सर इसे स्तख़ानोव-आंदोलन कहते हैं। तत्व रूप में यह असली समाजवादी होड़ है—कुछ ऐसी चीज जिसे आप किसी भी हालत में छोड़ नहीं सकते। आपको सिर्फ़ यह मालूम होना चाहिए कि आप इसका इस्तेमाल कैसे करें। इस मामले में असली रवैया अपनाना चाहिए। हमें शोर-शराबा नहीं, वरन् ठोस नतीजे चाहिएं और इसका मतलब है उत्पादन का औसत बढ़ाना।

यहां पर नए मज़दूरों में काम करने का प्रश्न उठाया गया है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण और कठिन काम है। पर मुश्किल कहां आती है?

सर्वप्रथम, जब नया मजदूर पहलेपहल काम पर आता है—और उद्योग-धंधों में इस समय मुख्यत: औरतें आ रही हैं—तो वह हक्का-बक्का रह जाता है। असाधारण वातारण से वह घबड़ा सा जाता है, पर कारख़ाने में ६ महीने काम कर लेने के बाद ही उसे मज़ा आता है। इस मामले में मुझे अपना अनुभव याद आता है। कारख़ाने का अपना

अनुशासन होता है, जबकि कुछ लोगों की, विशेषकर युवकों की आदत अपने ही तरीक़े से काम करने की होती है। हमें नए आनेवालों को काम में लगने में सहायता देनी चाहिए। कारख़ाने की ज़िंदगी और अनुशासन से उन्हें परिचित कराना चाहिए। समझाना चाहिए कि यद्यपि शुरू में यह बात कठिन मालूम होती है, लेकिन समय के साथ यह उन्हें पसंद आयेगी और कारखाने से वे अपने को अलग नहीं कर पायेंगे। नए आदमियों को काम में दिलचस्पी पैदा कराने के लिए सब कुछ करना चाहिए। जितनी जल्दी हो सके, उन्हें अपने पेशे में माहिर बनने में सहायता देनी चाहिए। इसीलिए नौसिखियों को उनके काम में मदद देने, उन्हे टेकनिकल ज्ञान प्राप्त कराने की समस्याओं को सर्वोपरि महत्व दिया जाना चाहिए। लोगों को समझना बहुत बड़ी बात है। नए लोगों की टुकड़ी जो काम करने आई है, वह कैसी है—यह जानना और उसके मुताबिक काम की योजना बनाना बहुत महत्वपूर्ण है।

इस समय लोगों को समझाने का सबसे बड़ा तर्क युद्ध है। उद्योग में आए हुए नए तरुणों को समझाना चाहिए कि वे यहां खेलने नहीं आए हैं, वे गपबाजी के लिए भी नहीं आए हैं, बल्कि वे भी लड़ाई के मोर्चे पर आए हैं। हमारे पास यह सबसे अधिक कारगर तर्क है। फ़ैक्टरियों और मिलों में काम करने के लिए आए हुए तरुणों के साथ न सिर्फ़ युवक कम्युनिस्ट लीग, बल्कि कम्युनिस्ट पार्टी के संगठनों को भी काम करना होगा।

मौजूदा कठिन स्थिति में बहुत कुछ इन्हीं नए मज़दूरों, युवकों और औरतों पर निर्भर करेगा। नए मज़दूरों में एक अनुशासन की भावना भरनी होगी। उन्हें समूचे सर्वहारा के हितों की भावना से अभिभूत करना होगा। रोज़ होशियारी के साथ उनमें पार्टी का प्रचार-कार्य करना होगा। आपको चाहिए कि उन्हें सिर्फ़ आदेशों से प्रभावित न

करें, बल्कि उनके अंदर सामाजिक भावना जागृत करें और सामाजिक क्षेत्र में उनकी दिलचस्पी पैदा करें। इतना ही मुझे आपसे कहना था। मुझे ऐसी आशा करने का साहस हो रहा है कि हमारी बातचीत आपके काम के लिए कम से कम कुछ तो सहायक होगी ही। (देर तक तालियां)

"पार्टीनोये स्त्रोईतेलस्त्वो"
मैगज़ीन, अंक ८, १९४२

राज्य श्रम-रिज़र्वों और ट्रेड, रेलवे तथा औद्योगिक स्कूलों के कोम्सोमोल संगठनों के कार्यकर्ताओं तथा मिखाइल इवानोविच कालिनिन के बीच एक वार्तालाप

२३ अक्तूबर १९४२

सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र संघ की सर्वोच्च सोवियत के प्रधान-मंडल के अध्यक्ष मिखाइल इवानोविच कालिनिन ने राज्य श्रम रिज़र्वों और कोम्सोमोल सगठनों के कार्यकर्ताओं से २३ अक्तूबर, १९४२ को क्रेमलिन में भेंट की। वे ट्रेड, रेलवे और औद्योगिक ट्रेनिंग-स्कूलों में राजनैतिक जन-कार्य से संबंधित प्रश्नों पर हुए एक सम्मेलन में भाग लेने आए थे।

यह वार्तालाप तीन घंटे तक चलता रहा। क्षेत्रीय, प्रादेशिक तथा प्रजातंत्रिक श्रम-रिज़र्वों के प्रशासनों में राजनैतिक जन-कार्य के सहायक-अध्यक्षों और कोम्सोमोल की क्षेत्रीय तथा प्रादेशिक समितियों के कार्यकर्ताओं ने ऊपर लिखे हुए स्कूलों में तरुणों में किए जानेवाले

शिक्षात्मक कार्य के विषय में कामरेड कालिनिन को बताया। उन्होंने यह भी बताया कि इन स्कूलों में दी जानेवाली ऊंची सतह की ट्रेनिंग के लिए वे और क्या कर रहे हैं।

अपने भाषण में मिखाइल इवानोविच कालिनिन ने बताया कि ट्रेड, रेलवे और औद्योगिक ट्रेनिंग-स्कूलों में ट्रेनिंग पाने वाले तरुणों में काम करने का कितना असाधारण महत्व है। उन्होंने व्यावसायिक शिक्षा और तरुणों की शिक्षा से संबंधित अनेक प्रश्नों पर भी अपनी बात कही।

नीचे हम वार्तालाप की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रकाशित कर रहे हैं:

कामरेड गोगीना -- (राजनैतिक जन-कार्य के सहायक-अध्यक्ष, तूला क्षेत्रीय श्रम-रिजर्व प्रशासन) — जर्मन आक्रामकों ने, तूला के ट्रेड और रेलवे स्कूलों को छोड़कर, तूला क्षेत्र की सभी ट्रेड, रेलवे और औद्योगिक ट्रेनिंग स्कूलों को क्षत-विक्षत कर दिया था।

हमारे शिक्षार्थियों ने इन सभी स्कूलों को फिर से चलाने के लिए बहुत काम किया है और आवश्यक मरम्मत कर ली है। १२ नं० ट्रेड स्कूल द्वारा किया गया काम विशेष उल्लेखनीय है। अखिल सोवियत समाजवादी होड़ में उसे दूसरा स्थान पाने पर पारितोषिक मिला था।"

कामरेड कालिनिन — "क्या बिना आज्ञा तरुणों के स्कूल से चले जाने की घटनाएं हुई हैं?"

कामरेड गोगीना — "हां ऐसी घटनाएं हुई हैं। यह सही है कि जहां शिक्षकों का रुख पैतृक प्यार से भरा होता है, जहां शिक्षक शिक्षार्थियों की विशिष्टताओं का अध्ययन करके प्रत्येक के प्रति व्यक्तिगत रवैया बनाते हैं, वहां बच्चे स्कूल छोड़कर नहीं जाते। दूसरी ओर, जिन स्कूलों में शिक्षक शिक्षार्थियों के प्रति निष्ठुर होते हैं, जहां शिक्षा का आधार डांट-डपट है, वहां बच्चे बिना आज्ञा के भी चले जाते हैं।"

कामरेड कालिनिन — "इसका अर्थ यह हुआ कि शिक्षा अब भी बुरी तरह से संगठित है।"

कामरेड गोगीना—"हमारे अनेक व्यावसायिक स्कूलों की यह बहुत ही गंभीर त्रुटि है।

अनेक स्कूलों में जहां कुशल शिक्षक अच्छी तरह काम करते हैं, और पांडित्यपूर्ण कुशलता भी प्रदर्शित करते हैं, वहां औद्योगिक ट्रेनिंग के काम में सफलताएं प्राप्त हुई हैं।

जैसा होड़ से स्पष्ट हुआ है, नं० २ रेलवे स्कूल ने काफ़ी सफलताएं प्राप्त की हैं। वहां रस्सोखिन नाम का एक मैन्युअल इन्स्ट्रक्टर है। वह अच्छा शिक्षक है और बच्चों को बहुत चाहता है।

मिखाइल इवानोविच, एक बार आपने एक सम्मेलन में कहा था कि शिक्षक पैदायशी ही होना चाहिए। यह फ़ोरमैन जन्म से ही शिक्षक है। वह तरुणों की राजनैतिक और व्यवहारिक शिक्षा दोनों पर ध्यान देता है। तूला में उसके शिक्षार्थियों ने ४ किलोमीटर लंबी रेलवे-शाखा बनाई है। उन्हें इस पर एक पारितोषिक प्राप्त हुआ और तूला नगर-सोवियत और नगर-पार्टी कमेटी ने धन्यवाद भी दिया था।"

कामरेड कालिनिन—"शिक्षार्थियों के प्रति आपका क्या रवैया है? आप उनके साथ बड़े बच्चों का सा या प्रौढ़ों-सा व्यवहार करते हैं?

आपने शिक्षा-दीक्षा के बारे में कहा है। इसका क्या मतलब है?"

कामरेड गोगीना—"मैं साधारण स्कूलों और श्रम-रिज़र्वों की शिक्षा-व्यवस्था में भेद करती हूं, क्योंकि यहां शिक्षार्थियों को सीधे श्रमिक बनने की ट्रेनिंग दी जाती है।"

कामरेड कालिनिन—"मुझे डर है कि आप समय से पहले ही उन्हें प्रौढ़ बनाए दे रहे हैं। तरुणों में जो कुछ उनका अपना होता है, आप उन्हें उसीसे वंचित किए दे रहे हैं। एक शिक्षक के नाते यह आपको समझ लेना चाहिए। मुझे बताइए कि उनमें तरुणाई रह जाती है या नहीं?"

कामरेड गोगीना — "मेरा विचार है कि वे तरुण रहते हैं। मिसाल के लिए हमारे नं० ३ ट्रेड स्कूल को लीजिए। यहां साठ युवक-युवतियों की एक गायन गोष्टी है, नाटक-मण्डली है और सुरक्षात्मक व्यायाम मण्डल भी।"

कामरेड कालिनिन — "इस समय युद्ध जारी है। हमें ऐसे लोग चाहिएं जो साहसी और हिम्मतवर हों। और वे गायन या नाटक मंडलियां संगठित कर देने से नही मिल जायेंगे। विभिन्न प्रकार की मंडलियां अलबत्ता एक बहुत अच्छी चीज़ है। लेकिन हम नहीं चाहते कि हमारे बच्चे यह महसूस करें कि वे मठों में हैं। बच्चों को साहसी और ज़ोरदार होना चाहिए।

तरुणों की शिक्षा एक पेचीदा मसला है। इस सिलसिले में मुख्य बात यह है कि एक तरफ़ तो बच्चे की रहनुमाई एक निश्चित राह पर होनी चाहिए; दूसरी ओर आप उनके स्वाभाविक उत्साह को न मार दें, इसका ध्यान रखना चाहिये। आपको यह देखना है कि वे घोंचू क़िस्म के आदमी न बन जाएं, जो समय से पहले ही प्रौढ़ बनने की कोशिश करने लगते हैं।"

कामरेड इवानोवा — (कोम्सोमोल की गोर्की क्षेत्रीय कमेटी के ट्रेड और औद्योगिक स्कूलों के डिपार्टमेंट की इंस्ट्रक्टर) — "एक जर्मन हवाई हमले के दौरान में हमारे क्षेत्र का एक बड़ा ट्रेड स्कूल नष्ट-भ्रष्ट हो गया था।

कामरेड कालिनिन — "और क्या किसी बच्चे को चोट लगी?"

कामरेड इवानोवा — "नहीं, किसी को चोट नहीं लगी। लेकिन बमबारी के बाद उनमें से कुछ स्कूल छोड़कर चले गए।"

कामरेड कालिनिन — "मुझे ज़रा इस घटना के बारे में बताओ। बच्चे स्कूल छोड़ कर चले गए, और आपने उसके बारे में क्या किया?"

कामरेड बुशुयेव — (राजनैतिक जन-कार्य के इंचार्ज, सहायक-अध्यक्ष; गोर्की क्षेत्रीय श्रम-रिज़र्व प्रशासन) — "स्कूल के डायरेक्टर,

उसके राजनैतिक सहायक और दूसरे शिक्षकों की सहायता से अधिकतर बच्चे वापस आ गए। बच्चों ने खुद ही फिर से मकान और सामान को ठीक कर लिया। अब यह ट्रेड स्कूल क्षेत्र के सबसे अच्छे स्कूलों में से है।"

कामरेड कालिनिन — "और बच्चों के तितर-बितर हो जाने के बारे में आपकी क्या राय है? आपने उनको किस तरह समझाया? आपका रुख क्या था?"

कामरेड वुशुयेव — "सबसे पहले हमने उन्हें यह बताया कि बमबारी के लिए हिटलर उसी प्रकार उत्तरदायी है, जिस तरह वह समूचे युद्ध के लिए उत्तरदायी है। शिक्षार्थियों को हमने तफसील में अपनी ही शक्ति से स्कूल की मरम्मत कर लेने की आवश्यकता समझाई। हमने उन्हें उद्योग के लिए आवश्यक कार्यकर्ताओं की ट्रेनिंग की आवश्यकता के विषय में भी बताया।"

कामरेड कालिनिन — "इतना ही काफी नहीं था। आपने बच्चों को इकट्ठा करके उनसे कहा होता: 'इस तरह के कायर होने पर आपको शर्म आनी चाहिए। आप भाग खड़े होते हैं, अपने देश के किस तरह के रक्षक आप बनेंगे? आपके पिता फासिस्टों से लड़ रहे हैं और आप गांवों में भाग जाते हैं। हम सोचते थे कि आप स्कूल की रक्षा करेंगे और आप भाग खड़े हुए। आप किस तरह के वीर हैं?' हां, आपको उनसे कहना चाहिए था: 'आप कायर हैं, सारे रूस के सामने आपने अपना मुंह काला कर लिया है। एक हवाई जहाज आया और आप सिर पर पैर रखकर भागे।"

आखिर आपको बच्चों को बच्चों की ही तरह समझना चाहिए। यदि मैं स्कूल का डायरेक्टर होता तो उनसे कहता: 'यह अच्छी रही! मैं यहां अकेले पड़ा रहा और आप भाग खड़े हुए। मैंने सोचा था कि आप बहादुर हैं। हम आपको रायफ़लें और मशीनगनें देना चाहते थे और आप भाग गए। मैं सोच रहा हूं कि आपके लिए स्कूल खोलना

भी फायदे का था है नही। मै यहां कायरों को शिक्षा क्यों दूं, जो खतरे की पहली घटी पर ही खिसक जाते है?' इस तरह आपको उन्हे लज्जित करना चाहिए था। और तब उनसे कहना चाहिए था :'आओ, अपनी सुरक्षा के लिए कुछ खाइया खोदें और यदि हवाई हमला हो तो उसके लिए हर चीज तैयार रखें।"

बच्चे डर गये और वे भाग खडे हुए थे। लेकिन निश्चय ही उनमे से हर एक बहादुर बनना चाहता है। मै शर्त लगा सकता हू कि सौ मे निनानवे बहादुर बनना चाहेगे।

इन बच्चो को ट्रेनिंग देना आपका काम है। और उनको लज्जित करना आसान है। आप यदि करीब-करीब उसी तरह कहते जैसे मैने कहा है, तो आप कामयाब हो सकते थे:'आप भाग खड़े हुए और मेरे जैसे बूढे को बिना सहायता के यूही छोड दिया?' इस पर वह अपने पर लज्जित होते। वे अपने व्यवहार पर सोचने को मजबूर हो जाते। आदोलन इस तरह करना चाहिए।

और जो तीन लडकिया पीछे रह गयी थी, उन्हे दूसरो के सामने मिसाल की तरह पेश करना चाहिए था। आपको कहना चाहिए था: 'ये तीन बहादुर लड़किया रुक गई थी, लेकिन बाकी भाग खड़े हुए थे।' इसकी जगह आपने सार्वजनिक भाषण शुरु कर दिया, आप फिकरे बोलने लग गए, और मुख्य बात, जो उसकी राजनीति थी, छोड़ गए। और यही बात सभी मामलो मे है।

मै आपसे फिर कहना चाहता हू कि आपको व्यावसयिक शिक्षा ही नही देनी है, बल्कि योद्धा और सोवियत नागरिक भी तैयार करने है।"

कामरेड इवानोवा — "जहा तक कोम्सोमोल संगठनो की प्रगति का संबंध है, हम लोग बड़ी खराब स्थिति मे है। सोर्मोवो कारखाने से संबंधित ट्रेड स्कूल नं० ३ पिछड़े हुए स्कूलों में से है।"

कामरेड कालिनिन — "वह पिछड़ा हुआ क्यों है?"

कामरेड इवानोवा — "नेतृत्व पर बहुत कुछ निर्भर करता है। स्कूल का डायरेक्टर तीन बार बदला गया। कोम्सोमोल संगठन कुछ भी नही कर सका और काफ़ी समय तक डायरेक्टर की सहायता के लिए कोई राजनैतिक सहायक भी नही था। उस समय विद्यार्थी तूला और ओरेल क्षेत्रों के थे। १५०० में से सिर्फ ८७ कोम्सोमोल के सदस्य थे और वे बहुत कुछ नही कर सकते थे।"

कामरेड कालिनिन — "मुझे बताइए कि आप पार्टियां, नाच वगैरह का क्या प्रबंध करते है?"

कामरेड इवानोवा — "अपनी गतिविधियों के मासिक पर्यवेक्षण के बाद नाच का आयोजन होता है।"

कामरेड कालिनिन — "क्या आप के पास बाजे है?"

कामरेड इवानोवा — "हां, है।"

कामरेड कालिनिन -- "आपको पार्टियों का प्रबंध करना चाहिए, जिससे बच्चे कुछ खेल-कूद सके, उन्हे नाचने का अवसर मिल सके।"

कामरेड इवानोवा -- "हमने एक सम्मेलन किया था। हमने उसमे बूढे मजदूरों को भी बुलाया था। ट्रेड स्कूल की शिक्षा समाप्त कर चुके नए मजदूर भी उसमें शामिल थे। कुल चार सौ लोग उपस्थित थे। बूढे मजदूरों ने क्रांति से पहले की काम करने की हालतें बताई और बताया कि अब हालत कैसी है और शिक्षार्थियों को अब कितनी सुविधाएं प्राप्त है।

सबसे अच्छे विद्यार्थियों ने यह बताया कि उन्होंने सफलताएं कैसे प्राप्त की। पन्द्रह वर्ष के एप्रेंटिस बेलोव ने ५ दिनों ही में ढाई सौ फ़ीसदी काम पूरा किया था। सम्मेलन के बाद गाने और नाच, आदि हुए।"

कामरेड कालिनिन — "मैंने आपसे नाच के बारे में क्यों पूछा? मैं आपको बताना चाहता हूं कि आप तरुणों को समय से पहले बूढा मत

बना दीजिए। मैं कहता हूं कि नाच का प्रबंध करने में आप चूकें नहीं, क्योंकि नाचना लोगों को शान से चलना सिखाता है। एक आदमी जो नाच सकता है, वह ठीक से चलेगा और पैरों पर बोझ नहीं पड़ेगा। हमारे तरुणों को नाच पसंद है। मैं युवकों से मिलकर ही यह बात जानता हूं और इस पर बनावटी रोक लगाने की आवश्यकता नहीं है। सिर्फ़ आपको यह देखना है कि वह अपना तमाम समय इसमें बरबाद न करें — वह सिर्फ़ आराम और तफ़रीह के लिए होना चाहिए।"

कामरेड गलिऊलिना — (तातार स्वायत्त सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र श्रम-रिज़र्व प्रशासन के सहायक-अध्यक्ष) — "हमारे यहां ग्यारह ट्रेड स्कूल, दो रेलवे, और तेईस औद्योगिक ट्रेनिंग स्कूल हैं, जिनमें सोलह हज़ार तरुण पढ़ते हैं।

अपने विद्यार्थियों में हम कला के विकास को बहुत महत्व देते हैं। हमारे शिक्षकों ने संगीत और नृत्य केन्द्रों को संगठित करने में बहुत काम किया है। उन्होंने ट्रेड और औद्योगिक ट्रेनिंग स्कूलों के अच्छे से अच्छे कला-प्रेमियों के दलों का समारोह संगठित किया और यह बहुत अच्छा रहा।

बच्चों को गाने, कविता पढ़ने आदि कलाओं से बहुत प्रेम है।

कामरेड मक्सिमोव (राजनैतिक जन-कार्य के सहायक-अध्यक्ष, लेनिनग्राद श्रम-रिज़र्व प्रशासन) ने बताया कि किस तरह ट्रेड, रेलवे और औद्योगिक ट्रेनिंग स्कूलों के शिक्षार्थी और शिक्षक काम और अध्ययन करते हैं और किस तरह वे जर्मन फ़ासिस्ट आक्रामकों के विरुद्ध नगर की रक्षा में फ़ौजी अधिकारियों की सहायता करते हैं। शिक्षार्थियों ने लेनिनग्राद के ट्रामों को फिर से चालू करने में सहायता दी। उन्होंने पायोनीयरों के महल और नगर के दूसरे मकानों की मरम्मत करने में भी सहायता दी।

इस के बाद मिखाइल इवानोविच कालिनिन ने बश्कीर स्वायत्त सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र, मोलोतोव क्षेत्र, आज़ेरबैजान सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र, चेल्याबिंस्क और यारोस्लव्ल क्षेत्रों, कोमी स्वायत्त सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र, अर्खान्गेल्स्क क्षेत्र, कालिनिन क्षेत्र, मास्को नगर और मास्को क्षेत्र के अनेक श्रम-रिज़र्व प्रशासनों तथा कोम्सोमोल संगठनों के कार्यकर्ताओं की बातें सुनी।

मिखाइल इवानोविच कालिनिन का भाषण

साथियो, श्रम-रिज़र्व ट्रेनिंग स्कूलों के शिक्षार्थियों की शिक्षा बहुत ही नाजुक और मुश्किल काम है। इसमें भी अधिक, राज्य-श्रम-रिज़र्वों की ट्रेनिंग का काम ही बहुत पेचीदा है।

प्रथमत:, हमको लगभग कुशल मज़दूरों को शिक्षित करना है। दूसरे, सोवियत राज्य के मजदूर-वर्ग की तरुण पीढ़ियों को हम सोवियत संस्कारों में पालना चाहते हैं। तीसरे, मसला मौजूदा स्थिति—युद्ध के कारण पेचीदा हो गया है।

श्रम-रिज़र्व ट्रेनिंग-स्कूलों के शिक्षार्थियों को मोर्चे की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बहुत से राज्य के आर्डर पूरे करने होते हैं—साधारण ज़माने में उन्हें ऐसा कुछ नहीं करना पड़ता था। अन्न, कपड़े, जूतों की समस्यायें पेचीदा हो गई हैं। खुद युद्ध के कारण श्रम-रिज़र्व संगठनों की स्थिति मुश्किल हो गई है। इन परिस्थितियों में मज़दूरों को सभी नियमों के अनुसार शिक्षित करना काफ़ी मुश्किल हो गया है।

युद्ध अपनी तेज़ी पर है। और यद्यपि श्रम-रिज़र्व व्यवस्था के विद्यार्थी अभी मोर्चे पर नहीं भेजे जा रहे हैं, तो भी यह बहुत संभव है कि उनमें से कुछ को लड़ना पड़े और इसलिए यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि उन्हें अपने मौजूदा काम से फ़ौजी ट्रेनिंग में लगा दिया जाय।

साधारण दिनों में, शांति-काल में, हम अपना पूरा ध्यान शिक्षा पर लगा दें। लेकिन मौजूदा परिस्थितियों में हमारा यह कर्तव्य है कि हम सभी स्कूलों में फ़ौजी ट्रेनिंग का काम करें। हम कुशल मज़दूरों को शिक्षित कर रहे हैं। लेकिन यदि आवश्यकता हो तो उन्हें लड़ना भी आना चाहिए। यह हमारा अक्षम्य अपराध होगा यदि हम उनको फ़ौजी ज्ञान से सुसज्जित न कर सकें। इसीलिए मैं समझता हूं कि मौजूदा परिस्थितियों में लेनिनग्राद के लोग, शिक्षार्थियों को फौजी आधार पर संगठित करके सही काम कर रहे हैं, यद्यपि इससे हमारे तरुणों को कुछ मुश्किलें उठानी पड़ रही हैं।

यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपने तरुणों को उनके पेशे में सुशिक्षित करें और साथ ही उन्हें सोवियत नागरिक, योद्धा बनने की भी शिक्षा दें, जिससे वे देश के प्रति अपना कर्तव्य समझ सकें, अपने पेशे ज्यादा जमकर सीख सकें, और कम समय लगे; साथ ही, शिक्षा के साथ-साथ वे लाल फ़ौज को फौजी सामान बड़ी संख्या में दे सकें। उन्हें फ़ौजी ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और शारीरिक तौर पर विकसित होना चाहिए।

देशभक्तिपूर्ण युद्ध के मोर्चे पर नाजी-आक्रन्ताओं से हमारे बेटे जो वीरतापूर्ण युद्ध कर रहे है, हमारा देश उन्हें भूलेगा नहीं।

हमारा देश ट्रेड, रेलवे, औद्योगिक ट्रेनिंग स्कूलों में पढ़ने वाले लड़कियों-लड़कों के वीरता के कामों को भी अहसान के साथ याद रखेगा, जो मोर्चे की सहायता कर रहे हैं और मोर्चे के पीछे जितना संभव है उतनी अच्छी तरह अध्ययन और काम करने की कोशिश कर रहे हैं।

शिक्षा के बारे में यह समझ लेना चाहिए कि उसके प्रति व्यवहारिक रुख बहुत ही कठिन है। शिक्षकों में बहुत ही कुशलता की आवश्यकता है।

श्रम-रिजर्व स्कूलों मे पढने वाले विभिन्न प्रदेशो और जनता के विभिन्न हिस्सों से आते है — वे हमारे शहरों और देहातों के तरुण और तरुणिया है। यह स्पष्ट है कि वे एक ही तरह के नही है और आपको उनके समान विकास का प्रयत्न करना चाहिए। यह आसान काम नही है। इससे भी अधिक हमे यह याद रखना चाहिए कि हमारे यहा जो शिक्षा पाने आए है, वे बच्चों से कुछ ही बडे तरुण है। उनकी आदतें सब वही बचकानी है। यह सही है कि युद्ध और समूचा वातावरण उन्हे शान्ति-काल के मुकाबले अधिक प्रौढ बनाए दे रहा है। लेकिन तो भी, जब तक हो सके तब तक हम उनकी तरुण प्रवृतियो को बनाए रखना चाहते है। निस्सदेह, व्यवहार मे इन प्रश्नो को हल करना बहुत ही मुश्किल है।

शिक्षा सबधी विश्व-साहित्य का अध्ययन कीजिए। इसमे जनता के शिक्षा-सबधी विभिन्न अनुभवो का खजाना है। कुछ लोगों ने यह साबित करने की कोशिश की है कि उनके बच्चो को सबसे अच्छी शिक्षा नगरों मे मिल सकती है। कुछ लोगो ने इसका विरोध किया है और यह दावा किया है कि बच्चो की शिक्षा देहातों मे होनी चाहिए। इस मसले पर दूसरे प्रस्ताव और दावे किए गए है। तो भी, यह नही कहा जा सकता कि शिक्षा की कोई विशद और निश्चित व्यवस्था स्थापित हो चुकी है। आज शिक्षा की व्यवस्था पहले से, तीन साल पहले से, भिन्न होनी चाहिए। यदि कहा जाय तो यह अधिक सही होगा कि पहले हम बुद्धिजीवी निर्मित करते थे, न कि शारीरिक श्रम में सुशिक्षित लोग। व्यक्तिगत तौर पर मै ऐसी शिक्षा गलत समझता हू क्योंकि, आखिर हमारे देश की अधिकाश जनता शारीरिक श्रम में लगी हुई है। इस तरह हमारे सामने यह एक समस्या पेश है कि अपने तरुणों को शारीरिक श्रम का आदी किस तरह बनाया जाय और साथ ही उनका बौद्धिक विकास किस तरह हो भी।

अब हम लोग शारीरिक शक्ति को विकसित करने पर ज्यादा जोर दे सकते है। काम करने की आदतो को डालने, हर तरह की कठिनाइयो का मुकाबले करने की शिक्षा पर अधिक जोर देना चाहिए। इस तरह वे अपने को लोह बना सकेगे। जिस तरह हम शारीरिक कसरते करते है, हर तरह के खेल-कूद मे हिस्मा लेते है, जिमसे हम अपने को शारीरिक तोर पर लोह वन सके, उसी तरह कडा अनुशामन लागू करके ओर काम की आदते डालकर हमे तरुणो को लोह बनाना चाहिए, तभी वे जीवन मे आनेवाली सभी मुश्किलो को आमानी से झेलने के योग्य वन सकेगे।

इमलिए आवश्यक हे कि हमारे तरुणो मे श्रम-निष्ठा पेदा की जाय।

हमारी फेक्टरियो के मजदूरो की काफी वडी सख्या अपने काम को जीवन भर का पेशा ममभती हे। यदि उनका काम छूट जाय, तो उन्हे लगता हे कि जीवन का सब अर्थ ही शून्य हो गया। इस तरह के लोग जब बूढ हा जाते हे या बीमारी के कारण काम छोडने को मजबूर होते है, तो उन्हे लगता हे कि जेसे उनका आधा जीवन ही समाप्त हो गया, क्योकि वे काम के आदी होते है, उन्हे अपने धधे से स्नेह होता हे। जब उनका धधा नही रहता हे तो ऐमा लगता है जैसे उनके जीवन का सहारा ही खतम हो गया हो। हम चाहते है कि हमारे तरुण मजदूरो मे श्रम के प्रति इसी प्रकार का स्नेह विकसित हो।

यह कहने की कोई आवश्यकता नही कि जब साथी यह साबित करने की कोशिश कर रहे थे कि बच्चो की शिक्षा को मेन्युल इन्स्ट्रक्टरो की ही जिम्मेदारी बना दी जाये, तो वे गलत थे। यदि आप मुझसे पूछे कि कौन सा मेन्युल इन्स्ट्रक्टर ज्यादा अच्छा होगा— जिसका रुख पडिताऊ हे, लेकिन उसे अपने धधे का ज्ञान कम है,

या वह जो ज़रा कम पंडित है लेकिन जिसे अपने धंधे का पूर्ण ज्ञान है, तब यदि मैं ट्रेड स्कूल या औद्योगिक ट्रेनिंग स्कूल का डायरेक्टर होता, तो अपने धंधे के व्यावहारिक ज्ञानी को अधिक अच्छा समझता, जो पंडित कम है, लेकिन जिसे अपने क्षेत्र का पूर्ण ज्ञान है।

मैं ऐसा क्यों करूंगा? क्योंकि शिक्षक का प्रभाव तभी अपने विद्यार्थियों पर असरदार होगा जब वे समझेंगे कि उन्हें अपने धंधे का सच्चा ज्ञान प्राप्त हो रहा है। विद्यार्थियों को ऐसे शिक्षक से सदैव फ़ायदा होगा। एक मिसाल ले लीजिए। पहले विश्वविद्यालयों में बहुत ही प्रतिक्रियावादी विचारों के प्रोफेसर थे, लेकिन प्रायः उन्हें अपने विषयों का बहुत ही अच्छा ज्ञान होता था, और वे अपने विषयों को बहुत ही योग्यता से समझा सकते थे। उनके लेक्चरों में विद्यार्थी सदा ही अच्छी तादाद में उपस्थित रहते थे—यद्यपि विद्यार्थी यह जानते थे कि ये प्रोफेसर प्रतिक्रियावादी विचारों के हैं। दूसरी तरह के प्रोफ़ेसर भी थे—गैस भरे हुए गुब्बारे, जो केवल यह जानते थे कि बात किस तरह करनी चाहिए। वे हर समय उदारतावादी जुमले बोलते रहते थे। पहले तो उनके लेक्चरों में सभी स्थान भरे होते थे, लेकिन बाद में गंभीर विद्यार्थी उनमें जाना छोड़ देते थे, क्योंकि वे वहां कुछ भी सीख नहीं पाते थे।

हमारे मैन्युल इन्स्ट्रक्टरों के विषय में भी यही सच है। यदि उन्हें अपने विषय का अच्छा ज्ञान है और वे अपनी कार्य की कुशलता अपने विद्यार्थियों को प्रदान कर सकते हैं, तो वे अपनी भूमिका अदा कर सकेंगे।

जहां तक कारीगर और झाड़ू-झारू करने वाली द्वारा बच्चों को शिक्षित करने में अपनी भूमिका अदा करने का सवाल है, इसे शब्दशः नहीं समझना चाहिए, लेकिन इन अर्थों में कि उन्हें अपने व्यवहार, कर्तव्य-पालन में मिसाल बनकर विद्यार्थियों में काम, सफ़ाई और

नियमितता की आदतें डालनी है। यदि इन स्कूलों की झाड़ू-झारू करने वाली मकान की उचित देखभाल करती हैं, और बच्चों को कुछ भी गड़बड़ नहीं करने देती, यदि वे गड़बड करते है तो उन्हें डांटती है, उन्हें निश्चित आदतें सिखाती है, तो तब ही विद्यार्थियों पर उसका अच्छा प्रभाव पड़ता है। लेकिन वे यह सब स्कूल के डायेरक्टर की आज्ञा पाने पर करती है कि वह अपनी जिम्मेदारियों को पूरी तरह निभाएं।

एक ही आदमी अच्छा टर्नर या फ़िटर हो और साथ ही अच्छा शिक्षक भी हो—ऐसा आदमी मिलना मुश्किल होता है। यहां पर यह बताया गया है कि अपने धधे में कुशल ऐसे शिक्षक हैं जो बच्चों के प्रति पैतृक रवैया रखते हैं। लेकिन मेरी राय में उसका कारण यह है एक ऐसे अच्छे कारीगर की कल्पना करना मुश्किल है जो अपने काम से स्नेह न करता हो और उसकी ओर लापरवाही का रुख रखता हो। ऐसा उदाहरण अपवाद के ही रूप में मिल सकता है, साधारणतया नही। एक कुशल शिक्षक, जो अपने पेशे मे घुल-मिल गया हो, अपने ज्ञान को विद्यार्थियों को प्रदान करने की कोशिश करता है, और वह हर तरह से उनका खयाल किए बिना नही रह सकता। तरुणों की व्यवसायिक ट्रेनिंग का यही सार है।

सिर्फ वही कुशल कारीगर, जो अपने विषय-क्षेत्र का माहिर है, जिसे अपने काम का पूर्ण ज्ञान है, अपने विद्यार्थियों को काम में माहिर बनने में सहायक हो सकता है। हमें अपने विद्यार्थियो में पेशे के प्रति गर्व विकसित करना चाहिए। और यह एक कुशल कारीगर द्वारा ही किया जा सकता है जो अपने कौशल का पंडित है और उससे स्नेह करता है। शेष सहायकों को अपने कर्तव्यों का पालन अच्छी तरह करना चाहिए। यदि वे अपने कर्तव्यों का पालन भली भांति करेंगे, तो अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों की शिक्षा में सहायक होंगे,

क्योंकि वे बच्चों के आगे मिसालें क़ायम करेंगे। वे वह वातावरण है जो अपने से संबंधित सभी चीज़ों को प्रभावित करता है।

जैसा मैं कह चुका हूं कि हम बच्चों को कुशल मज़दूर, और अच्छे सोवियत नागरिक, दोनों ही बनाना चाहते हैं। श्रम-रिज़र्व व्यवस्था के राजनैतिक नेताओं की यही ज़िम्मेदारी है। तरुण मजदूरों में उनको यह विचार दृढ़ करना चाहिए कि वे सोवियत देश के मजदूर-वर्ग के सदस्य हैं, और यह कि यह वर्ग सोवियत समाज का नेतृत्व करने वाला वर्ग है और वह समूचे सोवियत जीवन के लिए मुख्य मिसाल पेश करता है। राजनैतिक नेताओं द्वारा हमारे तरुणों में इस बुनियादी विचार को सबसे पहले भरना चाहिए।

सोवियत राज्य मज़दूरों और किसानों का राज्य है। दुनिया में इस तरह का और कोई राज्य नहीं है और हम उसके रक्षक तथा प्रतिनिधि हैं। हमारे राजनैतिक नेताओं को दिन-रात इसी तरह का प्रचार करना चाहिए। उनकी योग्यता पर ही इसकी सफलता निर्भर है।

मुझसे यहां पूछा गया है कि श्रम-रिज़र्वों की व्यवस्था में कोम्सोमोल की भूमिका को किस तरह समझना चाहिए।

श्रम-रिज़र्व व्यवस्था एक राज्य संगठन है।

जिस सीमा तक श्रम-रिज़र्व के विद्यार्थी कोम्सोमोल आयु के हैं कोम्सोमोल अपनी भूमिका अदा करता है और उसे करना भी चाहिए। यदि उनमें कोम्सोमोल के सदस्यों की संख्या बहुत कम है, तो यह हमारी लापरवाही है। आम तौर पर दो साल में लगभग ६० फ़ीसदी विद्यार्थियों को कोम्सोमोल का सदस्य बनना चाहिए। लेकिन क्या इसका अर्थ यह है कि ट्रेड और औद्योगिक ट्रेनिंग स्कूलों में कोम्सोमोल को प्रशासनात्मक नेतृत्व करना चाहिए?

नही, कदापि नहीं।

कोम्सोमोल राजनैतिक सगठन है, जो तरुणो के राजनैतिक रवैये को निर्मित करता है। वह उसे निश्चित पार्टी-राह पर मोड़ता है और लोगों को पार्टी-सदस्यता के लिए तैयार करता है।

क्या शिक्षात्मक पहलू कोम्सोमोल के हाथो मे होना चाहिए? नही, मै ऐसा नही मानता। हो सकता है कि मेरे क्रान्तिकारी विचार कोम्सोमोल को न जचे। आप खुद मसले पर गौर कीजिए। हमारे स्कूल और विश्वविद्यालय कोम्सोमोल अयु के विद्यार्थियो से ही भरे हुए है, तो क्या इसका मतलब यह हुआ कि कोम्सोमोल उनका इचार्ज है? कोम्सोमोल उनके राजनैतिक विकास मे सहायता देता है, उनको ज्यादा जागरूक बनाता है, उन्हे स्वतत्र कोम्सोमोल सगठनो मे—जो एक हद तक राज्य-सगठनों से स्वतत्र होते है—बाटता है। परन्तु, स्कूल और विश्वविद्यालय राज्य सगठनो की मातहती में है।

श्रम-रिजर्वो की शिक्षा का उत्तरदायी कोन है? कामरेड मोस्कातोव, आप श्रम-रिजर्वो की शिक्षा के जिम्मेदार है और कोम्सोमोल आपकी सहायता करता है। इन मामलो मे जवाबदेही आपकी ही होगी, न कि कोम्सोमोल की। सभवत: कोम्सोमोल के अधिकारियो मे भी कहा जायेगा: "प्रिय साथियो, आपका भी काम ठीक नहीं है।" लेकिन इस कारण कोम्सोमोल के नेताओं को अपने पदो पर से हटाया नही जायेगा, जब कि श्रम-रिजर्वो के अध्यक्ष को हटाया जायेगा।

इसका अर्थ यह हुआ कि राज्य श्रम-रिजर्व संगठन इस काम के इचार्ज है।

अब हम यह सोचे कि श्रम-रिजर्वो के तरुणों की शिक्षा के काम में सीधे-सीधे तौर पर कौन लगेगा। मैने अभी अभी अपको बताया है कि राजनैतिक नेता और शिक्षक का काम कितना कठिन है। यह काम सैद्धान्तिक शिक्षा प्राप्त अनुभवी व्यक्तियो को ही करना चाहिए। आम तौर पर, परिपक्व आयु के अनुभवी व्यक्ति ही इस काम के लिए

ज्यादा अच्छे होंगे। यह काम कोम्सोमोल के उन सदस्यों को करना चाहिए जिनका दृष्टिकोण कोम्सोमोल के दृष्टिकोण से आगे बढ़ चुका है। मैं समझता हूं कि प्रौढ आयु के लोग इस काम के लिए अधिक उपयुक्त होंगे। यदि बच्चों के पास करीब-करीब उन्ही की आयु का कोई आदमी जायेगा, तो उसमें उनको विशेष विश्वास नहा होगा। वे कहेगे: "तुम्हे हमसे ज्यादा कुछ नही आता।" बच्चे अधिकार-युक्त व्यक्ति को मानते है और हमें उनमें अधिकारियों के प्रति सम्मान की भावना भरनी चाहिए।

मेरा विचार है कि कोम्सोमोल को उन नेताओं की सहायता करनी चाहिए और उनमे जोश लाना चाहिए, जो यद्यपि ज्ञानवान् है, परन्तु जो जीवन के प्रति कुछ उत्साह-हीन से हो गए है। मै तो समझता हू कि एक अनुभवी शिक्षक ही तरुणो के अधिक निकट हो सकता है। अलबत्ता, वह बच्चो के साथ गेंद नही खेलेगा और न ही उनके पीछे दौड़ा-दौडा फिरेगा। मुख्य चीज राजनैतिक प्रभाव, अधिकार, तरुणों की उससे ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा है। और ये सभी बहुमूल्य चीजें है जो विद्यार्थियो की ही समान आयुवाले शिक्षको मे नही होती। क्योंकि एक व्यक्ति अपनी बराबरी की आयुवाले से हमेशा ही कह सकता है: "मुझे आज्ञा देने वाले तुम कौन होते हो? मै तुम से ज्यादा बेवकूफ नही हू, और न तुम मे कम जानता हू।" यहा आयु खुद ध्यान दिलाती है। मै यह नही कहना चाहता कि कोम्सोमोल के सदस्यों को इस काम में न लिया जाय। मै सिर्फ यह कह रहा हूं कि प्रौढ आयु का व्यक्ति ज्यादा अच्छा रहेगा।

मेरा विश्वास है कि श्रम-रिजर्व स्कूलों में कोम्सोमोल को वही भूमिका अदा करनी चाहिए जो वह फ़ैक्टरियों और दफ़्तरों में करता है। चूंकि कोम्सोमोल तरुणों की शिक्षा के मामले में पार्टी का सहायक है, इसलिए उसकी बहुत बड़ी भूमिका है।

शिक्षा के काम को उचित ढंग से संगठित करने के लिए कोम्सोमोल को चाहिए कि वह दोषों की आलोचना करे और इसी उद्देश्य से मांगें रक्खे। यदि कोम्सोमोल को प्रशासन में कुछ हिस्सा मिला, तो उसे उत्तरदायित्व भी निभाना पड़ेगा, जब कि उसे अपने को स्वतंत्र रखना चाहिए। कोम्सोमोल संगठन का इतना सम्मान कहीं नहीं है, जितना हमारे देश में। व्यक्तिगत तौर से उसके बारे में मेरी बहुत अच्छी राय है, लेकिन जो काम वह कर नही सकता, वह काम उसे देने की कोई वजह नहीं है।

बिना आज्ञा के विद्यार्थियों का स्कूल से चला जाना ज़ाहिर करता है कि वहां उचित व्यवस्था नहीं है। अलबत्ता, देहात से आए बच्चों को पहले-पहल मुश्किल मालूम होती है। नगर की हर चीज से वे उचटे-उचटे रहते हैं। यह मैं अपने अनुभव से कह रहा हूं। उन्हें ऐसा लगता है कि जैसे वे किसी नई दुनिया में आ गए हों। जिस आज़ादी के वे आदी होते हैं, उनकी जगह यहां अनुशासन होता है। और खुद कारख़ाने का अभ्यस्त होने में समय लगता है, काफ़ी समय लगता है। दो महीने इसके लिए काफ़ी नहीं होते और पहले तो आप हर चीज़ से मानो डरते हैं। और जब इन सबके ऊपर संगठन खराब हो, उसमें विभिन्न तरह की त्रुटियाँ हों, व्यवस्था न हो, तब तो बच्चों के लिए और भी मुश्किल होता है।

मैं समझता हूं कि नागरिक श्रम-रिज़र्व स्कूलों में शहरों के और अधिक विद्यार्थी होने चाहिए। उससे आपका काम आसान होगा। माना कि शहरों के तरुणों का एक भाग दूसरे कामों की सोचता है, जैसे दफ़्तर का काम, मुंशी मुनीम भी आदि; लेकिन उनमें से भी कुशल कारीगर भी बनाए जा सकते हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण है।

श्रम-रिज़र्व व्यवस्था से संबंधित काम की तमाम मुश्किलों का मैं समझता हूं। लेकिन जो काम आप कर रहे हैं, उसका राज्य के

लिए बहुत ही महत्व है। ज़रा एक क्षण के लिए सोचिए—हम तरुण मज़दूरों की उन टोलियों को शिक्षित कर रहे हैं, जिन पर सोवियत-व्यवस्था को मज़बूत करने का काम निर्भर करता है। हम अपनी जनता के सबसे अच्छे अंश को इस श्रेणी में लाना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि सोवियत समाज के मज़दूर-वर्ग का राजनैतिक और बौद्धिक विकास ऊंची सतह का हो।

आपके सामने एक बड़ा काम है। आपको एक बड़ा काम सौंपा गया है। यदि आप इस काम को सफलता से निभा सकें, तो आप अपने देश के हित में एक महान करिश्मा कर दिखायेंगे।

मैं आपकी सफलता की कामना करता हूं।

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा"
१५ नवंबर १९४२

महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति की पचीसवीं वर्षगांठ के अवसर पर मास्को के ट्रेड, रेलवे और औद्योगिक स्कूलों के समारोह में दिया गया भाषण

२ नवंबर १९४२

साथियो, हमारे देश में सोवियत सत्ता स्थापित हुए पचीस वर्ष बीत चुके हैं। मानव-इतिहास में इस घटना का अनोखा महत्व है। इतिहास में इस तरह की कोई घटना पहले नहीं हुई।

अक्तूबर क्रांति की पचीसवीं वर्षगांठ पर हम प्रतिक्रियावाद और शोषण से अपने देश की मेहनतकश जनता की मुक्ति का समारोह मना रहे हैं। आप पुरानी व्यवस्था के विषय में सिर्फ़ सुनी-सुनाई बातें जानते हैं या किताबों से पढ़कर जानते हैं। और इसके विषय में लोग विभिन्न बातें कह सकते हैं। यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति से मिलें, जो पहले अमीर आदमी था, तो ज़ाहिर है, वह पुरानी व्यवस्था की प्रशंसा करेगा। लेकिन यदि आप पहले के ग़रीब किसान

से मिलें, मज़दूर से मिलें, या दफ़्तर के कर्मचारी से मिलें, तो वह आपको क्रांति से पहले के ज़ारशाही रूस के समय में मज़दूरों, किसानों और शहरी ग़रीबों की दुरवस्था के विषय में बतायेगा।

हमारे यहां आज सोवियत व्यवस्था है। महान अक्तूबर क्रांति ने हमारे समाज में आमूल परिवर्तन कर दिए हैं।

सोवियत व्यवस्था के लिए संघर्ष करते हुए अनेकों युवक मिट गए। आज भी हमारे युवक अपना योग दे रहे हैं। सिर्फ़ लड़ाई के मोर्चे पर ही नहीं, बल्कि पिछवाड़े में भी, फ़ैक्टरियों और कारखानों में।

इस वर्ष हम अपनी छुट्टी उस समय मना रहे हैं, जब हम जर्मन फ़ासिस्टों के विरुद्ध कठिन संघर्ष में लगे हैं। शांति-काल में हम जब यह छुट्टी मनाते थे तो दो दिन तक जशन होता रहता था। आज हम यह छुट्टी ऐसे समय में मना रहे हैं जब हमारे अनेक साथी शत्रु के अधिकृत प्रदेश में हैं और बड़ी कठिनाइयां झेल रहे हैं। अनेक तरुण फ़ासिस्ट दानवों के हाथों मर रहे हैं। सोवियत सत्ता की पचीसवी वर्षगांठ हम इस संकटकालीन अवसर पर मना रहे हैं।

हमारे श्रम-रिज़र्व युद्ध से पहले स्थापित हुए थे। उनका विशेष महत्व इस बात में है कि वे हमारे उद्योगों को कुशल कारीगर और कामगार तैयार करके देते हैं।

एक कुशल कारीगर तैयार करना आसान काम नहीं है। इसमें दो-तीन साल लगते हैं। और अति-कुशल कारीगर बनाने में तो ३-४ साल लगते हैं। यह सारा समय ट्रेनिंग स्कूल में लगाना अत्यावश्यक नहीं है। अपना काम अच्छी तरह से सीखने के लिए एक व्यक्ति को अपनी बुनियादी कुशलता तो स्कूल में प्राप्त करनी चाहिए, और काम करते-करते उसीसे अपनी ट्रेनिंग पूर्ण करनी चाहिये।

आपको हमारी फ़ैक्टरियों और कारखानों में कुशल मज़दूरों की तरह काम करना होगा। आपमें से अनेक को यह आश्चर्य होगा कि

आपका पेशा निश्चित हो गया है। आज आप ट्रेड और औद्योगिक ट्रेनिंग स्कूलों में हैं और कल आप फ़ैक्टरी के मज़दूर बन जायेंगे। आपमें से कुछ प्रश्न कर सकते हैं कि क्या यही सब से अच्छा है? क्या किसी दफ़्तर में काम करना ज़्यादा अच्छा नहीं होगा, जहां शायद कुछ अधिक साफ़ और अधिक आसान काम है?

लेकिन क्या यह सचमुच ज्यादा अच्छा है?

मैं आपको निश्चित उत्तर देना चाहता हूं क्योंकि मैंने अपने तीस साल फ़ैक्टरियों में और अब बीस साल दफ़्तरों में गुज़ारे हैं। (हाल में खलबली) मैं इन दोनों ही तरह के कामों के विषय में कुछ कह सकता हूं। कौन अधिक अच्छा है? निस्संदेह एक फ़ैक्टरी में, कारखाने की वर्कशाप में। एक ट्रेनिंग स्कूल की वर्कशाप से बहुत बड़े डिपार्टमेंट में आना पहले-पहल कुछ भयावह मालूम होता है। पहला दौर, शुरू के एक या दो महीने का समय आपको मुश्किल मालूम होगा। लेकिन फिर, फ़ैक्टरी का वातावरण, खुद आप पर छा जायेगा। एक या दो साल के काम के बाद आपका कारख़ाने के प्रति लगाव हो जायेगा। दफ़्तर के काम का फ़ैक्टरी के काम से कोई मुक़ाबला नहीं हो सकता — यहां आपको एक आत्मसंतोष प्राप्त होता है, क्योंकि यहां आप प्रत्यक्ष अपने श्रम के फल को देख सकते हैं।

कारख़ाने में विश्वास के साथ आने के लिए एक व्यक्ति को अपने धंधे का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। जब मैं एप्रेंटिस था तो हर किसी से अच्छा काम करना चाहता था। हर आदमी अपने धंधे का माहिर होना चाहता था। यदि वह टर्नर होता, तो वह एक अच्छा टर्नर बनना चाहता था। यदि वह फ़िटर होता तो वह एक अच्छा फ़िटर बनना चाहता था। फ़ैक्टरी में काम करना एक दिलचस्प बात है। अब वह पहले से भी अधिक दिलचस्प हो गया है।

पहले हर काम हाथ से किया जाता था। वह बहुत महत्वपूर्ण था।

लेकिन आप अपने हाथों और लेथ पर कितने ही कुशल क्यों न हों, मशीनें ज़्यादा अच्छी होती हैं। पहले मशीनें बहुत थोड़ी होती थीं, लेकिन अब हमारी फ़ैक्टरियां और कारख़ाने बहुत बड़ी संख्या में मशीनों से सज्जित हैं। इससे हमारे कारख़ानों में काम और दिलचस्प हो गया है। लेकिन दूसरी ओर अधिक ज्ञान और कुशलता आवश्यक हो गई है।

अपने धंधे का अच्छा ज्ञान प्राप्त किए बिना ही स्कूल छोड़ने का अर्थ है कि आप अपने साथियों का सम्मान नहीं प्राप्त कर सकेंगे। यदि आप अपने धंधे को अच्छी तरह नहीं जानते, तो आपको किसी विशेष महत्वपूर्ण काम करने का अवसर नहीं मिलेगा। महत्वपूर्ण काम उन्हीं को सौंपा जाता है जो अच्छा काम करते हैं। इसका अर्थ यह है कि आपको अपने धंधे का ज्ञान होना चाहिए। आप में ममविदों को पढ़ सकने की योग्यता होनी चाहिए। भविष्य में आप में से अनेक ब्रिगेड-लीडर बनेंगे। आप मशीनें जोड़ेंगे या एक फ़िटर या औज़ार बनाने वाले होंगे। हर आत्मसम्मान वाले मज़दूर में ममविदों को पढ़ने की योग्यता होनी चाहिए। आपको यह स्कूल में ही सीखना चाहिए।

मशीनों का ज्ञान प्राप्त करना आपका कर्तव्य है। एक कारख़ाने में उत्पादन का काम, बड़े पैमाने पर एक बड़ा काम है। ऊपर से देखने में उसमें एकरसता होती है। लेकिन उसमें बहुत ध्यान लगाने की आवश्यकता है और मशीनों का ज्ञान भी आवश्यक है। बड़े पैमाने पर उत्पादन के काम की अपनी विशिष्टताएं होती हैं। वे क्या हैं? इस तरह के काम में चुस्ती और तेज़ी की आवश्यकता होती है। आप एक के बाद एक हिस्सा बनाते हैं। कभी-कभी एक हिस्से को बनाने में एक मिनट से अधिक नहीं लगता। इसका अर्थ है कि आपको जल्दी-जल्दी, लय के साथ काम करना सीखना है। ट्रेड स्कूल में कुछ विद्यार्थी काम

का एक हिस्सा पूरा करते है और दूसरे — दूसरा। आपको हर तरह के काम को करना सीखना चाहिए।

मे चाहूगा कि आपमे अपने पेशे के प्रति आदर ओर अभिमान जागृत हो। यदि आपके पिता अच्छे कारीगर थे, तो आपको कम से कम उनसे खराब कारीगर नही होना चाहिए।

मान लीजिए, आप एक फैक्टरी मे जाने की तैयारी कर रहे है। एक फैक्टरी का धधा सीखने का मतलब यह नही है कि भविष्य मे आप किसी दूसरे क्षेत्र मे काम नही कर सकते। एक कारखाना आगे की प्रगति मे बाधा नही बनता, उलटे वह सार्वजनिक, राजनैतिक, प्रशासन-सबधी, ओर यदि मै कहूँ तो, वैज्ञानिक काम के लिए भी रास्ता खोल देता है।

आपको अपने काम का माहिर होना चाहिए। सोवियत मजदूरो को अमरीकी या युरोपीय मजदूरो से कम नही, अपितु अधिक कुशल बनने की कोशिश करनी चाहिए। यह बात सदा ध्यान मे रखे।

पहले कम्युनिस्ट मुख्यत मजदूरो मे होते थे। तब तक कोम्सोमोल नही था। पर, उस समय भी ऐसे तरुण लोग थे, जो कम्युनिस्टो के निकट होते थे।

आपकी आयु के लोगो के लिए हमारे यहा कोम्सोमोल है। यह सगठन तरुणो को राजनैतिक शिक्षा देता है। और मै चाहूगा कि मेरे सामने बैठे हुए तमाम तरुण कोम्सोमोल के सदस्य बने। आपके बीच कुछ चुप्पे लोग हो सकते है, तो भी मै चाहता हू कि ट्रेड ओर ओद्योगिक ट्रेनिग स्कूलो के अधिकाश लोग कोम्सोमोल के सदस्य बने।

हम राजनैतिक चेतना को बहुत महत्व देते है। यह हमारा उद्देश्य है कि हमारे देश का प्रत्येक व्यक्ति राजनैतिक तोर पर जागरूक हो।

कोम्सोमोल, पार्टी की देहलीज़ है। कोम्सोमोल तरुणों को पार्टी की सदस्यता के लिए तैयार करता है, उनकी राजनैतिक चेतना जागृत करता है। यह उन्हें सार्वजनिक कार्यवाही का आदी बनाता है, क्योंकि आप समाज का अंग बनकर काम करेंगे। अपने काम के दौरान में भी आपका जनता से अलगाव नहीं होना चाहिए, लेकिन समान काम में लगेंगे। मशीनों को व्यक्ति नहीं बनाते, उनके निर्माण सैकड़ों आदमी लगते हैं।

काम खुद ही एक व्यक्ति को सार्वजनिक जीवन में हिस्सा लेने के लिए उकसाता है। मैं चाहूंगा कि आप अपना समय सिर्फ़ उत्पादन के काम में सीधे काम की मशीन पर उन चीज़ों का उत्पादन करने में ही न लगाएं जिनकी हमें आवश्यकता है, बल्कि आत्मिक विकास संगठित तरीक़े से कोम्सोमोल के वातावरण में करें। कोम्सोमोल संगठन भी इसीलिए है। वह आपके पूर्णरूपेण आत्मिक विकास में सहायक होगा।

इस समय एक निर्मम और भयंकर युद्ध चल रहा है। जर्मन फ़ासिस्ट हमारे देश के टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहते हैं, हमारी जनता को धूल में मिला देना चाहते हैं। आप लोग केवल अध्ययन ही नहीं कर रहे हैं, बल्कि अपने तरीक़े से मोर्चे के साथियों की भी सहायता कर रहे हैं। स्कूलों और फ़ैक्टरियों में आप युद्ध की आवश्यकताओं को पूरा करने में लगे हैं। यह आवश्यक है कि आप इन आर्डरों को अच्छी तरह पूरा करें।

आप मोर्चे पर नहीं हैं। लेकिन साथियो, मैं समझता हूं कि फ़ासिस्टों के विरुद्ध हमारी जनता द्वारा चलाए जाने वाले संघर्ष में आप किसी के पीछे नहीं रहेंगे। मैं समझता हूं कि तेज़ी के मामले में आप अपने बड़ों के आगे सिर नहीं झुकायेंगे, बल्कि आप तरुणों को

इस मामले में आगे होना चाहिए। आपको उत्पादन में और मोर्चे पर, दोनों में प्रथम होना चाहिए। आपको अपने से कहना चाहिए — "हम अपने पिता की ही तरह अच्छे बनेंगे। हम दिखा देंगे कि यद्यपि हम तरुण हैं, और उद्योग में नए-नए आए हैं, फिर भी हम काम करना जानते हैं।"

मैं काम में आपकी इस योग्यता की कामना करता हूं। मेरी कामना है कि भविष्य में आप यह योग्यता पूर्णतया प्रदर्शित कर सकें। (देर तक तालियां)

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा"

१२ नवंबर १९४२

मोर्चे पर आंदोलनकारी के शब्द

मोर्चे पर काम करने वाले आंदोलनका-रियों के मध्य दिये गये भाषण का अंश

२८ अप्रैल १९४३

हर आंदोलनकारी कोशिश करता है कि उसकी बातचीत दिली और मैत्रीपूर्ण हो। मैं जानता हूं कि आंदोलनकारी स्पष्टतः लोगों के पास अक्सर दिली बातचीत करने के लिए जाते हैं। और कोई आंदोलनकारी पहले से ही अपने सामने यह उद्देश्य रख ले — यही बात बातचीत की प्रत्याशित घनिष्ठता मार देती है। यदि कोई आंदोलनकारी लोगों के पास यूं ही एक कप चाय पीने के लिए पहुंच जाय और इधर-उधर की बातें शुरू कर दे, और फिर ऐसी बात करने लगे जिसमें उनकी दिलचस्पी हो, तो फिर सचमुच बातचीत में घनिष्ठता आ जायेगी।

दूसरी मिसाल। यदि किसी आदमी ने कोई अपराध किया हो और आप उसे पिदराना डांट पिलाने लगें, और कहें : "अच्छा, इसके बारे में मैं और किसी को न बताऊंगा। लेकिन याद रखो, यदि यह तुमने फिर किया तो फिर मैं बात छिपा न पाऊंगा" — यह भी एक दोस्ताना आपसी रवैया होगा।

जब मैं आपसी बातचीत कहता हूं, तो मेरे दिमाग़ में यह रहता है कि लोग किसी तरह का उलझन न महसूस करें, वे अपनी दिलचस्पी की हर चीज़ पर अपने आप बहस करें और यह न महसूस करें कि आंदोलनकारी कोई निश्चित उद्देश्य लेकर आया है। यह सभी जानते हैं कि आंदोलनकारियों पर विशिष्ट विषयों की ज़िम्मेदारी होती है। उन्हें यह भी निभानी होती है। लेकिन जिस आपसी बातचीत के विषय में हम बात कर रहे हैं, वह तो अपने आप आ जाती है।

आप की चतुराई इस में है कि लोग स्वतः आप से विचार-विमर्श करने लग जाएं।

आपसी बातचीत का यह कतई मतलब नहीं है कि वह किसी एक निश्चित दिशा की ओर मुड़ी हुई न हो। वह तो उसे होना ही चाहिए। लेकिन बातचीत इस तरह हो कि लोगों को यह महसूस न हो कि आप इसी उद्देश्य से उनके पास आए हैं।

बातचीत का स्वरूप स्वयं स्थिति पर निर्भर करता है। अगर आपके श्रोताओं की संख्या अधिक है, तो वह भाषण या सभा का रूप ले सकती है। यदि आप किसी खाई के पास पहुंच जाएं, तो उसका रूप प्रश्नों के उत्तर का हो सकता है। लेकिन यदि आप चाहते हैं कि लोगों का किसी विषय का विशेष ज्ञान हो जाए, तो आप अपने को उसी तक सीमित कर दीजिए और उनसे कह दीजिए कि आज आप सिर्फ़ इसी विषय पर बातें करेंगे और दूसरे प्रश्नों के संबंध में फिर कभी बातें होंगी।

मैं आपका ध्यान इस बात की तरफ़ अवश्य खींचना चाहता हूं कि आंदोलनकारी इस बात के प्रति सचेत रहें कि वे अपने आसपास के लोगों से अधिक जानकार या होशियार होने का प्रभाव तो नहीं डाल रहे हैं। आंदोलनकारी और प्रचारक का मेरा अनुभव कई वर्षों

का है। मैं जानता हूं कि यदि लोग यह समझ लें कि आंदोलनकारी बड़ी-बड़ी बातें करता है, अपने को उनसे अधिक होशियार समझता है, तो वह आंदोलनकारी फिर कहीं का नहीं रहता, वह लोगों का विश्वास-भाजन नहीं बन पाता। आपको लाल फ़ौज के सिपाहियों से इस तरह बातें करनी चाहिए, जैसे वे सब कुछ समझते हों। और उनमें से यदि कोई कहता है कि वह अमुक बात नहीं समझा, तो आप जवाब दे सकते हैं: "क्यों बनते हो? क्या तुम्हारी खोपड़ी में भूसा भरा है? मैं जानता हूं कि तुम इस बात को वैसे ही समझते हो जैसे कि मैं। तुम ज़रा चालाक बनने की कोशिश कर रहे हो"। लोगों की तरफ़ आपको बड़प्पन का रुख़ नहीं अपनाना चाहिए। यदि कोई सिपाही किसी के बारे में कहता है — "वह नया बछेड़ा है, कुछ नहीं जानता", तो आपको उत्तर देना चाहिए — "हम इन नए बछेड़ों को खूब जानते हैं। ज़रा ठहर जाओ, देखना कैसा बढ़िया योद्धा निकलेगा। तुम लोग तो मोर्चे पर रह चुके हो और सब कुछ जानते हो। वह भी तुम लोगों की ही तरह हो जायेगा"। यदि लोगों के प्रति आपका यह रवैया होगा, तो वे आपका आदर करेंगे।

एक आंदोलनकारी को सच्चा होना चाहिए। लोगों के सामने रंगीन तस्वीरें मत खींचिए। जैसा जो कुछ है, वैसा ही बताइए। मुश्किलों को दिखाने से डरिए नहीं, क्योंकि आप परिपक्व, समझदार लोगों के बीच में काम कर रहे हैं।

आंदोलन-संबंधी काम में सबसे मुश्किल बात उचित तरीक़े से बोलना सीखना है। सरसरी तौर से देखने में ऐसा लगता है कि बोलना कोई बड़ी बात नहीं है, क्योंकि लोग दो वर्ष की आयु से ही बातें करने लगते हैं। लेकिन गंभीरता से देखें तो यह सचमुच मुश्किल मामला है। मुश्किल क्यों है?

आंदोलनकारी को अपने विचार इतनी स्पष्टता से रखने पड़ते हैं कि लोगों पर वही प्रभाव पड़े — जैसा वह चाहता है। साथ ही आपको अपने विचार संक्षेप में व्यक्त करने हैं, क्योंकि समय अधिक नहीं होता है। आपके विचार आपके श्रोताओं की समझ में आने चाहिए। यह सब बहुत मुश्किल है।

जहां तक भाषा का संबंध है, यह आपको बड़े लेखकों की शैली से सीखनी चाहिए। तुर्गनेव को ही ले लीजिए। आपको और कहां वैसा विशद विवरण मिलेगा जैसा उसकी कृतियों में मिलता है? मान लीजिए, आप में से किसी से कहा जाय कि अपनी पत्नी के विषय में बताए। क्या यह बताने के लिए आपको सही शब्द मिलेंगे? हर आदमी यह नहीं कर सकता — चाहे वह अपने निकट के लोगों को कितनी ही अच्छी तरह क्यों न जानता हो। वह आम शब्दों का प्रयोग करेगा। लेकिन एक आंदोलनकारी से इससे कहीं अधिक आशा की जाती है। उसे रंगीन विवरण प्रस्तुत करने में भी पटु होना चाहिए।

एक आंदोलनकारी के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण वस्तु भाषा है। आप लोगों से उन्ही विषयों पर बातें करते हैं, जिन्हें वे जानते हैं। फलतः वे इन बातों में दिलचस्पी तभी लेंगे जब आप उनसे स्पष्ट और अच्छी तरह बातें कर सकें। मैं "लच्छेदार" भाषा नहीं कहता, क्योंकि कुछ लोग शब्दों में बह जाते हैं। वे सोचते हैं कि यह बहुत अच्छा लगता होगा, जबकि गढ़ी हुई शब्दावली बहुत बुरी लगती है। मैं ऐसे आंदोलनकारियों को जानता हूं जो एक-बारगी तीन घंटे तक बोलते रह सकते हैं। लेकिन वे जब बोलना बंद कर देते हैं, तो श्रोताओं के पास कुछ नहीं रह जाता, सिवा कुछ उद्‌गारों के, क्योंकि उनके भाषणों में कोई विचार ही न थे। याद रखिए कि आप सिपाहियों में भाषण दे रहे हैं — सीधे सादे आदमी, जो लड़ते हुए हज़ा-

रों मील बढ़ आए हैं, जिन्होंने दर्दनाक दृश्य देखे हैं। उनको रंगीन भाषा सुनाने का अर्थ है उनके गले पर छुरी चलाना। वे चाहते हैं कि आंदोलनकारी स्पष्ट रूप से और सक्षेप में निश्चित विचार प्रकट करे। और हां, अच्छे विचारों को दोहराने से कुछ हानि नहीं होती। मिसाल के तौर पर, यदि कोई कहता है कि "आप वार-बार खोदने ही वाली बात क्यों दोहराते रहते हैं?", तो आप चिंता मत कीजिए। उत्तर यह दीजिए: "मैं इस विषय पर तब तक बातें करता रहूंगा, जब तक सब खोदना जान न जाएं। मैं चाहता हूँ कि आप व्यर्थ में ही अपने प्राण न खोयें"।

एक आंदोलनकारी को परिपक्व व्यक्ति होना चाहिए। उसको बहुत अधिक स्वाध्याय करना चाहिए। मैं तो यहां तक कहूंगा कि आंदोलनकारी को अपना तमाम बचा हुआ समय पढ़ने में लगाना चाहिए।

एक आंदोलनकारी को हमेशा अपना भाषण तैयार करना चाहिए—चाहे वह कितना ही पढ़ा-लिखा और फ़ौजी मामलों का माहिर क्यों न हो। आख़िर, हमारा ज्ञान तो सीमित है, और इसी कारण यह आवश्यक है कि हर बार अच्छी तैयारी की जाए। अपने ज्ञान का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। इसीलिए मैं विशिष्ट विषयों पर भाषणों के पक्ष में हूँ, क्योंकि उनसे लोगों का ज्ञान-वर्द्धन होता है। लेकिन जब आप यह महसूस करें कि लोगों को विभिन्न विषयों पर काफ़ी भाषण दिए जा चुके हैं और वे सीधी-सादी बातें सुननी ज्यादा पसंद करेंगे, तो जाइए, उनके साथ एक कप चाय पीजिए और आपसी तौर पर दिल खोलकर बात कीजिए।

आपको आपसी बातचीत के लिए भी तैयारी करके जाना चाहिए, क्योंकि हो सकता है कि आप से बहुत से सवाल किये जाएं।

जवाब देने में टालमटोल मत कीजिए। लेकिन यदि किसी प्रश्न का आप उत्तर नहीं दे सकते, तो डरिए भी नहीं। स्पष्ट कह दीजिए: "मैं नहीं जानता। मुझे इस विषय पर पढ़ना पड़ेगा। यदि मुझे उत्तर मिल जायेगा, तो मै आपको अवश्य बताऊंगा"।

कभी-कभी यह समस्या सामने आती है: "हमारे सिपाहियों में, विशेषकर बूढ़ों में धार्मिक विचारों के लोग हैं, जो क्रॉस पहनते हैं और प्रार्थना करते है, मगर तरुण उनका मजाक उड़ाते है"। हमें यह भूलना न चाहिए कि किसी को हम उसके धर्म के कारण नहीं सताते। धर्म को हम एक धोखे की टट्टी मानते है और उसके खिलाफ़ केवल शिक्षात्मक तरीक़ों से संघर्ष करते हैं। चूकि जनता का काफ़ी बड़ा हिस्सा अब भी धर्म के प्रभाव में है, इसलिए उसका मज़ाक उड़ा कर आप उसे दूर नही कर सकते। अलबत्ता, यदि कुछ युवक उस पर हस देते हैं, तो यह कोई बड़ी भयंकर बात नही है। मुख्य बात यह है कि कही इस मज़ाक में आघात न पहुंचे। इस की इजाज़त नहीं देनी चाहिए।

आंदोलनकर्त्ताओं को इस समय किस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए?

उन्हें सगठन की आवश्यकता को अधिक महत्व देना चाहिए। यह किस तरह करना चाहिए? एक मिसाल ले लीजिए: दोपहर का समय है, फील्ड-किचन कहीं नहीं दिखाई पड़ रहा है और उसकी ढूंढ़ जारी है। अगर आप ऐसी स्थिति में पड़ जाएं तो आपको संगठन पर बातचीत करने के लिए बना-बनाया विषय मिल जाता है। इस पर बात कीजिए कि समय पर फील्ड-किचन पा सकने के लिए क्या क़दम उठाए जाए, और यह कैसे किया जाए। इस तरह की बातचीत के समय रूसी ढीले-ढालेपन के ख़िलाफ़ कुछ कड़ी भाषा का प्रयोग करने

से हानि नहीं होगी। यदि मैं आंदोलनकारी होता तो मैं अपने भाषण का ९० फ़ीसदी समय इसी पर लगाता।

आत्मतुष्टि हमारी मुख्य त्रुटि है। हम अक्सर अब भी लापरवाही करते हैं और अपने आप को समझा लेते हैं: "कोई चिंता नहीं समय आने पर हम किसी न किसी तरह निभा ही लेंगे"। यह सभी जानते हैं कि जब कोई यूनिट किसी स्थान पर अधिकार कर लेती है, तो उसे अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए अधिक से अधिक प्रयत्न करने पड़ते हैं। और हमलावर कार्यवाही को प्रभावशाली बनाने के लिए सब कुछ करना चाहिए और ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये जिससे हानि तथा बलिदान कम से कम मात्रा तक सीमित हो। अक्सर हम ये चीज़ें हड़बड़ाहट में करते हैं और फलत: नतीजे अच्छे नहीं होते। आत्मतुष्टि को जड़ से ख़तम कर देना चाहिए।

युद्ध के पहले दौर में हमें अनेक मुश्किलों का सामना करना पड़ा, क्योंकि हमने उचित संगठन नहीं किया था। हर फ़ौजी आदमी को अव्वल दर्जे का संगठन-कर्ता होना चाहिए। पहले बहुत से कमांडर समझते थे कि उनके कमांड का स्थान वही है, जहां लड़ाई का संगठन करना है। तो भी वह ऐसी जगह है जहां संगठन की अंतिम मंजिल होती है। एक लड़ाई के दौरान में जब कमांडर अपनी कमांड की जगह पर पहुंचना है, तब तो वह अपनी तैयारी के किए गए कामों की फ़सल काटता है।

मैं समझता हूं कि सिपाहियों को होशियार रहने की शिक्षा देना बहुत ही आवश्यक है। मोर्चे पर, खुले में खाना खाने बैठ जाने से काम नहीं चलेगा। वहां एक गोला गिर सकता है, जिसके भयंकर नतीजे हो सकते हैं। आदमी मारे जायेंगे और उनकी जगह दूसरे भेजने पड़ेंगे। आप लोगों को चाहिए कि ख़तरे के प्रति लापरवाह दृष्टिकोण रखनेवालों के ख़िलाफ़ बहुत ही ज़ोरदार आवाज़ उठाएं।

आपको लोगों में फ़ौजी चुस्ती और चतुरता विकसित करने के लिए भी आंदोलन करना चाहिए। मैं "चतुरता" शब्द पर ज़ोर देता हूं, क्योंकि आपको साधारण लाल फ़ौजियों के बीच काम करना है, जिनकी कार्यवाही का क्षेत्र सीमित होता है। आपको चाहिए कि आप लोगों पर यह प्रभाव डालें कि वे अपनी कार्यवाहियों पर विचार करें, हर चीज़ को जितना संभव हो उतनी अच्छी तरह करें, और जब भी हो सके, शत्रु को दांव दे जाएं। चलते-चलते यह बता दूं कि चांदमारी अच्छी चीज़ है क्योंकि, वह लोगों को अपने कामों पर विचार करने का आदी बनाती है उनमें एक शिकारी के गुण विकसित करती है। निशानेबाज़ अपने शत्रु को मारने की कोशिश करता है और शत्रु निशानेबाज़ को। इसीलिए निशानेबाज़ में अधिक से अधिक चुस्ती होनी चाहिए। उसकी आंखें तेज़ और हाथ दृढ़ होने चाहिएं। ये गुण न सिर्फ़ हमारे निशानेबाज़ों में, बल्कि सभी लड़नेवालों में भी विकसित होने चाहिएं।

लोगों को खाई खोदना सिखाने की तरफ़ ध्यान दीजिए। कभी-कभी हमारे लाग इस काम के प्रति टालमटोल दिखाते हैं, विशेषकर हमले के समय। वे कहते हैं: "यह देखते हुए कि आध घंटे में हमें इनकी ज़रूरत नहीं रह जायेगी, खाइयां क्यों खोदी जाएं?" आप उन पर यह प्रभाव डालिए कि यह काम हमेशा ही आवश्यक है। और यदि खाई की आवश्यकता नहीं भी है, तो उनके लिये यह आवश्यक शिक्षा है।

मैं चाहता हूं कि घायलों के प्रति भी और अधिक ध्यान दिया जाय। घायल संवेदना के दो प्रिय शब्द चाहते हैं। आप अपनी भल-मनसी इस प्रकार प्रदर्शित कर सकते हैं। एक घायल सिपाही सदा ही मीठे शब्द याद रखेगा और उनके विषय में हज़ार विभिन्न

स्थानों पर बात करेगा। इस तरह एक सहानुभूति का शब्द दूर-दूर तक प्रतिध्वनित होगा।

लाल फ़ौज के मृत व्यक्तियों का हमें सम्मान करना चाहिए। मृत व्यक्तियों के प्रति प्राय: लोगों का क्या रवैया होता है? जब कोई मर जाता है, तो उसके आसपास लोग फुसफुसा कर बोलते हैं। मृत व्यक्ति के प्रति उचित सम्मान का प्रदर्शन होना चाहिए और आप लोगों को यह शुरू करना चाहिए। मैंने सोवियतों की कार्यकारिणी कमेटियों के अध्यक्षों को लिख भेजा है कि वे सार्वजनिक क़ब्रस्तानों को ठीक करा दें और यह काम तरुण पायोनीयरों को सौंपा जाना चाहिए। अपनी यूनिटों में आपको इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि अंत्येष्टि-क्रिया उचित रूप से हो और क़ब्रों पर चबूतरे बनाए जाएं। अलबत्ता, जब फ़ौज आगे बढ़ रही हो, तो यह हमेशा संभव नहीं है। लेकिन निश्चय ही, पिछड़ी टुकड़ी में भी आंदोलनकारी होंगे। आंदोलनकारियों के नाते आपको यह देखना है कि लाल फौजियों में अंत्येष्टि-क्रिया गंभीर समारोह का रूप ले। इससे लोगों में स्वदेश के रक्षकों के प्रति स्नेह भरेगा।

आंदोलनकारी को सदा ही जनता से आगे रहना चाहिए, जिससे वह उसके नेतृत्व को मानें। कार्यवाही के दौरान में आंदोलनकारी की भूमिका विशेषत: महान होती है। कभी-कभी ऐसा होता है कि एक अच्छी यूनिट भी करारी हार के बाद अपनी शक्ति में विश्वास खो देती है। ऐसे अवसरों पर आंदोलनकारी ही उन्हें उत्साहित कर सकता है और लड़ाई की प्रगति में मोड़ ला सकता है।

आंदोलनकर्ता को सदा वस्तु-स्थिति से परिचित होना चाहिए। उसे मालूम होना चाहिए कि वह किस तरह के लोगों में काम कर

रहा है। आप लोग योद्धाओं के बीच, अनुशासित लोगों के बीच काम करते हैं। लेकिन उन पर बहुत बोझ है, यह याद रखना चाहिए। साथ ही यह भी याद रखना चाहिए कि वे भिन्न-भिन्न जाति, भिन्न-भिन्न आयु और भिन्न-भिन्न चरित्र के व्यक्ति हैं। एक आदोलनकर्ता को यह सब बातें ध्यान में रखनी चाहिए।

"मोर्चे पर आंदोलनकारी के शब्द",
पृष्ठ १५—२४ सुरक्षा-जन-कमिसरियट का
प्रकाशन गृह १९४३

बोल्शेविक पार्टी का साहसी सहायक

अखिल-संघीय लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग की पचीसवीं वर्षगांठ पर

अक्तूबर १९४३

कोम्सोमोल और उसके साथ ही सोवियत संघ के तमाम तरुण कोम्सोमोल के जन्म की पचीसवीं वर्षगांठ मना रहे हैं। नौजवान-लीग ने एक शानदार रास्ता तै किया है। हमारे कोम्सोमोल ने देश की महान सेवायें की हैं। सोवियत व्यवस्था के लिए संघर्ष के दौरान में जन्म लेकर पार्टी के आह्वान पर कोम्सोमोल पुरानी पीढ़ी से कंधे से कंधा मिलाकर नवजात सोवियत प्रजातंत्रों की रक्षा के लिए व्हाइट-गार्डों और दखलंदाज़ करनेवालों के विरुद्ध लड़ चुका है।

इन २५ वर्षों में नौजवान-लीग को अच्छी ट्रेनिंग मिली है। कोम्सोमोल ने राज्य के सभी क्षेत्रों—आर्थिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक—में स्थायी अधिकार प्राप्त कर लिए हैं। जहां कहीं भी युवा-शक्ति, तरुण-उत्साह, एवं आत्मबलिदान की आवश्यकता पड़ी, कोम्सो-मोल के सदस्य सदैव ही आगे रहे। गृह-युद्ध के बाद आर्थिक पुनर्स्था-पना में, विशेषकर उराल क्षेत्र के औद्योगीकरण में कोम्सोमोल और तरुणों ने जो ज़ोरदार भाग लिया, उसकी याद दिलाना काफ़ी है।

मागनितोगोर्स्क लोहा और इस्पात के कारखानों, कोयला की खानों, विद्युत-शक्ति-केन्द्रों के कार्यों में, कोम्सोमोल के लाखों मेंबरों और अन्य तरुणों ने निस्वार्थ भाव से हाथ बटाया। यह उन्हीं के हाथ थे, जिन्हों ने स्तालिनग्राद और खारकोव के ट्रैक्टर के कारखानों और द्नीपर नदी के पन-बिजली घर का निर्माण किया। और अपने महान कामों की गाथा के रूप में उन्होंने ही आमूर नदी के तट पर अजेय जंगलों के बीच एक सूने स्थान पर अपने ही नाम पर एक नगर बसाया--कोम्सोमोल्स्क। यह सुदूर-पूर्व का काफ़ी महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र बन गया है जिसका महत्व दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है।

खेती के सामूहीकरण में भी कोम्सोमोल की सेवायें उतनी ही महान हैं। देहातों में कोम्सोमोल संगठन ने पार्टी-नीति का सच्चाई से प्रचार किया है। सामूहिक खेती व्यवस्था को दृढ़ बनाने में कोम्सोमोल पार्टी का साहसी सहायक था।

हमारे देश की सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने में भी कोम्सोमोल ने काफ़ी हाथ बंटाया है। जहाज़ी और हवाई बेड़ों पर कोम्सोमोल की टुकड़ियों का तैनात कोम्सोमोल के इतिहास में गोरवपूर्ण बात है। कोम्सोमोल के हज़ारों सदस्य जहाज़ी बेड़े में भरती हुए, जहाज़ी स्कूलों में भरती हुए। इस प्रकार युद्ध शुरू होते-होते हमारा जहाज़ी बेड़ा एक शक्तिशाली ताक़त बन चुका था। ओदेसा, सेवस्तोपोल, लेनिनग्राद के वीर नाविकों की सारी दुनिया तारीफ़ कर रही है। हमारी जनता इन वीर नाविकों के करिश्मों को हमेशा याद रखेगी।

हमारा हवाई बेड़ा बिल्कुल नीचे से निर्मित हुआ। और इसके निर्माण में कोम्सोमोल ने कम हिस्सा नहीं लिया है। मैं तो कहूंगा कि इसके निर्माण में कोम्सोमोल का हिस्सा जहाज़ी बेड़े के निर्माण से अधिक है। वर्तमान युद्ध में हमारी जनता और विशेषतः कोम्सो-मोल के प्रयत्नों का बहुत अच्छा नतीजा निकला है। कोम्सोमोल के

सदस्य जो दो-दो बार "सोवियत संघ के वीर" की उपाधि से विभूषित हो चुके हैं—जैसे अलेक्सान्द्र मोलोद्‌ची, बोरिस सफ़ोनोव, दिमित्री ग्लिन्का, वसीली ज़ैत्सेव, मिखाइल बोन्दारेन्को और वसीली एफ़्रेमोव; सोवियत संघ के वीर—जैसे निकोलाई गस्तेलो, विक्तोर तलालिखिन, प्योत्र खारीतोनोव, स्तेपन ज्दोरोव्त्सेव, मिखाइल ज़ूकोव—और बहुत से ऐसे दूसरे नाम हवाबाज़ों की आनेवाली पीढ़ियों के लिए आदर्श बने रहेंगे।

इस तरह इन पचीस बरसों में कोम्सोमोल ने, जिसका जन्म व्हाइट-गार्डों और दख़लंदाज़ों के विरुद्ध संघर्ष में हुआ था, आत्मबलिदान करके भी उद्योगों को पुनर्स्थापित तथा विकसित करने के लिए काम किया, देहातों में सामूहिक खेती व्यवस्था की स्थापना में सहायता की। विश्वविद्यालयों, इंस्टीट्यूटों, और फ़ैक्टरी प्रयोगशालाओं तथा प्रायोगिक फ़ार्मों पर सफलता से विज्ञानों का पांडित्य हासिल किया और इस तरह राज्य की सुरक्षा-शक्ति को सुदृढ़ बनाया। निर्माण कार्य पूरी तेज़ी से चला। शांतिपूर्ण श्रम और रचनात्मक वैज्ञानिक कामों के लिए कोम्सोमोल और दूसरे तरुणों के सामने असीम अवसर आ गए।

* * *

हिटलरी जर्मनी द्वारा हमारे ऊपर लादे गए युद्ध ने सोवियत जनता के शांतिपूर्ण रचनात्मक कार्यों का अंत कर दिया। कोम्सोमोल और हमारे तरुणों के लिए बहुत ही कठिन दिन सामने आ गए। सोवियत समाजवादी प्रजातन्त्र संघ की सब जनता की रक्षा परमावश्यक हो गई।

एक राष्ट्र के लिए—उसकी राज्य व्यवस्था, उसकी नीति और नेतृत्व के लिए—युद्ध एक बहुत ही कठिन परीक्षा है। यही बात

किसी भी सार्वजनिक संस्था के लिए विशेषत: कोम्सोमोल के लिए भी कही जा सकती है। युद्ध के पहले, हमारे विकसित होते हुए निर्माण-कार्यों के प्रभाव से, हमारी आर्थिक और सांस्कृतिक सफलताओं के कारण कोम्सोमोल के सदस्यों और अनेक सोवियत-वासियों में आम तौर पर शांति-काल के रुझानात घर कर गए थे। युद्ध-काल में कोम्सो-मोल के सामने नए काम आए। यह कहने की आवश्यकता नही है कि शान्ति-काल की आदतों से छुटकारा पाना आसान नहीं होता है। विशेषकर जब यह सोचें कि कोम्सोमोल के सदस्यों की संख्या लाखों-लाख है। तो भी, यह कोम्सोमोल की प्रतिष्ठा के लिए कहा जा सकता है कि वह इस काम में संतोषजनक सफलता प्राप्त कर सका है।

"सब कुछ युद्ध के लिए"—कितना सीधा और विशद नारा यह है। कोम्सोमोल के सदस्यों और दूसरे तरुणें ने इसे बड़े उत्साह से अपनाया। लेकिन जिसकी अभी भी आवश्यकता है, वह है निश्चित अमली कामों में तरुण-शक्ति का संगठनात्मक उपयोग। इस राह की बहुत बड़ी मुश्किलें थीं। वे अब भी मौजूद हैं।

तरुण तो अब जीवन पा रहे हैं। लेकिन युद्ध जनता से सभी कुछ की मांग करता है—उनके प्राण तक की। लाखों-लाख लोगों को यह बात उचित रूप से समझानी है कि युद्ध बेजा तौर पर हमारे ऊपर थोपा गया है और अब इससे बचा नहीं जा सकता, और यह कि इस में भाग लेना पवित्र काम है। कोम्सोमोल संगठन ने इस दिशा में बहुत कुछ किया है और कर रहा है।

यह स्वाभाविक था कि कोम्सोमोल के सामने अन्य सोवियत संगठनों की भांति ही सर्वोपरि महत्व का प्रश्न यह था कि वह कहां और कैसे अपनी शक्तियों का इस्तेमाल स्वदेश रक्षा के लिए करे। कोम्सोमोल की परम्पराओं के प्रति वफ़ादार हज़ारों-हज़ार कोम्सोमोल के सदस्य—युवक और युवतियां स्वेच्छा से फ़ौज में भरती हुए तथा

जर्मन-अधिकृत क्षेत्रों में पर्तिज़न दस्तों में शामिल हुए। मोर्चे के प्रति विशेष आकर्षण—कोम्सोमोल सदस्यों की यह विशेषता आज भी बनी हुई है।

मुश्किलों और ख़तरों से हमारे तरुण घबड़ाते नहीं, उल्टे इन तरुणों को आकर्षित और उत्साहित करते हैं कि वे अपना जौहर दिखायें। हमारे सोवियत तरुण, जो युद्ध के मोर्चों पर बहादुरी से लड़ रहे हैं, न सिर्फ़ कोम्सोमोल के गौरवपूर्ण इतिहास का निर्माण कर रहे हैं, बल्कि सोवियत जनता की देशभक्ति और आत्मबलिदान का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

युद्ध निर्मम और जनता के लिए भार स्वरूप होते हैं। घृणित जर्मन फ़ासिस्टों ने विशेषतः इस युद्ध को दानवी स्वरूप दे दिया है। अधिकृत प्रदेशों की जनता पर होने वाले अमानुषिक अत्याचार की कल्पना कीजिए, बूढ़ों और बच्चों का कत्लेआम, घायल और बीमारों को पीड़ा पहुंचाने की कार्यवाहियां, माताओं का उनके दुधमुंहों से विलग किया जाना, उन्हें बाध्य श्रम के लिए फ़ासिस्ट जर्मनी भेज देना, कोड़े लगाना, लोगों को गोलियों से उड़ाना, फांसियों पर लटकाना—जर्मन फ़ौजी हैड-क्वार्टर ने यह सब पहले ही निश्चय कर लिया था। ऐसे आतंक से जर्मन फ़ासिस्टों ने सोचा था कि वे हमारी जनता की रीढ़ तोड़ देंगे और उन्हें ग़ुलाम बना सकेंगे।

सोवियत जनता, सोवियत फ़ौज और विशेषतः सोवियत तरुण, जिनका लालन-पालन ऊंचे आदर्शों पर हुआ है, पहले तो जर्मन फ़ासि-स्टों की इस कूटनीति को समझ ही नहीं पाये।

आज का युद्ध लड़नेवालों पर बड़ा मानसिक प्रभाव डालता है। पर मुख्य बात यह है कि वर्तमान युद्ध शस्त्रास्त्रों के प्रयोग में विशेष प्रवीणता की मांग करता है। अंततः शारीरिक दृढ़ता और फुर्ती तो चाहिए ही। जर्मन लुटेरों के ख़िलाफ़ इस संघर्ष में हम देख रहे हैं

कि किस तरह हमारे वीर सैनिक जीजान से लड़ रहे हैं—पैदल सिपाही, हवाबाज़, टैंकची, तोपची, घुड़सवार, नाविक, हवाई फ़ौज के सिपाही आदि। कोम्सोमोल को इस बात पर गर्व होना चाहिए कि ५०० से अधिक योद्धा जिन्हें "सोवियत संघ के वीर" की उपाधि मिली है, और हज़ारों अन्य सैनिक जिन्हें पदक और तमग़े मिले हैं, वे भी कोम्सोमोल के उच्च आदर्शों में पले हैं।

यह बात निर्विरोध कही जा सकती है कि मोर्चे पर तरुणों द्वारा प्रदर्शित शौर्य का जन-स्वरूप है। यदि एक आदमी शौर्य का कोई करिश्मा करता है, तो बीसियों और सैकड़ों उसके पदचिह्नों पर चलते है। इवान स्मोल्याकोव, लुदमिला पावलिचेंको, नताल्या कोवशोवा, दिमित्री ओस्तापेंको, मरिया पोलीवनोवा, कुर्बन दुर्दा, इवान सिवकोव, मशीनगनर नीना ओनिलोवा, जो ओदेसा के बुनाई के कारख़ाने में काम करती थी, और अन्य नागरिक सोवियत वीरता के प्रतीक बन गए हैं। हमारे लाखों लड़ाकू योद्धा उन्ही की तरह बनने की कोशिश कर रहे हैं। कितने ही वीरों ने कोम्सोमोल के सदस्य हवाबाज गस्तेलो, पैदल सिपाही मत्रोसोव, पनफिलोव डिवीजन के रक्षक मुसाबेक सेंगिरबईव और दूसरों ने लाजवाब बहादुरी को दोहराया है!

अब वीरों को उस नये दल की बात सुने, जिसने नीपर को पार किया इन में भी काफ़ी कोम्सोमोल के सदस्य हैं। इस महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के इतिहास में नीपर के पार करने से एक गौरवपूर्ण पृष्ठ बढ़ गया है।

कोम्सोमोल के सदस्य बहुत बड़े पैमाने पर पर्तिजन आंदोलन में शामिल हो रहे हैं। जर्मन फ़ौजी कमांड ने इसे आतंक की सहायता से दबा देने की दुराशा की थी। लेकिन शत्रु की क्रूरता जितनी ही बढ़ती गई, पर्तिज़न आंदोलन उतना ही मज़बूत होता गया। और अब

समय-समय पर जर्मन आक्रमणकारी गुर्राते हैं कि "रूसी लोग युद्ध के नियमों के अनुसार नहीं लड़ रहे हैं"। हां, पर्तिज़न आंदोलन हमारे नगरों और गांवों के विनाश का जनता द्वारा बदला है। पर्तिज़न आंदोलन सोवियत जनता पर किये गये अत्याचारों, मार-काट, लूट-पाट का बदला है। जर्मन लुटेरे चाहे जितना गुर्रायें—अव उन्हें ईंट का जवाब पत्थर से मिल रहा है।

वर्तमान युद्ध में पर्तिज़नों के महत्व को अधिक करके आंकना मुश्किल है। लेकिन एक बात निश्चित है कि वह सभी की आशाओं से अधिक फैल गया है। सोवियत पर्तिज़नों की कार्यवाहियों के कारण हज़ारों-लाखों जर्मन अफ़सरों और सिपाहियों का नाश हो चुका है। हज़ारों इंजन, फ़ौजें और लड़ाई का सामान ले जानेवाले हज़ारों रेल के डिब्बे उलट दिए गए हैं। टेलीफ़ोन और टेलीग्राफ़ के साधनों, कमांड की चौकियों आदि का पर्तिज़नों द्वारा विनाश—इस सबने जर्मनों के पिछवाड़े को अविश्वसनीय बना दिया है और जर्मन फ़ौज के आवागमन के साधनों को असंगठित कर दिया है। मुख्य बात यह है कि पर्तिज़न अपनी कार्यवाहियों से जनता को दुश्मन का प्रतिरोध करने के लिए उत्साहित कर रहे हैं और फ़ासिस्ट हमलावरों पर निश्चित विजय का विश्वास जनता में भर रहे हैं।

पर्तिज़नों ने महान सफलताएं प्राप्त की हैं। उनका संघर्ष भी कठोर है। हर समय ख़तरा उनके सर पर झूलता रहता है। पर्तिज़नों से पर्तिज़न संघर्ष उनके दैनिक जीवन और लड़ाई दोनों ही में कठिन मांग करता है। युद्ध की इन कठिन परिस्थितियों में से गुज़र कर कोम्सोमोल पर्तिज़न अपनी कठिनाइयों पर न सिर्फ़ विजय करके बाहर निकले हैं, बल्कि जर्मन लुटेरों, हत्यारों और औरतों की इज्जत लूटने-वालों से मातृभूमि की मुक्ति के लिए निडर और अथक योद्धाओं के रूप में सामने आए हैं।

जर्मन युद्ध-पंक्तियों के पीछे हज़ारों कोम्सोमोल के सदस्य बहुत ही कठिन परिस्थितियों में गुप्त संघर्ष चला रहे हैं। वे स्थानीय जनता को अधिकार करनेवाली जर्मन शक्तियों के खिलाफ़ संघर्ष करने के लिए संगठित कर रहे हैं। अपने जीवन की बाज़ी लगाकर वे युवकों का संगठन कर रहे हैं। बातचीत द्वारा सुनी और देखी चीज़ों का बयान करके, "अफ़वाहें" फैला कर, अख़बार और पर्चे बांटकर, और अन्य दूसरे तरीक़ों से कोम्सोमोल के सदस्य जनता तक सत्य पहुंचाते हैं, उनमें लाल फ़ौज की आनेवाली जीत के प्रति विश्वास भरते हैं और झूठे फ़ासिस्ट प्रचार का भंडा फोड़ करते हैं।

हमारी जनता को अपने इन सबसे अच्छे बेटों पर गर्व है। उन पर्तिज़नों में, जिन्हें "सोवियत संघ का वीर" की उपाधि से विभूषित किया गया है, बाईस कोम्सोमोल के सदस्य हैं। इसके अलावा हज़ारों नौजवान पर्तिज़नों को आर्डर या तमग़े मिले हैं। लीज़ा चैकिना, साशा चेकालीन, ज़ोया कोस्मोदेम्यान्स्काया, अन्तोनीना पेत्रोवा, फ़िलिप स्त्रेलेत्स, व्लादीमिर कूरीलेंको, मिखाईल सिलनित्स्की, व्लादीमिर रिया-बोक, इग्नातोव-बंधु और अन्य सोवियत संघ के कोम्सोमोल वीरों के नाम समूची जनता जानती है और प्यार से उनको याद करती है। इन अमर वीरों को पर्तिज़न संघर्ष के इतिहास में, और इस तरह महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के इतिहास में विशेष स्थान प्राप्त होगा। स्वदेश के लिए सर्वोच्च लगन और महान सेवा के आदर्शों के लिए नयी पीढ़ियों के लिए ये नाम मिसाल बन जायेंगे।

हिटलरवादियों ने उस पर हमला किया, जिसे सोवियत तरुण सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं—अपनी आज़ादी, अपने उच्च सिद्धांत, सोवियत संस्कृति की तमाम आत्मिक और भौतिक शक्ति का खज़ाना, जो तरुणों का जन्मसिद्ध अधिकार है। इसीलिए, अपने भविष्य के लिए हमारे तरुण मौत से खेल रहे हैं। हर व्यक्ति उस उल्लेखनीय बात

को जानता है कि वोरोशीलोवग्राद क्षेत्र के क्रास्नोदोन नगर में "यग-गार्ड" (तरुण रक्षक) कोम्सोमोल सगठन की स्थापना हुई है। "यग-गार्ड" सगठन के ओलेग कोशेवोई, इवान जेम्नुखोव, सेर्गेई त्युलेनिन, उल्याना ग्रोमोवा, ल्युबोव शेव्त्सोवा और दूसरे सदस्यों ने आतक के वावजूद बर्बर जर्मनों के आगे झुकने से इनकार कर दिया। और आजादीपसद सोवियत जनता के तमाम उत्साह के साथ, अपनी शक्ति से परे लगनेवाले कठिन सघर्ष को हाथ मे लिया।

फासिस्ट लुटेरे सोवियत जनता को बेइज्जत और पददलित करना चाहते थे, वे उनके दिलों मे आतक और भय भर देना चाहते थे। लेकिन वे असफल हुए। हमने अपने बीच जनता की, सोवियत देश की उच्च और ईमानदारी से सेवा करने वालो की अमर मिसाले देखी है।

कोम्सोमोल द्वारा हमारे पिछवाड़े-उद्योग, कृषि और मोर्चे की जरूरत पूरी करने वाले दुसरे क्षेत्रों में किये जाने वाले काम का बड़ा महत्व है। अनेक कारखानों में वहुमत तरुण और तरुणिया ही अधिकतर है। और हमारे उद्योग, औद्योगिक ट्रेनिग स्कूलों मे लगातार आनेवाले मजदूरों की टुकडियों द्वारा जीवित रखे जा रहे है; ये ही स्कूल ट्रेनिग देने के साथ ही काफी युद्ध के आर्डरों को भी पूरा कर रहे है।

यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि कोम्सोमोल के तमाम सदस्य और आम तौर पर सभी तरुण, अपनी तमाम शक्ति और योग्यता मोर्चे के लिए लगा रहे हैं और अपनी पहल तथा रचनात्मक उत्साह का प्रदर्शन कर रहे हैं।

अपने उद्योग की प्रभावात्मकता का अनुमान जर्मन उद्योग से मुकाबला करके लगाया जा सकता है। हिटलरी जर्मनी ने समचे युरोप को लूटा और लाखों मजदूरों को अपने देश में बाध्य श्रम के लिए

भेजा। तो भी, जर्मन कारखानेदार सदा ही श्रमिकों की — विशेषतः कुशल श्रमिकों की — कमी का रोना रोते रहते हैं। श्रमिकों का क्या हो रहा है? जर्मन कारखानों में अमानुषिक श्रम-शोषण, पिटाई, भुखमरी और रोगों के कारण मज़दूर, विशेषकर विदेशी मज़दूर बहुत मर रहे हैं। मानव-शक्ति का जिस तरह विनाश किया जा रहा है, उससे फ़ासिस्ट जर्मनी दानव मिनोतार की तरह हो गया है, एक यूनानी दंतकथा के अनुसार, जिसके पास युवक और युवतियां फेंक दी जाती थी और वह उन्हें खा डालता था। मिनोतार की तरह ही हिटलर भी अपने सहयोगियों और दासों से लगातार बढ़ती जाने वाली भेंटों की मांग कर रहा है।

हमारे इंजीनियरों और टेकनीशियनों को जिनमें तरुण इंजीनियर भी शामिल हैं, टेकनिकल प्रक्रियाओं को सुधारने, मज़दूरों के श्रम को हलका करने की निरंतर चिंता है। फलतः हमारे उद्योगों का उत्पादन परिमाण और गुण — दोनों के लिहाज़ से ऊंची सतह पर है। इसका मतलब यह हुआ कि बाध्य श्रम वाले जर्मन देश के मुक़ाबले हमारी स्वतंत्र, और देशभक्त जनता की उत्पादन-शक्ति कई गुना अधिक है। जर्मन एकाधिपतियों के मुनाफ़े बहुत बढ़ गए हैं, और जहां तक उनका संबंध है, यही मुख्य बात है।

हमारी खेती का मुख्य आधार भी युवक-युवतियां हैं। हज़ारों सामूहिक खेती वाले गांवों में वे ही अगुआ हैं। इस क्षेत्र में भी, खेतिहर उत्पादन को गिरने से रोकने के लिए कोम्सोमोल ने बहुत कुछ किया है। अनेक प्रदेशों में, विशेषकर केन्द्रीय प्रदेशों में, जब से युद्ध शुरू हुआ है तब से फ़सलें काफ़ी बढ़ गई हैं। हमारी नारियों ने भी इस क्षेत्र में स्वदेश की महान सेवा की है। पुरुषों के मोर्चे पर चले जाने के बाद ट्रैक्टर ड्राइवरों, कम्बाइन आपरेटरों और दूसरी श्रेणी के मज़दूरों की ट्रेनिंग के लिए काफ़ी काम करना था। ट्रैक्टर और कम्बाइन

आपरेटरों जैसे टेढ़े पेशों को हमारी युवतियां सफलता के साथ सीखती जा रही हैं। अनेक युवतियों ने, ट्रैक्टर चलाने में निश्चित सीमा से कहीं अधिक नतीजे दिखाए हैं।

मोर्चे और उद्योग की आवश्यकता के लिए देहाती क्षेत्रों में कोम्सोमोल और तरुणों द्वारा कृषि उत्पादन की सफलताओं की मैं अनेक मिसालें दे सकता था। मैं उन्हें इसलिए नहीं दे रहा हूं, कि वे रोज़ ही रेडियो और अखबारों द्वारा प्रचारित होती रहती हैं। एक बात कही जा सकती है—यह कि जब अपने प्रचार में हिटलरी कूढ़मग्ज़ लोग, हो सकता है कि वे बेईमान भी हों (बहुत संभव है कि वे दोनों ही हों), प्रायः सोवियत देश में अकाल पड़ने की भविष्यवानी करते रहते हैं, वे भूल जाते हैं कि इस स्वतंत्र भूमि पर जहां स्वतंत्र श्रम का राज्य है, जहां के किसान हिटलरी गुंडों के विनाश की भावना से ओत-प्रोत हैं, जहां की ज़मीन भी, जनता की भावना की तरह ही उर्वरा है, वहां अकाल का क्या काम? इस क्षेत्र में हमारे देहाती क्षेत्रों के कोम्सोमोल सदस्यों और दूसरे तरुणों द्वारा बहुत काम किया गया है।

मोर्चे, उद्योग और खेती-बारी के क्षेत्र में कोम्सोमोल सदस्यों द्वारा किए गए महान कार्यों के बारे में कहते हुए मैं एक और काम की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं; मुझे विश्वास है कि वे इसको पूरा करने के लिए भी आगे आएंगे। मैं ध्वंस नगरों और गांवों के पुनर्निर्माण एवं पुनसंस्थापन तथा जर्मन अधिकृत प्रदेश के नागरिकों की सहायता के बारे में कहना चाहता हूं।

सोवियत जनता तरुणों को गर्व और स्नेह से देखती है। सोवियत तरुणों के जीवन में युद्ध एक तूफ़ान की तरह आया। युद्ध ने उनके सामने दृढ़ता से स्वदेश-रक्षा, भविष्य की रक्षा और कठिन मुश्किलें झेलने की भयावह आवश्यकता पेश की। दो साल से अधिक अरसा

गुजरा, जब से हमारे तरुण शत्रु के विरुद्ध उग्र संघर्ष में लगे हुए हैं। वे बहादुरी से अपने पिताओं और भाइयों के साथ-साथ अपनी जनता की स्वतंत्रता और खुशियों के फरहरे को आत्मबलिदान की भावना से ऊंचा किए हुए हैं। सोवियत तरुणों, उसके अगुआ दस्ते – कोम्सोमोल की शारीरिक और आत्मिक गुणों के लिए युद्ध बहुत ही कठिन परीक्षा था। हमारे कोम्सोमोल के सदस्य, हमारे तरुण, प्रतिष्ठा के साथ यह परीक्षा पास कर रहे हैं। मोर्चे की ही तरह, पिछवाड़े में भी हमारे तरुण अथक परिश्रम कर रहे हैं। वे स्वदेश के प्रति अपने कर्तव्यों के बारे में पूरी तरह जागरूक हैं। वे अपनी तमाम शक्ति और योग्यता अपने सबसे कट्टर शत्रु पर विजय पाने के लिए लगा रहे हैं।

विदेशों में अनेक लोग थे, विशेषकर युद्ध के शुरू-शुरू में, जो सोवियत जनता की उच्च देशभक्ति और लाल फ़ौज की दृढ़ प्रतिज्ञता के कारणों को जानना चाहते थे। सोवियत संघ की जनता की देशभक्ति का श्रोत हमारे लिए स्पष्ट है। यह स्रोत उनके स्वदेश-प्रेम, अपनी जनता, अपनी संस्कृति और जीवन के अपने तरीक़े के प्रति स्नेह है। सोवियत जातियों के महान परिवार में चूंकि सभी बराबर हैं, और वे एक-दूसरे के प्रति सम्मान, आपसी विश्वास और दोस्ती की भावना से ओत-प्रोत हैं, इसीलिए सोवियत संघ दृढ़ और अजेय है।

हमारे युवकों की देशभक्ति की उच्च भावना और लाजवाब वीरता का एक निर्णयात्मक स्रोत कोम्सोमोल और कम्युनिस्ट पार्टी का अटूट संबंध है। पार्टी, समान उद्देश्य के लिए शौर्यपूर्ण करिश्मे दिखाने के लिए कोम्सोमोल को उत्साहित करती है। हमारी पार्टी का इतिहास, जनता के आदर्शों के लिए उसका संघर्ष, देशभक्तिपूर्ण युद्ध के दौरान में हमारे तरुणों के लिए उत्साह के अक्षुण्ण स्रोत पहले भी रहे हैं

और अब भी हैं, और वीरतापूर्ण कार्य-कलापों के लिए उनको उत्साहित करते रहे हैं। हमारी पार्टी के उद्देश्य महान हैं: जनता की स्थिति को सुधारना, उनकी भाईचारे की एकता की स्थिति को बढ़ाना। हमारी पार्टी इन उद्देश्यों के लिए लड़ी है और लड़ रही है। और इन्हीं उद्देश्यों के लिए हमारा कोम्सोमोल भी पार्टी के साथ-साथ, और उसकी रहनुमाई में निस्वार्थ संघर्ष कर रहा है। इस उद्देश्य में समूचा सोवियत युवक-समाज कोम्सोमोल के साथ है।

"प्राव्दा"

२६ अक्तूबर १६४३

प्रचार और आंदोलन के बारे में कुछ शब्द

मास्को के कम्युनिस्ट संगठनों के मंत्रियों के सम्मेलन में दिया गया भाषण

१२ जनवरी १९४४

साथियो, मैंने ६ भाषण सुने; मैं समझता हूँ कि वे क़रीब-क़रीब वैसे ही हैं, जैसे यहां पर मौजूद पार्टी-संगठनों के मंत्रियों द्वारा दिए जायेंगे।

हमारे प्रारंभिक पार्टी-संगठनों के मंत्रियों की विशेषता क्या है? उनकी व्यावहारिकता। आपने ध्यान दिया होगा कि तमाम साथी जो यहां बोले, उन्होंने मसलों पर व्यावहारिक तरीक़े से प्रकाश डाला। यह कोई बुरी बात नहीं है। बोल्शेविज़्म कभी भी किसी चीज के व्यावहारिक पहलू को नज़रअंदाज़ नहीं करता। किसी पार्टी-कार्यकर्ता का व्यावहारिक होना—उसका अच्छा गुण है। साथ ही मैं महसूस करता हूँ कि समस्याओं के व्यावहारिक पहलू के संबंध में ही मंत्रियों का बोलना काफ़ी नहीं है। उन्हें अनुभव को आम स्थापना का रूप देना भी सीखना चाहिए। यद्यपि चीज़ों का एकत्रीकरण करना आवश्यक है, तो भी यह काम का सिर्फ़ एक भाग ही है। कम्युनिस्टों की विशेषता यह है कि

वे व्यावहारिक समस्याओं के, व्यावहारिक कामों के समूचेपन के आधार पर आम स्थापनाएं करते हैं, उन्हें वे समूची संबद्ध जंजीर की कड़ी की तरह जोड़ देते हैं। अच्छा, तो फिर आपके व्यावहारिक काम की परीक्षा से और उस पर आधारित आम स्थापना से लगभग यह नतीजा निकलता दिखाई देता है कि आप पार्टी के सामाजिक काम को उत्पादन के काम से अलग देते हैं। लगता है कि आप इस तरह सोचते हैं कि एक व्यक्ति चाहे वह पहली श्रणी का श्रमिक हो, चाहे बहुत ही लगनवाला कम्युनिस्ट हो, वह तब तक सामाजिक काम करनेवाला नहीं समझा जायेगा, जब तक वह शिक्षा-केन्द्रों में सक्रिय न हो, सभाओं में बोलता न हो, आंदोलनात्मक काम न करता हो।

व्यक्तिगत (मैं व्यक्तिगत शब्द पर ज़ोर देता हूं) तौर से मुझे लगता है कि सामाजिक कार्यों और आर्थिक कार्यों में यह भेद करना ठीक नहीं, उत्पादन से संबंधित और हमारे राज्य के चरित्र से कुछ बहुत ज़्यादा फिट नहीं बैठता। इस तरह का रवैया शायद पुराने ज़माने के कम्युनिस्टों की विशेषता समझी जाती हो। क्यों? क्योंकि क्रान्ति से पहले कारखाने पूंजीपतियों के फ़ायदे के लिए चलते थे और जो आंदोलन हम लोग करते थे वह समूचे तौर पर पूंजीपतियों के खिलाफ़ था। लेकिन अब उत्पादन का काम राज्य और समाज के प्रमुख कामों में से एक है। हमारे युग का एक सब से महत्वपूर्ण काम है।

पुराने ज़माने में जब मैं पुतीलोव प्लान्ट में काम करता था, तो मैं पूंजीपतियों की शक्ति बढ़ाता था। उस समय हमें इस बात का पूरा हक़ था कि उद्योग और पार्टी के काम में भेद करें। यदि मैं अपने उत्पादन कोटा से अधिक काम करता, तो मेरे साथियों को यह कहने का समुचित अधिकार होता कि "क्यों पैसा बटोर रहे हो? क्यों ओवरटाइम काम करके पूंजीपतियों का समर्थन कर रहे हो? और जब मीटिंगों में आने की बात होती है तो कहते हो छुट्टी नहीं मिलती। तुम

अपने पार्टी के काम की अवहेलना कर रहे हो।" लेकिन अब? आजकल ऐसे आदमी की कल्पना कीजिए जो अपने उत्पादन कोटा को बिना पुरा किए छोड़ देता है। हर चीज़ कल के लिए मुलतवी कर देता है। दूसरे लोगों को काम से छुड़ा कर शिक्षा-केन्द्र के लिए एकत्र कर लेता है—उनको पढ़ाता है और इसे पार्टी का काम समझता है। आज कोई भी ऐसे व्यक्ति को अच्छा कम्युनिस्ट नहीं समझेगा। इस में किसी को आश्चर्य भी न होना चाहिए, क्योंकि अब हम मालिक के लिए काम नहीं करते। अब तो हम खुद ही समाजवादी राज्य के मालिक हैं। और उत्पादन स्वयं सामाजिक राज्य का उत्पादन वन गया है।

इसलिए, यदि मैं पार्टी-संगठन का मंत्री होता तो मै उत्पादन को मुख्य पार्टी और सामाजिक कार्यवाही समझता। मैं कहूंगा कि आदमी चाहे दूसरे मामलों में अच्छा भी हो, यदि उत्पादन के काम में संतोषजनक नहीं है, तो वह अच्छा कम्युनिस्ट नहीं।

आपके भाषणों से मैं यह महसूस कर रहा हूं कि अपने व्यवहार में आप मेरे ही विचार पर चलते हैं। लेकिन यह कहने में आप ज़रा घबड़ाते हैं, कि आपको यदि कहीं व्यापारिक-कार्यकारिणी कह दिया गया तो आप मुश्किल में पड़ जायेंगे। आपके भाषणों को सुनकर कोई भी कह सकता है कि आप सुसंस्कृत हैं। लेकिन आप में से एक ने भी यह नहीं कहा कि समाजवादी परिस्थिति में, और विशेषकर युद्ध की स्थिति में, आप उत्पादन के काम को समाज और पार्टी का काम समझते हैं; पहले दर्जे के महत्व का काम, जो समाजवादी व्यवस्था को मज़बूत करता है।

आप इस प्रश्न को पार्टी के तरीक़े से क्यों नहीं उठाते? इसे एक गंभीर सिद्धांत के रूप में क्यों नहीं रखते, क्या ऐसा काम, जो सोवियत व्यवस्था को मज़बूत करता है, हमारे शत्रुओं पर चोट करता है, जो सोवियत देश की प्रसिद्धि सारी दुनिया में फैलाता है, दूसरे

शब्दों में जो काम समाजवादी व्यवस्था की प्रतिष्ठा बढ़ाना है, कम्युनिस्ट पार्टी का काम नहीं है? उत्पादन के क्षेत्र में हमारी सफलताएं, सांस्कृतिक क्षेत्र में हमारी सफलताएं, क्या कम्युनिस्ट काम नहीं है, पार्टी का काम नहीं है? प्रचार शब्दों से होता है और व्यवहार से भी होता है। प्रचार और आंदोलन व्यवहार में ज्यादा असरदार होते हैं। हमारे देश में लगभग सभी जगह यह कहा जाता है कि प्रचार और आंदोलन व्यवहार में सबसे अधिक प्रभावोत्पादक होता है। फिर, उत्पादन में हमारी सफलताएं व्यावहारिक प्रचार हैं।

मैं आपसे प्रश्न करता हूं: आज मोर्चे पर लड़नेवाले व्यक्ति का कौन गुण उसको पार्टी मेंबर बनाने के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण समझा जाता है? (हाल के भीतर से ध्वनियां: "वीरता")

बिल्कुल सही — वीरता। अर्थात् जिम्मेदारियों को अच्छी तरह से निभाना। तो भी ऊपर से देखने पर यह पार्टी का काम नहीं मालूम होता। तो आप ने समझा — अपने काम में अत्यन्त लगन — पार्टी में शामिल होने के लिए एक विशेष गुण समझा जाता है।

अब हम एक रूपक बांधते हैं। यदि मोर्चे पर बहुत ही शानदार तरीक़े से निभाई गई ज़िम्मेदारी को आप पार्टी का महत्वपूर्ण काम मान लेते हैं, तो फ़िर आप इससे भी सहमत होंगे कि गोली-गोलों, तोपों, मशीनगनों का उत्पादन भी हमारे लिए बहुत महत्व का है — यानी इसका अर्थ है हमारे उद्देश्यों के लिए संघर्ष में सीधा हिस्सा लेना। आज उत्पादन का काम पार्टी का मुख्य बुनियादी काम है। मैं तो कहूंगा कि यह पार्टी के पवित्र से पवित्र कामों में भी सर्वोपरि है। इसलिये, जब आप जनता को आंदोलित करने, उसमें प्रचार करने और उसे शिक्षित करने का काम करें, तो आपको सदैव यह याद रखना चाहिये।

समूची सोवियत जनता के सामने आज कौनसा मुख्य निर्णया-

त्मक काम है? जर्मनों के खिलाफ़ संघर्ष। इसीलिए, आप चाहे जहां आंदोलन कर रहे हों, आप चाहे कोई काम कर रहे हों, आप चाहे किसी भी व्यक्ति से बात कर रहे हों, वर्तमान समय में आपको सदा ही मुख्य बात पर आ जाना चाहिए — यह कि हर आदमी को हर तरह से जर्मन आक्रामकों को विनष्ट करने के मुख्य राष्ट्र-व्यापी काम में सहायता देनी है।

यदि आप अपने को आंदोलन-संबंधी प्रचार के लिए स्थानीय शिक्षा-केन्द्र में तैयार करें, तो आपको इस तरह की चीज़ें चुननी चाहिए, इस तरह के ऐतिहासिक रूपक ढूढ़ने चाहिए जो आपका ज्ञान बढ़ाएं, जो आपको इस योग्य बनाएं कि आप अपने देश की स्थिति को जनता के सामने ज़्यादा अच्छी तरह से बता सकें, ज़्यादा अच्छी तरह उसका स्पष्टीकरण कर सकें और फासिज़्म के विरुद्ध संघर्ष में हम सब का क्या कर्तव्य है, यह बात अच्छी तरह समझा सकें। सचमुच, हमारे जीवन में आज इतने उल्लेखनीय तथ्य हैं कि आंदोलन संबंधी हमारा हर प्रचारक—साधारण से लेकर प्रमुख से प्रमुख तक-- उसमें अनंत चीजें पा सकता है, ऐसी चीज़ें जो बहुत ही स्पष्ट, जीवनपूर्ण हैं और सामयिक घटनाओं से सीधे-सीधे संबंधित हैं।

यह तरीक़ा अपनाने से लोग अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं को मार्क्सवादी ढंग से समझने लगेंगे और धीरे धीरे अपने दैनिक पार्टी के कामों के लिए अनुभव बटोरते जायेंगे।

पार्टी के काम से हमारा क्या मतलब है? अलबत्ता, संगठनात्मक तरीके से हम विभिन्न क्षेत्रों के काम को अलग करते हैं और उन्हें पार्टी, ट्रेड-यूनियन, आर्थिक कामों आदि का नाम देते हैं। काम की इन तमाम शाखाओं की अपनी विशिष्टतायें हैं।

पार्टी के काम को काम के दूसरे स्वरूपों से अलग करनेवाली कौन सी विशिष्टतायें हैं? यह ज़ोर देकर कहना कि पार्टी काम की

विशेषता उसका आंदोलन संबंधी प्रचार, प्रचार और संकरे अर्थों में कम्युनिस्ट शिक्षा है, मुझे मसले पर तंगनज़री मालूम होती है। यदि कहा जाए तो पार्टी काम है — हर काम में, बहुत ही टेकनिकल और मेकेनिकल काम में भी, पार्टी-दृष्टिकोण की भावना, पार्टी-रवैये को रखने की कोशिश।

एक लेथ-आपरेटर एक सीधा-सादा मशीनी काम करता है। लेकिन क्या वह अपने काम को केवल धनोपार्जन के लिए कर रहा है? वह अपने काम को सामाजिक महत्व देता है या नहीं? हमारे लिए यह प्रश्न महत्व का है। क्या किसी हिस्से को बनाते वक़्त उसे यह पूरी तरह से मालूम है कि वह राज्य के लिए महत्वपूर्ण काम कर रहा है, वह देश की सुरक्षा के लिए काम कर रहा है, कि उसके श्रम से बनी चीजें मोर्चे पर शत्रु के खिलाफ़ इस्तेमाल करने के लिए जा रही है, और यह कि वह जितनी ही अच्छी चीजें बनायेगा, जर्मनों के खिलाफ संघर्ष में उसका भाग उतना ही अधिक समझा जायेगा — यह जानना आपके लिए महत्व का है। इसका अर्थ यह है कि वह अपने को आम रजनैतिक काम से अलग नहीं, बल्कि सामान्य संघर्ष में उस की एक कड़ी समझता है। वह अपने को राज्य द्वारा उठाये जानेवाले सामान्य क़दमों का अंग मानता है।

इसी सिलसिले में मैं आपके समक्ष एक और विचार रखना चाहता हूं। हम लोगों में आपस में अक्सर बातचीत के दौरान में किसी कम्युनिस्ट को पार्टी का "पूर्ण" सदस्य कहा जाता है। लेकिन आपको याद रखना चाहिए कि क्या यह विशेषण सिर्फ़ प्रचारकों और आंदोलनकारियों के लिए ही प्रयुक्त होता है? पूरी तरह से पार्टी का आदमी बनने के लिए लाज़िमी तौर से आपको सिर्फ़ आंदोलनकर्ता या प्रचारक ही नहीं बनना होता। कोई और बात भी आवश्यक होती है— अर्थात्, राजनैतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन में भी कम्युनिस्ट

व्यवहार करना। फिर उसी लेथ-आपरेटर का उदाहरण ले लीजिए। यदि वह अपने काम में सारी शक्ति, और योग्यता लगाकर सोवियत देश की सुरक्षा कर रहा है और इस कारण अपने उत्पादन के काम से संबधित मुश्किलों और ख़ामियों आदि का ख्याल नहीं करता, तो उसका रवैया पार्टी का रवैया कहा जायेगा। और मैं कहूंगा कि ऐसा साथी पूरी तरह से पार्टी का आदमी है।

मैं पिछले युग की एक मिसाल दूंगा। उस ज़माने में पार्टी में भरती होनेवाले कुछ लोगों को जब कोई मामूली काम, जैसे परचे पहुंचाना, या छिपे काम के लिये इस्तेमाल होनेवाले घरों की देखभाल करना बताया जाता था, तो वे असंतुष्ट रहते थे। ये लोग आंदोलन-कारी, प्रचारक आदि बनना चाहते थे, वे राजनैसिक नामवरी के इच्छुक थे। तो भी, प्रकाश में न आने वाला थकान-भरा काम तो होना ही था। उस ज़माने में इस तरह के काम पार्टी के लिए सबसे महत्व के थे।

अब आप ही मुझे बताइए कि हमारे समाजवादी देश में किस तरह के उत्पादन का काम सोवियत व्यवस्था को मज़बूत नहीं करता? आप समझ गए होंगे कि राजनैतिक काम का पार्टी चरित्र काम के संगठनात्मक बंटवारे से निश्चित नहीं होता (जिसका करना, जहां तक संगठन का संबध है सही है), बल्कि सभी कामों में, चाहे वह सामा-जिक हो या उत्पादन का या दफ़्तर का, पार्टी की भावना भरने से उसका पार्टी-चरित्र निर्धारित होता है।

जब मैं यह कहता हूं तो स्वाभावत: मैं मार्क्सवाद-लेनिनवाद के अध्ययन के काम को कम करके नहीं आंकता, जो दरअसल, व्यावहा-रिक जीवन में हर मसले को पार्टी दृष्टिकोण से देखने की योग्यता देता है।

यहां पर एक साथी ने बताया कि उसके कारख़ाने के अनेक पार्टी-मेंबरों को पार्टी और सामाजिक काम ढूंढ़ने में मुश्किल पड़ती है। मैं इसे ग़लतफ़हमी समझता हूं।

यहां पर हमें एक इंजीनियर-आविष्कारक के बारे में बताया गया है। जब पार्टी-मेंबर बनने के बाद वह पार्टी-कमेटी के पास सामाजिक काम मांगने गया, तो उसे एक राजनैतिक शिक्षा-केन्द्र का इंचार्ज बना दिया गया। फिर एक दूसरा मेंबर आया, वह भी एक कुशल इंजीनियर था। लेकिन उसके लिए कोई काम बचा ही न था। और पार्टी संगठन को यह नहीं मालूम था कि उसके लिए किस तरह का सामाजिक काम ढूंढ़ निकाला जाय। मेरा व्यवहार दूसरे प्रकार का होता। मैं उससे आविष्कारकों की एक गोष्टी संगठित करने के लिए कहता और उसे उसका इंचार्ज बना कर कहता: "हो सकता है कि तुम कोई आविष्कार न कर सको, लेकिन हो सकता है कि कोई आविष्कार कर ही डालो।" आप में से कुछ इसे पार्टी का काम नहीं समझेंगे। लेकिन मैं इसे पार्टी का असली काम समझूंगा। क्योंकि यदि एक आदमी सच्चा आविष्कारक है तो उसे एक ही धुन सवार रहती है। उसके तमाम विचार एक ही दिशा में मुड़ जाते हैं। फिर उसके दिमाग़ को बहकाया क्यों जाय? उसको वही काम दीजिए जिसके वह सब से अधिक योग्य है। मैं इसे उसकी पार्टी-ज़िम्मेदारी मानूंगा। यदि दूसरा इंजीनियर अच्छा आंदोलनकर्ता है, तो वह आंदोलन-संबंधी काम करे। लेकिन यदि उसका रुझान उस ओर नहीं है तो उसके लिए आपको ऐसा क्षेत्र ढूंढ़ना होगा जहां वह सबसे ज़्यादा फ़ायदेमंद होगा।

इसलिए आपको इस बात पर परेशान नहीं होना चाहिए कि काफ़ी काम नहीं है। मामले पर कुछ विचार कीजिए और आपको पता लगेगा कि जितना काम करना है, उस को करने के लिए काफ़ी आदमी नहीं हैं।

यहां पर कम्युनिस्टों की शिक्षा का ज़िक्र किया गया है। नए-नए भरती हुए पार्टी-मेंबरों में कम्युनिस्ट भावना किस तरह भरनी है? वह आप पर निर्भर है कि उसकी ट्रेनिंग को आप किस दिशा में मोड़ देते हैं।

यहा पर एक साथी ने हमे बताया कि नियमित रूप से पार्टी-चदा न देने के कारण एक मीटिंग मे किस तरह कुछ तरुण कम्युनिस्टो को लताडा गया। मुमकिन है यह एक विशुद्ध व्यावहारिक मसला मालूम हो। कडी भाषा का प्रयोग किया जा सकता है। उनमे कहा जा सकता है कि "तुम बहुत ही अनुशासनहीन और बुरे कम्युनिस्ट हो," आदि। लेकिन यही सवाल एक सिद्वात के रूप मे भी उठाया जा सकता है। उनमे आप कह सकते है "आप खुद समझते है कि यदि आप महीने दो महीने चदा देने मे पिछड जाये, तो पार्टी का बहुत कुछ बिगडेगा नही। उसके कोष पर असर नही पडेगा। अब हमारी पार्टी गरीब पार्टी नही है। और यदि हम इस मामले मे आपसे बहस कर रहे है तो इसलिए नही कि आपकी लापरवाही के कारण हम समय पर रिपोर्ट नही भेज पाये। नही, यह बात नही है। बात यह है कि यदि आप समय पर अपना पार्टी चदा नही देते, तो उसका मतलब है कि आप पार्टी के विषय मे नही सोचते, आप अपने पार्टी-कर्तव्यो का सही ढंग से पालन नही कर रहे है। इसका मतलब है कि आप पार्टी के प्रति गभीर नही है। कोई भी जो पार्टी के विषय मे सोचता है, उसके लिए पार्टी चदे की अदायगी सतोष का विषय है, क्योकि इस तरह वह पार्टी से भौतिक सबध स्थापित करता है, वह उसके निकट आता है।"

साथियो, जैसा आप समझ रहे है, आपका और मेरा समस्या के प्रति रुख एक सा ही है। मै आपको सिर्फ यह बता रहा था कि साधारण मसले को भी किस तरह राजनैतिक तौर से हल किया जाय। अगर आप मसले के प्रति यह रवैया बनाए तो पार्टी-चदे का साधारण सा मामला भी राजनैतिक मसला बन जायगा।

जब मीटिंग मे आप मामला इस तरह उठायेगे तो बोलनेवाले अनेक मिसाले देने लगेगे। वे शायद आपत्ति भी करें कि मसला इतना

महत्वपूर्ण नहीं है, और कहें कि कोई आदमी पार्टी के लिए मर भी सकता है लेकिन चंदा देना भूल सकता है, आदि। बहस तब सिद्धांत को लेकर होगी।

आप समझ रहे हैं कि जब एक ओर उसी प्रश्न को बिलकुल व्यावहारिक दृष्टिकोण से, तथ्यों की भाषा में पेश किया जाता है तो उसका प्रभाव कम पड़ता है। लेकिन यदि उसी को आम-स्थापना करके, उसका राजनैतिक रूप सामने लाया जाय तो उससे लोगों की शिक्षा होती है।

मुझे लगता है कि आप नए मेंबरों में पार्टी के काम को सिर्फ शिक्षा तक सीमित रखना चाहते हैं। मैं इसके खिलाफ नहीं हूं। आपको उन्हें शिक्षित करना है। लेकिन शब्द के सकुचित अर्थों में शिक्षा और पालन एक ही वस्तु नहीं है।

आप एक व्यक्ति को पार्टी-कार्यक्रम, पार्टी विधान रटा सकते हैं और तमाम खानापूरी कर सकते हैं। लेकिन तब भी इससे वह कम्युनिस्ट नहीं बन जाता। वह कम्युनिस्ट नहीं, निरा काठ है। आपने ऐसा कहे जाते सुना भी होगा। (एक ध्वनि-"कूढमग्ज") नहीं, यह और बात है। किसी को कूढमग्ज कहना गाली है, जब कि "काठ" से हमारा मतलब है कि वह अपने सोचने के ढंग में बहुत कड़ा और बिल्कुल लचकीला नहीं है। जो भावनाहीन है और जिसमें हंसी मजाक और तीखी बात समझने का माद्दा नहीं है। ऐसे आदमी को "निरा काठ" कहा जाता है।

स्कूल में पढ़ाने से कहीं अधिक मुश्किल एक आदमी को शिक्षित करना है, क्योंकि शिक्षक शिक्षार्थियों को निश्चित ज्ञान देकर ही नहीं, बल्कि मुख्यतः दैनिक परिस्थिति के प्रति अपने रुख से उन्हें प्रभावित करना है।

कामरेड बोदरोवा ने हमें यहा एक मेहनतकश औरत की कठिन जिदगी के बारे में बताया जो सहायता पाते ही फ़ौरन लहलहा उठी। मै कहूगा कि यह अपने आप में ही पार्टी रवैये की अच्छी मिसाल नही है। महत्व की बात यह नही है कि किसी को सकटपूर्ण परिस्थि-तियों में सहायता दी गई। बल्कि कम्युनिस्टों की शिक्षा से हमारा मतलब यह है — ठोस और व्यावहारिक शिक्षा। ऐसी ही मिसालों पर आपको कम्युनिस्टों की शिक्षा के अपने काम को आधारित करना चाहिए।

अयोग्य कार्यवाहियों को भी शिक्षात्मक प्रयोग के लिए सिद्धांत के दृष्टिकोण से बहस में लाना चाहिए। मान लीजिए कि एक आदमी खराब काम करता है। आपको दिखाना चाहिए कि उसका खराब काम किस तरह दूसरों पर असर डालता है। इसी तरह के ठोस तथ्यों, महत्वपूर्ण ममलों, और आम राजनैतिक समस्याओं को लोगो की शिक्षा का आधार बनाने के लिए प्रयोग करना चाहिए।

एक मिसाल लीजिए। मान लीजिए कि मै एक पार्टी-सगठन का मत्री हू। मुझ से मिलने के लिए तमाम लोग आते है। इनमें से वे भी है जो फुसफुसाते रहते है कि अमुक व्यक्ति ठीक से काम नही करता, अमुक ठीक से व्यवहार नही करता, पर खुद इन्ही बुराइयों के अपराधी है। इस तरह के आदमी तो है न? ऐसे आदमी को पकडना ओर उसका भडा फोडना शिक्षात्मक मूल्य का होगा।

शिक्षा का काम बहुत मुश्किल है, क्योंकि वह बहुत कुछ आपके व्यवहार पर निर्भर करता है। मिसाल के तौर पर यदि आप नशाबदी के बारे में उपदेश देते हों और खुद पीते हों, तो यह बात नही चले-गी। यदि आप अनुशासन की अपील करें और स्वय ही उसे लगातार तोड़ें, तो उस अपील का बहुत कम प्रभाव पड़ेगा।

विशद अर्थो में शिक्षा सबसे कठिन और पांडित्यपूर्ण काम है। लोगों को राजनैतिक ज्ञान का ककहरा पढाना, पार्टी-कार्यक्रम और

विधान पढ़ाना दूसरी बात है, क्योंकि आप एक निश्चित ज्ञान दूसरों को देते हैं। अलबत्ता, हिदायत और शिक्षा में सीमा-रेखा खींचना मुश्किल है, क्योंकि लोग अध्ययन के द्वारा भी शिक्षित होते हैं। लेकिन मुख्य चीज़ यह है, जिसे नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए कि पार्टी-मेंबरों की शिक्षा लगातार अनदेखे ही होती रहनी चाहिए। अक्सर यह छोटी-छोटी बातों पर आधारित होती है, लेकिन कभी-कभी वह गंभीर, मुख्य मसलों को लेकर भी होती है।

यहां पर अख़बारों के उद्धरण पढ़कर सुनाने की प्रथा का ज़िक्र किया गया था। यदि अख़बार सिर्फ़ ज़ोर-ज़ोर से पढ़ दिए जाते हैं और बहस नहीं होती, तो यह काफ़ी नहीं है। आपके सामने ऐसी स्थिति आ सकती है कि एक व्यक्ति को अख़बार पढ़ने का समय मिल गया हो और वह आपकी ओर ध्यान न दे रहा हो, और दूसरे ने यद्यपि अख़बार पढ़ा न हो, तो भी सिर्फ़ आपके पढ़कर सुनाने से संतुष्ट न हो। लेकिन आपने जो पढ़ा है, यदि उसका विश्लेषण करें या उसकी चर्चा करें, तो स्वाभवत: सब की दिलचस्पी बढ़ जायेगी। बहस छेड़ दीजिए। क्यों नहीं? आप लोग बहुत अधिक व्यवहारवादी हैं। आपको ग़लती कर देने का डर रहता है। यदि आपने गलती कर ही दी तो क्या? हम लोगों को ग़लती करने पर सज़ाएं नहीं देते। यदि आप ग़लती करते हैं तो आपकी आलोचना की जाती है। बस। सज़ा उनको दी जाती है जो अपनी ग़लतियों का बचाव करते हैं, जो उन पर अड़े रहते हैं और जो पार्टी-नीति से अलग हो जाते हैं। यदि एक व्यक्ति हम ही में से है, सोवियत राज्य और पार्टी के प्रति वफ़ादार है और यदि वह अपने विचारों की स्थापना में पूर्ण रूप से सही नहीं है, तो उसकी ओर उसका ध्यान अवश्य खींचा जायेगा। इससे अधिक और कुछ नहीं।

क्या आप कल्पना करते हैं कि सिर्फ़ पार्टी-कार्यक्रम और विधान से एक व्यक्ति में पार्टी-दृष्टिकोण लाया जा सकता है? अलबत्ता, नए

पार्टी-मेंबर को आपको विधान बनाना होगा। उसमें कम्युनिस्टों के व्यवहार के नियम दिए गए हैं — वे व्यवहार के आदर्श नियम हैं। लेकिन कम्युनिस्टों से यदि आपका वार्तालाप वहीं तक सीमित रहता है तो वह थकान-भरा होगा। ऐसे मामलों में आपका रवैया सिर्फ लकीर पीटना नहीं हो सकता।

अध्ययन के संबंध में भी आपको मालूम होना चाहिए कि अलग अलग लोगों के साथ अलग अलग रुख अपनाया जाय। मान लीजिए कि एक व्यक्ति ६० वर्ष का बूढ़ा है और आप उससे मांग करते हैं कि वह पार्टी कार्यक्रम और विधान को पूरी तरह से जाने। वह अच्छा मजदूर है, सोवियत राज्य के प्रति वफादार है, ईमानदार है और बुरा कम्युनिस्ट नहीं है। यह स्पष्ट है कि इस तरह के पार्टी-मेंबर के प्रति इस मामले में आपका रवैया नरम होना चाहिए।

हम लोग मार्क्सवाद का अध्ययन करते हैं। लेकिन हम रूस के इतिहास का अध्ययन करने के मामले में बहुत अधिक दिलचस्पी नहीं दिखाते। कहा जाय तो हम इसे पार्टी का मामला नहीं समझते। यह ठीक नहीं, बिलकुल ठीक नहीं। रूसी इतिहास का अध्ययन बहुत ही दिलचस्प और दिलकश है। और यदि इसे कोई मार्क्सवादी पढ़ाए, पुराने युग की हर ऐतिहासिक स्थिति पर मार्क्सवादी दृष्टि से बहस की जाय, तो लोग इसमें बड़ी दिलचस्पी लेंगे और यह भी पार्टी का काम होगा।

इसी प्रकार, दर्शन-शास्त्र के इतिहास का अध्ययन करने के लिए अधिक सुयोग्य व्यक्तियों को लगना चाहिए। आम तौर पर लोगों को मिलकर अपने प्रिय विषय के अध्ययन के लिए अध्ययन-गोष्ठियां स्थापित कर लेनी चाहिए। और इन चक्रों का पार्टी-चरित्र अध्ययन की जानेवाली समस्याओं में लगाए गए मार्क्सवादी-लेनिनवादी तरीके से निर्धारित होगा। वहां पर लोग दार्शनिकता भी कर सकते हैं।

कोई सच्चा कम्युनिस्ट कैसे हो सकता है, यदि उसमें थोड़ी बहुत भी दार्शनिकता नही है? हम लोग बहुत दूर तक, भविष्य में बहुत आगे तक देखते है। मुझे लगता है कि आप सब बहुत भयानक व्यवहारवादी हो गए है — इस डर से कि कही लड़खडा न जायें आप अपने कदमों को ही देखते रहते हैं।

सिर्फ सामाजिक ही नही, प्राकृतिक स्थिति को भी समझने का सच्चा तरीका मार्क्सवाद है। इसीलिए कोई भी काम, जो विश्व की स्थिति का ज्ञान उपलब्ध करने के लिए मार्क्सवादी लेनिनवादी दृष्टिकोण से किया जाय, तो वह बोल्शेविक पार्टी के दृष्टिकोण को मजबूत करेगा। ऐसे काम का अंत नही है। विश्व के बारे मे अधिक विशद दृष्टिकोण बनाने की आवश्यकता है। लोग जो व्यावहारिक काम करे, उसे उन्हे समझना चाहिए और उस के बारे मे आम स्थापनाए करनी चाहिए।

"प्रोपेगैंडिस्ट" मैगजीन
न० २, १९४४

कोम्सोमोल सदस्यों की फ़ौजी शिक्षा के बारे में

लाल फ़ौज के कोम्सोमोल सदस्यों के स्वागत-समारोह में दिया गया भाषण

१५ मई १६२४

साथियो, फ़ौजी हालत में युवकों की शिक्षा के विषय में मैं कुछ शब्द कहना चाहता हूं।

यह तो हर व्यक्ति को स्पष्ट है कि कोम्सोमोल का हर जगह, फ़ौज में भी, मुख्य काम युवकों को शिक्षित करना है। और लोगों को शिक्षित करना, विशेषकर फ़ौजियों को शिक्षित करना एक पेचीदा और नफ़ीस मामला है। इस मामले में आप बिलकुल किन्हीं एक ही तरह के गढ़े-गढ़ाये सिद्धांतों से काम नहीं चला सकते। आप जीवन के हर अवसर की आवश्यकता के लिए नवीन रूपों का आविष्कार भी नहीं कर सकते। शिक्षा से संबंधित तमाम समस्याओं को आप सिर्फ़ बने-बनाए स्वरूप को अपना कर नहीं हल कर सकते, फिर वे चाहे कितने ही अच्छे क्यों न हों।

मिसाल के तौर पर, एक उस अफ़सर लीजिए, जो कोम्सोमोल का सदस्य है और जिसका लाल फ़ौजियों पर असर पड़ता रहता है। इस मामले में क्या कोई ऐसी चीज का आविष्कार कर सकता है जो अवश्य ही की जानी चाहिए या कोम्सोमोल की केन्द्रीय कमेटी द्वारा कुछ विधान के रूप में ढूंढ़ा जा सकता है? मैं समझता हूं कि इसका कुछ भी नतीजा नही होगा। खुद जीवन का ढंग, फ़ौजी इकाई में विकसित हो गए आपसी संबंध एक निश्चित स्वरूप ले लेते हैं और जीवन में स्थापित होकर शिक्षा के साधन के रूप में सहायक होते हैं।

हमारे कोम्सोमोल के साधारण फ़ौजी पढ़े-लिखे लोग है—उनमें अधिकतर ने स्कूल की सातवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त कर ली है। लेकिन वे तरुण और भावनामय हैं। अफ़सरों को उन्हें अनुशासन का आदि बनाना है। साथ ही ड्यूटी के समय और ड्यूटी के बाद के सबधों में भेद करना चाहिए। जब एक फ़ौजी मोर्चे की पक्तियों पर अपनी ड्यूटी की जगह पर है, तो उसे बिना तर्क के सभी हुक्मों को मानना होना है। लड़ाई के दौरान में तर्क करने का मतलब है, सर्वनाश --क्योंकि जिस समय आप तर्क कर रहे हों, उस समय शत्रु राह नही देखता। लेकिन जब लड़ाई खतम हो जाय तो कोम्सोमोल सदस्यों की एक सभा में सभी लोग अपनी और दूसरे सदस्यों की त्रुटियों की आलोचना कर सकते हैं।

एक कोम्सोमोल अफसर का अधिकार उसके पद से निर्धारित नहीं होता। उसका अधिकार भिन्न प्रकार का होता है। उसका सम्मान सिर्फ़ एक लेफ़्टिनेंट या कैप्टन के नाते नहीं होना चाहिए, बल्कि एक विशेषज्ञ, समझदार व्यक्ति, एक राजनैतिक नेता के रूप में भी उसका सम्मान होना चाहिए। दूसरे शब्दों में उसको अपने ज्ञान और अनुभव के आधार पर अधिकार प्राप्त करना है।

कोम्सोमोल अफ़सर का व्यवहार स्वयं ही निर्देशात्मक कार्य करता

है क्योंकि तरुण फ़ौजी पहले सबसे विशेषत: अफ़सरों के उस रवैये से प्रभावित होते हैं जो वे लाल फ़ौज के सिपाहियों के प्रति अख़्तयार करते हैं।

हमारी फ़ौज में सिर्फ़ हुक्म देनेवाले अफ़सर और सिर्फ़ हुक्म बजा लाने वाले सिपाहियों की तरह की कोई बात नहीं है। जब एक टोली या प्लैटून का कमांडर लड़ाई में बेकार हो जाता है, तो साधारण सिपाही नेतृत्व का स्थान ले लेते हैं और अपनी पेशक़दमी का प्रदर्शन करते हैं। जर्मनों में ऐसी चीज़ कहीं-कहीं ही हो सकती है। लेकिन हमारी फ़ौज में इस तरह की अनेक घटनाएं हो चुकी हैं। हमारे यहां जहां तक भावना, लालन-पालन और कार्य का संबध है, अफ़सर और आम सिपाही बराबर हैं। कोम्सोमोल के सदस्य—चाहे वे सिपाही हों, चाहे अफ़सर, भावना, विचार और उद्देश्यों में समान हैं। वे एक ही तरह से सोचते हैं और अपने मानसिक विकास में भी क़रीब-क़रीब एक-दूसरे की तरह ही होते हैं।

हम कड़ा अनुशासन लागू करने की मांग करते हैं। यह समझ में आनेवाली बात है, क्योंकि एक फ़ौज तभी तक फ़ौज है जब तक वह अनुशासित है, जब तक उस में पूर्ण एकता है। इसीलिए अनुशासित व्यवहार की मांग पर सख़्त ज़ोर देना चाहिए। साथ ही राजनैतिक काम के उत्तरदायी अफ़सरों को, विशेषकर मोर्चे पर शिक्षा के प्रति अधिक ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इसके बिना हमें स्वेच्छा पर आधारित अनुशासन नहीं मिल सकेगा, जो हमारी फ़ौज की विशिष्टता है। ये अफ़सर लाल फ़ौज के सिपाहियों को वीर और ईमानदार बनने की शिक्षा देते हैं, न कि बनावटी बनने की। एक व्यक्ति शत्रु के प्रति बनावटी हो सकता है और उसे होना चाहिए, लेकिन अपने हमराही साथियों के प्रति बनावटी व्यवहार की इजाज़त नहीं दी जा सकती।

ऐसे ही अवसर पर अफ़सर का व्यक्तिगत अधिकार बड़े महत्व

का होता है। उसे सदा ही ऊंची सतह का होना चाहिए। एक अफ़सर, जो अपनी वीरता और सुयोग्यता के लिए प्रसिद्ध है और जो फ़ौजी मामलों मे सुपरिचित है, यदि किसी मीटिंग में या बातचीत के दौरान में अपने विचारों की स्थापना में ग़लती करता है, तो साधारण सिपाही बुरा नहीं मानेंगे। वे कहेंगे कि वह गलती कर गया, नही तो मोर्चे पर वह बहुत बढ़िया आदमी है। एक अफ़सर इस प्रकार का अधिकार लड़ाई के मैदान में, अपनी यूनिट को निर्देशन देते समय, राजनैतिक काम के दौरान में प्राप्त करता है और इसका प्रभाव कोम्सोमोल संगठन के सामने आई हुई समस्याओं को हल करते समय मालूम होता है।

यह तो, अलबत्ता, वाजिब बात है कि एक उस अफ़सर के मुक़ाबले, जो कोम्सोमोल का सदस्य नही है, कोम्सोमोल का सदस्य अफ़सर राजनैतिक रूप से अधिक विकसित और अधिक सुसंस्कृत हो। उनका फ़ौजी ज्ञान चाहे बराबर हो, लेकिन कोम्सोमोल के सदस्य अफसर की सांस्कृतिक सतह तो ऊंची होनी ही चाहिए। यही, और सिर्फ़ तभी उसका प्रभाव अधिक पड़ेगा। ज्ञान एकत्र करने के लिए आपको लगातार अध्ययन करते रहना चाहिए। आप कह सकते हैं कि आप लगातार तीन बरस तक लड़ते रहे हैं और इन परिस्थितियों में अध्ययन करना, किसी तरह का ज्ञान अर्जन करना बहुत मुश्किल है। यह सचमुच सही है। मै समझता हूं कि यह कितना कठिन है। लेकिन मैं बताना चाहता हूं कि जो कठिन समय में वृद्धि नहीं कर सकता, वह कम काम के समय कहेगा कि अब उसे आराम की आवश्यकता है। और फिर ज्ञान इतना आवश्यक भी तो नही है! (हंसी)

मैं वर्तमान कठिन परिस्थिति को समझता हूं। लेकिन यही मुश्किल हमारा उत्साह बढ़ाए हमें प्रेरित करे कि हम अपने ज्ञान को बढ़ाएं और अपनी सांस्कृतिक सतह को और अधिक ऊंचा उठाएं। कोई बाहरी दबाव नहीं होता, तो ज्ञान अर्जन में ढिलाई आ जाती है। मै

अपने अनुभव से यह बात जानता हूं। मैंने कभी भी लेख नहीं लिखा, जब तक कि लिखने के लिए मुझ पर दबाव नहीं डाला गया। लेकिन जब मुझ से बार बार कहा जाता है, मुझ पर दबाव डाला जाता है और मैं कोई दूसरा रास्ता नहीं देखता, तब लिखने बैठ जाता हूं (हंसी)। बाहरी दबाव एक व्यक्ति को थम जाने से रोकता है।

मैं लगभग ७० बरस का हूं! लेकिन तो भी मुझे रोज़-बरोज़ के साहित्य से परिचित रहना पड़ता है और मुझे अध्ययन करना पड़ता है। और इसके अलावा कुछ हो भी नहीं सकता। तो भी चूंकि मैं आपसे अधिक अनुभवी और राजनैतिक रूप से अधिक सचेत हूं, इसलिए मुश्किल स्थिति में भी अधिक आसानी से रास्ता निकाल लेता हूं। आप अभी कम-उम्र हैं, इसलिए यह आपके लिए अधिक मुश्किल है। केवल ज्ञान ही आपकी सहायता कर सकता है। आपको हर समय अध्ययन करना चाहिए। खुद जीवन की यह अटल मांग है।

यह स्पष्ट है कि हर अफ़सर और सिपाही प्रथमत: और मुख्यत: अपनी यूनिट की प्रतिष्ठा के प्रति चिंतित रहता है।

हमारे पास कई बढ़िया फ़ौजी यूनिटें हैं। आप पूछते हैं कि किस तरह उनका अनुभव दूसरी और यूनिटों तक पहुंचाया जाय जिससे वे भी उन्हीं की तरह हो जायें। मैं एक उपमा से समझाऊंगा। मान लीजिए कि एक बहुत बढ़िया चित्र है और उसकी बहुत अच्छी अनुकृतियां बनाई गई। लेकिन नक़ल—नक़ल ही होती है। और वह बहुत सस्ती बेची जाती हैं। इसी तरह शिक्षा के विषय में भी निरी नक़ल से काम न चलेगा। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आपको दूसरों के अनुभव का उपयोग करना चाहिए, लेकिन आपको किसी भी परिस्थिति की विशेषता समझनी चाहिए।

मान लीजिए कि एक यूनिट ने शत्रु की भूमि पर उतरने की कार्यवाही में हिस्सा लिया और उसने आमने-सामने की लड़ाई का

वहुत सा अनुभव प्राप्त किया। स्पष्ट है कि उस यूनिट के नाविक, पैदल सिपाही, तोपची—सभी एक-दूसरे मे अच्छी तरह संबद्ध होंगे और संघर्ष के दौरान में उनमें भाईचारे की भावना बहुत अधिक विकसित हो गई होगी। यह सब कैसे हुआ? जब नाविक संघर्ष में उतरे तो वे जानते थे कि समूची फ़ौज की निगाहें उनपर थीं और यह कि उनपर बहुत कुछ निर्भर करता था। उनके हर क़दम पर ख़तरा था। हर आदमी हुक्म का पालन करने, अपना काम करने, अपनी और अपने साथियों की रक्षा करने की कोशिश कर रहा था। कामयाबी बहुत अधिक प्रयास के बाद प्राप्त हुई। यह स्पष्ट है कि ऐसी परिस्थितियों में लोगों की अधिक शीघ्रता से विकास होता है, बनिस्बत उन लोगों के जो अधिक शांत मोर्चों पर हैं, जहां पर तनाव कुछ कम है, और जहां एकरस स्थिति का मनुष्यों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। वैसे लगता कि इन यूनिटों के पास फुरसत अधिक है और उनमें शिक्षा का काम चलाना अधिक आसान है। लेकिन, दरअसल यह ज़्यादा मुश्किल है। जहां जीवन स्वयं सहायता कर रहा हो, वहा शिक्षा देना कहीं अधिक आसान है। इस तरह यह नतीजा निकलता है कि जहां लोग एक ही स्थान पर अधिक समय गुज़ारते हैं, एक ही साथ खाइयों में हैं, वहां शिक्षा और प्रचार का कार्य मुश्किल होता है। मैं समझता हूं कि इन स्थितियों में कोम्सोमोल के काम की तरफ़ अधिक ध्यान देना चाहिए।

अत: यह स्पष्ट है कि कोम्सोमोल को शिक्षा संबंधी कार्य के लिए बने-बनाए मंत्र बता देना बहुत मुश्किल है।

मिसाल के लिए, यह कैसे हो जाता है कि एक यूनिट कुछ अधिक अच्छी और दूसरी कुछ अधिक ख़राब हो जाती है। अच्छी यूनिट में एक नेता है जो मामले को चालू करा देता है। मैं आपको बता दूं कि एक व्यक्ति चाहे जितना शिक्षित और सुसंस्कृत क्यों न

हो, यदि वह नौजवानों का नेतृत्व बिना उत्साह के करता है, उनकी शिक्षा और ट्रेनिंग में अपना मन और प्राण नहीं लगाता, तो तरुण इसे फ़ौरन भांप जायेंगे। ऐसे नेता के लिए उनके मन में कोई स्नेह नहीं होगा। दूसरी तरफ़ यदि आप अपने काम में अपना मन-प्राण लगा दें, अपने संगठन को अच्छे से अच्छा बनाने के लिए सब कुछ करें, और यदि उसकी कामयाबी के लिए अपनी तमाम शक्ति और तमाम उत्साह लगा दें, तो आप अवश्य तरुणों का स्नेह प्राप्त करने में सफल हो जायेंगे। आप उनकी प्रतिष्ठा ही न प्राप्त करेंगे, बल्कि उनके स्नेह-भाजन भी बन जायेंगे।

इसीलिए मैं समझता हूं कि यदि कोई संगठन अच्छा है, तो इसका यह अर्थ है कि उसकी अगुआई एक अच्छे नेता के हाथों में है। यदि एक मनुष्य सचमुच मामले को चालू करने की कोशिश करता है, और यदि वह थोड़ा भी संस्कृत है, बिलकुल गंवार नहीं, तो वह अवश्य कामयाब होगा। इस सफलता की ओर बढ़ने के लिए जीवन खुद उसका पथ प्रदर्शन करेगा। जब हम इन दैनिक संबंधों की बात करते हैं तो हमें यह याद रखना चाहिये कि वे इस जीवन की प्रक्रिया के दौरान में ही रचे जाते हैं, वे अलिखित होते हैं और स्वयं रोज़मर्रा के जीवन से निकलते हैं। ये संबंध संगठनात्मक रूपों से भिन्न होते हैं जो ऐतिहासिक तौर पर विकसित हुए हैं और जो नियमों के रूप में लिख लिए गए हैं। यह आप पर निर्भर करता है कि कोम्सोमोल के सदस्य अफ़सरों और साधारण फ़ौजियों के ये संबंध सदा ही पूर्णरूपेण तरुणों को शिक्षित और हमारी फ़ौज की शक्ति-वर्द्धन करेंगे।

आप प्रश्न करते हैं कि एक ही यूनिट में अच्छे और बुरे दोनों ही तरह के कोम्सोमोल सदस्य हैं, इसका क्या किया जाय? अच्छा, आप कर ही क्या सकते हैं? कोम्सोमोल के सदस्य आसमान से तो आते नहीं। वे जनता के बीच से आते हैं। जनता में भी कुछ लोग

अच्छे हैं — बहुत-अच्छे और कुछ ख़राब हैं—क़ायर, आलसी और पाखंडी। हमारी जनता को पूंजीवादी व्यवस्था से निकले अभी सिर्फ़ छब्बीस वर्ष हुए हे और पुराने समाज के असरात अभी शेष हैं। यह तो बहुत ही आश्चर्य की बात होगी कि एक फ़ौज जो जनता से बनी है—पूरी की पूरी संतों से भरी-पुरी हो। (हंसी) यह संभव नहीं है। इसी तरह कोम्सोमोल में भी कुछ लोग अच्छे हे और कुछ बुरे। यदि सभी लोग ईमानदार, वीर, अनुशासित और सुसंस्कृत होते, अपना काम समझते होते, तो फिर आपके करने के लिए कुछ न रह जाता। (हंसी)

तो भी, यदि मै यह कहूं कि कोम्सोमोल के आम सदस्य मुख्यत: हमारे तरुणों की अगली पंक्ति के प्रतिनिधि हैं, तो ग़लत न होगा। अलबत्ता, इनमें कुछ पिछड़े लोगों का भी हिस्सा है। उनको अपने प्रभाव क्षेत्र से भागने मत दीजिए, यही काम है।

एक साथी ने यहां कहा कि फ़ौज के कोम्सोमोल संगठनों में बहुत से अच्छे साथी हैं। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि वे सब के सब नेताओं की तरह नहीं हैं। मैं इसपर क्या कह सकता हूं? अच्छी बात है, पर नेता हमेशा सीमित संख्या में पाये जाते हैं, नहीं तो वे नेता नहीं होंगे, उनके नेतृत्व के लिए कोई होगा ही नहीं। अगर आपकी यूनिट में एक-दो नेतृत्व करनेवाले हे, तो यह बड़ी अच्छी बात है। यदि उनमें से एक बेकार हो जायेगा, तो दूसरा उसकी जगह ले लेगा। मुझे भय है कि यदि किसी यूनिट में नेता ही नेता हों, तो वह लड़ ही नहीं सकती, क्योंकि लड़ेगा कौन? (हंसी) महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे लोग हों जो नेता के पीछे चलना चाहते हों। ये लोग सक्रिय होते हैं और दिये गए तमाम काम को पूरा करते हैं। आपको सदा इन सक्रिय लोगों का इस्तेमाल करना चाहिए।

आपके बीच यह सवाल उठा है कि उन कोम्सोमोल सदस्यों की तरफ़ क्या रवैया अख़्त्यार किया जाय जिनके पास कोम्सोमोल का कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

इस प्रश्न को खानापुरी की निगाह से नहीं देखना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति पर कोम्सोमोल का विशेष उत्तरदायित्व नहीं है और वह कोई दूसरा, बहुत महत्वपूर्ण और आवश्यक उत्तरदायित्व अच्छी तरह निभा रहा है, विजय को नज़दीक ला रहा है तो समझना चाहिए कि वह सम्मान के साथ अपने कोम्सोमोल उत्तरदायित्व को निभा रहा है। और यह बहुत अच्छी बात होगी यदि कोम्सोमोल संगठन उसके द्वारा किए जाने वाले महत्वपूर्ण फ़ौजी काम को मान्यता दे दे, जिसमें उसका सारा समय लगता है और उसको कोई दूसरी ज़िम्मेदारी न सौंपे। मान लीजिए कि कोम्सोमोल का एक सदस्य अफ़सर हेड-क्वार्टर में एक महत्वपूर्ण काम में लगा है। अच्छा, तो क्या वह अपनी कोम्सोमोल की ज़िम्मेदारियां पूरी कर रहा है या नहीं? यदि स्टाफ़ पर वह कोई ज़िम्मेदार काम कर रहा है और पूरी तरह से फ़ौजी काम से लदा है, तो क्या उसे कोम्सोमोल की ज़िम्मेदारियां पूरी न कर पाने के लिए बुरा-भला कहा जा सकता है? अक्सर हमारे कुछ कोम्सोमोल संगठन अपने सदस्य के लिए और कुछ काम निकाल लेते हैं, यद्यपि वे जानते हैं कि वह काम में सर तक डूबा हुआ है। यह ग़लत है। आप लोग कोम्सोमोल की राजनैतिक कार्यवाहियों के संगठनकर्ता और नेता हैं। आपको मालूम होना चाहिए कि हर सदस्य किस तरह काम कर रहा है। और यदि कुछ लोग अपने बुनियादी फ़ौजी उत्तरदायित्व के कारण पूरी तरह व्यस्त हैं, चाहे वह वास्तव में कोम्सोमोल का काम न भी हो, तो आपको यह नहीं समझना चाहिए कि वे कोम्सोमोल के उत्तरदायित्व को निभाने में टालमटोल कर रहे हैं। एक आदमी, जो काम के बोझ से दबा हुआ है और दूसरा, जो टालमटोल करता है—उसमें बुनियादी भेद है।

हमारे लिए कोम्सोमोल का काम अपने आपमें कभी एक उद्देश्य न था। पार्टी की मेहनतकश जनता की हालत सुधारने में सहायता देने के लिए ही हमारे तरुण कोम्सोमोल में भरती होते हैं। कोम्सोमोल के सदस्य का महत्व मीटिंगों में भाषण देने, या साभी कोम्सोमोल सदस्यों में सक्रिय बने रहने या कोम्सोमोल में कोई सामाजिक जलसा संगठित कर देने में ही नहीं है। उसका मूल्य प्रथमतः इस बात से निर्धारित होता है कि वह सौपे गए राजकीय, फ़ौजी या आर्थिक कामों को कैसे निभाता है।

बिलकुल इसी तरह समूचे कोम्सोमोल द्वारा प्राप्त कामयाबियां— कोम्सोमोल के युवक-युवती द्वारा किए गए समाज के लिए फ़ायदेमंद श्रम का फल हैं। आप सबको खुद इस बात पर उचित गर्व है कि सरकार द्वारा विभूपित इतने वीर कोम्सोमोल की क़तारों से आए हैं। लेकिन उन्हें कोम्सोमोल के काम के लिए उतना विभूषित नहीं किया गया, जितना उनके फ़ौजी काम के लिए।

हमारे देश की विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार हमारी पार्टी ने अपने लिए विभिन्न लक्ष्य निर्धारित किए। पार्टी ने पहले ज़ारशाही को खतम करने, समाजवादी समाज संगठित करने और सोवियत व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए जनता का आह्वान किया। इस समय पार्टी की तमाम शक्ति सोवियत देश की सुरक्षा के प्रयत्नों में केन्द्रित है। इस समय पार्टी अपने सभी सदस्यों को अच्छा, साफ़-सुथरा जीव बनाने में बिलकुल दिलचस्पी नहीं ले रही है। इस समय पार्टी को सोवियत राज्य की सुरक्षा, उसकी स्वतंत्रता और उसके भविष्य की चिंता है। वह इसलिए लड़ रही है कि सारी दुनिया सोवियत सघ को एक महान शक्ति स्वीकार कर ले। आज का यही काम है। इस महान संघर्ष में जनता का पुनर्निर्माण भी हो रहा है, उसका दार्शनिक दृष्टिकोण, उसका चरित्र परिष्कृत हो रहा है। इस तरह हम नवीन जनता की एक नयी

पीढ़ी का पालन कर रहे हैं जो सर्वाधिक, नए समाज और समूची मानवता के आदर्शों के संघर्ष को सार्वजनिक बल पहुंचाती है। पार्टी अपने आप में कोई उद्देश्य नहीं, वरन् इन्हीं उद्देश्यों के लिए उसने अपने को समर्पित किया है। बिलकुल इसी तरह कोम्सोमोल भी अपने ही लिए नहीं रह सकता।

कोम्सोमोल के हर सदस्य का मूल्यांकन सिर्फ़ इस बात से नहीं होना चाहिए कि वह कोम्सोमोल के लिए क्या करता है, बल्कि इस दृष्टि से कि वह सार्वजनिक उद्देश्य को कितना बल पहुंचाता है। और यदि वह जमकर हर तरह से लड़ता है, यदि वह सोवियत राज्य की हिफ़ाज़त करता है और शत्रु के खिलाफ़ उस झंडे को उंचा रखता है, तो क्या सोवियत राज्य की सुरक्षा के उद्देश्य से किए गए उसके फ़ौजी काम को कोम्सोमोल का काम नहीं समझा जायेगा? यह स्पष्ट है कि उसका फ़ौजी काम ही कोम्सोमोल का काम है, यही उसके लिए मुख्य और बुनियादी काम है। इसके द्वारा ही वह अपनी देशभक्ति, वीरता और योग्यता का प्रदर्शन करता है।

हमारी कुछ यूनिटें इस समय सोवियत राज्य की सीमाओं के पार, विदेश में, रूमानिया की भूमि पर लड़ रही हैं। वहां हम नयी दुनिया देख रहे हैं। लाल फ़ौज ने स्थानीय जनता से सही संबंध स्थापित कर लिया है। हमें रूमानियन जनता की ज़िंदगी के तरीक़े में कोई दखलंदाज़ी नहीं करना चाहिए। यह बता देना सही होगा कि रूमानिया की जनता के बीच सोवियत संघ के विषय में अनेक असत्य बातें फैलाई गई हैं। कुछ रूमानिया-वासी इस डर से कि "भयानक बोल्शेविक हमारी खालें खिंचवा लेंगे," हमसे भाग रहे हैं। हमें यह दिखा देना चाहिए कि उन्हें धोखा दिया गया है। हमारी लाल फ़ौज के अफ़सरों और फ़ौजियों को परख लिया गया है। रूमानिया-वासी समझ

रहे हैं कि उनके देश में सुसंस्कृत जनता की सुसंस्कृत फ़ौज आई हुई है। हमें सिर्फ़ खुफ़ियागीरी और तोड़फोड़ के खिलाफ़ सुरक्षा के क़दम उठाने चाहिए—वे सिर्फ़ फ़ौजी क़िस्म के ही होने चाहिए।

अंत में दिल से आपके काम में मैं आपकी सफलता की कामना करता हूं। मालूम होता है कि इन गरमियों में बड़ी-बड़ी लड़ाइयां लड़ी जायेंगी। आपका काम है कि लोगों को टेकनिकल, राजनैतिक और मनोवैज्ञानिक तौर पर इनके लिए तैयार करें। आपको अपने तमाम काम इस काम की कामयाबी के लिए होनेवाले कामों के मातहत कर देने चाहिए। मैं आपकी पूर्ण सफलता की कामना करता हूं। (ज़ोरदार तालियां और "मिखाइल इवानोविच कालिनिन की जय!", "हुर्रा!" की आवाज़ें)

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा"
३१ मई १९४४

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा" और "पायोनीयरस्काया प्राव्दा" पत्रों के सम्मान समारोह में भाषण

११ जुलाई १९४५

साथियो, मैं "कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा" और उसके साथ ही कोम्सोमोल तथा "पायोनीयरस्काया प्राव्दा" के सम्मानित होने पर इन पत्रों के संपादक मंडलों, कोम्सोमोल के सदस्यों, पायोनीयरों और "पायोनीयरस्काया प्राव्दा" के पढनेवाले बच्चों को इन ऊंचे पारितोषिकों को प्राप्त करने के लिए बधाई देता हूँ। पहले अखबार को एक फौजी आर्डर प्राप्त हुआ है और दूसरे को श्रम के क्षेत्र में की गयी सेवाओं के लिए आर्डर मिला है। वास्तव में ये दोनों ही अखबार इस तरह विभूषित किए जाने के योग्य है।

पूरे युद्ध के दौरान में "कोम्सोमोलस्काया प्राव्दा" ने सोवियत युवकों में देशभक्ति, उत्साह और उत्सर्ग भावना भरने में योगदान दिया है। और उसकी कोशिश व्यर्थ नही हुई है।

इन चार वर्षों में हमारे तरुण और कोम्सोमोल के सदस्य जीवन के कठोर स्कूल से गुजरे हैं और बहुतों ने अपने प्राण भी होम दिए हैं। और इसमें सदेह नहीं कि इस दौर में जब लोगों ने इतना सब कुछ

किया, "कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा" ने इस सघर्ष मे उनका पथ प्रदर्शन किया —युवकों को सही दिशा प्रदान की। इस समय अपने काम के फल पर उसे गर्व होना ही चाहिए। उस प्रचार और आदोलन में महान सफलताए प्राप्त हुई है। सभवतया, सोवियत यूनियन के समूचे तरुण-समुदाय ने युग में ससार के तमाम तरुणों से अधिक बलिदान किया है।

"पायोनीयरस्काया प्राव्दा" ने भी बहुत बड़ा काम किया है। उसके द्वारा किए गए काम का पहला महत्व तो इस बात में है कि उसने बहुत कुछ अदृश्य तौर पर हमारे तरुण पायोनीयरों में बचपन से ही, अखबार पढने और सार्वजनिक जीवन में दिलचस्पी लेने की आदत डाल दी है। इस प्रकार "पायोनीयरस्काया प्राव्दा" ने तरुन पायोनीयरो के मानसिक विकास मे सहायता दी है—पहले की तरह नही कि एक आदमी ४० साल की उम्र तक अज्ञानी बना रहता था और फिर पार्टी-कार्यकर्ताओं की सहायता से या यूही अचानक विकास की ओर उन्मुख होता था। उसके द्वारा किए गए काम का दूसरा महत्व इस बात में है कि उसने बच्चों के मानसिक क्षितिजो को विकसित करने के साथ ही उनमें सक्रिय जीवन बिताने की इच्छा इस तरह बलवती बनाई कि उनमें कार्यशीलता, जीने की ख्वाहिश और कुछ कर जाने की तमन्ना धीरे-धीरे बढती जाय। दरअसल "पायोनीयरस्काया प्राव्दा" का यही ध्येय रहा है।

तरुणो की शिक्षा एक बहुत मुश्किल काम है। जो लोग इस क्षेत्र मे लगे है, वे सचमुच बहुत सम्मान का काम कर रहे है। लेकिन साथ ही यह बड़े उत्तरदायित्व का भी काम है। इस काम में सफलता तभी मिल सकती है जब इस काम के प्रति आपमें स्नेह और लगन हो। तरुण पायोनीयर कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे अपनी यूनिट के काम में अपना मन-प्राण लगा दें, वे पायोनीयरों के काम, उनके हितों, उनकी शिक्षा में बिलकुल ही दत्तचित हो जायें।

मै फिर दोहरा दू कि इस मुश्किल पर आवश्यक काम मे मै आपकी सफलता की कामना करता हू।

हम नव मानव की बात करते है। सचमुच, हम विशेष स्पष्टता के साथ देख रहे है कि मनुष्य पर बाहर का प्रभाव पडता है। मौजूदा समय मे आप खुद जनता पर पडनेवाले मानवता-विरोधी विचारो के जहरीले असर को देख सकते है। दूसरी ओर, जनता मे अच्छे, मानवीय भावनाओ को भरने एव देशप्रेम की शानदार मिसाल समस्त मानवता के सामने आज मौजूद है।

मै चाहता हू कि हमारे तरुण पायोनीयर कार्यकर्ता बच्चो को उसी तरह प्यार करे जैसे समझदार माताए उन्हे प्यार करती है जो उन्हे सच्ची खुशी प्रदान करना चाहती है। मै उनमे बहुत ही भले, सचमुच मानवीय सस्कारो को भरने की बात करता हूँ, जो बाद मे उनके जीवन का अग बन जायेगे। आपके सामने यह एक महत्वपूर्ण काम है। और इसलिए मै इस काम मे आपकी सफलता की कामना करता हूँ।

(तरुण-अखबारो के कार्यकर्ताओ ने म० इ० कालिनिन की दिली और पैतृक शुभ कामनाओ का हार्दिक स्वागत किया और आश्वासन दिया कि "कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा" और "पायोनीयरस्काया प्राव्दा" दोनो ही पत्र सोवियत तरुणो मे उच्चतम भावनाए और स्वदेशप्रेम जागृत करने का भरसक प्रयत्न आगे भी करते रहेगे)

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा"
१३ जुलाई १९४५

कोम्सोमोल के काम का आधार — संगठन और संस्कृति

मास्को क्षेत्र के सामूहिक गांवों के कोम्सोमोल संगठन के मंत्रियों के सम्मेलन में दिया गया भाषण

१२ जुलाई १९४५

साथियो, मैं सिर्फ़ एक समस्या पर बोलूंगा। आप लोग मास्को क्षेत्र के कोम्सोमोल संगठन के प्रतिनिधि हैं, उस मास्को क्षेत्र के—जिस क्षेत्र में हमारी राजधानी है, जहां शिक्षा और साक्षरता बहुत ऊंची सतह पर हैं। यह स्वाभाविक ही है कि मास्को क्षेत्र के हमारे कोम्सोमोल सदस्य हमारे समाजवादी समाज के सबसे अधिक सुसंस्कृत अंग हों। वैसे तो दैनिक व्यवहार में आप जिन गुणों को प्रदर्शित करते हैं—निस्वार्थता, असीम शक्ति, होड़ में उत्साह, देशभक्ति—एक शब्द में, हमारे कोम्सोमोल की सभी अच्छाइयां, वे कोम्सोमोल के दूसरे अंगों में भी विद्यमान हैं।

तो भी, राजधानी के कोम्सोमोल संगठन को कुछ भिन्न होना ही चाहिए, उसमें राजधानी का कोई विशेष गुण होना चाहिए। कहा जाता है कि राजधानी के नागरिक में विशेष चमक होनी है। वह

प्रदेशों के नागरिक से भिन्न होता है। वह दृष्टि के तीखेपन, घटनाओं के प्रति विशेष रुख, आदि मे पहचाना जाता है। माना कि आप खास मास्को के नहीं, वरन् मास्को क्षेत्र के निवासी हैं और खेती-बारी का काम करते हैं। तो भी, राजधानी के क्षेत्र के कोम्सोमोल संगठन होने के नाते आप में कुछ न कुछ विशेषता होनी ही चाहिए।

हमारे देश के सबसे अधिक सुसंस्कृत कोम्सोमोल संगठनों में होने के नाते आपके क्षेत्रीय सगठन से इस समय क्या आशा की जाती है? मुझे ऐसा लगता है कि आपको संगठन की आवश्यकता है। आपको चाहिए कि आज के मुक़ाबले कम श्रम लगाकर भी आप ज़्यादा अच्छे फल पा सकें। कोम्सोमोल के सामने इस समय यही काम है।

आखिर हमारे किसानों में आप ही सबमे अधिक सुसंस्कृत हैं— आपने सातवीं से लेकर दसवीं कक्षाओं तक शिक्षा पाई है। पुराने मास्को गुबेर्निया में बहुत थोड़े तरुणों ने माध्यमिक शिक्षा पाई थी। पुराने ज़माने में कभी भी तरुणों की शिक्षा पर इतना खर्च नहीं हुआ, जितना कि सोवियत शासन में।

शिक्षा का तात्पर्य कया है? शिक्षा लोगों को अनुशासित करती है और हर मसले को सुनियोजित तरीक़े से समझने की क़ाबिलीयत देती है। एक अशिक्षित आदमी अपने काम को यंत्रवत्, आदतन करता है। उसके पास कोई सुयोजित योजना नहीं होती। वह उसी तरह काम करता है, जैसे उसका बाबा करता था। लेकिन अब आपको उस तरह काम नहीं करना है, जैसे आपका बाबा करता था। अब आपको उसमें नवीनता और सुयोजना लानी है।

सुयोजना का क्या मतलब है? इसका मतलब यह है कि बुवाई इस तेज़ी से न की जाय कि हर आदमी मुर्गे की आवाज़ के साथ जाग जाये और रात गए सोये और जीभ निकाले भागा-भागा फिरे। मैं मानता हूं कि इस तरह भी नतीजे प्राप्त किए जा सकते हैं। लेकिन

आप, जो किसानों में बुद्धिजीवी-वर्ग के हैं, सुसंस्कृत हैं, आपका कर्तव्य है कि आप अपने कार्य में योजना लाएं, यह देखें कि वे बिना शोरगुल के अपने आप होते रहें, और उनके अच्छे फल निकलें। यहां आपके सामने बड़ा काम है। कोम्सोमोल संगठन को चाहिए कि इस क्षेत्र में वह आगे रहे।

लेकिन दैनिक जीवन को सुसंस्कृत करने का क्या अर्थ है? इसका अभिप्राय यह है कि ऐसा कुछ न किया जाय, जो व्यर्थ हो। इसका मतलब यह है कि हर क्रिया का फल निकले। क्या आपको मालूम है कि कारख़ाने में कैसे काम होता है? एक मज़दूर अपनी लेथ पर जितनी दौड़-धूप करता है, उतना ही कम काम कर पाता है। और एक मज़दूर जो शायद ही कभी हिलता हो, कमाल कर दिखाता है, वह एक बार भी व्यर्थ में नहीं हिलता। उसके सभी औज़ार और लेथ उसके पहुंच में होते हैं। बिना घूमे ही उसके हाथ आवश्यक चीज़ पर पड़ते रहते हैं और उसका काम बहुत ही उत्पादकीय होता है।

देहातों में, खेतीबारी में आप सुबह से शाम तक घोड़े की तरह काम कीजिए, और फिर भी आपको लगता है कि कुछ ज़्यादा काम नहीं हुआ। मैं सही कह रहा हूं या नहीं? लगता है कि आप काम ही काम करते रहे, लेकिन तो भी तमाम काम पड़ा रहता है। यह उचित संगठन की कमी के कारण होता है। इसलिए हमें अपने काम में संगठन लाना है। मैं तो कहूंगा कि हमें अपने दैनिक जीवन में भी संगठन लाना है।

और कोम्सोमोल के काम में संगठन का क्या मतलब है? इसका मतलब है कि मीटिंगों में व्यर्थ, खोखली बातें न हों। जब किसी सवाल पर बहस हो, तो आम तौर पर नहीं, बल्कि ठोस हो और उसे व्यावसायिक तरीक़े से हल किया जाय। वह पूरी तरह निपटाया जाय। यह याद रखिए कि एक आदमी सुनियंत्रित है या नहीं, यह

बात उसके हर काम से—आदोलन-सबधी काम, मीटिग या चाय की मेज पर के व्यवहार से—प्रकट हो जाती है।

मै समझता हूं कि सबसे अधिक सुसस्कृत होने के नाते मास्को कोम्सोमोल संगठन इस काम को निभा सकता है। यदि वह इसे हल नही करता, तो फिर कौन करेगा? आपका काम सुनियोजित होना चाहिए, क्योकि खेतीबारी में आपको विभिन्न तरीके की फसलो से निपटना पडता है। ऐसी फसले—जिनमे बहुत श्रम लगता है—बगीचे की फसलें, तरकारिया जिनमें बहुत काम की जरूरत होती है। सचमुच यदि आप सगठित नही है, तो हो सकता है कि आपको कोई फल न मिले।

कोम्सोमोल के सामने मैने पहले भी यह मसला उठाया है। लेकिन आपकी सभाओं और भाषणो से यह लगता है कि आपने इसपर गभीरता से सोचा नही है। तो भी, कोम्सोमोल लोगो के चरित्र का निर्माता है। मै कह सकता हू कि कोम्सोमोल सारे जीवन के लिए बुनियाद डालता है। अत: आप, कोम्सोमोल के सक्रिय कार्यकर्ता अपने ऊपर बहुत बडा उत्तरदायित्व ले रहे है। आपके कुछ सगठन क्रियाशील, सोवियत देशभक्तो का, अच्छे लोगो का निर्माण कर रहे है, परतु उनमे सगठन की अभी पूर्ण क्षमता नही है।

मुझे आशा है कि मास्को कोम्सोमोल सगठन अपने काम के इस पहलू पर अवश्य ध्यान देगा। मै अपने दिल से आपकी सफलता की कामना करता हू। (जोरदार तालिया। सब उठ खडे होते है। "मिखाइल इवानोविच कालिनिन—जिदाबाद!" और "हुर्रा!" की आवाजे)

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा"
१४ जुलाई १९४५

गौरवशाली सोवियत ललनाएं

अखिल-संघीय लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय कमेटी में लाल फ़ौज और नाविक बेड़े से लौटी हुई तरुणियों की सभा में दिया गया भाषण

२६ जुलाई १९४५

साथियो, सबसे पहले मैं आप सबको महान जन-युद्ध के विजयी अंत पर बधाई देता हूं। शत्रु हार चुका है। हमारे उद्देश्य की विजय हुई है। इस असाधारण युद्ध में औरतों ने मोर्चे के पीछे रह कर अथक परिश्रम करके फ़ौज की सहायता तो की ही, साथ ही वे हाथों में हथियार लेकर लड़ी भी थीं।

इस युद्ध में जिन तरुणियों ने भाग लिया, वे अपनी शिक्षा, सांस्कृतिक सतह, स्वास्थ्य, शारीरिक दृढ़ता और फ़ौजी काम से दिचलस्पी के आधार पर लाखों की तादाद में फ़ौज के लिए चुनी गयी थीं। मैं समझता हूं कि हमारी अच्छी से अच्छी तरुणियां मोर्चे पर गयी थीं। यह स्वाभाविक ही था कि उनके काम बहुत संतोषजनक होते।

युद्ध का अंत हो गया और अब आप फ़ौजी सेवा से निवृत्त हो रही हैं। युद्ध में भाग लेना आसान काम नहीं था। लेकिन आपके लिए फ़ौज से अलग होना भी आसान नहीं है। मिसाल के लिए, सामूहिक खेती करनेवाला किसान, जिसका उद्देश्य निश्चित है, जिसको रहने का घर है, परिवार है, पत्नी है, बच्चे हैं, उसका फ़ौज से अलग हो जाना एक बात है। लेकिन एक २०-२३ साल की तरुणी के लिए जो मोर्चे से लौटी है, जिसे जीवन की कठोरताओं का पहली बार आभास वहां हुआ, यह बिलकुल दूसरी बात है। और इससे भी ज्यादा, वह तमाम मुश्किलों और ख़तरों के बावजूद इस ज़िंदगी की आदी फ़ौज में ही हुई। अधिकांश तरुणियां, जो फ़ौजों में रही हैं, युद्ध से पहले आत्म-निर्भर नहीं थीं। वे अध्ययन करती थीं। एकाध को छोड़कर वे सभी अपनी माओं, दादियों और पिताओं के संरक्षण से आई थीं और मोर्चे पर ही आकर स्वतंत्र हुईं। यह स्वतंत्र जीवन ३-४ साल बाद ख़तम हो रहा है। और इसलिए यह स्वाभाविक है कि आपमें ९० फ़ीसदी नए जीवन और भविष्य के बारे में चिंतित हों। लेकिन याद रखिए कि नए जीवन में आपको फ़ायदा ही रहेगा।

यह फ़ायदा क्या है? वह यह है कि अब आप पूरी तौर से सामर्थ्यवान होकर नये जीवन में प्रवेश करेंगी। यह बड़ा फ़ायदा है, क्योंकि शारीरिक तौर से सक्षम लोग ही जीवन से अधिक लाभ उठाते हैं। यह प्रत्यक्ष लाभ आपको लाल फ़ौज में नौकरी के कारण प्राप्त हुआ है।

आपमें से अधिकांश की नसें सुस्थिर हैं। युद्ध के भयानक अनुभवों ने आपको तोड़ा नहीं, वरन् आप और अधिक लौह हो गई हैं। फ़ौज में जाने से यह एक और फ़ायदा हुआ है। आपके भावी जीवन के लिए यह भी बड़े महत्व की बात है।

तो अब आपसे क्या आशा की जाती है? क्या फ़ौज का आपका अनुभव आपके किसी फ़ायदे का होगा? निस्संदेह उससे फ़ायदा होगा।

आपने महान राष्ट्र-व्यापी प्रयत्न में भाग लिया है—यही विचार आपको आंतरिक शक्ति और संतोष प्रदान करेगा। सबसे बड़े ख़तरे के सामने आपने अपने देश की रक्षा की और यह सचमुच एक बहुत महान साधना है। आपके भावी जीवन के लिए यह गहरी नैतिक बुनियाद बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी।

किसी ने यहां कहा कि जो किया गया है, उसमें कोई बड़ी बहादुरी की बात नहीं। शौर्य, ऐसा शौर्य जो विजली की चमक की तरह किसी को प्रकाश में ला दे—किन्हीं व्यक्तियों के भाग्य में होता है। ठीक है, इस प्रकार का शौर्य बहुत हद तक परिस्थितियों पर निर्भर होता है। शौर्य के विशिष्ट उदाहरण—जो शौर्य-प्रदर्शन की परिस्थितियों से मेल खा जाएं—अक्सर घटना-चक्र पर आधारित होते हैं। जिन्हों ने शौर्य के ये करिश्मे दिखाए, वे परिस्थितियों और घटना-चक्र का फ़ायदा इसलिए उठा सके कि वे शारीरिक, मानसिक, नैतिक और राजनैतिक तौर से इस शौर्य-प्रदर्शन के लिए तैयार थे। मुझे विश्वास है कि यदि ऐसी परिस्थितियां आ जाएं तो हमारी अनेक तरुणियां ऐसे जौहर कर दिखायेंगी। तो भी, अपनी जगह पर यह बात सही है कि हम वैयक्तिक शौर्य की बात कर रहे हैं।

एक बार एक अंग्रेज़ी जहाज़ के कप्तान से सवाल किया गया: शौर्य किस बात में है? उसने जवाब दिया: हर परिस्थिति में अपने कर्तव्य का पूर्णतया पालन करना ही शौर्य है। हर परिस्थिति में अपने कर्तव्य का पालन करना भी शौर्य है। और इसी शौर्य के लिए, लाखों द्वारा प्रदर्शित इसी सामान्य वीरता के लिए सरकार ने कोम्सोमोल को देश की सबसे बड़ी उपाधि—"लेनिन पदक"—से विभूषित किया है। मैं समझता हूं कि आप सभी को इसका गर्व होगा, क्योंकि कोम्सोमोल का विभूषित होना आप सबका ही विभूषित होना है।

मुझे पूरा विश्वास है कि आप में ६६ फ़ीसदी जल्दी ही अपनी नयी

परिस्थिति की आदी हो जायेंगी और जो लोग लंबे अरसे से नागरिक जीवन व्यतीत करते हैं, उन से आप किसी प्रकार कम न रहेंगी।

मुझे यक़ीन है कि आप सब जल्दी ही पुनः नागरिक जीवन में लग जायेंगी। सोवियत संघ में काम की कमी नहीं। आपको फ़ैक्टरियों, मिलों, सामूहिक खेती के क्षेत्रों, दफ़्तरों और अनेक तरह की संस्थाओं से काम के लिए बुलाया जायेगा—जहां भी आप जायेंगी खुले हाथों आपका स्वागत होगा। इस के अलावा, आप शीघ्र ही सार्वजनिक, राजनैतिक और संगठनात्मक क्षेत्रों में तरक़्क़ी हासिल करेंगी। यह बिलकुल स्वाभाविक ही है। एक तरुणी, जिसने ३ वर्ष अनुशासन के वातावरण में काम किया हो, देश के लिए उसका बड़ा मूल्य है।

इसीलिए मैं समझता हूं कि आप शीघ्र ही उचित स्थान पर पहुंच जायेंगी। कोम्सोमोल की केन्द्रीय कमेटी को अलबत्ता उन सब की सहायता करनी चाहिए जो इस या उस कारण से किसी मुश्किल में हों। लेकिन ऐसी तो अधिक नहीं, एकाध ही होंगी और उन्हें हर संभव सहायता देनी चाहिए।

मुझे विश्वास है कि केन्द्रीय और प्रादेशिक कोम्सोमोल संगठन आपको काम दिलाने की हर तरह से कोशिश करेंगे, क्योंकि आपने बहुत ज़बर्दस्त और महत्वपूर्ण काम किया है।

आपने एक बात और की है। हमारे देश में औरतों को बराबरी का दर्जा अक्तूबर-क्रान्ति के पहले दिन से ही हासिल है। लेकिन आपने एक दूसरे क्षेत्र में, हाथ में हथियार लेकर स्वदेश की सुरक्षा में भी बराबरी प्राप्त कर ली है।

एक बूढ़े अनुभवी की भी बात सुन लीजिए। भविष्य में कहीं अपने अन्दर बड़बोलापन न आने दीजियेगा। अपनी सेवाओं का अपने आप गुणगान न कीजिएगा। उसे दूसरों पर ही छोड़ दीजिए। यह ज्यादा अच्छा होगा।

मैं आपके भविष्य के विषय में बहुत आशावान हूं। मुझे निश्चय है कि आप नागरिक जीवन में भी महत्वपूर्ण भाग लेंगी। शायद फ़ौज की तरह वह उतना उल्लेखनीय न होगा, लेकिन शांति-काल के निर्माण-कार्य में आप अपना हिस्सा अवश्य देंगी।

युद्ध-काल की स्थिति चाहे जितनी ही उल्लेखनीय क्यों न हो, वह जनता को चाहे कितना ही एक क्यों न कर दे, इन्सान की अच्छी भावनाओं को—जैसे देशभक्ति को, वह चाहे कितनी ही ऊंचाइयों पर क्यों न पहुंचा दे, लेकिन एक राष्ट्र के इतिहास में यह एक घटना-मात्र ही रहती है, जब कि शांतिपूर्ण स्थिति एक देश की साधारण स्थिति है—जिस स्थिति में हम सबको काम करना होता है।

मैं दिल से कामना करता हूं कि आपने जो रचनात्मक शक्ति एकत्र की है, वह अब शान्तिपूर्ण निर्माण में लगे। (देर तक ज़ोरदार तालियां। सब उठ खड़े होते हैं और म० इ० कालिनिन का दिल से स्वागत करते हैं)

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा"

३१ जुलाई १९४५

उच्चतर स्कूलों में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बुनियादी सिद्धांतों की शिक्षा के बारे में

कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के उच्चतर पार्टी-स्कूलों की सभा में दिया गया भाषण

३१ अगस्त १६४५

चूंकि मैं उन लोगों के बीच भाषण दे रहा हूं जिनका पेशा, जिनका काम जनता में कम्युनिस्ट विचार भरना है, इसलिए मैं यह सवाल उठाना चाहता हूं कि मजदूरों, किसानों बुद्धिजीवियों और विशेषतः युवकों में कम्युनिस्ट प्रचार की सफलता के लिए कौन से रूप और कौन से तरीक़े अपनाए जायें।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद और उससे संबंधित विज्ञानों की शिक्षा देना मुश्किल काम है, लेकिन साथ ही बहुत महत्वपूर्ण काम है। लेनिन ने एक बार कहा था कि मार्क्सवाद की विचारधारा एक तो लोगों को इसलिए आकर्षित करती है कि वह वैज्ञानिक है और दूसरे इसलिए कि वह क्रान्तिकारी है। आप मार्क्सवाद-लेनिनवाद को दो तरीक़े से पढ़ा सकते हैं—रचनात्मक तरीक़े से, और मैं कहूं यदि हवाई तरीक़े से।

रचनात्मक तरीके, जो विशेषत कठिन है, और हवाई तरीके मे क्या भेद है? पढाने के हवाई तरीके का मतलब है कि एक किताब को लेकर "यहा से वहा तक" निशान लगा देना, शिक्षार्थियो से कहना कि पढ लो, और फिर जो उन्होने पढा है उसमे से सवाल पूछ लेना। इस तरीके से सबसे कम फल निकलता है। प्रचारक या आदो-लनकारी जितना ही हवाई बात करेगा, उतना ही वह ठोस बातो से दूर रहेगा और उतना ही कम उसकी बात का प्रभाव श्रोताओ पर पडेगा।

लोग मार्क्सवादी विचारधारा का पुस्तकीय पाडित्य प्राप्त कर सकते है। वे उसका चैतन्य ज्ञान प्राप्त कर सकते है, यानी वे उसे अपनी समझ का अग बना सकते है। हम मार्क्सवादियो को कोशिश करनी चाहिए कि जितने हो सके, उतने लोग मार्क्सवादी विचारधारा को पूरी तरह से ग्रहण करे, उसे समझे, और उसका पूरा पाडित्य प्राप्त करे।

मै यहा इस विज्ञान की शिक्षा पर ही क्यो बोल रहा हूँ? क्योकि हमारी उच्च शिक्षा-सस्थाओ मे मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन बहुत ही मुश्किल समझा जाता है।

एक बार, एक ऐसे साथी से जिन्हे इस विषय पर अधिकार था, मैने यह प्रश्न पूछा "यदि हम इस विषय को बाध्य न करके लोगो की स्वतत्रता पर छोड दे तो कैसा होगा? क्योकि दरअसन एक सुसस्कृत व्यक्ति के लिए मार्क्सवाद-लेनिनवाद सबसे अधिक दिलचस्प और आवश्यक विषय है। उमके आधार पर दिलचस्प से दिलचस्प भाषण दिए जा सकते है। जब इस विषय पर भाषण दिए जाए तो विद्यार्थियो के हाल खचाखच भरे होने चाहिए।" उस साथी ने थोडी देर सोचा और फिर जवाब दिया: "आपकी बात सही हो सकती है। ज्यादा अच्छा हो कि हम थोडा और देख ले। जब तक ऐसे लेक्चरर

न हों जो सचमुच इस विषय पर विद्यार्थियों को आकर्षित कर सकें (हंसी), तब तक हम शायद ही इसे निभा सकें, क्योंकि हम लोग इस मामले में कमज़ोर हैं।"

इस बातचीत से आप समझ सकते हैं कि इस वक़्त मार्क्सवाद-लेनिनवाद के शिक्षकों के सामने पढ़ाई के तरीक़ों को सुधारने, इतने दिलचस्प विषय को पढ़ाने के रचनात्मक तरीक़े पर सोचने का उत्तरदायित्व है।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद समाज और उसके विकास के नियमों का सच्चा विज्ञान है। बाहरी तौर पर हम इसे जल्दी जान सकते हैं। लेकिन सवाल है कि कैसे?

मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन एक हद तक अंकगणित के अध्ययन की तरह है। अंकगणित यदि सबसे ज्यादा हवाई नहीं, तो हवाई विषय तो है ही। लेकिन वह कैसे पढ़ाई जाती है? पहले आप उसके नियमों का अध्ययन करते हैं। फिर आपको अनेक ठोस, बिलकुल व्यावहारिक समस्यायें हल करने के लिए दी जाती हैं। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन भी ठोस तथ्यों की सहायता से, जीवन से ली गई मिसालों से होना चाहिए।

साथियो, आप कुछ प्रोफ़ेसरों को जानते हैं जो इतिहास पढ़ाते समय सिर्फ़ एक ही प्रकार के तथ्यों और तारीखों को बार-बार दोहराते हैं। लेकिन दूसरे भी हैं, जो अपने हर लेक्चर में नए तथ्य, नयी सामग्री देते हैं। वे आज की समस्याओं से पिछले युग की समस्याओं का मुकाबला करते हैं और कल और आज की असलियत में भेद बताते हैं। इतिहास का अध्ययन जब इस प्रकार किया जायेगा तभी लोग विषय से प्रभावित होंगे और उसका गहन अध्ययन करेंगे।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद विशेषतः बुनियादी सिद्धांतों के ठोस तथ्यों,

ठोस कामों से लगातार परीक्षा की मांग करता है, क्योंकि सिर्फ इतना ही काफी नही है कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद का एक विषय के रूप में अध्ययन किया जाय। साथ ही साथ आवश्यकता इस बात की है कि सामाजिक स्थितियों को समझने के लिए उसे व्यवहार में लागू करना सीखा जाय। मेरी राय में यह मुख्य चीज है। एक आदमी विचारधारा का पंडित हो सकता है। लेकिन हो सकता है कि सामाजिक परिस्थि-तियों पर उसे लागू कर सकने के वह अयोग्य हो। यह एक बहुत अधिक पेचीदा मामला है। एक मार्क्सवादी का मूल्य उसी हद तक है जिस हद तक वह विशिष्ट समस्याओ को हल करने के लिए मार्क्सवादी तरीके को लागू कर सकने के योग्य है।

मान लीजिए दो विद्यार्थी परीक्षा देने आए। उनमें से एक का उत्तर पाठ्य-पुस्तक के ही शब्दो में है, जबकि दूसरे का उत्तर यद्यपि पुस्तक की सामग्री पर आधारित है और बुनियादी तोर पर सही है, लेकिन उसकी स्थापनाओं से विभिन्न है। मै इन विद्यार्थियों के काम का मूल्याकन किस तरह करूगा? मै दूसरे विद्यार्थी के ज्ञान पर अधिक विश्वास करूगा ओर किसी भी हालत मे उस विद्यार्थी से कम नंबर न दूंगा जिसने रट कर किताब को दोहरा दिया है। (हॉल में सनसनी) मै ऐसा क्यों करूगा?

हमारा उद्देश्य होना चाहिए कि हमारे विद्यार्थी अपने विचारों को खुद प्रकट कर सके, वे अपने ज्ञान का स्वतंत्र प्रयोग करने के योग्य वनें, न कि महज किताबों से उद्धरण देनेवाले बने। प्लेखानोव के शब्दो मे वे कही "उलट दिए गए पुस्तकालय" न बन जाएं।

मेरा अनुभव बताता है कि साधारणत: बुद्धू विद्यार्थियों द्वारा दिए गए उत्तर समझदार विद्यार्थियों के उत्तर के मुकाबले अधिक किताबी होते हैं। यह बिलकुल स्वाभाविक है, क्योंकि दूसरी तरह के

विद्यार्थी विषय समझने की और पचाने की कोशिश करते हैं। मार्क्सवादी विचारों को अपनी भाषा में व्यक्त कर सकना—बड़ी बात है। उन्हें इस दिशा में प्रोत्साहित करना चाहिए। (तालियाँ)

हमें ऐसे लोगों की आवश्यकता नहीं जो किताबी मार्क्सवादी हों, जो परीक्षा की तैयारी के लिए शब्दशः फारमूलों को रट लेते हैं; बल्कि हमें उनकी आवश्यकता है जिन्होंने मार्क्सवादी तरीक़े पर पांडित्य हासिल किया है और जो उसे व्यवहारिक जीवन में लागू करने में समर्थ हैं।

आप जानते हैं कि मार्क्सवाद सामाजिक स्थितियों को समझने का वैज्ञानिक तरीक़ा है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का ज्ञान राजकीय, आर्थिक और सांस्कृतिक कार्यों के लिए आवश्यक है। अपने पेशे का अच्छा ज्ञान रखते हुए क्या वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धांत से अवगत होना एक इंजीनियर के लिए महत्व की बात नहीं है? तब वह हर स्थिति को जागरूक तौर पर, सही तौर पर समझ सकने के योग्य होगा। मार्क्सवाद का विज्ञान पूरे सामाजिक ढांचे को समझने में भी सहायक होता है।

अपनी विचारधारा के आधार पर मार्क्स ने पूंजीवादी समाज का बहुत अच्छा विश्लेषण किया। मार्क्स ने अपनी विचारधारा की तात्विक विशेषताओं को बताने के बाद यदि पूंजीवादी समाज का विश्लेषण न किया होता, तो क्या आप समझते हैं कि समाज विज्ञान-शास्त्र में उसकी विचारधारा को इतना प्रमुख स्थान मिलता, जितना आज मिला हुआ है? फिर, यदि मार्क्स ने अपनी विचारधारा बताने तक ही अपने को सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे पूरे सामाजिक ढांचे को समझने का आधार बनाया, तो हर प्रोफ़ेसर को भी चाहिए कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के मूल तत्वों को समझाने के साथ ही वह हर समाजी स्थिति का विश्लेषण करे। अगर वह ऐसा करेगा तो उसके लेक्चरों

में लोगों के लिए कशिश पैदा होगी। यदि प्रोफ़ेसर सामाजिक स्थिति का विश्लेषण करें, तो उनकी शिक्षा का ढंग रचनात्मक होगा।

मैं भी एक अध्यापक था—अंडरग्रउंड स्टडी-सर्किल में (भूमिगत अध्ययन गोष्टी) में मार्क्सवाद का अध्यापक। कभी-कभी ऐसा होता था कि किसी बात को समझाते समय मैं महसूस करता कि जो मैं कह रहा हूं, उसे मेरे विद्यार्थी पूरी तरह समझ नहीं पा रहे हैं। तब मैं इस तरह पढ़ाने लगता: पहले हम लोग पन्द्रह मिनट सिद्धांत पढ़ते थे, फिर जीवन की अनेक स्थितियों का विश्लेषण करते हुए दिल खोल कर बातें करते थे। बस आप मान लीजिए कि लोग आसानी से बात समझ लेते थे। लेकिन यदि मैं पूरे घंटे भर सिद्धांत बघारता रहता तो उसका कोई नतीजा न निकलता। अतः आप समझ सकते हैं कि प्रचारकों के लिए अपने विषय को सजीव बनाने के लिए अनेक तरीक़े प्रयुक्त करना कितना आवश्यक है—और जो सामग्री उन्होंने पढ़ी है उसको अधिक अच्छी तरह समझाना कितना ज़रूरी है। हमारे विश्वविद्यालयों के अध्यापकों को यह तो अवश्य ही करना चाहिए।

रचनात्मक तरीक़े से शिक्षा देने का यही तात्पर्य है।

अलबत्ता, इस तरीक़े से पढ़ाना बहुत ही कठिन है, क्योंकि आपको हर लेक्चर तैयार करना पड़ेगा, उचित सामग्री ढूंढ़नी पड़ेगी और उस पर विचार करना होगा। शिक्षा के इस तरीक़े से मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बुनियादी सिद्धांतों के बारे में आपके विद्यार्थियों का ज्ञान गहरा होगा, क्योंकि इस तरह ठोस घटनाओं और ठोस तथ्यों की सहायता से दिल में बात ठीक बैठ जाती है। लेकिन जब शिक्षा हवाई तरीक़े से दी जाती है तो फल अधिक अच्छा नहीं होता। पढ़ाई थकाने वाली हो जाती है। और लोग उसके इस विषय के अध्ययन की इच्छा ही छोड़ देते हैं।

हमे विद्यार्थियो से सिर्फ यही माग नही करनी चाहिए कि वे मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धातो को जाने। हमे उनसे यह भी माग करनी चाहिए कि वे विभिन्न तथ्यो को मार्क्सवाद-लेनिनवाद की दृष्टि से देखे और उनका मूल्याकन करे। यदि यह लेक्चरो के दौरान मे नही हो सकता तो कम से कम कक्षा के वाद-विवाद के दौरान मे तो हो ही सकता है।

इसलिए साथियो, (मै अपने को भी यदि लेक्चरर या अध्यापक नही समझता, तो कम्युनिस्ट विचारधारा के प्रचारको मे एक तो समझता ही हू) (तालिया) मार्क्सवाद-लेनिनवाद पर होनेवाले लेक्चर, जहा तक उसके क्रान्तिकारी और वैज्ञानिक पक्ष का सबध है, सिद्धातो पर आधारित हो (इन दो आवश्यक बातो को याद रखिए कि वे क्रान्तिकारी और वैज्ञानिक हो)। और वे तमाम उन सुन्दर रगो से प्रकाशमान हो जो इन्सान के लिए सम्भव हो। यह न भूलिए कि तरुण आकर्षक चीजे चाहते है। और यदि आप मामले पर विचार करे, तो मार्क्सवाद-लेनिनवाद से अधिक आकर्षक और क्या हो सकता है, क्योकि ये विचार असीमित रचनात्मक प्रयत्नो के विचार है। इस क्षेत्र मे आपके सामने विशद से विशद द्वार खुल जाते है। अत आपका यह कर्तव्य हो जाता है कि आप गभीर रचनात्मक प्रयत्न करे।

मेरा विश्वास है कि अपनी तमाम कोशिशो को केन्द्रित करके आप जनता की उस मानसिक स्थिति का प्रयोग कर सकते है जिसका जिक्र मैने अपने कथन के शुरू मे किया था। आप मजदूर-वर्ग, किसानो और बुद्धिजीवियो मे मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विचार बहुत बडे पैमाने पर भर सकते है।

साथियो, शिक्षा के रचनात्मक तरीके मे आपकी पूर्ण सफलता की मै कामना करता हूं और मै यह विश्वास दिलाता हू कि यदि आप इस तरीके को अपनायेगे, तो उच्चतर माध्यमिक स्कूलो मे आप मार्क्सवाद-

लेनिनवाद के बुनियादी सिद्धांतों को सबसे ज़्यादा दिलचस्प, और सबसे अधिक आकर्षक विषय बना सकेंगे।

हमारे देश के मजदूर-किसान सोवियत सत्ता पर अपना सब कुछ निछावर करने को तैयार हैं। (तालियां) तो फिर आइए, हम और आप सब अपने देश की मेहनतकश जनता को मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विचारों से और अधिक पूर्ण करें, उनके मार्ग को और अधिक प्रकाशमान करें।

"प्रोपेगैंडिस्ट" मैगज़ीन

अंक १७ १९४५

अखिल-संघीय लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय कमेटी के चौदहवें अधिवेशन के समारोहिक बैठक में दिया गया भाषण

२८ नवंबर १९४५

लेनिनवादी कोम्सोमोल की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य साथियो! प्रादेशिक कोम्सोमोल सगठनों के प्रतिनिधियो और मास्को सगठन के सक्रिय कार्यकर्ताओ!

आज लेनिनवादी कोम्सोमोल को सर्वोच्च उपाधि — "लेनिन पदक" से विभूषित किया गया है। अब कोम्सोमोल का फरहरा जनता के सुख के लिए सघर्ष करनेवाले महान योद्धा व्लादीमिर इल्यीच लेनिन के चित्र से विभूषित हो गया है।

साथियो, अपनी अनुपम सेवाओं के लिए सोवियत सरकार ने नौजवान कम्युनिस्त लीग को तीसरी बार सम्मानित किया है।

पहली बार कोम्सोमोल को गृह-युद्ध के दौरान में, उसकी सेवाओं के लिए पारितोषिक मिला था।

उन दिनों कोलचक, देनिकिन, यूदेनिच, पोलिश व्हाइट-गार्डों और व्रैंगल का जब हमारी जनता सोवियत सत्ता की रक्षा के संघर्ष

में लगी थी, मुक़ाबला करने के लिए कोम्सोमोल ने हज़ारों क्रांतिकारी तरुणों को प्रेरित एवं संगठित किया था। बोल्शेविक पार्टी के झंडे के नीचे अपने जौहर दिखा कर तरुणों ने सोवियत सत्ता के प्रति अपनी भक्ति का परिचय दिया था। सोवियत सत्ता को सुदृढ़ करने के लिए, हमारी जीत के लिए वे कोम्सोमोल के नेतृत्व में लड़े थे।

कोम्सोमोल को दूसरी बार फिर उसके महान काम के लिए, उसके द्वारा प्रदर्शित उत्साह के लिए, सोशलिस्ट होड़ विकसित करने के लिए, पंचवर्षीय योजना की सफलता के लिए, पार्टी के नेतृत्व में चलाए गए आत्मबलिदान पूर्ण संघर्ष के लिए और उसकी ऐसी कार्य-वाही के लिए जो अपने साथ दूसरों को भी लेकर चलती है और उनसे उत्साहपूर्ण काम करवाती है, हमारी सरकार ने १९३१ में पहली पंचवर्षीय योजना के पूर्ण होने पर विभूषित किया था। उस समय कोम्सोमोल को "श्रम के लाल झंडे का पदक" प्रदान किया गया था।

अब मैंने आपको तीसरा पदक प्रदान किया है। यह पदक, "लेनिन पदक" हिटलरी जर्मनी के खिलाफ लड़े गये सोवियत संघ के देशभक्तिपूर्ण युद्ध में कोम्सोमोल द्वारा की गई उल्लेखनीय सेवाओं के लिए दिया गया है। कोम्सोमोल ने स्वदेश के प्रति सर्वोच्च सेवा की भावना में जिस तरह सोवियत तरुणों को शिक्षित किया है, यह पदक उसी के लिए प्रदान किया गया है। कोम्सोमोल को यह उच्चतम पारितोषिक देकर सरकार ने उसके द्वारा देशभक्तिपूर्ण युद्ध में स्वदेश की रक्षा के लिए मोर्चे पर और पिछवाड़े में, फ़ैक्टरियों और मिलों में, तथा सामूहिक खेती के क्षेत्रों में किए गए महान संघर्ष पर ज़ोर दिया है।

एक शब्द में, कोम्सोमोल को स्वदेश के प्रति सेवाओं के लिए विभूषित किए जाने का मतलब है कि कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं, जिसमें पार्टी के वफ़ादार सहायक कोम्सोमोल ने भाग न लिया हो।

साथियो, जब हमारी सरकार किसी सगठन या व्यक्ति को विभूषित करती है, तो वह उसकी पिछली सेवाओं को ही ध्यान में नही रखती, वरन् उसके भविष्य के काम पर भी ध्यान रखती है। कोम्सोमोल के सामने अब क्या काम है? अब किस क्षेत्र में आपको विशेष उत्साह से काम करना है, जिससे कोम्मोमोल के झडे को और भी सफलताए प्राप्त हों?

मै आपसे कोई नई बात नही कहने जा रहा हूँ। मै तो आपको वही बात बताऊगा जो आप जानते है, पर, जिसे फिर से याद करना चाहिये। साथियो, आपका पहला और मुख्य काम है कि सरकारी सस्थाओं द्वारा बनाई गई नई पचवर्षीय योजना की, युद्धोपरात निर्माण योजनाओं की सफलता के लिए आप सघर्ष करे। जिमने भी अपने देश में फ़ासिस्टो द्वारा किए गए विनाश को देखा है, जिमने भी अपने देश को सुदृढ करने के महत्व को ग्रहण किया है, उन सबकी यह बात स्पष्ट होगी।

मै आपका ध्यान एक और व्यावहारिक काम के प्रति खीचना चाहता हू। आप जानते है कि इस समय अतर्राष्ट्रीय सबध तेजी से विकसित हो रहे है। मै चाहता हूँ कि हमारे तरुण विदेशों की जनता के जीवन, उनकी सस्कृति और चरित्र के विषय मे और अधिक जानकारी प्राप्त करे। विशेषत:, अधिक से अधिक कोम्सोमोल सदस्यों को विदेशी भाषाए जानना चाहिए।

साथियो, जैसा मैने पहले बताया कि कोम्सोमोल की ये उच्च पारितोषिक मोर्चे पर और पिछवाड़े में उन लाखो-लाख कोम्सोमोल सदस्यों और तरुणों के वीरतापूर्ण कामों के कारण मिले हैं, जो हमारे न्यायपूर्ण उद्देश्य के लिए आत्मबलिदान की भावना से लड़े है। इन सेवाओं का एक अश कोम्सोमोल के उन गौरवशाली बेटों के हिस्से में आता है जिन्होंने सोवियत देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए।

इन लोगो ने सघर्ष में राजनैतिक परिपक्वता, सगठनात्मक अनुभव और कुशलता का परिचय दिया। उन्होंने सोवियत जनता के प्रति सर्वोच्च लगन और उच्च देशभक्ति निभाई। उन्होंने सोवियत जनता के उच्च मनोबल का प्रदर्शन सारी दुनिया के सामने किया।

साथियो, मुझे विश्वास है कि कोम्सोमोल के सदस्य देशभक्तिपूर्ण युद्ध की गौरवशाली परपराओ को सुरक्षित रखेगे और उन से आगे के लिए प्रेरणा लेगे। हमारी भावी सन्तान भी इन्ही परपराओं मे पाली-पोसी जायेगी।

कोम्सोमोल को मिलनेवाले पारितोषिको का सबध सदा ही हमारे देश के जीवन के विकास की महत्वपूर्ण मजिलो से रहा है। अभी-अभी जो पारितोषिक दिया गया हे, वह देशभक्तिपूर्ण युद्ध की गाथाओ से सबधित है, हमारी जीत से सबधित हे। हमारे इतिहास की हर मजिल मे कोम्सोमोल ने अपने कामो को सम्मान के साथ पूरा किया है। साथियो, जिस तरह आपने पीछे राष्ट्र की महान सेवाए की हे, उसी तरह से भविष्य मे भी आप को राष्ट्र-सेवा का गौरव प्राप्त हो, यही मेरी मगल-कामना है। (सब खड़े हो जाते है। देर तक जोरदार तालिया)

"कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा"

२ दिसबर १९४५

М. И. КАЛИНИН

О КОММУНИСТИЧЕСКОМ ВОСПИТАНИИ

На языке хинди

Художественный редактор *Ю. Копылов*
Технический редактор *В. Сказалова*

Подписано к печати 5/VII-1957г. Формат 84×108 $^1/_{32}$.
Бум. л. $4^1/_4$—13,94 печ. л. Уч-изд. л. 16,27. Заказ 51.
Цена 10 руб. Тираж 7000.

Министерство культуры СССР
15-я типография «Искра революции». Москва.
Главное управление полиграфической промышленности